प्रस्तावना ।

विदित हो कि, प्रथम प्रजापतिजीने संसारकी रचना करके स्वरचित मनुष्य जातिको सर्वोत्कृष्ट, बहुज्ञ तथा उन्नतिशीलतासंपन्न देखकर उसके हृदयमें वेदाङ्ग त्रैकालिक त्रिविधकर्मसूचक ज्योतिःशास्त्रका बीजावापन किया, जिसके हृदयमें अंकुरित होनेसे अन्य अन्य व्यास पराशरादि ऋपियोंने देश,काल, तिथि, नक्षत्र वार योग करण मुहूर्त घटि पल आदिकोंके भिन्न भिन्न फल विशिष्ट होनेके कारण उक्त अंकुरको त्रिस्कन्धमें प्रसारित किया। जिससे मनुष्यजातिको अनेक प्रकारसे उपकारी हो।

कालान्तरमें श्रीसूर्य्यांशावतार अवन्तिकाचार्य्य वराहमिहिरने ज्योतिःशास्त्रमें अपनी निपुणता तथा बहुज्ञताके कारण अन्य अन्य पूर्वाचार्योंका मत ग्रहण करके यह बृहज्जातक नाम ग्रन्थ रचा,जिससे पाठकवृन्द थोडेही परिश्रमसे बहुत आचार्योंके मतके अभिज्ञ हो जावें, किन्तु वर्तमान समयकी ऐसी महिमा होगई कि , ऐसे एक सुगम ग्रन्थका अर्थ भी बहुत सरल बुद्धियोंके हृदयमें संस्कृतके अल्प परिचय होनेके कारण सहसा स्फुरित नहीं होता है। इस दशाको देखकर श्रीमन्महामहिम क्षत्रियकुलावतंस गढेशाधिप बदरीशमूर्ति श्रीमन्महाराजाधिराज प्रतापशाहदेव महोदयभी (जिनकी न्यायशीलता विद्वज्जनानुरागिता सद्गुणविशिष्टता प्रजोन्नतिशीलता प्रसिद्ध है) ने भाषाटीका करनेको मुझे आज्ञा दी, सो उनकी आज्ञासे मैंने अपनी अल्प बुद्धिके अनुसार इस ग्रन्थकी टीका सरल हिन्दी भाषामें की है। प्रार्थना है कि, विद्वज्जन अशुद्धियोंमें हास्य न कर शुद्धार्थसे सन्तुष्ट हों।

यह ग्रन्थ २८ अध्यायोंमें विस्तारित है. १ में राशिस्वरूप, होरा, द्रेष्काण, नवांशक, द्वादशांशक त्रिंशांशकका ज्ञान और ग्रहस्वरूपका वर्णन है. २ में ग्रह और राशिका बलाबल, ३ में वियोनिजन्म, ४ में

आधानेज्ञान, ५ में जन्मकाल, ६ में अरिष्टकथन, ७ में आयुर्दाय, ८ में दशान्तर्दशा, ९ में अष्टकवर्ग, १० में कर्माजीव, ११ में राजयोग, १२ में नाभसयोग, १३ में चन्द्रयोग, १४ में द्विग्रहादियोग, १५ में प्रव्रज्यायोग, १६ में नक्षत्रफल, १७ में (चन्द्र) राशिस्वभाव, १८ में (अन्यग्रह) राशिस्वभाव, १९ में दृष्टिफल, २० में भावफल, २१ में आश्रययोग, २२ में प्रकीर्णक, २३ में अनिष्टयोग, २४ में स्त्रीजातक, २५ में निर्याण २६ में नष्ट जातक २७ में द्रेष्काणरूप, २८ में उपसंहार है। यहाँ उपसंहाराध्यायके आदिमें आचार्यने अन्यग्रहराशिस्वभाव और नक्षत्रफल इन दोनोंको राशिशीलमें अन्तर्भाव मानकर और उपसंहारको छोडकर २५ ही अध्याय कहे हैं.

इस ग्रन्थका प्रयोजन यह है कि जो जीवने शुभाशुभ कर्म पहिले किये हैं उन्हीके अनुसार अब फल पावेगा, किन्तु फल होजानेपर मनुष्यको जान पडता है, न कि पहिले ही. इसके जाननेको इस ग्रन्थको जो मन लगाकर पढैगा और ठीक विचारकरके फल कहैगा तो भूत भविष्य वर्तमान सभी फलका ग्रह विचारसे कह सकता है। पूछनेवाला भूत बातको सुनकर प्रतीत मानता है और भविष्य बातके लिये यत्न कर सकता है।

इस ग्रन्थकी प्रथमावृत्ति श्रीक्षेत्र काशीजीमें भारतजीवन प्रेसमें मैंने छपवायी थी वह ग्रन्थ सर्वत्र प्रसिद्ध होही गया है। अब इस ग्रन्थको सब रजिस्टरी हक्कके साथ " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् यंत्रालयाधिप खेमराज श्रीकृष्णदासजीको मैंने पारितोषिक पाकर सदाहीके लिये समर्पण करदिया है।

भाषाटीकाकार—

टीहरीनिवासी पं० महीधरशर्मा.

श्रीः ।

बृहज्जातक-विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका ।

॥ श्रीः ॥

बृहज्जातकम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

राशिभेदाध्यायः १.

मङ्गलाचरण ।

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्तामरज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ १ ॥

टीका–ग्रंथकर्त्ता विघ्ननिवृत्त्यर्थ प्रथम अपने इष्ट श्रीसूर्यनारायणसे वाक्सिद्ध्यर्थ प्रार्थना करता है–अनेक किरणोंवाला तथा तीन लोकमें प्रकाश करनेवाला जैसा दीपक और शश जो कलंक उसे धारण करनेवाला जो चन्द्रमा है उसकी मूर्ति प्रगट करनेवाला अर्थात् चन्द्रमा जलमय विना कलंकके दर्पण (आइना) के समान है उसको सूर्यनारायण अपनी किरणोंसे तेज देकर पूर्णकला बनाते हैं सूर्यका तेज क्रमसे लगनेपर चन्द्रमा प्रकाशमान होता है । यद्वा " शशिभृतः " ऐसा पाठभी है तो शशिभृत् जो महादेवजी हैं उनकी मूर्ति अर्थात् श्रीमहादेवजीकी अष्टमूर्तिमें एक सूर्यभी है और अपुनर्जन्मा जो (मुमुक्षु) मुक्तिपदको प्राप्त होनेवाले हैं उन्हींका मार्ग है जो मुक्त होनेके समय पितृलोकमें जाते हैं वे चन्द्रमण्डल होकर और जो कैवल्य मुक्तिवाले हैं वे सूर्यमण्डलको भेदन करके जाते हैं और जो परमात्माको अपने हृदयमें नित्यस्थित जाननेवाले योगीश्वर हैं उनका चित्ताधिष्ठाता और जो यज्ञ करनेवाले यजमान हैं उनका यज्ञरूपी देवता

और ग्रहोंका भर्त्ता (श्रेष्ठ) क्योंकि सब देवता सूर्यको नित्य प्रणाम करते हैं एवं सब ग्रह सूर्यके वशसे उदयास्तादि गति पाते हैं और सब लोकका ब्रह्मा विष्णु महेश्वर त्रयी मूर्ति और वेद जिसको अनेक प्रकार अर्थात् इन्द्र मित्र वरुण अग्नि गरुड यम वायु करके कहते हैं ऐसा जो सूर्यनारायण है सो मुझको वाक्सिद्धि देवे ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्त.)

ग्रन्थ करनेका प्रयोजन।

भूयोभिः पटुबुद्धिभिः पटुधियां होराफलज्ञप्तयं
शब्दन्यायसमन्वितेषु बहुशः शास्त्रेषु दृष्टेष्वपि।
होरातन्त्रमहार्णवप्रतरणे भग्नोद्यमानामहं
स्वल्पं वृत्तविचित्रमर्थबहुलं शास्त्रप्लवं प्रारभे ॥ २ ॥

चतुर बुद्धिवाले आचार्योंने चतुरोंके होरा फल जाननेके निमित्त शब्द शास्त्र न्याय मीमांसाओंकी युक्ति अनेक वार देख विचारके अनेक ज्योतिष ग्रन्थ बनाये परन्तु तौभी होरा शास्त्ररूपी समुद्रके पार पहुँचनेमें निरुद्यम होगये क्योंकि और ग्रन्थोंका बहुत विस्तार है जिनके पढनेमें कलियुगकी थोडीसी आयु व्यतीत हो जाती है तो उसका फलोदय कब होना है इस कारण मैं वराहमिहिर नामा आचार्य ज्योतिश्शास्त्ररूपी नाव बनाता हूं इसमें विचित्र छन्दोंवाले श्लोक थोडे हैं और अर्थ बहुत हैं ॥ २ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

होरा शब्दके अर्थ।

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पक्तिं समभिव्यनक्ति ॥ ३ ॥

अहोरात्रका विकल्प होरा कहते हैं अकार पूर्वाक्षर और त्र अंत्यका अक्षर इन दोनोंके लोप करनेसे बाकी बीचमें " होरा " ये दो अक्षर रह जाते हैं अहोरात्रसे होरापद सिद्ध करनेका प्रयोजन यह है कि सारे ज्योतिष

शास्त्रमें शुभाशुभ फल लग्नसे जाने जाते हैं वह लग्न समयके वशसे और समय दिन रात्रि मात्र है यह मेषादि राशि बारह पूरी हो जानेपर दिन रात्रि होती है अतएव अहोरात्रसे होरा नाम हुआ। जीवने जो कुछ शुभाशुभ कर्म पूर्व जन्ममें किया उसका फल उसी प्रकार इस जन्ममें मिलेगा परंतु वह पहिले जाना नहीं जाता इस कारण उस फलके पहिले ज्ञान लेनेके निमित्त यहां ग्रह विचार किया जाता है। शुभाशुभ फलभी दो प्रकारका है एक तो दृढ कर्म करनेसे,दूसरा अदृढ कर्मसे। दृढ कर्मोपार्जित तो दशाफल है दशाका शुभ फल जानके यात्रादि शुभ कर्म करै अशुभ जानके न करे जो अदृढ कर्मोपार्जित है वह अष्टकवर्ग गोचरमें फल बतलाता है। अशुभ जानकर उसकी शान्ति आदि करै॥ ३ ॥ (इन्द्रवज्रावृत्त)

कालके अवयवोंका संकेत।

कालाङ्गानि वराङ्गमाननमुरो हृत्क्रोडवासो भृतो
वस्तिर्व्यञ्जनमूरुजानुयुगले जङ्घे ततोऽङ्घ्रिद्वयम्।
मेषाश्विप्रथमा नवर्क्षचरणाश्चक्रस्थिता राशयो
राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसम्प्रत्ययाः ॥ ४ ॥

अश्विनी नक्षत्रसे लेकर ९ चरण पर्यन्त मेषराशि होती है, एवं नौ नौ नक्षत्र चरणोंकी एक एक राशि जानो ये बारह राशि चक्रके समान फिरती हैं इनको राशिचक्र कहते हैं। राशि, क्षेत्र, गृह ऋक्ष, भ और भवन ये सभी इन्हींके नाम हैं। कालचक्रभी राशिचक्रको कहते हैं उनकी संज्ञा शरीरमें इस क्रमसे है कि, मेष शिर, वृष मुख, मिथुन स्तनमध्य, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला नाभीसे नीचे, वृश्चिक लिङ्ग, धन ऊरु,मकर जंघा, कुम्भ घुटना, मीन पैर। कालचक्रके राशिविभागका प्रयोजन यह है कि जन्म वा प्रश्न वा गोचरमें जो राशि पापाक्रान्त हो उस राशिवाले अङ्गमें तिल, लाखन, वा चोटसे किसी प्रकारका चिह्न होगा और जो राशि शुभयुक्त हो तो वहअङ्ग पुष्ट होगा इस विचारका सर्वत्र स्मरण रखना चाहिये॥४॥(शार्दूलविक्रीडित

राशियोंके स्वरूप विज्ञान ।

मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं
चापी नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः ।
तौली ससस्यदहना प्लवगा च कन्या
शेषाः स्वनामसदृशाः स्वचराश्च सर्वे ॥ ५ ॥

मीन राशि दो मछलियां हैं एकके मुखमें दूसरीका पूंछ लगकर गोल बनी हुई हैं, कुम्भ रिक्त घट (कलश) कांधे पर धरा हुआ पुरुष, मिथुन स्त्री पुरुषका जोडा, स्त्रीके हाथपर वीणा और पुरुषके गदा, धन धनुष हाथमें कटिसे ऊपर मनुष्य नीचे घोडा, मकर शरीर नाकूका मुख मृगका, तुला मनुष्य तुला (तखडी) हाथमें लिये हुये, कन्या नावके ऊपर बैठी हुई साथमें अग्नि और तुला, और राशि नामतुल्य रूप जैसे वृष बैल रूप,कर्क केकडा, सिंह शेर, वृश्चिक बिच्छू इनको स्पष्ट रूपसे दोहोंमें दर्शाताहूं ॥ ५ ॥ (वसंततिलका)

दोहा ।

मेढा सूरत रक्त तनु, वनवासी है मेष । रतन खान तस्कर पती, कहत महीधर वेष ॥ १ ॥ गौर वर्ण है कण्ठ मुख, सुन्दर बैल समान । पर्वत गोकुल क्षेत्रपति, यों वृष राशी जान ॥ २ ॥ बीण गदा धारे सदा, गावत नरमादीन । अर्द्धाङ्गी क्रीडा करै, राशी मिथुन न दीन ॥ ३ ॥ कर्कट कीटक वारिचर, उपवन सरसि निवास । पुष्ट हृदय वाणी मधुर, सुरपुर नारि विलास ॥ ४ ॥ वन पर्वत रात्री बली, सर्वोत्तम यह रास । हरित दलन विक्रम करन, सिंह स्वरूप विलास ॥ ५ ॥ दीपक हरत कुमारिका, सकल कला परवीन । नौकामें धीरज सहित, लेखत चित्र नवीन ॥ ६ ॥ वणज करत मानुष तनू, तखडी तोलै हाट । श्वेत वसन माला धरी, तुला दिखावत वाट ॥ ७ ॥ वृश्चिक बिच्छू है सबल, रास

हलाहल सार । बाँबी रंघर छिप रहे, करै अजान मार ॥ ८ ॥ कटि ऊपर मानुप तनु, नीचे घोडा ऐन । तीर धनुप करमें लसै, मीठे बोलै चैन ॥९॥ मृगमुख नाकू और तनु, वनवासी दिन रैन । शुक्र वसन भूपण वरण, जल विन नित नहिं चैन ॥१०॥ खाली घट कांधे धरे, तन नीर आधार । जूआँ वेश्या मद्यसों, झूठा वारंवार ॥ ११ ॥ मच्छी जोडा पूंछ मुख, धारत हैं विपरीत । जलवासी धर्मी धनी, मीन राशि यह रीत ॥ १२ ॥ (यह राशियोंके रूप स्थान, खोये गये द्रव्यके वतलाने मश्नादिमें काम आते हैं)

राशियोंके नवांश और द्वादशांशके अधिपति ।

क्षितिजसितज्ञचन्द्ररविसौम्यसितावनिजाः
सुरगुरुमन्दसौरिगुरवश्च गृहांशकपाः ।
अजमृगतौलिचन्द्रभवनादिनवांशविधि-
र्भवनसमांशकाधिपतयः स्वगृहात् क्रमशः ॥ ६ ॥

मेप राशिका स्वामी क्षितिज (मङ्गल), वृषका स्वामी सित (शुक्र), मिथुनका ज्ञ (बुध), कर्कका चन्द्र, सिंहका रवि (सूर्य), कन्याका सौम्य (बुध) तुलाका शुक्र, वृश्चिकका अवनिज(मङ्गल),धनका सुरगुरु (बृहस्पति), मकरका मन्द (शनि), कुम्भका सौरि (शनि), मीनका गुरु (बृहस्पति)।

राशि ।	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
स्वामी ।	मं०	शु०	बुध	चं०	सू०	बुध	शु०	मं०	वृ०	श०	श०	वृ०

नवांशक एक राशिके ९ भाग अर्थात् ३ अंश २० कलाका होता है उनकी गणना ऐसी है कि मेप सिंह धनमें मेपसे, वृप कन्या मकरमें मकरसे, मिथुन-तुला कुम्भमें तुलासे, कर्क वृश्चिक मीनमें कर्कसे, मेप सिंह धन इत्यादि तीन-तीन राशियोंकी त्रिकोण संज्ञा है, एक संज्ञामें जो राशि चर है उसीसे पहिले नवांशक गणना है जैसे पहिले लिखा है चक्रमी यहहै ।

नवांशक गणका चक्र ।

चर १	च० १०	च० ७	च० ४
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२

एकराशिके ९ भाग ।

अंश ।	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला ।	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

जैसे मेषके ३ अंश २० कलापर्यन्त मेष नवांशक, ३। २० से ६ अंश ४० कला पर्यन्त वृष नवांशक, १० अंश० कला पर्यन्त मिथुन नवांशक और मिथुन राशिमें ३ अंश २० कलापर्यन्त तुला नवांशक, ६ । ४० पर्यन्त वृश्चिक नवांशक इसी प्रकार सबका जानना । द्वादशांक, एक राशिके १२ भाग, एक एक भाग २ अंश ३० कलाका होता है जिस राशिका द्वादशांश करना हो उसीसे पहिले गिनना जैसे मेषमें २ अंश ३० क० पर्यन्त मेष द्वादशांश, ५ अंश० कला पर्यन्त वृष द्वादशांश, वृषमें २ अं० ३० क० पर्यन्त वृष द्वादशांश, २ । ३० से ५ । ० पर्यन्त मिथुन द्वादशांश, ७ अंश ३० क० पर्यन्त कर्क द्वादशांश, मिथुनमें २ । ३० पर्यन्त मिथुन द्वादशांश, ५ । ० पर्यन्त कर्क द्वादशांश इसी प्रकार सबका द्वादशांश जानना ॥ ६ ॥ (त्रोटक वृत्त)

त्रिंशांशके आधिपति ।

कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्प्यजूकलेयाः ।
अयुजि युजि तु भे विपर्ययस्थाः शशिभवनाळिझषान्तमृक्षसंधिः ॥७

त्रिंशांशकमें एक राशिके ३० अंशके भाग इस प्रकार होते हैं कि, विषम राशि १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में पहिले ५ अंश पर्यन्त मङ्गलका त्रिंशांश, ५ से १० अंश पर्यन्त शनिका त्रिंशांश, १० से १८ अंश पर्यन्त बृहस्पतिका, १८ से २५ अंश तक बुधका, २५ से ३० अंश तक शुक्रका, और सम राशि २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ में ५ अंश पर्यन्त शुक्रका, ५ अंशसे १२ अंश तक बुधका, १२ से २० तक

बृहस्पतिका, २० से २५ तक शनिका, २५ से ३० तक मङ्गलका त्रिंशांश होता है। अयुजि (विषममें) मं० श० बृ० बु० शु० ऐसा क्रम है युजि सम में उलटा अर्थात् शु० बु० बृ० श० मं० ऐसा क्रम त्रिंशांशकका है ॥

मं०	श०	गु०	बु०	शु०	शु०	बु०	गु०	श०	मं०
५	५	८	७	५	५	७	८	५	५
५	१०	१८	२५	३०	५	१२	२०	२५	३०

(शशिभवन) कर्क (आलि) वृश्चिक (झष) मीन इन राशियोंके अन्त्योंमें ऋक्षसन्धि कहते हैं अर्थात् मीन मेषकी, कर्क सिंहकी और वृश्चिक धनुषकी सन्धि है चक्रसंधि भी इन्हींका नाम है । राशिसन्धि, लग्नसन्धि, नक्षत्रसन्धि ये तीनों प्रकार इन्हींमें आते हैं । गण्डान्तके भी यही स्थान हैं, मेष मीनके संधिकी १ घडी, कर्क सिंहके सन्धिकी १ घडी और वृश्चिक धनुषके सन्धिकी १ घडी लग्न गण्डान्त होती है. ऐसे-ही रेवती अश्विनीके सन्धिकी २ घडी, आश्लेषा मघाके सन्धिकी २ घडी, ज्येष्ठा मूलके सन्धिकी २ घडी ये नक्षत्र गण्डान्त कहाते हैं । गण्डान्तका विचार और ग्रन्थोंमे बहुत है; प्रसंग वशसे यहां इतनाही लिखा और सप्तमांश यहां ग्रन्थकर्ताने नहीं कहा परन्तु वह भी गिनना आवश्यक है क्योंकि सप्तमांशसे द्रव्य रूपादिका तथा भाईका विचार होता है इस कारण मैंने यहाँ केवल चक्रही लिखदिया ॥ ७ ॥ (पुष्पिताग्रा वृत्त)

सप्तमांशचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	भाग ।
४	८	१२	१७	२१	२५	३०	अंश ।
१७	३४	५१	८	२५	४२	०	कला ।
८	१७	२५	३४	४२	५१	०	विकला ।
३४	८	४२	१६	५०	२४	०	प्रतिविकला ।

राशियोंके नाम।

क्रियतावुरिजितुमकुलीरलेयपाथोनजूककौर्प्याख्याः ।
तौक्षिक आकोकेरो हृद्रोगश्चान्त्यभं चेत्थम् ॥ ८ ॥

क्रिय–मेष, तावुरि–वृष, जितुम–मिथुन, कुलीर–कर्क, लेय–सिंह, पाथोन–कन्या, जूक–तुला, कौर्प्य–वृश्चिक, तौक्षिक–धनुष, आकोकेरो–मकर, हृद्रोग–कुम्भ, अन्त्यभ–मीन ॥ ८ ॥ (आर्या वृत्त)

ग्रहोंका क्षेत्र, होरा आदि संज्ञा।

द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशकद्वादशसंज्ञिताश्च।
क्षेत्रं च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धम्॥९॥

द्रेष्काण होरा आगे कहे जायगे, नवांश त्रिंशांश द्वादशांश और ग्रह ऊपर लिखेगये, ये सब छः वर्ग हैं इनमें जो राशि उसीका अंश भी होवे तो उसे वर्गोत्तम कहते हैं अशं षड्वर्गमें सभीको कहते हैं; जैसे मेषमें मेष नवांशादि, वृषमें वृष नवांशादि । षड्वर्गमें जो राशि उसीके अंशकमें जो ग्रह होवे वह षड्वर्ग शुद्ध कहलाता है परन्तु सूर्य चन्द्रमाका त्रिंशांश नहीं है और भौमादि ग्रहोंकी होरा नहीं है, अतएव पंचवर्ग होता है षड्वर्ग शुद्ध कभी नहीं हो सकता होरा लग्नको कहतेहैं और राशिके आधे भागकोभी होरा कहते हैं विस्तार इसका आगे लिखा है ॥ ९ ॥ (इन्द्रवज्रा वृत्त)

राशियोंके रात्रि दिनकी संज्ञा और पृष्ठोदय शीर्षोदय

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः
पृष्ठोदया विमिथुना कथितास्त एव ।
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति शेषा
लग्नं समेत्युभयतः पृथुरोमयुग्मम् ॥ १० ॥

वृष मेष धन कर्क मिथुन मकर इतनी राशियां रात्रिबली हैं और पृष्ठोदयभी यही हैं परन्तु इनमें मिथुन पृष्ठोदय नहीं है और सिंह कन्या

तुला वृश्चिक कुंभ ये दिवाबली हैं यही शीर्षोदयभी हैं मिथुनभी शीर्षोदय है और मीन दो मछली मुख पूछ मिलकर गोलाकार होनेसे शीर्षोदयभी है जो पीठसे उदय होते हैं वे पृष्ठोदय जो शिरसे उदय होते हैं वे शीर्षोदय मीन दोनों मुख पूंछसे उदय होता है ॥ १० ॥ (वसन्ततिलका)

राशियोंके क्रूर सौम्य आदि।

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनिते ते च रागद्विदेहाः
प्रागादीशाः क्रियवृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाः।
मार्त्तण्डेन्द्वोरयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्च होरे
द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानाम्॥ ११॥

मेष क्रूर व पुरुष, वृष स्त्री व सौम्य, मिथुन क्रूर व पुरुष, कर्क स्त्री व सौम्य, सिंह पु० क्रू०' कन्या स्त्री सौ०, तुला क्रू० पु०, वृश्चिक स्त्री सौ०, धन क्रू० पु०, मकर स्त्री सौ०, कुंभ पु० क्रू०, मीन स्त्री सौ० हैं। मेष कर्क तुला मकर चर, वृष सिंह वृश्चिक कुंभ स्थिर, मिथुन कन्या धन मीन ये द्विस्वभाव हैं। मेष सिंह धन पूर्व, वृष कन्या मकर दक्षिण, मिथुन तुला कुंभ पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीन उत्तर दिशामें रहते हैं। होरा-विषम राशिमें पूर्वार्द्ध १५ अंश पर्यन्त सूर्यकी, १५ से ३० तक चंद्रमाकी और सम राशिमें १५ अंश तक चन्द्रमाकी, उपरान्त ३० तक सूर्यकी होती है। द्रेष्काण-एक राशिमें दश दश अंशके तीन होते हैं जो राशि है पहिले १० अंश पर्यन्त उसी राशिके स्वामीका द्रेष्काण, १० अंशसे २० पर्यन्त उस राशिसे पांचवीं राशिके स्वामीका, २० से ३० पर्यन्त उस राशिसे नवीं राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है, जैसे मेषके १० अंश पर्यन्त मेषके स्वामी मंगलका द्रेष्काण, १० अंशसे २० अंश पर्यन्त मेषसे पंचम सिंहके स्वामी सूर्यका द्रेष्काण, २० अंशसे ३० अंश पर्यन्त मेषसे नवम धनके स्वामी बृहस्पतिका द्रेष्काण होता है इसी प्रकार सब राशियोंके द्रेष्काण जानने ॥ ११ ॥ (मन्दाक्रान्तावृत्त)

होरा आदि लक्षणमें मतान्तर।

केचित्तु होरां प्रथमाम्भपस्य वाञ्छन्ति लाभाधिपतेर्द्वितीयाम् ।
द्रेष्काणसंज्ञामपि वर्णयन्ति स्वद्वादशैकादशराशिपानाम् ॥ १२ ॥

कोई कोई यवनेश्वरादि आचार्य होराका इस प्रकार वर्णन करते हैं कि, पूर्वार्द्धमें उसी राशिके स्वामीका और उत्तरार्द्धमें उसी राशिसे ग्यारहवीं राशिके स्वामीका और द्रेष्काण प्रथम १० अंश तक उसीके स्वामीका, दूसरे २० अंश पर्यन्त उससे बारहवीं राशिके स्वामीका, तृतीय ३० अंश-तक उससे ग्यारहवीं राशिके स्वामीका परन्तु इस मतको सर्व सम्मत न होनेसे नहीं मानते ॥ १२ ॥ (इन्द्रवज्रा)

ग्रहोंका उच्च और नीच कथन।

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥

सूर्यका उच्च मेष १० अंशमें परम उच्च, चन्द्रमाका वृष ३ अंशमें, मंगल मकरके २८ अंशमें, एवं बुध कन्याके १५ अंश पर, बृहस्पति कर्कके ५ अंशमें, शुक्र मीनके २७ अंशमें, शनि तुलाके २० अंशमें । ये ग्रह इन राशियोंमें उच्च और इन अंशकोंमें परमोच्च होते हैं वैसाही अपनी उच्च राशिसे सातवीं नीच और वही उच्चवाले अंशकोंमें परम नीच होते हैं ॥ १३ ॥ (पुष्पिताग्रावृत्त)

उच्च नीच विभाग चक्र ।

	ग्रह	सूर्य्य	चन्द्र	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
उच्च	राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

वर्गोत्तम-मूलत्रिकोण परिज्ञान।

वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्य-
पर्यन्ततः शुभफला नवभागसंज्ञाः ।
सिंहो वृषः प्रथमषष्ठहयाङ्गतौलि-
कुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात् ॥ १४ ॥

जो राशि है उसमें उसीका नवांश वर्गोत्तम होता है. जैसे मेषमें मेष नवांशक, वृषमें वृष नवांश इत्यादि। यहां मेष कर्क तुला मकरके प्रथम नवांश वर्गोत्तम, वृष सिंह वृश्चिक कुंभमें मध्यम अर्थात् पंचम नवांश वर्गोत्तम होते हैं वर्गोत्तम लग्नवर्गोत्तमांशमें रह शुभ फल देता है और सूर्यका सिंह, चन्द्रमाका वृष, मंगलका मेष, बुधका कन्या, बृहस्पतिका धन, शुक्रका तुला, शनिका कुंभ ये मूल त्रिकोण हैं ॥ १४ ॥ (वसन्ततिलका)

लग्नादि स्थानोंकी संज्ञा ।

होरादयस्तनुकुटुम्बसहोत्थबन्धु-
पुत्रारिपत्निमरणानि शुभास्पदायाः ।
रिष्फाख्यमित्युपचयान्यरिकर्मलाभ-
दुश्चिक्यसंज्ञितगृहाणि न नित्यमेके ॥ १५ ॥

लग्न होरा, दूसरा कुटुम्ब, तीसरा (सहोत्थ) सहज, चौथा बन्धु, पंचम पुत्र, छठा रिपु, सप्तम पत्नी, अष्टम मरण (मृत्यु), नवम शुभ, दशम आस्पद, ग्यारहवां आय, बारहवां रिष्फ और ६ । १० । ११ । ३ । [redacted] भावोंकी संज्ञा उपचय है. कोई आचार्य पापयुक्तादि विरुद्ध फल होनेसे इनकी उपचय संज्ञा ठीक नहीं बताते हैं परन्तु यहां आचर्यने बहुत ग्रन्थ सम्मत होनेसे इनकी उपचय संज्ञा स्थापन करी है॥ १५ ॥(वसन्ततिलका)

द्वादश भावोंके नामान्तर।

कल्पस्वविक्रमगृहप्रतिभाक्षतानि
चित्तोत्थरन्ध्रगुरुमानभवव्ययानि ।

लग्नाच्चतुर्थनिधने चतुरस्रसंज्ञे
द्यूनं च सप्तमगृहं दशमं खमाज्ञा ॥ १६ ॥

पहिला भाव लग्नका नामांतर कल्प, दूसरेका (स्व) धन, तीसरे पराक्रम, चौथा गृह, पंचम (प्रतिभा) पुत्र, छठा क्षत, सातवां (चित्तोत्थ) स्त्री, आठवां (रन्ध्र) छिद्र; नवम (गुरु) धर्म; दशम (मान) राजा, ग्यारहवां (भव) लाभ, बारहवां व्यय और लग्नसे चौथे आठवें स्थानका नाम चतुरस्र और सप्तमका नाम द्यून और दशम स्थानका नाम ख और आज्ञा है ॥ १६ ॥ (वसन्ततिलका)

केन्द्रोंके संज्ञा और उस राशिका बल ।

कण्टककेन्द्रचतुष्टयसंज्ञाः सप्तमलग्नचतुर्थखभानाम् ।
तेषु यथाभिहितेषु बलाढ्याः कीटनराम्बुचराः पशवश्च ॥ १७ ॥

१ । ४ । ७ । १० इन भावोंके नाम कण्टक केन्द्र चतुष्टय ये ३ हैं इनमें कीट मनुष्य जलचर पशु ये राशि क्रमसे बलवान् होती हैं, जैसे कीट राशि वृश्चिक सप्तम स्थानमें बलवान् होती है और मिथुन तुला कन्या कुम्भ और धनका पूर्वार्ध ये मनुष्य राशि हैं लग्नमें बलवान् होते हैं और कर्क मीन मकरका उत्तरार्द्ध जलचर राशि हैं चतुर्थ भावमें बलवान् हैं और मेष सिंह वृष धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध ये चतुष्पद राशि हैं दशम स्थानमें बलवान् होती हैं ॥ १७ ॥ (दोधकवृत्त)

परिशिष्टस्थानोंका संज्ञान्तर ।

केन्द्रात्परं पणफरं परतस्तु सर्व-
मापोक्लिमं हिबुकमम्बु सुखं च वेश्म ।
जामित्रमस्तभवनं सुतभं त्रिकोणं
मेषूरणं दशममत्र च कर्म विद्यात् ॥ १८ ॥

चार केन्द्र १ । ४ । ७ । १० से उपरान्त २ । ५ । ८ । ११ इन भावोंका नाम पणफर है, इनसे उपरान्त ३ । ६ । ९ । १२ इनका नाम

आपोक्लिम है, चतुर्थ भावके नाम अंबु सुख वेश्म और सप्तम भावके नाम जामित्र अस्त पंचम भावका नाम त्रिकोण, दशम भावका नाम मेषूरण तथा कर्म है ॥ १८ ॥ (वसन्ततिलका)

होरादि राशियोंका बल और प्रमाण।

होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता नान्यैश्च वीर्योत्कटा
केन्द्रस्था द्विपदादयोऽह्नि निशि च प्राप्ते च सन्ध्याद्वये।
पूर्वार्द्धे विषमादयः कृतगुणा मानं प्रतीपं च तद्-
दुश्चिक्यं सहजं तपश्च नवमं त्वाद्यं त्रिकोणं च तत् ॥ १९ ॥

लग्नेश लग्नमें होवे अथवा लग्नको देखे अथवा बुध बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट होवे तो राशि वीर्योत्कट बलवान् होती है ऐसेही पापग्रहोंसे हीन बल और दोनों प्रकारसे युक्त होवे तो मध्य होती है "केन्द्रस्था द्विपदादयः" केन्द्रमें द्विपद राशि ३।७।६ बलवान् होती हैं, वैसेही पणफर २।५।८। ११। में, चतुष्पद १।२।५।९ और आपोक्लिम ३।६।९। १२ में, कीट राशि ४।८।१०।-११।१२ बलवान होती हैं किसी आचार्यका मत है कि केन्द्रमें सभी राशि बलवान् होती हैं, पणफरमें मध्य बली और आपोक्लिममें हीन बली होती हैं और द्विपद राशि ३। ७।६ और धनका पूर्वार्द्ध, ये दिनको बलवान् हैं और चौपया राशि १ २।५ और मकरका पूर्वार्द्ध, धनका उत्तरार्द्ध ये रात्रिमें बलवान् हैं और कीट जलचर ४।८। ११। १२ और मकरका उत्तरार्द्ध ये सन्ध्याकालमें बलवान् हैं। अब लग्न प्रमाण कहते हैं—विषमादयः ५।६।७ ८।९।१०। इन अङ्कोंको चौगुना करके मेषादिसे कन्या पर्यन्त और उलटे क्रमसे तुलादिसे मीन पर्यन्त लग्न भाग होते हैं उनको भी १० गुणा करनेसे लग्न खण्ड होते हैं पश्चात् अपने अपने देशोंके पलभ नुसार स्वस्वदेशीय लग्न खण्ड बनाये जाते हैं इनको विस्तार पूर्वक चक्रमें लिखा है इन अङ्कोंका प्रयोजन लग्नखण्डोंही पर नहीं है किन्तु ह्रस्व, दीर्घ, मध्म-

लग्नाच्चतुर्थनिधने चतुरस्रसंज्ञे
द्यूनं च सप्तमगृहं दशमं खमाज्ञा ॥ १६ ॥

पहिला भाव लग्नका नामांतर कल्प, दूसरेका (स्व) धन, तीसरे पराक्रम, चौथा गृह, पंचम (प्रतिभा) पुत्र, छठा क्षत, सातवां (चित्तोत्थ) स्त्री, आठवां (रन्ध्र) छिद्र; नवम (गुरु) धर्म; दशम (मान) राजा, ग्यारहवां (भव) लाभ, बारहवां व्यय और लग्नसे चौथे आठवें स्थानका नाम चतुरस्र और सप्तमका नाम द्यून और दशम स्थानका नाम ख और आज्ञा है ॥ १६ ॥ (वसन्ततिलका)

केन्द्रोंके संज्ञा और उस राशिका बल ।

कण्टककेन्द्रचतुष्टयसंज्ञाः सप्तमलग्नचतुर्थखभानाम् ।
तेषु यथाभिहितेषु बलाढ्याः कीटनराम्बुचराः पशवश्च॥१७॥

१ । ४ । ७ । १० इन भावोंके नाम कण्टक केन्द्र चतुष्टय ये ३ हैं इनमें कीट मनुष्य जलचर पशु ये राशि क्रमसे बलवान् होती हैं, जैसे कीट राशि वृश्चिक सप्तम स्थानमें बलवान् होती है और मिथुन तुला कन्या कुम्भ और धनका पूर्वार्ध ये मनुष्य राशि हैं लग्नमें बलवान् होते हैं और कर्क मीन मकरका उत्तरार्द्ध जलचर राशि हैं चतुर्थ भावमें बलवान् हैं और मेष सिंह वृष धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध ये चतुष्पद राशि हैं दशम स्थानमें बलवान् होती हैं ॥ १७ ॥ (दोधकवृत्त)

परिशिष्टस्थानोंका संज्ञान्तर ।

केन्द्रात्परं पणफरं परतस्तु सर्व-
मापोक्लिमं हिबुकमम्बु सुखं च वेश्म ।
जामित्रमस्तभवनं सुतभं त्रिकोणं
मेषूरणं दशममत्र च कर्म विद्यात् ॥ १८ ॥

चार केन्द्र १ । ४ । ७ । १० से उपरान्त २ । ५ । ८ । ११ इन भावोंका नाम पणफर है, इनसे उपरान्त ३ । ६ । ९ । १२ इनका नाम

आपोक्लिम है, चतुर्थ भावके नाम अंबु सुख वेश्म और सप्तम भावके नाम जामित्र अस्त पंचम भावका नाम त्रिकोण, दशम भावका नाम मेषूरण तथा दर्म है ॥ १८ ॥ (वसन्ततिलका)

होरादि राशियोंका बल और प्रमाण ।

होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता नान्यैश्च वीर्योत्कटा
केन्द्रस्था द्विपदादयोऽह्नि निशि च प्राप्ते च सन्ध्याद्वये ।
पूर्वार्द्धे विषयादयः कृतगुणा मानं प्रतीपं च तद्-
दुश्चिक्यं सहजं तपश्च नवमं त्वाद्यं त्रिकोणं च तत् ॥ १९ ॥

लग्नेश लग्नमें होवे अथवा लग्नको देखे अथवा बुध बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट होवे तो राशि वीर्योत्कट बलवान् होती है ऐसेही पापग्रहोंसे हीन बल और दोनों प्रकारसे युक्त होवे तो मध्य होती है " केन्द्रस्था द्विपदादयः" केन्द्रमें द्विपद राशि ३।७।६ बलवान् होती हैं, वैसेही पणफर २।५।८। ११। में, चतुष्पद १।२।५।९ और आपोक्लिम ३।६।९। १२ में, कीट राशि ४।८।१०।-११।१२ बलवान् होती हैं किसी आचार्यका मत है कि केन्द्रमें सभी राशि बलवान् होती हैं, पणफरमें मध्य बली और आपोक्लिममें हीन बली होती हैं और द्विपद राशि ३। ७।६ और धनका पूर्वार्द्ध, ये दिनको बलवान् हैं और चौपया राशि १ २।५ और मकरका पूर्वार्द्ध, धनका उत्तरार्द्ध ये रात्रिमें बलवान् हैं और कीट जलचर ४।८। ११। १२ और मकरका उत्तरार्द्ध ये सन्ध्या-कालमें बलवान् हैं । अब लग्न प्रमाण कहते हैं—विषयादयः ५।६।७ ८।९।१०। इन अङ्कोंको चौगुना करके मेषादिसे कन्या पर्यन्त और उलटे क्रमसे तुलादिसे मीन पर्यन्त लग्न भाग होते हैं उनको भी १० गुणा करनेसे लग्न खण्ड होते हैं पश्चात् अपने अपने देशोंके पलभ नुसार स्वस्वदेशीय लग्न खण्ड बनाये जाते हैं इनको विस्तार पूर्वक चक्रमें लिखा है इन अङ्कोंका प्रयोजन लग्नखण्डोंही पर नहीं है किन्तु ह्रस्व, दीर्घ, मध्-

मान लग्न राशियोंका है प्रश्नादिमें द्रव्यादिके रूप छोटा बड़ा वा लम्बा वा गोल वा चौखुंटा स्थूल वा सूक्ष्म इत्यादि विचारके काममें आते हैं और दुश्चिक्य सहज तृतीय भावका नाम है तप और त्रिकोण नवम भावका नाम है ॥ १९ ॥ (शार्दूलविक्रीडितम्)

लग्नमानचक्रम् .

१	२	३	४	५	६	क्रमराशि
१२	११	१०	९	८	७	व्युत्क्रमराशि
५	६	७	८	९	१०	लग्नमान
२०	२४	२८	३२	३६	४०	चतुर्गुणमान
२००	२४०	२८०	३००	३६०	४००	दशगुणानि लग्नख.

राशियोंका वर्ण ।

रक्तः श्वेतः शुकतनुनिभः पाटलो धूम्रपाण्डु-
श्चित्रः कृष्णः कनकसदृशः पिङ्गलः कर्बुरश्च ।
बभ्रुः स्वच्छः प्रथमभवनाद्येषु वर्णा प्लवत्वं
स्वाम्याशाख्यं दिनकरयुताद्भाद्द्वितीयं च वेशिः ॥ २० ॥

इति श्रीमदावन्तिकाचार्यवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके
राशिभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

मेष रक्त, वृष श्वेत, मिथुन शुकतनु अर्थात् हरित कर्क (पाटल) रक्तश्वेत मिला हुआ, सिंह (धूम्रपाण्डु) थोडा श्वेत धूम्र, कन्या चित्र अर्थात् अनेक वर्ण, तुला कृष्ण, वृश्चिक कनकसदृश, धन पिङ्गल अर्थात् पीला, मकर कर्बुर अर्थात् चितकबरा, कुम्भ बभ्रु नकुलकासा रंग, मीन मछलीकासा रंग । जिस राशिके स्वामीकी जो दिशा है वह उस राशिकी प्लव संज्ञा दिशा होती है। जैसे १ । ८ का स्वामी मंगल इसकी दिशा दक्षिण यह १ । ८ की प्लव संज्ञा दक्षिण है सविस्तार चक्रमें लिखाहै जिस भावमें सूर्य है उससे दूसरे भावकी संज्ञा वेशि है ॥ २० ॥ (मन्दाक्रान्ता)

राशी	१ ८	२ ७	६ ३	४	१२ ९	१० ११	५
राशिस्वा.	भौ०	शु०	बु०	चं०	बृ०	श०	सू०
प्रवादि०	दक्षिण	आग्न	उत्तर	वायव्य	ईशान्य	पश्चिम	पूर्व

भाव संज्ञा और प्रकारते-दोहा।

मूर्ति अङ्ग तनु उदय वपु, कल्प आदि इति नाम। धरन चिह्न साहस वयस, प्रथम लग्न इह काम॥ १ ॥ कोष अर्थ परिवारको, दूजे घरके नाम। स्वर्ण रत्न व्यापार रस यामें देखो धाम ॥ २ ॥ सहज भाव दुश्चिक्य पुनि, धाराकरम तिरतीय। भाई चाकर जीविका, यासों जानो जीय ॥ ३ ॥ मात सौख्य तूरज हिबुक, मित्र ग्राह जलस्थान। घर भूमी वाहन सुहृद, चौथे देखो मात ॥ ४ ॥ विद्या मन्तर पुत्र अरु, वाणी तनज सुनाम। विद्या बुद्धी सन्तती, यामें है अभिराम ॥ ५ ॥ छत अरि मातुल रोग इति, छठयेंके है नाम। क्रूर कर्म रिपु रोगभा, मूल पुरुष यह धाम ॥ ६ ॥ अस्त स्मर यामित्र मद, द्यून नाम घर सात। वनिता वणिज प्रवेश गम, चेत कहो सब बात ॥ ७ ॥ याम्य रंध्र लय मृत्यु अरु, आयू अष्टम भाव। दुर्ग शस्त्र जीवन वयस, या घर सोध बताव ॥ ८ ॥ धर्म पुण्य गुरु भाग्य तप मार्ग नवमके नाम। तीरथ शील सुधर्म अरु भाग्योदय अभिराम ॥ ९ ॥ राज्य तात आस्पद करम, मेषूरणके नाम। राजा आज्ञा गगन हैं, यही विचारो काम ॥ १० ॥ एकादशके नाम यह, आगम भव अरु आय। विद्या गुण सम्पत्कला, लाभ व हो सुहृद्भाय ॥ ११ ॥ अन्त रिष्फ द्वादश भवन कहैं महीधर नाम। हानि दान बन्धन हरन, याके हैं यह काम ॥ १२ ॥

इति श्रीमहीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां राशिभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

अथ ग्रहभेदाध्यायः २

काल नाम पुरुषका आत्मा आदिवर्णन ।

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुः सत्त्वं कुजो ज्ञो वचो
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः ।
राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारो बुधः
सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यः सहस्रांशुजः ॥ १ ॥

कालात्मा (समयरूपी) पुरुषके अङ्ग विभाग राशियोंके पहिले कहे गये हैं । अब ग्रह स्थानका वर्णन किया जाता है–सूर्य तो शरीर है, चन्द्रमा मन, मंगल सत्त्व, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान और सुख, शुक्र कामदेव, शनि दुःख, जो ग्रह बलवान् है उसका अंग पुष्ट और निर्बलका निर्बल, मंगल नेता अर्थात् सेनापति, बुध युवराज, बृहस्पति शुक्र मन्त्री हैं और शनि दूत । जो ग्रह फल देनेवाले हैं वह वैसेही अधिकारीके द्वारा फल देते हैं ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडितवृत्त)

सूर्यादिग्रहोंके नाम ।

हेलिस्सूर्यश्चन्द्रमाश्शीतरश्मिर्हेम्नो विज्ज्ञो बोधनश्चेन्दुपुत्रः ।
आरो वक्रः क्रूरदृक्चावनेयः कोणो मन्दः सूर्यपुत्रोऽसितश्च॥२

सूर्यका नाम हेलि, चन्द्रमाका शीतरश्मि, बुधके हेमन, वित, ज्ञ, बोधन और चन्द्रपुत्र मंगलका आर, वक्र, क्रूरदृक् और आवनेय, शनिके मन्द, कोण, सूर्यपुत्र और असित ॥ २ ॥ (शालिनी वृत्त)

जीवोऽङ्गिराः सुरगुरुर्वचसां पतीज्यः
शुक्रो भृगुर्भृगुसुतः सित आस्फुजिच्च ।
राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखी च केतुः
पर्यायमन्यमुपलभ्य वदेच्च लोकात् ॥ ३ ॥

बृहस्पतिके जीव, अङ्गिरा, सुरगुरु, वाचस्पति और इज्य, शुक्रके भृगु भृगुसुत, सित और आस्फुजित, राहुके–तम अगु और असुर, केतुके शिखीहै

सूर्यादि नवग्रहोंके नाम अनेक हैं पर ग्रन्थ बढनेके कारण यहां थोडेसे लिखे गये हैं। अन्य ग्रन्थ कोष एवं जातकादिसे जानने ॥ ३ ॥ (वसन्ततिलकावृत्त)

ग्रहोंके वर्ण।

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चाङ्गो रक्तगौरश्च वक्रः।
दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः॥४॥

सूर्य रक्त और श्याम अर्थात् पाटलीपुष्पके समान, चन्द्रमा गौर, मङ्गल छोटा शरीर और रक्त गौर अर्थात् कमलकासा रङ्ग, बुध दूर्वादलका रङ्ग, बृहस्पति गौर, शुक्र न अति गोरा न अति काला, शनि कृष्णशरीर है। जो ग्रह सबसे बलवान् हो उसकासा रंग मनुष्य या वस्तुमात्रका होता है ॥ ४ ॥ (शालिनीवृत्त)

वर्णस्वामी आदिकोंका वर्णन।

वर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरितव्यापीतचित्रासिता
वह्न्यम्ब्वग्निजकेशवेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथाः क्रमात्।
प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमःसौरेन्दुवित्सूरयः
क्षीणेन्द्वर्कमहीसुतार्कतनयाः पापा बुधस्तैर्युतः ॥ ५ ॥

प्रश्नमें जन्ममें वस्तु बतलानेके लिये वर्णस्वामी कहे जाते हैं–जैसे ताम्र वर्णका स्वामी सूर्य, श्वेतका चन्द्रमा, अतिरक्तका मंगल, हरितका स्वामी बुध, पीतका बृहस्पति, चित्र (अनेक रंगका) शुक्र, कृष्ण वस्तुका शनि ॥ अब ग्रहोंके स्वामी कहते हैं–सूर्यका स्वामी अग्नि, चन्द्रमाका अम्बु (जल), मंगलका कुमार (कार्त्तिकेय), बुधका विष्णु, बृहस्पतिका इन्द्र, शुक्रकी शची (इन्द्राणी), शनिका ब्रह्मा ॥ अब दिशाओंके स्वामी–पूर्वका स्वामी सूर्य, आग्नेयका शुक्र, दक्षिणका

मंगल, नैर्ऋत्यका राहु, पश्चिमका शनि, वायव्यका चन्द्रमा, उत्तरका बुध, ईशानका बृहस्पति । ग्रहोंकी शुभ पाप संज्ञा–" क्षीणचन्द्रमा सूर्य मङ्गल और शनि ये पापग्रह हैं और पूर्ण चंद्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभ ग्रह हैं पापयुक्त बुध पापही होता है " ॥ ५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

ग्रहोंके प्रकृति विभागआदि ।

बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ
शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः ।
शिखिभूखपयोमरुद्गणाना-
मधिपा भूमिसुतादयः क्रमेण ॥ ६ ॥

बुध शनि नपुंसक हैं, चन्द्रमा शुक्र स्त्री ग्रह हैं, शेष–सूर्य मङ्गल बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं, जन्म और प्रश्नमें बलवान् ग्रहका रूप कहना । अग्नि तत्त्वका स्वामी मंगल, भूमि तत्त्वका बुध, आकाश तत्त्वका बृहस्पति, जलतत्त्वका शुक्र, वायु तत्त्वका शनि ये तत्त्वोंके स्वामी हैं और इन ग्रहोंके तत्त्वभी यही हैं ॥ ६ ॥ (औपच्छन्दसिक)

ग्रहोंके ब्राह्मण आदि वर्णाधिपत्य और गुण ।

विप्रादितः शुक्रगुरू कुजार्कौ
शशी बुधश्चेत्यसितोऽन्त्यजानाम् ।
चन्द्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्की
यथाक्रमं सत्त्वरजस्तमांसि ॥ ७ ॥

शुक्र बृहस्पति ब्राह्मणोंके स्वामी, मंगल सूर्य क्षत्रियोंके, चंद्रमा वैश्योंके, बुध शूद्रोंके, शनि अन्त्यज (चाण्डालादि) का स्वामी, जन्ममें प्रश्नमें और चोर वगैरहके जाननेमें बलवान् ग्रहका वर्ण कहना, चन्द्र सूर्य बृहस्पति इनका सत्त्वगुण स्वभाव है, बुध शुक्रकी राजस प्रकृति, मंगल शनिका तमोगुण है ॥ ७ ॥ (उपजाति वृत्त)

४ से ७ श्लोकोंतक विस्तारपूर्वक प्रयोजन चक्र ।

ग्रहाः	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०
रङ्ग	रक्त श्याम	गौर	रक्त गौ	दूर्वा श्याम	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण
वर्ण रङ्ग	ताम्र	श्वेत	अति रक्त	हरित	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण
देवता पति	अग्नि	जल	कुमार	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	राक्षस
दिशा पति	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य
पाप शुभ	पाप	शुभक्षीणेपाप	पाप	शु.पाप यु.पाप	शुभ	शुभ	पाप	पाप
पुं. स्त्री नपुं०	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुं०	
महाभूतपति	अग्नि	जल	अग्नि	भूमि	आकाश	वायु	आकाश	
वर्णाधीश	राजा	वैश्य	राजा	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्म.	अंत्यज	अंत्यज राक्षस
सत्त्वादिगुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	राजस	सत्त्व	राजस	तम	

सूर्य और चन्द्रका स्वरूप ।

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सवितात्पकचः ।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक् ॥ ८ ॥

सूर्यका रूप—शहत समान रंगके नेत्र और चतुरस्र तनु अर्थात् चौखुंटा शरीर (दोनों हात लम्बे करके जितना हो उतनाही सिरसे पैरों तक), पित्त

स्वभाव और थोडे केश । चन्द्रमाका रूप–दुर्बल और गोल सब अङ्ग, वात कफ प्रकृति, बुद्धिमान्, मधुर वाणी, सुन्दर नेत्र ॥ ८ ॥ (त्रोटक वृत्त)

मंगल और बुधका रूप ।

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः।
श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥९॥

मङ्गल–क्रूरदृक्, नित्य युवावस्था, उदारता, पित्त स्वभाव, अति चपल, पतली कमरवाला । बुधका–सुन्दर गद्गद वाणी, वारंवार हँसनेवाला, ठट्ठा करनेवाला, मसखरा, वात पित्त कफ तीनों स्वभाव ॥ ९ ॥ (स्वागता)

गुरु और शुक्रका रूप ।

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः।
भृगुःसुखीकान्तवपुःसुलोचनःकफानिलात्माऽसितवक्रमूर्द्धजः॥१०॥

बृहस्पतिका रूप–बडा लम्बा शरीर, शिरके केश और नेत्र भूरे, श्रेष्ठ बुद्धि, कफ स्वभाव । शुक्र–सुखी, सुन्दर रमणीय शरीर, सुन्दर नेत्र, वायु कफ प्रकृति, शिरके बाल काले घुंघराले (?) ॥ १० ॥ (वंशस्थ)

शनिका रूप और ग्रहोंके धातुवर्णन ।

मन्दोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा
मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ११ ॥

शनिका रूप--आलसी, कपिलनेत्र, पतला और ऊँचा शरीर, नख और दांत मोटे, रूखे केस, वायु स्वभाव । अब इनके धातु कहते हैं, शनिका नस (नसें), सूर्यका हड्डी, चन्द्रमाका रुधिर, बुधका त्वचा, शुक्रकी वीर्य, बृहस्पतिका मेदा, मंगलका मज्जा सार है ॥ ११ ॥ (वसंततिलका)

ग्रहोंके स्थान वस्त्र आदि ।

देवाम्ब्वग्निविहारकोशशयनक्षित्युत्करेशाः क्रमात्
वस्त्रं स्थूलमभुक्तमग्निकहतं मध्यं दृढं स्फाटितम् ।

तार्म्रं स्यान्मणिहेमयुक्तिरजतान्यर्काच्च मुक्तायसी
द्रेष्काणैः शिशिरादयः शशुरुचज्ञाग्वादिषूद्यत्सु वा ॥ १२ ॥

इनके स्थान–सूर्यका देव स्थान, चन्द्रमाका जल स्थान, मंगलका अग्नि स्थान, बुधका क्रीडा स्थान, बृहस्पतिका भण्डारस्थान, शुक्रका शयन स्थान, शनिका ऊपर स्थान, । इनके वस्त्र–सूर्यका मोटा, चन्द्रमाका नवीन, मंगलका एक कोना (दग्ध) जला हुआ, बुधका जलसे निचोडा बृहस्पतिका न अति नया और न अति पुराना, शुक्रका मजबूत, शनीका जीर्ण । इनकी धातु–सूर्यका तांबा, चन्द्रमाका मणि, मंगलका सुवर्ण, बुधका कांशी गुरुका चांदी, शुक्रका मोती, शनिका लोहा । इनके ऋतु–शनिकी शिशिर, शुक्रकी वसन्त, मंगलकी ग्रीष्म, चन्द्रमाकी वर्षा, बुधकी शरद, गुरुकी हेमन्त, सूर्यकी ग्रीष्म । यह विचार नष्टजातक और चौर विचारमें काम आता है । लग्नमें जो ग्रह हो उसके द्रेष्काणपतिकी ऋतु कहते हैं–लग्नमें बहुत ग्रह हों तो जो उनमें बलवान् हो, जब लग्नमें कोई ग्रह न हो तो लग्नमें जिसका द्रेष्काण है उसकी ऋतु जानना॥ १२॥(शार्दूलविक्रीडित)

ग्रहोंकी दृष्टि और उनका फल ।

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः ।
रविजामरेज्यरुधिरापरे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेऽधिकाः १३

ग्रहदृष्टि–जिस भावमें ग्रह बैठा है उससे (त्रि) ३ (दश) १० इन स्थानोंमें (पाद) चौथाई दृष्टि, त्रिकोण ९ । ५ इनमें आधी दृष्टि, चतुरस्र ४ । ८ इनमें ३ भाग दृष्टि, सप्तममें पूर्ण दृष्टि सभी ग्रह देखते हैं। कोई ऐसा अर्थ कहते हैं कि रविज (शनि), दृष्टि फल (पाद) चौथाई देता है. अमरेज्य (बृहस्पति) आधा फल, रुधिर (मंगल) तीन भाग फल, अपरे (और ग्रह) च० बु० शु० सूर्य ये पूर्ण फल दृष्टिका देते हैं और बहुसम्मत यह अर्थ है कि शनि ३ । १० भावमें दृष्टिका पूर्ण फल देता है और बृहस्पति ९ । ५ भावमें, मंगल ४ । ८ भावमें और ग्रह चं० बु० शु० सू० ये सप्तमभावमें दृष्टिका पूर्ण फल देते हैं ॥ १३ ॥ (प्रहर्षिणी)

ग्रहाणां स्थानादिचक्रम् ।

	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
ग्रहस्थान	देवालय	जलाशय	अग्निस्थान	क्रीडाभूमि	भण्डार	शयन	स्नान
वस्त्र	मोटा	नया	दग्ध	जलहत	अदृढ	दृढ	स्फाटित
धातु	ताम्र	मणि	सुवर्ण	रौप्य कांस्य	सुवर्ण	मोती	लोह शीश
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्	हेमन्त	वसंत	शिशिर
निसर्गदृष्टि	७	७	४।८	७	५।९	७	३।१०
रस	कटु	लवण	तीता	मिश्र	मीठा	[illegible]	क्वाथ

ग्रहोंके काल आदिका निर्देश ।

अयनक्षणवासरर्तवो मासोऽर्द्धञ्च समाश्च भास्करात् ।
कटुकलवणतिक्तमिश्रिता मधुराम्लौ च कषाय इत्यपि ॥ १४ ॥

सूर्यसे अयन–उत्तरायण, दक्षिणायन, चन्द्रमासे मुहूर्त, मङ्गलसे दिन, बुधसे ऋतु, बृहस्पतिसे महीना, शुक्रसे पक्ष, शनिसे वर्ष कहते हैं। चोरप्रश्न, यात्रा, युद्ध, लाभ, गर्भाधान, कार्यसिद्धि, प्रवासीका आगम निर्गम इतने कामोंमें यह विचार है जैसा लग्नमें जो नवांश है उसका स्वामी उस नवांशसे जितने नवांश पर स्थित है उतने संख्यक अयनादि काल ग्रहवशसे उस कार्यको कहना। बुद्धिमान् इतनेहीके विचारसे नष्ट जन्म पत्री बना लेते हैं। अब ग्रहोंके रस कहते हैं–सूर्यका कडुवा, चन्द्रमाका लवण (सलोना) मंगलका तीता, बुधका मिला हुआ, बृहस्पतिका मीठा, शुक्रका अम्ल (काञ्जिक आदिक), शनिका कषाय (कसैला) ॥ १४ ॥ (वैतालीय)

सूर्यादिकोंके नैसर्गिक मित्र शत्रु कथन ।

जीवो जीवबुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमाः क्रमात्
वीन्द्वर्का विकुजेन्दवश्च सुहृदः केषाञ्चिदेवं मतम् ।

सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वान्त्यधीधर्मपाः
स्वोच्चायुः सुखपाः स्वलक्षणविधेर्नान्यैर्विरोधादिति ॥ १५ ॥

सूर्यके बृहस्पति मित्र, चन्द्रमाके बृहस्पति, बुध, मंगलके शुक्र, बुध, बुधके सूर्य विना सब ग्रह मित्र, बृहस्पतिके विना मंगलके सब ग्रह मित्र, शुक्रके विना सूर्य चन्द्रमाके सब ग्रह मित्र; शनिके चन्द्र भौम विना सब ग्रह मित्र हैं, यह मत किसीका है। सत्याचार्यके मतसे सभी ग्रहोंके अपने अपने मूल त्रिकोण जो पहिले कहे हैं उनसे दूसरे बारहवें पांचवें नवें आठवें चौथे राशिके और अपनी उच्च राशिके स्वामी मित्र होते हैं और सब शत्रु हैं। जैसे मंगलका मेष मूलत्रिकोण है इससे चौथेका स्वामी चन्द्रमा, पांचवेंका सूर्य, नवीं बारहवींका स्वामी बृहस्पति ये मित्र हुये मेषसे ३। ६ राशिका पति बुध अनुक्तसे शत्रु, मेषसे २। ७ का शुक्र इनमें २ उक्त ७ अनुक्त होनेसे शुक्र सम मेषसे १०। ११ अनुक्त हैं इनमें १० उच्च होनेसे उक्त हुवा ११ अनुक्त रहा उक्तानुक्त होनेसे शनि सम, जहां दो प्रकार उक्त सो मित्र दो प्रकार अनुक्त शत्रु उक्त अनुक्त सो सम, इसी प्रकार सब ग्रहोंका जानो यह अर्थ स्वलक्षणविधि इस पदका है ॥ १५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्त)

सत्याचार्योक्त मित्र शत्रु आदिकथन।

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्कौ समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुस्समाश्चापरे ॥ १६ ॥

अब मुख्यतासे मित्र सम शत्रु कहते हैं सूर्यके शनि शुक्र शत्रु, बुध सम चं० मं० बृ० मित्र, चंद्रमाके सूर्य बुध मित्र और मं० बृ० श० सम, शत्रु कोई नहीं, मंगलके बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य मित्र, बुध शत्रु, शुक्र शनि सम। बुधके सूर्य शुक्र मित्र, चन्द्र शत्रु, मं० बृ० श० सम ॥ १६ ॥ (शा० वि०)

सूरेस्सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समस्सुरगुरुस्सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ताः स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥१७॥

बृहस्पतिके बुध शुक्र शत्रु, शनि सम, सू० चं० मं० मित्र, शुक्रके बुध शनि मित्र, मङ्गल बृहस्पति सम, सूर्य चन्द्र मङ्गल शत्रु, शनिके शुक्र बुध मित्र, बृहस्पति सम, सूर्य चन्द्र मङ्गल शत्रु, ये दो श्लोक पुनः उदाहरणके निमित्त कहे गये हैं मूल प्रयोजन वही है जो पहिले "त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वांत्यधीधर्मपाः" कहे हैं ॥ १७ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

तात्कालिक मित्रामित्रादि ।

अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिता-
स्तत्काले सुहृदः स्वातुङ्गभमनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा ।
व्येकानुक्तभपान्सुहृत्समरिपून्सञ्चिन्त्य नैसर्गिकां-
स्तत्काले च पुनस्तु तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत् ॥ १८ ॥

जन्मादि समयमें एक ग्रहसे दूसरा ग्रह दूसरे बारहवें ग्यरहवें तीसरे दशवें चौथे स्थानोंमें हो तो वे आपसमें मित्र होते हैं और जो ग्रह जिसके उच्चराशिमें बैठा है वह उसका तत्काल मित्र होता है यह भी किसीका मत है और सब शत्रु होते हैं मैत्री एवं तत्कालमैत्रीमें जो दोनों जगह मित्र हैं वह अधिमित्र हुवा ॥ १८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

ग्रहबल ।

स्वोच्चसुहृत्स्वत्रिकोणनवांशैः स्थानबलं स्वगृहोपगतैश्च ।
दिक्षु बुधाङ्गिरसौ रविभौमौ सूर्यसुतः सितशीतकरौ च ॥ १९ ॥

अपने उच्चमें तत्काल मित्र घरमें अपने मूलत्रिकोणमें वा अपने नवांशकमें अपनी राशिमें जो ग्रह स्थित है वह स्थानबली कहलाता है। अब दिग्बल कहते हैं—(दिक्षु) लग्नादि ४ दिशा केन्द्रोंमें जैसे लग्नमें बुध

बृहस्पति, चौथे शुक्र चन्द्रमा, सप्तम शनि, दशम सूर्य मङ्गल बली होते हैं, उक्त स्थानोंसे सातवीं जगह हीनबली बीचमें अनुपात करते हैं इस प्रकार दिग्बल होता है ॥ १९ ॥ (दोधकवृत्त)

चेष्टाबल।

उदगयने रविशीतमयूखौ वक्रसमागमगाः परिशेषाः।
विपुलकरा युधि चोत्तरसंस्थाश्चेष्टितवीर्ययुताःपरिकल्प्याः ॥ २०

उत्तरायण १० । ११ । १२ । १ । २ । ३ राशियोंके सूर्यमें सूर्य चन्द्रमा चेष्टाबली होते हैं और भौमादि ग्रह (वक्रसमागमगाः) समागम चन्द्रमाके साथ होनेसे तथा वक्रगतिमें चेष्टाबल पाते हैं अथवा अन्योन्य युद्धमें जो जीते वह चेष्टाबल पाता है युद्धमें जीतके लक्षण ये हैं कि, जो ग्रह युद्ध करके उत्तर शर होवै और विपुलकर अर्थात् कान्ति तेज होवे यद्वा शीघ्र केन्द्रके द्वितीय तृतीय पदमें होवै क्योंकि वह वक्र होनेके समीप रहता है वह बलवान् होता है, जो ग्रह हारता है वह दक्षिण शर और कम्पायमान माडा विकराल कान्तिरहित विरूप रहता है वह चेष्टाबल नहीं पाता और यह भी स्मरण रखना चाहिये कि शुक्र हारके दक्षिण शरमें भी कान्तिमान् ही रहता है ॥ २० ॥ (दोधक)

कालबल और नैसर्गिक बल।

निशि शशिकुजसौराः सर्वदा ज्ञोऽह्नि चान्ये
बहुलसितगताः स्युः क्रूरसौम्याः क्रमेण।
द्व्ययनदिवसहोरामासपैः कालवीर्य
शकुबुगुशुचराद्या वृद्धितो वीर्यवन्तः ॥ २१ ॥

इत्यावन्तिकाचार्यवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके
ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

चन्द्रमा मंगल शनि रात्रिमें और रवि बृहस्पतिशुक्र ये दिनमें और बुध दिनरात दोनोंमें बल पाता है। तथा पापग्रह सूर्य मं० श० कृष्ण

पक्षमें शुभग्रह च० बु० बृ० शु० शुक्ल पक्षमें बल पाते हैं । जिस ग्रहका जो वर्ष है वैसाही अपने अपने वार, काल, होरा, मासमें सभी बल पाते हैं। नैसर्गिक बल शनिसे उलटे क्रमसे उत्तरोत्तर सभी बली हैं जैसे शनिसे अधिक बली मंगल, मंगलसे बुध, बुधसे बृहस्पति, इससे शुक्र, शुक्रसे चन्द्रमा चंद्रमासे (रवि) सूर्य क्रमसे बल पाते हैं यह नैसर्गिक बल है ये षड्वर्ग केशवीप्रभृति ग्रन्थोंमें गणित क्रमपूर्वक कठिन हैं यहां अति सुगम रीतिसे कहे गये हैं. बुद्धिका श्रममात्र चाहिये ॥ २१ ॥ (मालिनी)

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

वियोनिजन्माध्यायः३.

वियोनिजन्मके निश्चयज्ञान ।

क्रूरग्रहैः सुबलिभिर्विबलैश्च सौम्यैः क्लीबे चतुष्टयगते तदवेक्षणाद्वा ।
चन्द्रोपगद्विरसभागसमानरूपं सत्त्वं वदेद्यदि भवेत्स वियोनिसंज्ञा ॥

प्रश्न वा जन्म समयमें जिस द्वादशांशमें चन्द्रमा होवे उसके समान वियोनिका जन्म बतलाना, वियोनि कीट पक्षी स्थावर वृक्षादियोंको कहते हैं—जैसे मेष द्वादशांशमें—चन्द्रमा हो तो बकरा भेडी मेंढाका जन्म कहना । वृषद्वादशांशमें गौ बैल भैंसाका जन्म, कर्कमें कछुवाआदि, सिंहमें सिंह मृग कुत्ता बिल्ली आदि, वृश्चिकमें सर्प बिच्छू आदि, धन उत्तरार्द्धमें मेंडक छिपकली आदि, मीनमें मत्स्यादि, इतना विचार चन्द्रद्वादशांशका तब चाहिये जब कुण्डलीमें वियोनि योग देख पडें । वह योग यह है—पाप ग्रह बलवान् होवें ओर शुभग्रह निर्बल होवें (शनि बुध) नपुंसक ग्रह केन्द्रमें होवें यह एक योग है। चन्द्रमा क्रूर द्वादशांशमें होवे शुभग्रह निर्बल होवे बुध शनि लग्न चन्द्रमाको देखें यह दूसरा योग है । इन योगोंके अभावमें चन्द्रमा किसी द्वादशांशमें हो मनुष्यका ही जन्म कहना॥ १॥ (वसन्ततिलका)

पापा बलिनः स्वभागगाः पारक्ये विबलाश्च शोभनाः।
लग्नं च वियोनिसंज्ञकं दृष्ट्वा वापि वियोनिमादिशेत् ॥ २ ॥

पापग्रह बलवान् अपने नवांशमें होवैं शुभ ग्रह हीनवली पर नवांशमें होवैं और लग्न वियोनिसंज्ञक मेष वृषादि पूर्वोक्त होवे तो वियोनि जन्म चन्द्रद्वादशांशके समान कहना यह तीसरा योग है ॥ २ ॥ (वैतालीय)

चतुष्पदोंके राश्यात्मक अंगविभाग।

क्रियः शिरो वक्त्रगलो वृषोऽन्ये पादांशकं पृष्ठमुरोऽथ पार्श्वे।
कुक्षिस्त्वपानाङ्घ्र्यथ मेढ्रमुष्कौ स्फिक्पुच्छमित्याह चतुष्पदाङ्गे॥३॥

जैसा पहिले कालाङ्ग राशिविभाग मनुष्यके शरीरमें कहा है वैसाही पशुके शरीरमेंभी राशि विभाग कहते हैं--पशु चौपाया उपलक्षण मात्र हैं तिर्यगादि सभीके जानने चाहिये। पक्षियोंके अग्रपादके स्थानमें पक्षपाली पंख निकलनेके स्थान जो बाहु सरीखोंमें वे गिने जाते हैं। अङ्ग विभाग-मेष शिर, वृष मुख व कण्ठ, मिथुन अगले पैर व कन्धा, कर्क पीठ, सिंह चूतड व छाती, कन्या कुक्षि, तुला पुच्छमूल, वृश्चिक गुदा, धन पिछले पैर, मकर लिंग वृषण, कुम्भ स्फिज पेट दोनों तर्फ, मीन पुच्छ ॥३॥ (उपजाति)

वियोनिगतवर्ण ज्ञान।

लग्नांशकाद्ग्रहयोगेक्षणाद्वा वर्णान् वदेद्बलयुक्ताद्वियोनौ।
दृष्ट्या समानं प्रवदेत् स्वसंख्यया रेखां वदेत् स्मरसंस्थैश्च पृष्ठे॥ ४ ॥

लग्नमें जो ग्रह हो उसका वर्ण ताम्रसितातिरिक्तेत्यादि वियोनिजीवका वा नष्टादि वस्तुका रंग कहना। जो लग्नमें ग्रह न हो तो जो ग्रह लग्नको पूर्ण देखै उसका वर्ण कहना जब लग्न किसीसे युक्त दृष्ट न होतो लग्नमें जो नवांश है उसका रङ्ग, जब लग्नमें बहुत ग्रह हो तो बहुतही रङ्ग कहना उनमें जो बलवान् है उसका रङ्ग अधिक कहना, स्वस्वामियुक्त दृष्ट राशिका नवांश लग्नमें हो तो सबको छोडकर उसीका रङ्ग कहना, लग्नमें सप्तम स्थानमें बलवान् ग्रह हो तो वियोनि जीवके पीठ पर रेखादि चिह्न

कहना, यहां ग्रहोंके रङ्ग बृ० पीला, चं० शु० विचित्र, सू० मं रक्त, श० कृष्ण, बु० हरा इस प्रकार जानना ॥ ४ ॥ (वैश्वदेवी)

पक्षिजन्मका ज्ञान ।

खगे दृक्काणे बलसंयुतेन वा ग्रहेण युक्ते चरभांशकोदये ।
बुधांशके वा विहगाःस्थलाम्बुजाः शनैश्चरेन्दीक्षणयोगसम्भवाः॥५॥

पक्षी द्रेष्काण लग्नमें होवे तो पक्षीका जन्म कहना । यहां भी दो भेद हैं उस द्रेष्काण पर शनिकी दृष्टि वा उसी पर स्थित होवे तो स्थलचारी पक्षी और चन्द्रमा युत वा दृष्टि होवे तो जलचारी पक्षी कहना, पक्षी द्रेष्काण मिथुनका दूसरा द्रेष्काण सिंहका प्रथम तुलाका दूसरा कुम्भका प्रथम यह है.अन्ययोग (चरभांशकोदये) लग्नमें चर नवांश हो बलवान् ग्रहसे युक्त दृष्ट हो शनिसे युक्त दृष्ट हो तो स्थलजलपक्षी और बुधका नवांश लग्नमें हो बली ग्रह और शनि ये युति दृष्ट हो तो स्थलपक्षी चन्द्रमासे युक्त दृष्ट हो तो जलपक्षी ॥ ५ ॥ (वंशस्थवृत्त)

वृक्षके जन्मका ज्ञान ।

होरेन्दुसूरिरविभिर्विबलैस्तरूणां तोयस्थले तरुभवांशकृतःप्रभेदः ।
लग्नाद्ग्रहस्थलजलर्क्षपतिस्तुयावांस्तावन्तएवतरवः स्थलतोयजाताः ६

लग्न चन्द्रमा बृहस्पति सूर्य निर्बल हों तो प्रश्नमें वृक्ष जन्म कहना, राश्यंशक जलराशि हो तो जलजवृक्ष, स्थलराशि हो तो स्थलजवृक्ष कहना और लग्नांश स्थलजलचारी जैसा हो उसका स्वामी लग्नसे जितने स्थानमें हो उतनीही संख्या वृक्षोंकी कहते हैं विशेष यह है कि उच्च वक्र स्वगृह ग्रहसे तिगुनी अपने अंशकमें द्विगुनी वृक्षसंख्या कहनी ॥ ६ ॥ (वसंततिलका)

वृक्षविशेषका ज्ञान ।

अन्तस्सारान् जनयति रविर्दुर्भगान् सूर्यसूनुः
क्षीरोपेतांस्तुहिनकिरणः कण्टकाढ्यांश्च भौमः ।

वागीशज्ञौ सफलविफलान् पुष्पवृक्षांश्च शुक्रः
स्निग्धानिन्दुः कटुकविटपान् भूमिपुत्रश्च भूयः ॥ ७ ॥

लग्नांशका पति सूर्य हो तो (अन्तःसार) भीतरकी लकडी पुष्ट अर्थात् शिंशपा (शीशम) आदिवृक्ष कहना शनि हो तो (दुर्भगान्) देखनेमें बुरे कुश आदि, चन्द्रमा क्षीरयुक्त ईख आदि, भौम कण्टक वृक्ष खैरआदि, बृहस्पति सफल आम आदि, बुध विफल जो केवल पुष्पमात्र देते हैं, शुक्र पुष्पवृक्ष जात्यादि और चन्द्रमा मलाईदार चीड, देवदारु आदिभी जानता है मङ्गल कटुक भिलावा नीम आदि ॥ ७ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

शुभाशुभ वृक्ष और भूमिज्ञान।

शुभोऽशुभर्क्षे रुचिरं कुभूमिजं करोति वृक्षं विपरीतमन्यथा ।
परांशके यावति विच्युतस्स्वकाद्भवन्ति तुल्यास्तरवस्तथाविधाः ॥८

इति बृहज्जातकेऽध्यायस्तृतीयः ॥ ३

शुभग्रह अशुभ राशिमें पूर्वोक्त अंशेश हो तो रमणीय वृक्ष दुष्ट भूमिमें उत्पन्न होवे, जो पापग्रह शुभराशिनवांशमें होवे तो अशोभन वृक्ष सुन्दर भूमिमें होवे शुभसे शुभ, अशुभसे अशुभ वृक्ष तथा भूमि कहना यह ग्रह अपने अंशसे चलके जितने अंशपरगया हो उतनेही प्रकार (वृक्षजाति) कहते हैं ॥ ८ ॥(वंशस्थ वृत्त)

इति महीधरकृतबृहज्जातकभाषाटीकायां वियोनि-
जन्माध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

निषेकाध्यायः ४

ऋतु निरूपण तथा संयोग ज्ञान ।

कुजेन्दुहेतुः प्रतिमासमार्तवं गते तु पीडर्क्षमनुष्णदीधितौ ।
अतोऽन्यथास्ते शुभपुंग्रहेक्षिते नरेण संयोगमुपैति कामिनी ॥ १ ॥

जो स्त्रियोंका महीने महीने आर्तव रजोदर्शन होता है उसके हेतु चन्द्रमा और मङ्गल है क्योंकि, मङ्गल रुधिरमय पित्त और चन्द्रमा जलमय हैं जिस रजोदर्शनमें स्त्रीकी जन्मराशिसे अनुपचय ३ । ६ । १० । ११ इनसे रहित १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ ।१२ इनमें चन्द्रमा हो और गोचरमें मङ्गलकी पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसे समयका रज गर्भधारणयोग्य होता है । चन्द्रमा उपचय राशिमें वा भौमदृष्टि रहितमें रज निष्फल होता है, इस समयमें पुरुषकाभी योग चाहिये कि, पुरुषकी जन्मराशीसे चंद्रमा उपचय ३ । ६ । १० । ११ में हो बृहस्पति पूर्ण देखे ऐसे समयके स्त्री पुरुष संयोगमें अवश्य गर्भधारण होता है इत्यादि विचार बाल वृद्ध रोगी नपुंसक पुरुष और बाँझ स्त्रीसे अन्यको है ॥ १ ॥ (वंशस्थ)

लग्नसे संगम परिज्ञान ।

यथास्तराशिर्मिथुनं समेति तथैव वाच्यो मिथुनप्रयोगः ।
असद्ग्रहालोकितसंयुतेऽस्ते सरोष इष्टैस्सविलासहासः ॥ २ ॥

प्रश्न अथवा आधान लग्नसे सप्तमभावमें जो राशि हैं उसीकी नाईं मैथुन हुआ कहना, जैसे सप्तममें मेष होवे तो बकराकी नाईं मैथुन हुआ कहना ऐसेही सभीका समझना चाहिये और सप्तममें पाप ग्रह हो वा पापदृष्ट हो तो सरोप गुस्से झगडेमें या बलात्कारसे मैथुन और शुभग्रह हों वा सप्तममें शुभदृष्टि हो तो विलास हास सुन्दर ठठ्ठा खेलसे प्रेमपूर्वक संयोग कहना ॥ २ ॥ (इन्द्रवज्रा)

गर्भसंभवासंभवज्ञान।

रवीन्दुशुक्रावनिजैः स्वभावगैर्गुरौ त्रिकोणोदयसंस्थितेऽपि वा।
भवत्यपत्यं हि विबीजिनामिमे करा हिमांशोर्विदृशामिवाफलाः॥३॥

आधान वा प्रश्नकालमें सूर्य चन्द्रमा शुक्र मङ्गल अपने अपने नवांशकोंमें हों तो अवश्य गर्भ रहा है कहना, अथवा ये सब ऐसे नहीं तौ भी पुरुषके उपचयमें सूर्य शुक्र अपने नवांशमें हों तौ गर्भसम्भव कहना अथवा स्त्रीके उपचयमें मङ्गल चन्द्रमा अपने अपने नवांशमें हों तौ भी गर्भ सम्भव कहना, अथवा बृहस्पति लग्न नवम पञ्चममें हों तौ भी गर्भसम्भव कहना और जो नपुंसक है उसको ये सब योग निष्फल हैं जैसे चन्द्रमाके सुन्दर अमृतमय किरणोंकी शोभा अन्धेको विफल है इतने सभी योग सम्बन्ध विचारके जो पुरुष ऋतुसमयमें स्त्री गमन करते हैं उनका अवश्य गर्भ रहता है॥ ३॥ (वंशस्थ वृत्त)

प्रसूतिसक्का शुभाशुभ।

दिवाकरेन्द्वोः स्मरगौ कुजार्कजौ गदप्रदौ पुङ्गल्योषितोस्तदा।
व्ययस्वगौ मृत्युकरौ युतौ तथा तदेकदृष्ट्या मरणायकल्पितौ॥४॥

आधान वा प्रश्न लग्नमें सूर्यसे सप्तमस्थानमें मङ्गल शनि हों तो अपने महीनेमें ग्रह पुरुषको कष्ट देता है, चन्द्रमासे सप्तम श० मं० हों तो उसी प्रकार स्त्रीको कष्ट देता है और सूर्यसे दूसरे बारहवें शनि मङ्गल हो वो पुरुषको अपने उक्त महीनेमें मृत्यु देते हैं ऐसेही चन्द्रमा २। १२ भावमें शनि मङ्गल हों तो स्त्रीको मृत्यु देते हैं, ऐसेही सूर्य मं० श० मेंसे एकसे युक्त एकसे दृष्ट हो तो पुरुषको मृत्यु चन्द्रमा मं० श० मेंसे एकसे युक्त एकसे दृष्ट हो तो स्त्रीमरण देते हैं महीनोंकी गिनती आगे कहेंगे॥४॥ (वंशस्थवृत्त)

पिता आदिका शुभाशुभ।

दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययात्।
पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ॥५॥

दिनके आधानमें सूर्य पिता, शनि ताऊ चाचा, शुक्र माता, चन्द्रमा गातृष्वसृ (माकी बहिन) और रातके आधानमें शनि पिता, सूर्य ताऊ चाचा, चन्द्रमा माता, शुक्र माकी बहिन। ये संज्ञा इस कारणसे हैं कि दिनके आधानमें सूर्य विषम राशिमें पिताको शुभ रात्रिके आधानमें पितृव्यको शुभ सम राशिमें हो तो दिनके गर्भमें माताको शुभ, रातके गर्भमें मांकी बहिनको शुभ और शनि विषम राशिमें रातके गर्भमें पिताको शुभ दिनकेमें (पितृव्य) ताऊ चाचाको शुभ, चन्द्रमा समराशिमें रातकेमें माताको शुभ, दिनकेमें मांकी बहिनको शुभ, शुक्र दिनके गर्भमें समराशिमें माताको शुभ रातकेमें मांकी बहिनको इत्यादि उक्त राशि व दिन रातके विपरीत होनेमें शुभाशुभ फल भी उलटा कहना ॥ ५ ॥ (वंशस्थ वृत्त)

मातृके मरणमें दो योग।

अभिलषद्भिरुदयर्क्षमसद्भिर्मरणमेति शुभदृष्टिमयाते ।
उदयराशिसहिते च यमे स्त्री विगलितोडुपतिभूसुतदृष्टे ॥ ६ ॥

लग्न राशिमें पापग्रह आनेवाला हो और लग्नको कोई शुभग्रह न देखे तो स्त्री गर्भिणी मृत्यु पाती है, दूसरा योग यह है कि, शनि लग्नमें हो मङ्गल और क्षीण चन्द्रमा पूर्ण देखें तो गर्भिणी मृत्यु पावै ॥ ६ ॥ (जगती भेद)

इसी विषयमें अन्य योग।

पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेन्दू न च सौम्यवीक्षितौ ।
युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते ॥ ७ ॥

लग्न और चन्द्रमा दोनों अथवा एक भी राशियोंसे वा अंशोंसे पापग्रहोंके बीच हों और शुभ ग्रह न देखें तो गर्भिणी स्त्री और उसका गर्भ एकही वार अथवा अलग अलग नाश पावे ॥ ७ ॥ (वैतालीयवृत्त)

क्रूरैः शशिनश्चतुर्थगैर्लग्नाद्वा निधनाश्रिते कुजे ।
बन्ध्वन्तगयोः कुजार्कयोः क्षीणेन्दौ निधनाय पूर्ववत् ॥ ८ ॥

पापग्रह चन्द्रमासे चतुर्थ हों और अष्टम स्थानमें मङ्गल हो एक योग अथवा लग्नसे चौथे पापग्रह और अष्टम मंगल दूसरा योग अथवा लग्नसे

चौथा मंगल बारहवां सूर्य और चन्द्रमा क्षीण हो यह तीसरा योग । इन तीनोंका वही पहिलेवाला फल सगर्भा स्त्रीका नाशक है ॥ ८ ॥(वैतालीयवृत्त)

शस्त्रसे मरने और गर्भस्रावका योग ।

उदयास्तगयोः कुजार्कयोर्निधनं शस्त्रकृतं वदेत्तदा ।
मासाधिपतौ निपीडिते तत्क ले स्रवणं समादिशेत् ॥ ९ ॥

लग्नमें मंगल सप्तम स्थानमें सूर्य होवे तो शस्त्रसे गर्भिणीका मरण होवे और मासाधिपति ग्रह निपीडित हो तो उस महीनेमें गर्भस्राव होवे ग्रह युद्धमें पराजित ग्रह और केतुसे धूमित ग्रह और उल्कापातवाला ग्रह और सूर्य; चन्द्रमा पापयुक्त अथवा ग्रहणसे युक्त इतने लक्षण पीडितके हैं ॥ ९ ॥ (वैतालीय वृत्तम्)

गर्भके पोषणका ज्ञान ।

शशाङ्कलग्नोपगतैः शुभग्रहैस्त्रिकोणजायार्थसुखास्पदस्थितैः ।
तृतीयलाभर्क्षगतैश्च पापकैः सुखी च गर्भो रविणा निरीक्षितः॥ १०

चन्द्रामाके साथ अथवा लग्नमें शुभग्रह हों अथवा लग्न चन्द्र शुभयुक्त हो अथवा त्रिकोण ९ । ५ जाया ७ अर्थ २ सुख ४ आस्पद १० इन स्थानोंमें चन्द्रमासे वा लग्नसे शुभग्रह हों और लग्न चन्द्रमासे पापग्रह तृतीय ३ लाभ ११ स्थानमें हों और लग्नको अथवा चन्द्रमाको सूर्य देखे तो गर्भ पुष्ट और सुखी होता है, कोई सूर्यके स्थानमें "गुरुणा" ऐसा पाठ करके बृहस्पतिकी दृष्टि कहते हैं सो अयुक्त है जिसलिये आदिके ग्रंथोंमेंभी (सारावली आदि) में "निरीक्षितो रविणा" ऐसही पाठ है ॥ १० ॥ (वंशस्थवृत्त)

बालक या बालिका ।

ओजर्क्षे पुरुषांशके सुबलिभिर्लग्नार्कगुर्विन्दुभिः
पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु वा योषितः ।
गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं
द्व्यङ्गस्था बुधवीक्षिताश्च यमलौ कुर्वन्ति पक्षे स्वके ॥ ११ ॥

बलवान् लग्न सूर्य बृहस्पति चन्द्रमा विषमराशि विषम नवांशकोंमें आधान वा प्रश्नकालमें हों तो पुरुष जन्मेगा कहना, जो ये ग्रह समराशि सम नवांशकोंमें हों तो कन्याजन्म कहना, अथवा बृहस्पति सूर्य विषम-राशिमें बलिष्ठ हो तो पुरुषजन्म और चं० शु० मं० बलवान् समराशिमें हों तो कन्याजन्म कहना यहां नवांशका भी काम नहीं और द्विस्वभाव राशि द्विस्वभाव नवांशमें बृहस्पति सूर्य शुक्र मङ्गल हों और बुधकी दृष्टि हो तो यमल (दो) जन्मेंगे कहना, इनमें भी पुरुषांशकोंमें सभी हों तो दो पुरुष, सभी स्त्री नवांशकोंमें हों तो दो कन्या, कुछ पुरुषांशमें कुछ स्त्री अंशकमें हों तो १ कन्या १ पुत्रका जन्म कहना बली ग्रह सर्वत्र पूरा फल देता है ॥ ११ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

पुत्र जन्मके अन्य योग ।

विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात् ।
प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोऽङ्गना वा॥१२॥

शनैश्चर लग्न छोडकर विषम भाव ३।५।९।११ में हो तो पुरुषजन्म कहना, समभावमें कन्या जन्म, जो पु० क० योग कहे हैं इनमें कोई योग कन्या जन्मका कोई पुरुषजन्मका जब पडे तो ग्रहोंका बल देखना जो ग्रह अधिक बली हो उसका फल कहना ॥ १२ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

नपुंसकके योग ।

अन्योन्यं यदि पश्यतः शशिरवी यद्यार्किसौम्यावपि
वक्रो वा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदयौ चेत् स्थितौ ।
युग्मौजर्क्षगतावपीन्दुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ
पुम्भागे सितलग्नशीतकिरणाः षट् क्लीबयोगाः स्मृताः ॥१३

समराशिमें बैठा चन्द्रमा विषमराशिके सूर्यको पूर्ण देखे सूर्य भी चन्द्रमाको देखे एक योग १, शनि समराशिमें बुध विषममें दोनों परस्पर.

देखे तो दूसरा योग २, मङ्गल विषममें हो सूर्य समराशिमें दोनों परस्पर देखे तो तीसरा योग ३, लग्न चन्द्रमा विषम राशिमें हो और समराशिमें बैठा मङ्गल चन्द्रमा दोनोंको देखै यह चौथा योग ४, समनें चन्द्रमा विषममें बुध हो और मंगल देखै यह पांचवां योग ५, शुक्र लग्न चन्द्रमा पुंभागमें (विषम नवांशोंमें) हो तो यह छठा योग है ६. ये योग प्रश्न वा आधानमें पड़ें तो नपुंसक जन्मैगा जन्मपत्रीमें भी ऐसे योग हों तो वह हतवीर्य वा हिजडा होगा ॥ १३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

एक साथ दो या तीन बालक ।

युग्मे चन्द्रसितौ तथौजभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया
लग्नेन्दू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ।
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्व्यङ्गांशकान् पश्यति
स्वांशे ज्ञे त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं च मिश्रैः समम् ॥ १४ ॥

चन्द्रमा शुक्र समराशिमें हों बुध मङ्गल बृहस्पति, लग्न ये सब विषम राशियोंमें हों तो (मिथुन) एक कन्या एक पुत्र जन्म कहना और लग्न चन्द्रमा समराशियोंमें हो पुरुष ग्रह देखें तो भी वही फल कहना अथवा बु० मं० बृ० लग्न समराशि और बलवान् हों तो भी वही फल और पूर्वोक्त सभी ग्रह बु० मं० बृ० लग्न द्विस्वभावराशिके अंशकोंमें हों और बुधकी दृष्टि हो तो गर्भसे तीन बालक पैदा होंगे इसमें भी बुध विशेष है क्योंकी बुध जिस नवांशमें है उस नवांश राशिके रूपका बालक होगा जैसे मेषसे चौपाया, वृश्चिकसे सर्प विच्छू आदि. जो बुध मिथुनांशकमें बैठकर पूर्वोक्त योग कर्त्ता ग्रहोंको देखे तो गर्भमें २ पुत्र १ कन्या है और द्विस्वभावांशकमें बुध बैठकर पूर्वोक्त ग्रहोंको देखे तो २ कन्या १ पुत्र है जो बुध मिथुन नवांशकमें बैठकर मिथुन धन नवांशवाले लग्नगत ग्रहोंको देखे तो ३ पुत्र गर्भमें हैं जो बुध कन्यांशमें बैठकर कन्या मीनांशवाले लग्नगत पूर्वोक्त ग्रहोंको देखे तो ३ कन्या गर्भमें हैं कहना ॥ १४ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

तीनसे अधिकका ज्ञान ।

धनुर्द्धरस्यान्त्यगते विलग्ने ग्रहैस्तदंशोपगतैर्वलिष्ठैः ।
ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टे सन्ति प्रभूता अपि कोशसंस्थाः ॥१५॥

धनलग्न धनन्वांश हो और ग्रह पूर्वोक्त योग करनेवाले ९।१२ अंशकोंमें हों और बलवान् बुध शनि लग्नको देखें तो प्रभुता (गर्भमें बहुत बच्चे) ३ उपरान्त १० पर्यन्त हैं कहना यह गर्भ जिस महीनेका पति निपीडित हो उसी महीनेमें पतन होगा बहुत होनेमें पूरा प्रसव नहीं होता पतन होजाता है ॥ १५ ॥ (उपजाति)

गर्भके मासाधिप ।

कललघनाङ्कुरास्थिचर्माङ्गजचेतनपाः
सितकुजजीवसूर्यचन्द्रार्किबुधाः परतः ।
उदयपचन्द्रसूर्यनाथाः क्रमशो गदिताः
भवन्ति शुभाशुभञ्च मासाधिपतेस्सदृशम् ॥ १६ ॥

गर्भाधान जब होगया तो प्रथम एक एक महीने पर्यन्त कलल रुधिर और शुक्र (वीर्य) मिलते हैं इस मासका स्वामी शुक्र होता है, दूसरे महीनेमें घन वह रुधिर शुक्र जमकर पिण्डसा बनता है इसका स्वामी मङ्गल है, तीसरेमें उस पिण्डपर अकुंर मुख हाथ पैर निकलते हैं इसका स्वामी बृहस्पति है, एवं चौथेमें हड्डी पैदा होती है, सूर्य स्वामी है, पांचवेमें चर्म (खाल) चन्द्रमा स्वामी, छठेमें रोम स्वामी शनि है, सातवेमें चैतन्य हाथ पैर हिलाना स्वामी बुध, उपरान्त आठवें नवेंमें अशन (माकी खाई हुई वस्तु) का असर उसपर भी होता है मासाधिपति लग्नेश है, नवेंमें उद्वेग (चलनेके नाई) हाथ पैर हिलाना इसका स्वामी चन्द्रमा, दशवेंमें प्रसव जन्म स्वामी सूर्य है, मासाधिपति ग्रह पीडित हो तो अपने महीनेमें गर्भपात करता है अस्तङ्गत (निर्बल) हो तो उस महीनेमें पीडा देता है निर्मल (बलवान्) हो तो पुष्टि करता है ॥ १६ ॥ (कुटक वृत्त)

अधिकांग या गूंगे आदिके योग ।

त्रिकोणगे ज्ञे विबलैस्तथापरैर्मुखाङ्घ्रिहस्तैर्द्विगुणस्तदा भवेत् ।
अवाग्गवीन्दावशुभैर्भसन्धिगैः शुभेक्षितश्चेत् कुरुते गिरं चिरात् १७

बुध त्रिकोण ९ । ५ में और सब ग्रह निर्बल हों तो बालकके शिर वा हाथ पैर दूने होंगे, २ शिर, ४ हाथ ४ पैर इत्यादि चन्द्रमा वृषमें हो और सभी ग्रह भसन्धि कर्क वृश्चिक मीन इनके अन्त्य नवांशोंमें हों तो वह गर्भ (बालक) मूक (गूंगा) होगा इस योगमें चन्द्रमा पर शुभ ग्रहकी दृष्टि भी हो तो बहुत वर्षोंमें वाणी बोलेगा पाप दृष्टिसे वाणीहीन होता है ॥ १७ ॥ (वंशस्थ वृत्त)

दांतों सहित, कूबडा, या मूर्ख होनेके योग्य ।

सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदन्तोऽत्र जातः
कुब्जः स्वर्क्षे शशिनि तनुगे मन्दमाहेयदृष्टे ।
पङ्गुर्मीने यमशशिकुजैर्वीक्षिते लग्नसंस्थे
सन्धौ पापे शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टिः ॥ १८॥

शनि और मङ्गल बुधके राशि नवांशकमें हों तो बालकके गर्भहीसे दाँत जमें आवेंगे बुधके राशि ३ । ६ वा अंश एकमें भी श ० मं ० हों तो भी यह योग होता है और कर्कका चन्द्रमा लग्नमें हो श ० मं ० पूर्ण देखैं तो कुब्ज अर्थात् बालक कुबडा होगा और मीनका चन्द्रमा लग्नमें श ० मं० चं० की दृष्टिसहित हो तो पंगु (लंगडा) होगा और चन्द्रमा और पाप ग्रह सन्धिमें अर्थात् कर्क वृश्चिक मीनके अन्त्य नवांशोंमें हों तो जड (मूर्ख) होगा ये चारों योग शुभ ग्रहकी दृष्टि न होनेमें पूरे फलते हैं शुभ ग्रहकी दृष्टिसे बुरा फल पूरा नहीं होता ॥ १८ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

वामन या कम अंग होनेके योग ।

सौरशशाङ्कदिवाकरदृष्टे वामनको मकरान्त्यविलग्ने ।
धीनवमोदयगैश्च दृकाणैः पापयुतैरभुजाङ्घ्रिशिराःस्यात् ॥ १९॥

लग्न मकर हो और मकरकाही नवांश (वर्गोत्तम)हो और उसपर शनि चन्द्रमा सूर्यकी दृष्टि हो तो बालक वामन अर्थात् ५२ अंगुलका (छोटे शरीरका) होगा और लग्नमें भी दूसरा द्रेष्काण हो श० चं० सू० देखें तो उस बालकके हाथ नहीं होंगे, जो लग्नमें तीसरा द्रेष्काण और चं० सू० की दृष्टि हो तो बालकके पैर नहीं होंगे, लग्न प्रथम द्रेष्काण और श० चं० सू० की दृष्टि हो तो बालक विना शिरका होगा अथवा और प्रकार अर्थ है कि, लग्नमें प्रथम द्रेष्काण और दूसरे तीसरे द्रेष्काण पाप युक्त हों तो हाथ नहीं होंगे और लग्नमें दूसरा द्रेष्काण प्रथम तृतीय द्रेष्काण पापयुक्त हों तो पैर नहीं होंगे और लग्नमें तीसरा द्रेष्काण प्रथम द्वितीय द्रेष्काण पापयुक्त हों तो शिर नहीं होगा। तीसरे प्रकारका अर्थ यह है कि, आधान वा प्रश्नकालीन लग्नसे पञ्चमराशिमें जो द्रेष्काण है वह मङ्गलसे युक्त हो और श० चं० सू० देखें तो हाथरहित और लग्नमें जो द्रेष्काण है वह भौम युक्त तथा श० चं० सू० से दृष्ट हो तो शिररहित और नवम स्थानमें जो द्रेष्काण है वह भौमयुक्त श० चं सू० से दृष्ट हो तो पादरहित होगा यह तीसरा अर्थ और ग्रन्थोंसे भी पुष्ट होता है। अत एव यही ठीक है ॥ १९ ॥ (दोधकवृत्त)

अन्धे काने आदिका ज्ञान ।

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते
नयनरहितः सौम्यासौम्यैः सबुद्बुदलोचनः ।
व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रवि-
र्न शुभगदिता योगा याप्या भवन्ति शुभेक्षिताः ॥ २० ॥

सिंह लग्नमें सूर्य चन्द्रमा हों और मङ्गल शनि देखें तो नेत्र रहित अर्थात् अन्धा होता है, जो सिंह लग्नमें केवल सूर्य हो और मङ्गल शनिसे दृष्ट हो तो दाहिना नेत्र नहीं होगा, जो सिंहका चन्द्रमा लग्नमें श० मं० से दृष्ट हो तो वायां नेत्र नहीं होगा जो इन योगोंके होनेमें शुभग्रहोंकी

दृष्टिभी हो तो बुद्बुदलोचन एक आंख छोटी (वा कातर) वारवार हिल-नेवाली अथवा फूलेवाली होगी लग्नसे बारहवां पापयुक्त चन्द्रमा हो तो बांयी आंखरहित और सूर्य दाहिनी रहित करते हैं। जितने बुरे योग कहे हैं उन योगकर्त्ता ग्रहोंपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टी हो तो सम्पूर्ण बुरा फल नहीं होता उपाय करनेसे अच्छे भी हो जाते हैं॥ २० ॥ (हरिणी वृत्त)

प्रसूति कालका ज्ञान।

तत्कालमिन्दुसहितो द्विरसांशको य-
स्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतः शशाङ्के।
यावानुदेति दिनरात्रिसमानभाग-
स्तावद्गते दिननिशोः प्रवदन्ति जन्म ॥ २१ ॥

आधान समयमें वा प्रश्न समयमें चन्द्रमा जिस द्वादशांश पर है मेषादि गणनासे उतनेही संख्यक राशिके चन्द्रमामें जन्म होगा, दूसरा अर्थ यह है कि जिस राशिमें चन्द्रमा है उसीसे गिनकर जितने द्वादशांश पर चन्द्रमा है उतनीही राशिके चन्द्रमामें जन्म होगा; नक्षत्रके भुक्त निकालनेका यह अनुपात है एक चन्द्र राशिकी १८०० लिप्ता होती हैं। अब चन्द्रमाने कितनी द्वादशांशकी कला भुक्त है कितनी भोगनी बाकी हैं इनका त्रैराशिक करनेसे नक्षत्र भुक्ति मिलती है उससे इष्टकाल और ग्रहकुण्डली बन जाती है। दिन रात्रि जन्म ज्ञानके लिये तत्काल लग्न जो दिनबली शीर्षोदय हो तो दिनमें जन्म, रात्रिबली पृष्ठोदय हो तो रात्रि जन्म कहते हैं, लग्नके हेतु तत्काल लग्नमें जो द्वादशांश है उतनी संख्याके उसीसे गिनने पर जो आता है वह लग्न जन्ममें होगा। कोई कहते हैं कि चन्द्रमाके द्वादशांशसे और लग्न द्वादशांश-वशसे चन्द्रमा जन्मसमयके मिलते हैं औरभी युक्ति और ग्रन्थोंमें बहुत हैं सबमें मुख्य येही है इसमें भी दो तीन वा बहुत प्रकारसे एक ठीक जब हो जावे तब ठीक कहना, यह गर्भकुण्डलीका प्रश्न मैंने बहुत बार अच्छे प्रकारसे देखा है सत्य है ठीक मिलता है परन्तु इसमें तथा नष्टजन्मपत्रीमें दो इष्ट सिद्ध

चाहिये एक तो अपने इष्टदेवताकी कृपा, तदुत्तर इष्टकाल बुद्धिकी चतुराई सब जगह काम आती है. अब नक्षत्र भुक्त इष्ट काल निकालनेका उदाहरण लिखता हूं—किसीके प्रश्नसमयमें चैत्र शुदी ४ दिन २७ शनिवार इष्टकाल घडी २० । ५ चन्द्र स्पष्ट १ । ८ । ११ । २६ लग्न स्पष्ट ४ । ५ । ५८ । १४, चन्द्र स्पष्टमें द्वादशांश चौथा है वृषसे गिनकर चौथे सिंहके चन्द्रमामें नवें वा दशवें महीनेमें जन्म होगा । अब नक्षत्रके लिये चन्द्र स्पष्टमें ३ द्वादशांश गत हैं अर्थात् ७ अंश ३० कला भुक्त हो गई हैं इसको स्पष्टमें घटाया शेष १ । ४ । १ । २६ अंशकी कला १०१ । २६ एक राशिकी कला १८०० से गुणा किया १८२५८० एक द्वादशांशकी कला १५० से भाग लिया लब्धि १२१७ । १२ यह नक्षत्र प्रमाण पिण्ड है इसमें एक नक्षत्र प्रमाण ८०० घटाये शेष ४१७ । १२ फिर दो चरण प्रमाण ४०० घटाया शेष १७ । १२ रहे, पहिले एक नक्षत्र घटेमें मघा भुक्त होगई फिर चरण प्रमाण २ घटाये तो पूर्वाफाल्गुनीके २ चरणभी भुक्त हो गये अब तीसरे चरणके लिये शेष अंक १७ । १२ को चरण प्रमाण घटी १५ से गुणा किया और २०० से भाग लिया तो लब्धि १ घ० २ पल तीसरे चरणकी भुक्त हुई, इसको गत दो चरणोंकी घटी ३० में जोडा तो पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र भुक्त ३१ घ० २ प० हुवा । दिन रात्रिके निमित्त लग्नमें नवांश वृष रात्रिबली है तो जन्म रातमें होगा. इष्टकालके हेतु ल० स्प० ४ । ५ । ५८ । १४ में भुक्त नवांश ३ । २० अंशादि घटाया २ । ३८ । १४ रात्रिमान २८ । ६ से गुणा किया ४४ । ४६ चरण कला प्रमाण २०० से भाग लिया लाभ २२ । १३ यह रात्रिका इष्ट काल हुआ ज्येष्ठ शुदी ६ रात्रि गत घटी २२ पल १३ में जन्म होगा रीति यही है प्रश्न विचार और प्रकारसे भी मिला लेना चाहिये ॥ २१ ॥ (वसन्ततिलकावृत्त)

तीन वर्ष या बारहवर्षमें होनेके योग ।

उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे च मन्दे
यदि भवति निषेकः सूतिरब्दत्रयेण।

शशिनि तु विधिरेष द्वादशेऽब्दे प्रकुर्या-
न्निगदितमिति चिन्त्यं सूतिकालेऽपि युक्त्या ॥ २२ ॥

इति बृहज्जातके चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

आधान लग्नमें जो शनिका नवांश हो और शनि सप्तम हो तो वह प्रसव ३ वर्षमें होगा जो लग्नमें कर्क नवांश और चन्द्रमा सप्तम होवे तो प्रसव १२ वर्षमें होगा इस अध्यायमें जो अङ्ग हीनाधिक वा पित्रादि कष्टके योग कहे हैं वे जन्ममें भी विचारके युक्तिसे कहना ॥ २२ ॥ (मालिनीवृत्त)

इति बृहज्जातके भाषाटीकायां महीधरविरचितायां
निषेकाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

सूतिकाध्यायः ५.

पहिले फलादेशका मूल इष्टकाल सच्चा होना चाहिये जो सभीका ठीक नहीं रहता क्योंकि बहुधा स्त्री लोग सूतिकागृहमें बालकके उत्पन्न होनेपर अच्छी तरह कन्या वा पुत्र आप देख लेती हैं उपरान्त बाहर कहती हैं उस समय ज्योतिषी उपस्थित रहता है तो भी उन्हींके कहनेपर इष्ट मानता है किसी ग्रन्थमें शीर्षोदय अर्थात् बालकका शिर देखे जानेपर यद्वा कंधा अथवा हाथ देखेजानेपर इष्टकाल मानना लिखा है परन्तु और प्रमाणग्रन्थोंसे तथा विज्ञान शास्त्रके अनुभव करनेसे मैं समझता हूं कि वह इष्ट कभी कभी ठीक होगा क्योंकि कभी बालकका शिर देखे जानेसे १ घडी उपरान्त सारा उत्पन्न हो सकता है, दूसरे कोई बालक पूर्णोत्पन्न होनेपर भी श्वास नहीं लेता जब उसका नाल सूत्रसे बांध देते हैं तब श्वास लेने लगता हैं, तीसरे यह है कि, मैंने कई एकवार खूब देखलिया है कि गर्भप्रश्नसे जो इष्टकाल मिला है वह शीर्षोदय समय पर नहीं मिलता इष्ट शोधनसे भी शीर्षो कभी ठीक नहीं

होता कुछ घट बढ जाता है इसका कारण यह निश्चय होता है कि प्राण नामवायुका है जब बालक श्वास लेने लगता है तब उस पर प्राण पड़ता है वही समय ठीक इष्ट है इसमें कोई प्रतीति न लावें तो प्रत्यक्ष परीक्षा कर देखें इसकी परीक्षामें भी मेरे तरह बहुत वर्षों पर्यन्त अनुमान व विचार करना पडेगा । जब कोई शङ्का करे कि बालकके श्वास लेनेपर प्राण पडा तो पहिले गर्भमें क्या वह मृतक था? इसका यह उत्तर है कि गर्भमें मृतक नहीं था परन्तु प्राण जुदा नहीं था अपनी माताके प्राणके साथ वह जीवित रहता हैं, नाभीमें जो एक नस जिसको नाल कहते हैं वह उसकी जड हैं जैसे वृक्षका फल अपने भेराड (डण्ठल) द्वारा वृक्षका रस पाकर पुष्ट होता है ऐसेही बालकभी गर्भमें नालके द्वारा मांके शरीरसे पुष्टि पाता है रुधिर बराबर मांके व बालकके शरीरमें नाल द्वारा चलता रहता है जो कुछ वस्तु मांने खाई उसका सार जो मांके रुधिरमें मिलकर सर्वाङ्गमें फैलता है वही बालकके शरीरमें भी पहुंचता है. मांके श्वास लेनें पर उसको पृथक् श्वास लेनेकी आवश्यकता नहीं पडती पैदा होनेपर उसका नाल काट दिया वा सूत्रसे बांध दिया तो मांके शरीरका रुधिर जो उसके शरीरमें पहुँचता था वह बन्द होजाता है तब वह पृथक्ही श्वास लेने लगता है १ । और प्रकार भी धर्मशास्त्रसे पुष्टता है कि बालक गर्भमें १० महीने जब रहता है तो छः महीने उपरान्त उसके पिताको सूतक होता है जब जन्म होगया तो १० दिन आदि सूतक होता है और जन्मक्षणमें जातकर्म करना उक्त है यह सूतकमें कैसे होता है ? उसका निश्चय यह है कि " जातमात्रस्य पुत्रस्य पिता जातकर्म कुर्यात् नालच्छेदनात्पूर्वं संपूर्णसन्ध्यावन्दनादिकर्मणि नाशौचम् " इति धर्मसिन्धौ । " अच्छिन्ननाभि कर्त्तव्यं श्राद्धं वै पुत्रजन्मनि " इति मनुमतम् । इत्यादि वाक्योंसे उस समय नालच्छेदनपर्यन्त सूतक नहीं रहता । गर्भका सूतक तो बालकके गर्भसे निकल जानेसे न रहा और जन्मका सूतक नाल न काटे जानेसे न हो सका जब शीर्षोदयही इष्ट है तो जन्मसे ही सूतक हो जाना

था फिर जातकर्म कैसे होसकता है धर्मशास्त्रका भी यही तात्पर्य है कि नाल-च्छेदन पर्यन्त सूतक ही क्या नही हुवा किन्तु जन्म ही पूरा न हुवा। अब इसमें शङ्का है कि नालच्छेदन जब कोई २। ४ घण्टे वा १ दिन पर्यन्त करे तो क्या उसका जन्म तबतक न हुवा ? इसका उत्तर यह है कि, धर्म शास्त्रमें लिखा है कि एक तो बाहर निकलनेसे एक मुहूर्त अर्थात् दो घडी पर्यन्त सूतक नही होता और नालच्छेदन विलम्बसे होगा तो वह बालक मांके शरीरकी रुधिर गति बन्द हो जानेसे और अपने शरीरमें उसकी यथायोग्य गति न होनेसे जीवित हीं न रहेगा। नलच्छेदनमें विलम्ब होता देखकर स्त्री लोग छेदनसे जो कार्य होता है उसे पहिले ही बांधनेसे लेलेती हैं काटनेसे वा बांधने वा अक-स्मात् बाहर निकसते २ उस नाल नसपर कोई प्रकार पीडन अर्थात् रगड वा दाब लग जानेमें नाल द्वारा रुधिर मांके शरीरसे पहुँचना बन्द होकर वह बालक अलग श्वास लेने लगता है इससे भी वही श्वास लेनेका समय इष्टकाल मानना ठीक है २। योगशास्त्रादि सब शास्त्रोंसे भी यही दृढ है कि जीवितकी गिनती केवल श्वासाओंपर है जब जन्तु देह छोडता है तो केवल श्वासा लेनाही छोडता है, अन्य सावयव शरीर यथावत् रहनेपरभी श्वास लेना बन्द होने मात्रसे मर गया कहते हैं न कि, दाह वा प्रवाह आदि करनेपर। जब श्वासा बन्द होनेपर आयु पूरी हुई तो आयुका आरम्भ भी जन्ममें श्वासा लेनेहीसे हुआ गर्भसे शिर वा देह बाहर निकलनेपर नहीं, इससे भी शीर्षोदय इष्टकाल मानना ठीक नहीं हैं श्वासा लेनेही पर जन्म इष्ट काल मानना निश्चय है ३। वैद्यशास्त्रसे भी यही पुष्ट होता है कि अति दौडनेसे अति बोलनेसे अति श्रमसे आयु क्षीण होती है कारण यह है कि, ऐसे कामोंके करनेमें श्वास बहुत व्यय होते हैं; आयु प्रमाण केवल श्वासाओंपर है बहुत श्वासा खरच होगये तो उतने जीवितमें कमी पडती है जन्मसे मरणपर्यन्त जितने श्वासा जीव लेता है उतनी ही आयु है श्वासा पूरे होने पर

मरजाता है वैसेही प्रथम श्वासा लेने पर जन्मता भी है ४ । यदि कोई विज्ञजन जन्म अर्थात् पदार्थ 'जायते इति जन्म' अर्थात् जब पैदा होगया तभी जन्म है श्वासा लेनेपर प्रयोजन नहीं है कहैं तो मुख्य तो ज्योतिष शास्त्रके अनभिज्ञ पण्डित ऐसे पदार्थ ढूंढेंगे उनके ऐसे अभिप्रायको मैं काटता नहीं हूं किन्तु इतना व्यावधान है कि जैसे ५ घटी रात्रि शेष अरुणोदयसे दिनके बराबर कृत्य सन्ध्यावन्दनादि करनेकी आज्ञा हैं परंतु दिनका उदयेष्ट ध ० पल तो सूर्यके अर्द्धोदयहीसे होगा न कि पञ्च पञ्च उषः कालः 'इत्यादि वचनोंसे ५ घडी रात्रि शेषसे दिन मानेंगे अरुणोदयसे सब कृत्य दिनका हुवा किन्तु दिन तो विना सूर्योदय नहीं होसका सूर्य बिम्बके अरुणोदयपर्यन्त इष्टकाल पूर्व दिनका ही ५९ घ० ५९ पला पर्यन्त लिखा जाता है ऐसे ही बालक पैदा होनेपर जन्म प्रसव मात्र तो हुआ आयुका आरम्भ विना श्वासा लिये न होसका । विद्वान् लोग तो अपनी बुद्धिबलसे इन बातोंको आपही समझ सकते हैं किन्तु जिनके हृदयकमल होराशास्त्रके सूक्ष्म विचार विना मुकुलित है उनके विकाशके निमित्त इतने उदाहरण यहां लिखे गये हैं ६। ऐसे ऐसे प्रमाण बहुतसे हैं कि जिनसे श्वासा लेनेका समय इष्ट काल ठीक होता है अब इस समयमें ज्योतिषी लोगोंके कहे फल पूरे ठीक नहीं मिलते जिसपर बहुधा लोग कहते हैं कि ज्योतिषशास्त्र कुछ चीज नही ब्राह्मणोंने अपने लाभार्थ यह पाखण्ड किया है परन्तु यह विचार विना उसके हेतु समझे अच्छा नहीं फलमें विपरीतता होनेका कारण यह है कि एक तो बहुधा लोग थोडा कुछ देख सुन पढके चमत्कार फल अपने लाभ निमित्त कहने लगजाते हैं विना शास्त्रके मूल पूर्वापर ग्रहोंके अवस्था बला बलकी न्यूनाधिकता विचारे फल ठीक क्यों होना है? दूसरे इष्टकाल सबका ठीक नहीं रहता जो कोई विचारे कि जन्मसमयमें अच्छा ज्योतिषी सूतिकागारके बाहर खडा था इससे इष्टकाल ठीक होगा तो इसमें भी ठीक होना असम्भव है क्योंकि वह समय तो स्त्रियोंके हाथ है ज्योतिषी तो उन्हीके कहेपर इष्ट साधन अनेक प्रकारके यन्त्रोंसे करता है, ठीक तब होगा कि कोई सुघड स्त्री

वहां रहकर बालकके श्वासा लेनेके समय अति शीघ्र खबर करदेवै कि उस समयको बाहर कोई ठीक करलेवै तब इष्टकाल ठीक होगा उपरान्त सूक्ष्म विचार जो कुछ थोडा पहिले कहा गया है इत्यादिसे सभी ठीक होंगे ॥

पिता पास था वा नहीं।

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति ।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे ॥ १ ॥

सूतिकागारमें लक्षण जो जन्म लग्नको चन्द्रमा नहीं देखै तो उसका पिता उस समय परोक्ष होगा। इसमें भी यह विशेष है कि लग्नको चन्द्रमा न देखै और सूर्य चरराशिमें और ८ । ९ । ११ । १२ स्थानमें हो तो पिता विदेशमें था जो सूर्य स्थिरराशिमें उन्हीं स्थानोंमेंसे किसीमें होवे चन्द्रमा लग्नको न देखै तो उसी देशमें था परन्तु उस समय परोक्ष था, द्विस्वभावमें हो तो मार्ग चलता था कहना ॥ १ ॥ (अनुष्टुप्)

उदयस्थेऽपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते ।
स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशाङ्कसुतशक्रयोः ॥ २ ॥

लग्नमें शनि हो तो पिता परोक्ष कहना यदि मङ्गल सप्तम होवे तौ भी परोक्ष और चन्द्रमा बुध शुक्रके राशियोंके वा अंशोंके मध्य हो तो भी पिता परोक्ष कहना ॥ २ ॥

सर्वरूप और सर्प वेष्टित।

शशाङ्के पापलग्ने वा वृश्चिके सत्रिभागगे ।
शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपि वा ॥ ३ ॥

चन्द्रमा मङ्गलके द्रेष्काणमें और शुभग्रह २ । ११ स्थानमें हो तो वह बालक सर्परूप होगा और लग्न पापग्रहकी राशिका हो और चन्द्रमा भौम द्रेष्काणमें हो २ । ११ स्थानमें पाप हो तो बालक सर्प अथवा सर्पवेष्टित होगा ॥ ३ ॥ (अनुष्टुप्)

एक जरायुसे वेष्टित जोड़े ।

चतुष्पदगते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितैः ।
द्वितनुस्थैश्च यमलौ भवतः कोशवेष्टितौ ॥ ४ ॥

सूर्य चतुष्पदराशि १ । २ । ५ वा धन परार्द्ध मकरके पूर्वार्द्धमें होवे और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियोंमें बलवान् हों तो यमल दो बालक एक जरायुसे वेष्टित होंगे ॥ ४ ॥ (अनुष्टुप्)

नालसे लिपटेका जन्म ।

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे सौरेऽथ वा कुजे ।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ ५ ॥

लग्नमें मेष वृष सिंहराशिका मङ्गल वा शनि हो तो बालक नालसे वेष्टित होगा लग्नमें जो नवांश है वह राशिका लग्न पुरुषाङ्गमें जिसअङ्गपर हो उसी अङ्गमें वेष्टित कहना ॥ ५ ॥ (अनुष्टुप्)

जारज व असलीका ज्ञान ।

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते न वा शशाङ्कं रविणा समागतम् ।
सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयात् ॥ ६ ॥

लग्न और चन्द्रमाको बृहस्पति न देखै तो वह बालक जारपुत्र होगा अथवा सूर्य चन्द्रमा इकट्ठे और बृहस्पति न देखे तो भी वही फल है अथवा सूर्य चन्द्रमाका एक राशिमें शनि मङ्गलसे युक्त हो तो भी वही फल है ॥ ६ ॥ (वंशस्थ)

जन्मतेही पिताका बन्धन ।

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मजास्थितौ ।
बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा राशिवशादथो पथि ॥ ७ ॥

पाप ग्रह शनि वा मङ्गल क्रूर राशि २ । ५ । ८ । १० । ११ में हों और सूर्यसे ७ वा ५ भावमें हो तो बालकका पिता बन्धनमें है कहना इसमें भी सूर्य चर राशिमें होतो परदेशमें बँधा है, स्थिर राशिमें स्वदेशमें, द्विस्वभावसे मार्गमें बँधा होगा ॥ ७ ॥ (वैतालीय)

जन्मके स्थान।

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे।
लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चन्द्रे पोतगता प्रसूयते ॥ ८ ॥

पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशिमें और बुध लग्नमें बृहस्पति चतुर्थ भावमें हो तो वह प्रसव नौका वा पुलके ऊपर हुआ है अथवा लग्नमें जलचर राशि हो और चन्द्रमा सप्तम हो तौ भी वही फल होगा ॥ ८ ॥ (वैतालीयवृत्त)

आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथ वा।
मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ ९ ॥

यदि लग्नमें जलचर राशि हो चन्द्रमाभी जलचर राशिका हो तो प्रसव जलके ऊपर हुवा कहना अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्नको पूर्ण देखे तो यही फल होगा अथवा जलचर राशिका चन्द्रमा दशम वा चतुर्थ वा लग्नमें हो तौभी वही फल कहना ॥ ९ ॥ (वैतालीय वृत्त)

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यां पापनिरीक्षिते यमे।
अलिकर्कियुते विलग्नगे सौरे शीतकरेऽक्षितेऽवटे ॥ १० ॥

शनि लग्न व चन्द्रमासे बारहवां हो और उसको पापग्रह देखे तो कारागारमें जन्म हुवा होगा और शनि कर्क वृश्चिक राशिका लग्नमें हो चन्द्रमाभी देखे तो (खाई) खाती वा खंदकमें जन्म कहना ॥ १० ॥ (वैतालीयवृत्त)

मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात्।
क्रीडाभवने सुरालये प्रवदेज्जन्म च सोषरावनौ ॥ ११ ॥

शनि जलचर राशिका लग्नमें हो और उसको बुध देखे तो नृत्यशालामें जन्म कहना, उसी शनिको सूर्य देखे तो देवालयमें और उसीको चन्द्रमा देखे तो ऊपर भूमिमें जन्म कहना ॥ ११ ॥ (वैतालीय वृत्त)

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे।
रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ १२॥

मनुष्य राशि लग्नमें हो शनिभी लग्नका हो और मङ्गलकी दृष्टि शनिपर हो तो प्रसव श्मशानमें हुवा होगा और नृराशि लग्न गत शनिको शुक्र चन्द्रमा देखे तो सुन्दर रमणीय घरमें जन्म हुवा और ऐसे ही शनिको बृहस्पति देखे तो अग्निहोत्र वा हवनशाला वा रसोईके स्थानमें जहां नित्य अग्नि रहती है वहां जन्म कहना और ऐसेही शनिको सूर्य देखे तो राजघर वा देवालय वा गौशालामें जन्म होगा और उसी शनिको बुध देखे तो शिल्पालयमें जन्म कहना ॥ १२ ॥ (उपजाति)

राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे ।
स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे बलयोगारफलमंशकर्क्षयोः ॥ १३ ॥

लग्न राशि नवांशक जैसा हो वैसीही भूमिमें जन्म, चरराशि नवांशकमें मार्गमें, स्थिरसे घरमें जन्म जो लग्न वर्गोत्तम हो तो अपने घरमें जन्म कहना लग्न नवांशकमेंसे बलवान्का फल होता है पूर्व योगोंके अभावमें यह योग देखना ॥ १३ ॥ (वैतालीय)

परित्यक्त और उसका जीवन ।

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ।
दृष्टेऽमरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च स स्मृतः ॥ १४

मङ्गल सूर्य एक राशिके हों और इनसे नवम वा पञ्चम वा सप्तम भावमें चन्द्रमा हो तो वह बालक मातासे अलग हो जाता है और ऐसे योगमें चन्द्रमा पर बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो बालक माताका त्यागा हुआभी दीर्घायु व सुखी होगा ॥ १४ ॥ (वैतालीय)

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते
त्यक्तो विनश्यति कुजार्कचयोस्तथाऽऽये ।
सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति
सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ १५ ॥

लग्नमें चन्द्रमा हो पापग्रह उसे देखे और सप्तम मङ्गल हो तो माताका त्यागा हुवा वह बालक मरजायगा और लग्नमें चन्द्रमा हो और

शुभग्रह भी देखें शनि मङ्गल ग्यारहवें स्थानमें हों तो मातृत्यक्त बालक जिस वर्णके शुभग्रहकी दृष्टि चन्द्रमापर है उसी वर्ण ब्राह्मण आदिके हाथ लगेगा और बचेगा. जो चंद्रमापर शुभ ग्रहकी दृष्टि और पापग्रहकी भी दृष्टि हो और पूर्वोक्त योगभी पूरा हो तो बालक किसीके हाथ लगकर मर जायगा ॥ १५ ॥ (वसन्ततिलका)

प्रसव गृहका ज्ञान ।

पितृमातृगृहेषु तद्बलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः ।
यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ १६ ॥

पितृसंज्ञक ग्रह सूर्य शनि बलवान् हों तो पिता वा ताऊ चचाके घरमें जन्म कहना,जो मातृसंज्ञक ग्रह चंद्रमा शुक्र बलवान् हों तो माँ वा माताकी बहिनोंके घरमें जन्म कहना, जो शुभग्रह नीच राशियोंमें हो तो वृक्षमें वा वृक्षके नीचे वा काष्ठके घरमें वा पर्वत नदी आदिमें जन्म कहना, जो शुभग्रह नीचमें और लग्न चन्द्रमाको तीनसे ऊपर ग्रह न देखें तो जङ्गलमें वा जहां कोई मनुष्य न हो ऐसे स्थानमें जन्म, जो लग्न चन्द्रमाके बहुत ग्रह देखें तो बस्तीमें बहुत मनुष्योंके समुदायमें जन्म कहना ॥ १६ ॥ (वैतालीयम्)

जन्म समयमें दीपक और भूमि आदि ज्ञान ।

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मन्दृदृष्टेऽब्जगे वा
तद्युक्ते वा तमसि शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ ।
यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत्
पापैश्चन्द्रस्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः ॥ १७ ॥

चन्द्रमा शनिके राशि वा अंशकमें हो तो सूतिकाके घरमें दीवा नहीं । अन्धेरेमें जन्म हुआ और जो चौथा चन्द्रमा हो तौ भी वही फल, जो चन्द्रमाको शनि पूर्ण देखै तौभी वही और चन्द्रमा जलचर राशिके अंशमें हो अथवा चन्द्रमा शनिके साथ हो तौभी अन्धेरेमें जन्म हुआ. सूर्ययुक्त चन्द्रमाका यही फल है, इन योगोंके होनेमें सूर्य हो बलवान्

मङ्गल देखे तो सब योगोंका फल कट जाता है, दीपसहित घरमें जन्म कहना जो तीनसे उपरान्त ग्रह नीच राशिमें हों अथवा लग्नमें वा चतुर्थमें नीच ८ का चन्द्रमा हो तो भूमिमें जन्म कहना। (यद्वद्राशि) शीर्षोदय राशि लग्नमें हो तो बालकका मुख प्रसवसमयमें आकाशकी ओर उत्तान था, पृष्ठोदयमें अधोमुख पृथ्वीकी ओर करके पैदा हुआ. मीन लग्न दोनों प्रकारका है इसमें जन्में तो तिर्च्छा एक हाथ ऊपर एक नीचे पृथ्वीकी ओर कहना और लग्न वा लग्ननवांश वा लग्नस्थ ग्रह वक्र हो तो उलटा प्रसव पहिले पैर पीछे शिर होगा। चन्द्रमा पापयुक्त सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें हो तो प्रसवसमयमें माताको बडा कष्ट हुवा होगा,प्रसव कहीं खाट (चारपाईमें) कहीं दो मंजले तिमंले घरमें कहीं भूमीमें होते हैं और दिनमें विना दीपकभी अन्धेरा नहीं रहता इत्यादि विचार जाति कुल देशकी रीति बुद्धिविचारसे सब जगह फल कहना ॥ १७ ॥ (मन्दाक्रान्तावृत्त)

स्नेहः शशाङ्कादुदयाच्च वर्तिर्दीपोर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः।
द्वारं च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ १८ ॥

चन्द्रमासे तेल–जैसे राशिके प्रारम्भमें जन्म होगा तो दीपमें तेल भरा था, मध्य राशिमें हों तो आधा था, अन्त राशिमें हो तो तेल नहीं रहाथा. कहना. ऐसे लग्न प्रारम्भमें जन्म होगा तो दीयेपर बत्ती पूर्ण थी, मध्य लग्नमें आधी दग्ध, अन्त्य लग्नमें बत्ती थोडी रही थी, सूर्य चर राशिमें हो तो दीवा एक जगहसे दूसरे जगे धरा गया, स्थिरमें स्थिर, द्विस्वभावमें चालित कहना. सूर्यकी राशि जिस दिशाकी है उस दिशामें दीवा होगा वा सूर्य ८ प्रहर आठ दिशोंमें घूमता है उस समय जहां हो उधरही दीवा कहना, इन योगोंमें पापयुक्तमें तैलादि मलिन शुभ युक्तमें निर्मल और राशियोंके रङ्ग समान रंग कहना, केन्द्रमें जो ग्रह हो उसकी जो दिशा है उस ओरको सूतिका घरका द्वार होगा, बहुत ग्रह केन्द्रमें हों तो बलवानकी दिशा और केन्द्रोंमें कोईभी न हो तो लग्न राशिकी दिशा

अथवा लग्न द्वादशकी दिशामें द्वार कहना, मुख्य बलवान् ग्रह फल देता है ॥ १८ ॥ (इन्द्रवज्रा)

सूतिकागृहका स्वरूप ।

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ
काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्प्युद्भवम् ।
रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं
चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वां वदेत् ॥ १९ ॥

शनि बलवान् हो तो सूतिकाका घर पुराना और अच्छा होगा, मंगल बलवान् हो तो अग्निदग्ध, चन्द्रमासे नवीन और शुक्ल पक्ष हो तो सुन्दर लीपा पोताभी होगा, सूर्यसे कच्चा और काठसे भरा हुआ, बुधसे अनेक प्रकार चित्र विचित्र, शुक्रसे सुन्दर रमणीय रंगदार, बृहस्पतिसे दृढ पक्का, बलवान् ग्रह जिससे घरका लक्षण पाया है उसके समीप व आगे पीछे जितने ग्रह हों उतनी कोठरियां उस घरमें आगे पीछे होंगी॥आचार्यने यहां शाला प्रमाण नहीं कहा अत एव मैं अन्य ग्रन्थोंसे लिखे देता हूं-बृहस्पति दशम स्थानमें कर्कके ५ अंशके भीतर आरोही हो तो तिपुरा घर होगा, ५ अंशसे उपरान्त अवरोही हो तो दो पुरा, परमोच्च ५ अंश पर हो तो चौपुरा, लग्नमें धन राशि बलवान् हो तो तिपुरा और जो द्विस्वभाव ३ । ६ । १२ राशि है इनमें दोपुरा कहना ॥ १९ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

सूतिका गृहके दिशा ।

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु ।
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ॥ २० ॥

लग्नमें १ । ४ । ७ । ८ । ११ ये राशियां वा इनके अंश हों तो उस घरमें वास्तुसे पूर्व जन्म और ९ । १२ । ३ । ६ ये राशियां वा इनके अंश हों तो उत्तरको, २ से पश्चिम और ५ । १० से दक्षिणकी ओर प्रसव हुआ कहना ॥ २० ॥ (दोधकवृत्त)

सूतिका गृहमें विस्तारादिका ज्ञान ।

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ।
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥ २१ ॥

सूतिका स्थान घरके किस ओर था कहनेमें १ । २ राशि लग्नमें हो तो घरके पूर्व और ३ से आग्नेय, ४ । ५ दक्षिण, ६ नैर्ऋत्य, ७ । ८ पश्चिम, ९ वायव्य, १० । ११ उत्तर, १२ ईशान, जैसा पहिले वास्तु कहा वैसाही यहां जानना । लग्न द्वितीय राशिके स्थानमें खाटका शिर, तीसरी बारहवींके स्थानमें शिरानेके २ पावे इनमें तीसरेसे दाहिना बारहवेंसे बायां और छठी और नवीं राशिके सदृश पायन्तके पावे इनमें भी छठेसे दाहिना नवींसे बायां और राशियोंसे और अङ्ग ये खाटके लक्षण इस कारणसे है कि जहां द्विस्वभाव राशि वहां विन त्वचा कची लकडी अथवा कील होगी, जिस राशिमें पाप ग्रह हो उस अङ्गमें भी यही फल कहना ॥ २१ ॥ (वैतालीय)

उपसूतिकाके संख्या ।

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः ।
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथापरे ॥ २२ ॥

लग्नसे उपरान्त चन्द्रमा पर्यन्त बीचमें जितने ग्रह हों उतनी वहां उपसूतिका (सूतिका घरमें और स्त्री) होंगी, उनके रूप वर्ण आयु उन्हीं ग्रहोंके सदृश कहना और (चक्रार्द्धे) लग्नसे सातवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां समीप भीतरही होंगी सप्तमसे द्वादशपर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी घरसे बाहर होंगी । यहाँ कोई आचार्य बाहर भीतरमें उलटा मानते हैं-यथा लग्नसे सप्तम पर्यन्त जितने ग्रह हों उतने बाहर और सप्तमसे द्वादश पर्यन्त जितने ग्रहहों उतने भीतर, इतनेमें कोई ग्रह अपने उच्च वा वक्रका हो तो तिगुणी स्त्री कहनी और कोई ग्रह उच्चांश स्वांश स्वीय द्रेष्काणमें हो तो द्विगुणी स्त्री कहनी ॥ २२ ॥ (अनुष्टुप्)

उत्पन्न बालकका स्वरूप ।

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा ।
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ २३ ॥

लग्नमें जो नवांश हैं उसके स्वामीके तुल्य रूप बालकका होगा, रूप (मधुपिङ्गलदृक्) इत्यादि पहिले कहे हैं अथवा सबसे बहुत बल जिस ग्रहका है उसका स्वरूप होगा, राशि बल विशेष हो तो लग्ननवांशके तुल्य और ग्रह बल विशेष हो तो ग्रहके तुल्य और चन्द्रमा जिस नवांश पर है उसके स्वामीके तुल्य वर्ण " रक्तश्यामो भास्करो " इत्यादि पहिले वह ग्रह दीर्घ राशिका स्वामी हो और दीर्घ राशिमें बैठा हो तो उस राशिके तुल्य अङ्ग दीर्घ होगा, वैसे ही ह्रस्वमें ह्रस्व, मध्यमें मध्य कहना ॥ २३ ॥ (दोधक) इति सूतिकाप्रकरणम् ।

शिरआदि अंगोंका ज्ञान ।

कंदृक्छ्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादय-
स्ते कण्ठांशकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडानि नाभिस्ततः ।
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जङ्घाङ्घ्रियुभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥ २४ ॥

लग्न द्रेष्काणके वशसे ३ भागोंमें विहादि होते हैं. पहिला द्रेष्काण हो तो लग्न राशि शिर, दूसरी बारहवी नेत्र, ३ । ११ कान, ४ । १० नाक, ५ । ९ गाल, ६ । ८ हनु (ठोडी), ७ मुख इनमें लग्नसे सप्तम पर्यन्तकी दाहिनी ओरके अङ्ग और सप्तमसे द्वादश पर्यन्त वाम अङ्ग, सर्वत्र यह विचार कहना. दूसरा द्रेष्काण हो तो कण्ठ लग्न राशि १।, और २ । १२ कन्धा, ३ । ११ बाहु, ४ । १० बगल, ५ । ९ हृदय, ६ । ८ पेट, ७ नाभि वाम दक्षिण विभाग पूर्ववत. तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न बस्ति लिङ्ग और नभिके मध्य, २ । १२ लिङ्ग और गुदा. ३। ११ वृषण, ४ । १० ऊरु, ५ । ९ जानु, ६ । ८ घुटने, ७ पैर इसी प्रकार द्रेष्काणोंके विभाग हैं ॥ २४ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

नवजात शिशुके व्रण ।

तस्मिन् पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्
स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथागन्तुकः ।
मन्देऽश्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभवः
सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृङ्ग्यब्जजोऽन्यैः शुभम् ॥२५॥

जिस राशिके द्रेष्काणमें पाप ग्रह है वह राशी तुल्य अङ्गमें चोट या छिद्र करती है उस पापग्रहके साथ शुभग्रह भी हो वा शुभग्रह देखें तो लक्ष्म (तिल लाञ्छन मसा) आदि होवे, जो वही ग्रह अपनी राशि वा अंशमें हो वा स्थिर राशि नवांशमें हो तो अङ्गमें तिलादि चिह्न जन्महीसे होगा, इससे विपरीत हो तो वह चिह्न पीछे होगा । यदि वह चिह्नकर्ता ग्रह शनि हो तो पाषाण पत्थरसे वा अग्निसे चिह्न होगा, सूर्य मङ्गल हों तो अग्नि वा शस्त्र वा विषसे, बुध हो तो पृथ्वी पर गिर जानेसे, सूर्य होतो काष्ठसे, चन्द्रमा हो तो सींगवाले वा जलचर जीवसे, और ग्रह शुभ होते हैं व्रणकारक नहीं हैं ॥ २५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा
भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेषु वा ।
व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते
तिलकमसकृद्दृष्टः सौम्यैर्युतश्च स लक्ष्मवान् ॥ २६ ॥

इति बृहज्जातके सूतिकाध्यायः ॥ ५ ॥

बुध संयुक्त तीन ग्रह और शुभ या पाप जैसे हों बुध संयुक्त ४ होनेसे वाम दक्षिण जिस विभागमें बैठें उस अङ्ग पर अवश्य चिह्न करैं, उनमें भी जो ग्रह अधिक बली है उसकी दशामें वह व्रण चोट होगा और कोई पाप ग्रह छठा हो तो " कालाङ्गानि " इस श्लोक प्रकारसे जिस अंगमें हैं उसपर व्रण करेगा, वह पाप ग्रह अपनी राशि अंशमें वा शुभ युक्त होतो वह व्रण गर्भहीसे होगा और प्रकारसे पीछे होनेवाला कहना, लक्ष्म रोमोंकी पुञ्जीको कहते हैं ॥ २६ ॥ (हरिणीवृत्त)

इति मही० विरचि०बृहज्जातके भाषाटीकायां सूतिकाऽध्यायः पञ्चमः॥५॥

अरिष्टाध्यायः ६.

अरिष्ट योग।

सन्ध्यायां हिमदीधितिहोरा पापैर्भान्तगतैर्निधनाय।
प्रत्येकं शशिपापसमेतैः केन्द्रैर्वा स विनाशमुपैति॥ १॥

सूर्य बिम्बके आधा अस्त होनेसे डेढ घडी पीछे तक सन्ध्या कहते हैं ऐसे समयमें जिसका जन्म हो और लग्नमें चन्द्रमाकी होरा हो और कोई भी पापग्रह राशिके अन्त्य नवांशकमें हो तो वह बालक नहीं बचेगा, अथवा चन्द्रमा केन्द्रमें पापयुक्त हो और तीनों केन्द्रोंमें पापग्रह हों तो भी वही फल होगा॥ १॥ (विद्युन्माला)

चक्रस्य पूर्वोत्तरभागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयाभितश्च॥ २॥

कुण्डलीमें लग्नसे सप्तमपर्यन्त पूर्व भाग है परन्तु लग्नके जितने नवांश भुक्त हों उतनेही चतुर्थकेभी पूर्वार्द्धभी यहां गिनती नहीं है, चक्र पूर्वार्द्धमें पापग्रह हों और उत्तरार्द्धमें शुभ ग्रह हों और लग्नमें कर्क वा वृश्चिक राशि हो तो वह बालक शीघ्रही नष्ट हो जावे, अथवा बारहवां पापग्रह लग्नमें आनेको हो और छठा पापग्रह सप्तममें जानेको हो तो मृत्यु योग है ऐसे ही दूसरे आठवें पापग्रह वक्र हो तो मृत्यु योग है, और प्रकार अर्थ है कि लग्नमें वा सप्तममें पाप कर्त्तरी हो मृत्यु योग है॥ २॥ (इन्द्रवज्रा)

पापावुदयास्तगतौ क्रूरेण युतश्च शशी।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदचिरात्॥ ३॥

पापग्रह लग्न और सप्तमें हो और चन्द्रमा पापयुक्त हो शुभ ग्रह चन्द्रमाको न देखे तो बालक शीघ्र मर जावे॥ ३॥ (मविपुला छन्द)

क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः।
केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत् क्षिप्रं निधनं प्रवदेत्॥ ४॥

क्षीण चन्द्रमा बारहवां हो, लग्न और अष्टमस्थानमें पापग्रह हो और किसी केन्द्रमेंभी शुभग्रह न हो तो बालककी मृत्यु कहनी ॥ ४ ॥ (भविपुलाछन्द)

क्रूरेण संयुतः शशी स्मरान्त्यमृत्युलग्नगः।
कण्टकाद्बहिः शुभैरवीक्षितश्च मृत्युदः ॥ ५ ॥

चन्द्रमा पापयुक्त ७।१२।८।१ इन भावोंमें हो और चन्द्रमाको शुभ ग्रह न देखे और शुभग्रह केन्द्रमें हो तो बालककी मृत्यु कहनी ॥ ५ ॥ (अनुष्टुप्)

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते
शुभैरथ समाष्टकं दलमतश्च मिश्रैः स्थितिः।
असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासं शुभे
कलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे ॥ ६ ॥

चन्द्रमा छठा वा आठवां हो पापग्रह उसे देखें तो शीघ्र मृत्यु होगी और उसी चन्द्रमाको शुभग्रहभी देखे तो आठ वर्षमें होगी, शुभ पापीकी दृष्टि बराबर चन्द्रमापर हो तो ४ वर्ष बचेगा, चन्द्रमापर ६ । ८ भावमें किसीकी भी दृष्टि न हो तो अरिष्टभी नहीं होगा, जिसका कृष्ण पक्षमें दिनका जन्म वा शुक्ल पक्षमें रात्रिका जन्म हो और चन्द्रमा पापयुक्त ६ । ८ में भी हो तौभी अरिष्ट नहीं होगा; जो छठे आठवें स्थानमें बुध वा बृहस्पति वा शुक्र हो और उसे बलवान् पापग्रह देखे तो वह बालक १ महीने बचेगा. जिसका लग्नेश पापयुक्त वा पापजित अर्थात् ग्रहयुद्धमें हारा हुवा हो तो एक महीना बचे उपरान्त मरे ॥ ६ ॥ (पृथ्वी वृत्त)

लग्ने क्षीणे शशिनि निधनं रन्ध्रकेन्द्रेषु पापैः
पापान्तःस्थे निधनहिबुकद्यूनसंस्थे च चन्द्रे ।
एवं लग्ने भवति मदनाच्छिद्रसंस्थैश्च पापै-
र्मात्रा सार्द्धं यदि च न शुभैर्वीक्षितः शक्तिभृद्भिः ॥ ७ ॥

लग्नमें क्षीण चन्द्रमा हो और अष्टम और केन्द्रों १।४।७।१० में पाप ग्रह हो तो बालककी शीघ्र मृत्यु होवे और पापग्रहोंके बीच चन्द्रमा अष्टम

चतुर्थ सप्तम भावमें हो तो भी मृत्यु कहना और लग्नमें पापान्तःस्थ चन्द्रमा सातवें वा आठमें स्थानमें हो और चन्द्रमाको बलवान् शुभग्रह न देखें तो बालक तथा उसकी माता साथही मरें चन्द्रमा पर शुभग्रहोंकी दृष्टिभी हो तो बालक मरे और माता बच जाय ॥ ७ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

राश्यन्तगे सद्भिरवीक्ष्यमाणे चन्द्रे त्रिकोणोपगतैश्च पापैः।
प्राणैः प्रयात्याशु शिशुर्वियोगमस्ते च पापैस्तुहिनांशुलग्ने ॥८॥

चन्द्रमा किसी राशिके अन्त्य नवांशकमें हो शुभग्रह न देखें पापग्रह त्रिकोण ९ । ५ में हो तो बालक शीघ्र मरे, लग्नमें चन्द्रमा सप्तममें पाप हो तो मृत्यु होवे ॥ ८ ॥ (इन्द्रवज्रा)

अशुभसहिते ग्रस्ते चन्द्रे कुजे निधनाश्रिते
जननिसुतयोर्मृत्युर्लग्ने रवौ तु स शस्त्रजः।
उदयति रवौ शीतांशौ वा त्रिकोणविनाशगे-
र्निधनमशुभैर्वीर्योपेतैः शुभैर्न युतेक्षिते ॥ ९ ॥

शनि राहुके साथ चन्द्रमा लग्नमें हो और मङ्गल अष्टमस्थानमें हो तो मा-बेटा दोनोंकी मृत्यु होवे, इस योगमें सूर्यभी साथ हो तो उनकी मृत्यु शस्त्रसे होवे वा शनि बुध युक्त ग्रस्त सूर्य लग्नमें और मङ्गल अष्टम हो यहभी अर्थ है। ग्रस्त, सूर्य अमावस्याके दिन राहु केतु युक्तको कहते हैं और लग्नमें सूर्य वा चन्द्रमा हो त्रिकोण ९ । ५ अष्टममें पाप ग्रह हो बलवान् शुभग्रह न देखें न युक्त हो तो मृत्यु होवे ॥ ९ ॥ (हरिणी वृत्त)

असितरविशशाङ्कभूमिजैर्व्ययनवमोदयनैधनाश्रितैः।
भवति मरणमाशु देहिनां यदि बलिना गुरुणा न वीक्षिताः॥१०॥

बारहवां शनि, नवम सूर्य, लग्नका चन्द्रमा, अष्टम मङ्गल हों इनको बलवान् बृहस्पति न देखे तो बालककी शीघ्र मृत्यु होवे. बृहस्पति किसीको देखे किसीको न देखे तो अरिष्ट मात्र कहना, पञ्चम बृहस्पति इन सबको देखे परन्तु बलहीन हो तो दोषपरिहार नहीं करता ॥ १० ॥ (अपरवक्त्रवृत्त)

सुतमदननवान्त्यलग्नरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदिबलिभिर्नविलोकितो युतोवा ॥ ११

क्षीण चन्द्रमा पापयुक्त लग्न वा पञ्चम वा सप्तम वा नवम वा अष्टम हो और उसे बलवान् शुक्र बुध बृहस्पति न देखै तो बालककी मृत्यु होवै ॥ ११ ॥ (पुष्पिताग्रा)

अरिष्ट योगोंके अनुक्तकालका परिज्ञान।

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चन्द्रे स्वं वा तनुगृहमथवा।
पापैर्दृष्टे बलवति मरणं वर्षस्यान्ते किल मुनिगदितम् ॥ १२ ॥

इति बृहज्जातकेऽरिष्टाध्यायः ॥ ६ ॥

जिन योगोंके फलका समय नहीं कहा उनमें योग करनेवाले ग्रहोंमेंसे जो बलवान् है उसकी स्थित राशि पर जब चन्द्रमा आवे तब अरिष्ट होगा अथवा चन्द्रमा जो पुनः उसी अपनीवाली राशिमें जब आवै परंतु इतने विचार एक वर्षके भीतर चाहिये जिन योगोंका समय नहीं कहा उसका फल वर्ष भीतर हो जाता है ॥ १२ ॥ (भ्रमरविलसित)

अरिष्टाध्यायके पीछे अरिष्ट भङ्ग सर्वत्र रहता है परंतु यहां आचार्यने कुछ इसी अध्याय और कुछ राजयोगोमें अंतर्भाव करदिया, यह सर्व साधारणमें नहीं जाने जाते, इस कारण मैं कुछ अरिष्ट हारक योगोंको दोहों में लिखता हूं—

प्रथम भवनमें देवगुरु, अति बलवन्त जो होय। योग अरिष्ट जहं तहां छिनमें देवै खोय ॥ १ ॥ जोरदन्त तनुभावपति, पाप न देखे कोय। शुभ देखें धन जन सहित, दीरघजीवी होय ॥ २ ॥ देव दैत्य गुरु चन्द्रसुत, दसखानेमें चंद। जो भी अष्टम पाप युत, करे बुरा फल बन्द ॥ ३ ॥ शुभराशीमें पूर्ण शशि, शुभग्रहोंके बीच। देखे उशना रिष्टको, कूट बहावे कीच ॥ ४ ॥ विधुसुत अरु दोनों गुरु, कण्टकमें बलवन्त। जो भी पाप

सहाय हों, करें दुरितका अन्त ॥ ५ ॥ शुक्लपक्ष निशि जन्ममें, चन्दा पूर्ण शारीर। बैठा अष्टम षष्ठमें, करै नहीं कछु पीर ॥ ६ ॥ शुभराशि द्रेष्काण पुनि, शुभराशि शुभयान। शुभ खेचरशुभ देत हैं, दबै मृत्युकी खान॥ ७ ॥ चन्द्रराशि पति शुभखचर, केन्द्रकोणमें होय। योगजनित सब दुष्ट फल, रहै न पूरा होय ॥ ८ ॥ सफल अशुभ शुभ वर्गमें, देखें गुरु बलवन्त। सबहिं बुराहि दूरकर, करते सौख्य नितन्त ॥ ९ ॥ उपचयमें राहू बसे, देखें शुभ बलवान। बाल अरिष्ट विनाशके, आयू देत निदान ॥ १० ॥ सर्व गगनचर जन्ममें, शीर्षोदयके होय। नष्ट होत है सब दुरित, बकारती जु नहिं कोय ॥ ११ ॥ लग्न चन्द्रको सातही, देखे ग्रहगत लाज। कहत मही यह बालका, सुखी करैगा राज ॥ १२ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकाया-
मरिष्टाऽध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

आयुर्दायाऽध्यायः।७.

अन्य आचार्योंके मतसे ग्रहोंका परमआयुष्य।

मययवनमणित्थशक्तिपूर्वैर्दिवसकरादिषु वत्सराः प्रदिष्टाः।
नवतिथिविषयाश्विभूतरुद्रदशसहिता दशभिः स्वतुङ्गभेषु ॥ १ ॥

दशा, अंशायु, पिण्डायु निसर्गायु तीनप्रकारकी कहते हैं–यह आचार्यने पहिले और आचार्योंके मत दो प्रकार काटकर आप बहुत ग्रन्थोंसे प्रमाण जानकर अंशायु दशा स्थापन करी है, वह पीछे लिखी जायगी, परन्तु उसमें अनुपातकी रीति प्रकट नहीं, यहां पूर्वमतमें प्रकट है अत एव पहिले वही मत जो मयनाम आचार्य यवनाचार्य मणित्थाचार्य शक्ति पराशर आदियोंने कहा सो लिखा जाता है, दशाके लिये सूर्यादि ग्रहोंके वर्ष- सूर्यके ९ दश सहित १९, चन्द्रमा १५ दश सहित २५, एवं दश सहित सबके हैं मङ्गल १५, बुध १२, बृहस्पति १५, शुक्र २१ शनि २० ये वर्ष प्रमाण है ॥ १ ॥ (पुष्पिताग्रा)

नीचस्थ ग्रहोंपरसे आयुर्दायका ज्ञान।

नीचेऽतोऽर्द्धं ह्रसति हि ततश्चान्तरस्थेऽनुपातो
होरा त्वंशप्रतिममपरे राशितुल्यं वदन्ति ।
हित्वा वक्रं रिपुगृहगतैर्हीयते स्वत्रिभागः
सूर्योच्छिन्नद्युतिषु च दलं प्रोज्झ्य शुक्रार्कपुत्रौ ॥ २ ॥

जो ग्रह परम उच्च हो वह पूरे वर्ष पाता है और परम नीचमें आधा पाता है. जैसे-सूर्य मेषके १० अंशपर होगा तो १९ वर्ष पूरे दशा पावेगा, जो परम नीच तुलाके १० अंश पर हो तो आधा (९ वर्ष ६ महीने) पावेगा इनके बीच हो तो (अनुपात) त्रैराशिककी रीतिसे करना, उच्चके समीप तत्काल ग्रह स्पष्ट हो तो उच्चराश्यादिके साथ, नीचके समीप हो तो नीच राश्यादिके साथ त्रैराशिककी रीतिसे अनुपात करना । यथा ग्रह स्पष्ट अपने नीच स्पष्टमें घटाके जो अंक रहैं उससे उसी ग्रहके उक्त वर्षोंका आधा अर्थात् नीच वर्षको गुणदे ६ राशिसे भागदे,जो लब्धि हो उसे उसी ग्रहके नीच वर्षोंमें जोडदे जो हो वह उस ग्रहकी वर्षादि दशा होती है । यदि ग्रह स्पष्ट उच्चके समीप होकर उच्चसे आगे हो तो ग्रहस्पष्टमें उच्चको घटावे, यदि ग्रहस्पष्ट उच्चसे पीछे हो तो ग्रहस्पष्टहीको उच्चमें घटावे, शेषसे उसी ग्रहके उक्त वर्षका आधा अर्थात् नीच वर्षको गुणदे और छः राशिसे भागदे जो लब्धि वर्षादि हो उसको उसी ग्रहके उच्च वर्षमें घटा देनेसे दशा होगी। और यदि ग्रहस्पष्ट नीचके समीप होकर नीचसे आगे हो तो ग्रहस्पष्टमें नीचको घटावें, यदि ग्रहस्पष्ट नीचसे पीछे हो तो ॥ **उदाहरण**-शुक्र स्पष्ट ३ । २५ । १७ । ३८ । शु० उच्च ११।२७।०।० नीच ५।२७।०।० उच्चवर्ष २१ । ० । ० नीच वर्ष १० । ६ । ०।० नीचमें ग्रह स्पष्ट घटाया २ । १ ।४२ ।२२ नीच वर्षमे गुण दिया भागहार क्षेपक ६ ।०।०।० छः राशिसे भाग लिया लब्धि ३ । ७ । ५ । ४९ शुक्रका नीच वर्षों १०।६ में जोडा तो १४ ।१ ।५।४९ शुक्र दशा हुई, जब नीचमें स्पष्ट न घटे तो।

उदाहरण–भौमस्पष्ट ४ । ९ । ४५ । ५३ उच्च ९ । २८ । ० । ० नीच ३ । २८ । ० । ० उच्च वर्ष १५ । ० । ० । ० नीच वर्ष ७ । ६ । ० । ० स्पष्टमें नीच घटाया ० । ११ । ४५ । ५३ इससे नीच वर्ष गुणाकर क्षेपक ६ । ० । ० । ० से भाग लिया लब्धि ० । ५ । २६ । २८ नीच वर्षोंमें जोड दिया ७ । ११ । २६ । २८ भौमदशा हुई, ऐसाही सबका जानना । लग्न दशाके हेतु जितने नवांशक लग्नके भुक्त हुये हों इतनेही वर्ष लग्नकी दशा होती है. जैसे–लग्न स्पष्ट ७ । २५ । १० । १७ है, २३ । २० अंशपर्यन्त ७ नवांश भुक्त हुये यही ७ वर्ष मिले, अवशेष १ । ५० का त्रैराशिक जैसा १ । ५० को १२ से गुण दिया ३ । २० से भाग लिया लब्धि ६ महीने हुये शेष १२० को ३० से गुण दिया ३ । २० अंशकी कला २०० से भाग लिया लब्धि १८ दिन हुये, शेष कुछ नहीं है । यदि होता तो ६० से गुणकर २०० के भाग देनेसे घडी मिलती । यह वर्ष ७, मास ६, दिन १८; घटी ७ लग्नकी दशा हुई । और किसीका मत है कि, लग्न स्पष्टमें जितनी राशियां भुक्ति गई उतने वर्ष लग्नदशा होती है. जैसे–इसी लग्न स्पष्टमें ७ राशि भुक्त हुई यही ७ वर्ष हुये, बाकी २५ । १० । १७ हैं इनका विकलापिण्ड ९०६१७ महीना प्रमाण १२ से गुण दिया तो १०८७०४ अंश ३० का विकला पिण्ड १०८००० भाग दिया तो लब्धि मास १० दिन २ घडी ३ हुये. महीना मिले उपरान्त शेष अंकको ३० से गुणाकर १०८००० से भाग दिया लब्धि दिन फिर भी शेषांकको ६० से गुण दिया उसी भागहारसे भाग दिया तो लब्धि घडी मिलैगी, इस रीतिसे लग्नदशा ७ । १० । २ । ३ हुई । अब यहां दो प्रकारकी लग्न दशा कही है, इसमें निश्चय यह है कि, षड्वर्गमें लग्नेशका बल बहुत हो तो राशि तुल्य वर्ष और लग्न नवांशेश विशेष बलवान् हो तो राशिको छोडकर अंश तुल्य वर्ष लग्नदशा होती है । जो ग्रह शत्रुराशिमें हो तो उसका तीसरा भाग घटा देना परन्तु मङ्गल शत्रुराशिमेंभी नहीं घटता है । दूसरा प्रकार यह है कि, जो ग्रह वक्र हो रहा है वह शत्रुराशिमेंभी हो तो तीसरा भाग नहीं घटता यही अर्थ ठीक है । जो

ग्रह अस्तङ्गत है उसका अपने वर्षोंका आधा घट जाता है परन्तु शुक्र और शनि अस्त हुयेमें भी पूरेही रहते हैं आधे नहीं घटते ॥ २ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

ग्रहोंके योगसे आयुर्दायके चक्रकी हानि ज्ञान।.

सर्वार्द्धत्रिचरणपञ्चषष्ठभागाः क्षीयन्ते व्ययभवनादसत्सु वामम् ।
सत्स्वर्द्धं ह्रसति तथैकराशिगानामेकोंशं हरति बली तथाह सत्यः ३

जो पाप ग्रह बारहवां हो उसके पूरे वर्ष घट जाते हैं ग्यारहवेंके आधे, दशमके तीसरा भाग, नवमके चौथाई, आठवेंके पञ्चमांश, सप्तमके छठा भाग घटता है और शुभग्रहका आधा घटेगा। यथा–बारहवेंमें आधा ग्यारहवेंमें चौथाई, दशवेंमें छठा भाग, नवेंमें आठवां भाग, अष्टममें दशमांश, सातवेंमें बारहवां भाग घटता है। जो एकही स्थानमें दो तीन वा बहुत ग्रह हों तो सबका भाग नहीं घटता, जो उनमें सबसे बलवान् है उसीका एक भाग घटता है अर्थात् जिस भावमें जिस पाप वा शुभमें जितना घटता है उतना एकही बलवान् ग्रह घटेगा। और यहभी स्मरण रखना चाहिये कि, क्षीण चन्द्रमा और पाप युक्त बुध क्रूर तो हैं परन्तु यहां उनका पापवाला काम नहीं होगा अर्थात् पूरा भाग नहीं घटेगा आधा घटेगा ॥ ३ ॥ (प्रहर्षिणी)

लग्नस्थित पापग्रहसे आयुर्दायक अंशका नाश।

सार्द्धोदितोदितनवांशहतात्समस्तात्
भागोष्टयुक्तशतसंख्यमुपैति नाशम् ।
क्रूरे विलग्नसहिते विधिना त्वनेन
सौम्येक्षिते दलमतः प्रलयं करोति ॥ ४ ॥

अब और संस्कार कहते हैं–उदित नवांश सार्द्धोदित करना अथात् लग्नके जितने नवांश भुक्त हुये हों वे उदित नवांश कहाते हैं, जिस नवांशमें जन्म हुआ वह जितना भुक्त हुवा है उसपरसे त्रैराशिकसे जो फल मिले वह उदित नवांशमें जोड देनेसे सार्द्धोदित उदित नवांश होता है। इसका पिण्ड करके लग्नमें जो पापग्रह है उसकी दशाका पिण्ड गुणना १०८ के भाग

लेनेसे जो वर्ष मिलें वह उस ग्रहके दशा वर्षादिमें घटाय देना, जो उस लग्नस्थ पापग्रह पर शुभग्रहकी पूर्ण दृष्टि हो तो उस फलका आधा न्यून करना, पूरा नहीं घटाना ॥ उदाहरण—लग्न स्पष्ट ७।२५।१०।१७।२३ अंश २० कला पर्यन्त ७ नवांश भुक्त हुये शेष आठवें नवांशकके १ अंश ५० कला हैं इनका त्रैराशिक १।५० का कला पिण्ड ११० को २०० से भाग दिया, लब्धि० शेष ११० को १२ से गुणा किया २०० से भाग दिया लाभ ६ बाकी १२० को ३० से गुणा किया २०० से भाग लिया फल १८ शेषको ६० से गुणाकर वही हारसे भाग लेना चौथा फल मिलेगा यहां अंक शेष न रहा, लब्धि० अब लाभके ४ अंक० ।६।१८।० में गत नवांश ७ को जोड दिये ७।६।१८।० यह सार्द्धोदित उदित नवांश हुआ। लग्नमें पापग्रह शनिके दशा वर्षादि १३।८।१४।४५ इसमें ७।६।१८।०.घटा दिये ६।१।२६।४५ ये शनिकी दशा हुई लग्नके इस शनि पर शुभग्रहकी दृष्टि है इस कारण सार्द्धोदित उदित नवांशका आधा ३।९।९।० घटाया ९।११।५।४५ यह शनिकी दशा हुई जब लग्नमें पापग्रह वा शुभग्रह २ वा ३ वा ४।५।६ हो तो जो ग्रह अंशोंमें लग्नांशकोंके समीप है वही घटेगा, सभी ग्रहोंकी दशा नहीं घटेगी और इस संस्कारमें कोई ऐसा अर्थ करते हैं कि, जो सार्द्धोदित उदित नवांश है उससे सम्पूर्ण ग्रहोंके आयुयोग गुणना, १०८ से भाग लेना जो लब्धि हो समस्तायु पिण्डमें घटा देना जो लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टिभी हो तो उस फलका आधा घटाना, घटायके जो शेष रहै वह समस्त ग्रह दशायु है। उपरान्त दशाहीकी गणनासे सब ग्रहोंके दशा वर्षादि लेने। जैसे शनिकी दशा निकालनी हो तो शनिकी दशा वर्षादि जो पहिले गणितसे आई है
८ उससे समस्त ग्रह दशायु पिण्ड जो मिला है उसको गुणना १२० वर्ष ५ दिनसे भाग लेना जो लब्धि मिले वह शनिकी दशा हुई। इसी प्रकार सभी ग्रहोंकी दशा बनेगी, जो लग्नमें बहुत ग्रह हों तो लग्नांशकके समीप कोई पापग्रह हो तो तब यह संस्कार करना, नहीं तो इसका कुछ उदाहरण

आगे ' यस्मिन्योगे इत्यादि ' आठवें श्लोककी टीकामेंभी लिखा जायगा। यही अर्थ ठीक है ॥ ४ ॥ (वसन्ततिलका)

मनुष्य आदिकी परमायु ।

समाः षष्टिर्द्विघ्ना मनुजकरिणां पञ्च च निशाः
हयानां द्वात्रिंशत् खरकरभयोः पञ्चककृतिः ।
विरूपा साप्यायुर्वृषमहिषयोर्द्वादश शुनां
स्मृतं छागादीनां दशकसहिताः षट् च परमम् ॥ ५ ॥

मनुष्य और हाथीकी परमायु १२० वर्ष ५ दिन है,घोडेकी ३२वर्ष, गधा व ऊंटकी २५ वर्ष,गौ बैल भैंसकी २४ वर्ष, और कुत्ते आदि नखि-योंकी १२ वर्ष, बकरे भेडी आदिकी १६ वर्ष यह परमायु प्रमाण पूरा नही होता केवल गणितके हेतु निरूपित है, घोडे आदिकोंकी दशामें जो काम मनुष्योंके १२० वर्ष ५ दिनसे किया जाता उसी रीतिसे ३२ आदि वर्षोंसे करना ॥ ५ ॥ (शिखरिणी)

परम आयु पानेके योग ।

अनिमिषपरमांशके विलग्ने
शशितनये गवि पञ्चवर्गलिप्ते ।
भवति हि परमायुषः प्रमाणं
यदि सकलाः सहिताः स्वतुङ्गभेषु ॥६॥

जब मीन लग्न नवमनवांशक पर हो और बुध वृषके २५ कलामें हो सभी ग्रह अपने अपने परमोच्चोंमे हों तो पूर्णायु जैसे मनुष्योंके १२० वर्ष ५ दिन हैं पूरी आयु मिलती हैं ॥ ६ ॥ (पुष्पिताग्रा)

यहां अनुपातादिगणितोंके प्रकट समझनेके लिये फिरभी उदाहरण लिखा जाताहै–

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ल०
०	१	१	१	३	११	६	११
९	२	२७	० २४	४	२६	१९	२९



परमोच्चगत होनेसे सूर्यने १९ चन्द्रमाने २५वर्ष पाये मङ्गलको उच्चगत होनेसे पूरे १५ वर्ष मिले परन्तु ग्यारहवें भावमें होनेसे चक्रपात क्रम करके आधा घट गया शेष ७ वर्ष ६ महिने रहे, बृहस्पतिके १५ शुक्रके २१ शनिके १६वर्ष लग्न अंशतुल्य ९वर्ष अब बुधका उच्च कन्या है, यहां सूर्य मेषका है तो बुध कन्यामें होना असम्भव है क्योंकि निरक्षदेश (ध्रुवके समीपवर्ती) देशोंको छोडके अन्यदेशोंमें बुध शुक्र सूर्यसे १ । २ राशिसे उपरान्त अलग नहीं होते कदाचित् शुक्र तीन राशि पर भी पहुंच सकता है यहां बुध १ । ० । २५ स्पष्ट है नीचके समीप होनेसे नीच ध्रुवके ११ । १५ । ० बुध स्पष्टमें घटाया १ । १५। २५रहा इसका लिप्तापिण्ड २७२५ अब त्रैराशिक जैसे बुधके परमनीच वर्ष ६ से बुध स्पष्ट लिप्तापिण्ड २७२५ गुणादिया भगणार्द्ध लिप्ता १०८०० से भागदिया लब्धि १ । ६ । ५ को बुधके परम नीच वर्षों ६ में जोडदिया ७ । ६ । ५ यह बुधने आयु पाई, इन सबके आयु जोडके १२० वर्ष ५ दिन होते हैं. जिसके ऐसे ग्रह पडेंगे उसकी परमायु पूरी मिलेगी, यह आयुप्रमाण सर्वदा ठीक नहीं है केवल त्रैराशिकके लिये प्रमाण कहे हैं यही ठीक होते तो इतनेसे ऊपर आयु कभी नहीं मिलती. जब पूर्वोक्त ग्रह स्पष्ट उतने ही हों और बुध १ । ४ । २ । ० स्पष्ट पर हो तो पूर्वोक्त रीतिसे त्रैराशिक करके वर्ष १ मास ७ दिन १८ बुध पाता है। यह नीच वर्ष ६ में जोड दिया ७ वर्ष ७ महीने १८ दिन हुये और ग्रहोंके पूर्वोक्त ही रहे तो सबका जोड १२० वर्ष १ महीना २३ दिन हुये, यह पूर्वोक्त परमायु १२० । ० । ५ से अधिक होगया। कोई ऐसा अर्थ कहते हैं कि, बुध वृषके २५ कला पर और सभी उच्च राशियोंमें हो तौभी यह योग पूर्णायु देनेवाला हो जाता है परन्तु यह केवल उनकी बुद्धिका चातुर्य है॥

परमायुयोगमें अपवाद।

आयुर्दायं विष्णुगुप्तोऽपि चैवं देवस्वामी सिद्धसेनश्च चक्रे ।
दोषस्तेषां जायतेऽष्टावरिष्टं हित्वा नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात् ॥ ७ ॥

इस प्रकार दशायु मय यवनादिसे तो पूर्व पठितही हैं परन्तु विष्णुगुप्त देवस्वामी सिद्धसेन ये आचार्य भी इस पूर्णायुको प्रमाण करते हैं और सत्याचार्य इसमें दूषण रखता है कि,एक तो दशागणनामें अनेक आचार्योंके अनेक मत हैं। वराहमिहिराचार्यने एक निश्चय स्थापन नहीं किया कौनसा प्रमाण मानना,दूसरे यह है कि, बालारिष्ट केवल ८ वर्ष पर्यन्त कहे है और ये दशा आयु २० वर्षसे किसी किसीकी नहीं आती। अब जो अनेक मनुष्य ८ वर्षसे ऊपर २० वर्षसे नीचे मरजाते हैं उनकी मृत्यु विना बाल्यारिष्ट वा विनादशायु कैसे हुई यह प्रत्यक्ष दोष है ॥ ७ ॥

यस्मिन्योगे पूर्णमायुः प्रदिष्टं तस्मिन्प्रोक्तं चक्रवर्त्तित्वमन्यैः।
प्रत्यक्षोऽयं तेषु दोषोऽपरोऽपि जीवन्त्यायुः पूर्णमर्थैर्विनापि ॥ ८ ॥

औरभी दूषण कहते हैं-कि 'अनिमिषपरमांशके विलग्ने' इत्यादि योगमें १२० वर्ष ५ दिन पूर्णायु कही है इस योगमें ६ ग्रह उच्चके होते हैं उतने उच्चस्थ होनेमें चक्रवर्ती योगभी कहा है परञ्च बहुतसे लोग निर्द्धनी पूर्णायु पर्यन्त जीवित देखे जाते हैं ६ ग्रह उच्चका फल पूर्णायु है तो चक्रवर्ती राजाभी होना था सो दरिद्री होकर आयु व्यतीत करते हैं॥८॥ (शालिनी)

यह भी प्रत्यक्ष दोष है परन्तु ये शालिनी छंदके दो श्लोक जो दूषणवाले हैं औरको दूषण देते हैं मैं जानताहूं कि, दूषण तो इन्हीं पर है, ये श्लोक वराहमिहिरकृत नहीं हैं और किसीके मतके उन्होंने लिख दिये हैं क्योंकि, आचार्यकी प्रतिज्ञा और मतोंको काटकर स्थापन करनेकी नहीं है जिस प्रकार ये दो श्लोक असम्बद्ध हैं। प्रत्यक्ष निरूपण लिखता हूं कि, "सार्द्धोदितोदितनवांशहतात्समस्तात्" इत्यादिसे लग्नमें पाप ग्रह होनेसे आयुः पात जो किया तो २० वर्षसे कमभी होजाती है पूर्व श्लोकमें लिखा है कि, आयु २० वर्षसे कम नहीं होती तो कैसे कम नहीं होती ?

इसका उदाहरण—यह है कि, ग्रह चक्रमें राश्यादि लिखे हैं, लग्न अंश होनेसे आयु लग्नने नहीं पाई, मङ्गल तात्कालिक १० । २८ परमोच्च ९ । २८ घटाया शेष १ । = इसका लिप्तापिण्ड १८०० इससे भौम नीचके महीने ९० गुणदिये । भगणार्द्ध लिप्ता १०८०० से भाग दिया लब्धि महीने १५ । ८ यह भौम परमोच्च वर्ष १५ में घटाये १२ मास ८ दिन २२ यह मङ्गलने दशा पाई । अब बृहस्पति बारहवां होनेसे चक्र पातक्रमसे आधा घटाया शेष वर्ष ३ मास ८ दिन २२ बृहस्पतिकी दशा हुई ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
०	१	१०	११	९	११	०	१०
९	२	२८	१४	४	२६	१९	०
०	=	०	०	०	०	७	०



अब परमोच्च वा परम नीच गतग्रहका शत्रु क्षेत्रमें तीसरा भाग और अस्तमें आधा घटते हैं ऐसा कहा है तो यहां "अनिमिषपरमांशके" इसमें चन्द्रमाके वृष राशिमें होनेसे तीसरा भाग घटता है तो पूर्णायु नहीं होती, तात्कालिक मित्रामित्रसे यह अयुक्त है यहां शुक्र चन्द्रमाका मित्र तात्कालिक नहीं है, १२ के शुक्र होनेमें वृषका चन्द्रमा शत्रु होता है शत्रु होनेसे तीसरा भाग घटाया तो पूर्णायु नहीं होती अत एव यहां आचार्यका कहना केवल शृङ्गग्राहि न्याय है. यहां तो उच्च वा नीच गत ग्रह शत्रु क्षेत्रमें त्रिभाग अस्तमें आधा नहीं घटाया जायगा इस प्रकारसे पूर्वोक्त त्रैराशिक प्रकारसे सब ग्रहोंके वर्षादि ये हैं—सूर्य १९ वर्ष, चन्द्र २५ वर्ष; मं० २३ वर्ष, श० १० वर्ष, लग्नके० अंश होनेसे कुछ नहीं इन सबका जोड ९८ वर्ष ६ महीने हुये, अब लग्नमें मङ्गल पापग्रह होनेसे "सार्द्धोदित" इत्यादि कार्य करना चाहिये. कुंभ लग्न कुछ भी भुक्त नहीं यहां मतान्तर विधिसे मकरकी संख्या १० को राशि नवमांश संख्या ९ से गुण दिया तो ९० सार्द्धोदित उदित नवांश हुये इसमें उदित गत नवांश १

जोड दिया ९१ सार्द्धोदित उदित नवांश हुये इससे सर्वायु पिण्ड ९८ वर्ष ६ मासको गुण दिये तष्ट करने पर ८९६३ । ६ हुये. इसमें १०८ का भाग लिया फल वर्ष ८२ मास ११ दिन २८ घडी २० हुये. यह सर्वायु पिण्ड ९८ । ६ में घटाया तो वर्ष १५ मास ६ दिन १ घटी ४० आयु हुई । अब सबकी दशाओंकी मिश्र व्यवहारकी रीति होगी ।प्रयोजन—यह है कि "नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात्" जो कहा सो यहां तो १६ वर्ष हो गई अब वह श्लोक कैसे असङ्गत न हुआ. जब कोई वितर्क करे कि, वराहमिहिरने पापरहित मीन लग्न कहा है तो धन लग्नमें क्षीण चन्द्रमा १० अंश पर किसीके जन्मसमयमें है बुध अस्तङ्गत है और सभी ग्रह अपने २ नीचोंमें हैं तो चक्रपात क्रमसे आयु बहुत घटती है जैसा बुधका पूर्ववत् विधि करनेसे वर्ष १० मास १० लग्नके शून्य अंश होनेसे कुछ न मिले चन्द्रमाका क्षीण होनेसे पाप सम्बन्ध हुवा, यद्वा बारहवां होनेसे चक्रपात क्रमसे कुछ भी आयु न हुई । सूर्यका ग्यारहवां होनेसे आधा घटा

सू. ६	चं. ७	मं. ३	बु. ६	बृ. ९	शु. ५	श. ०	ल. ८
९	२०	२७	१४	४	२६	१९	०

शेष वर्ष ४ मास ९ बुध अस्त होनेसे आधा वर्ष ५ मास ५ शुक्र दशम होनेसे तीसरा भाग घटना था सौम्य होनेसे तीसरा भागका आधा घटा तो वर्ष ८ मास ९, मङ्गल अष्टम होनेसे पांचवां भाग घटा वर्ष ६ रहे । इसी प्रकार सूर्यके वर्ष ४ मास ९ चन्द्रमा ०।० मङ्गल६।० बुध ५ । ५।बृहस्पति वर्ष ७ मा० ६। शुक्र व० ८ मा० ९ शनैश्वरव० १०।० लग्न ०।० सबका योग वर्ष ४२ मास ५ हुये इसमें अस्तका आधा घटाना था वह पहिलेही घटाया गया इस उदाहरणमें सब कमी आयुवाले हैं तौभी ४२ वर्षसे कम आयु नहीं होती. जो पूर्व लिखा है कि आयु २० से कम नहीं होती तो यहां सब प्रकार कमवाले हैं तौभी ४२ से कम न हुई ।

उसने २० का प्रमाण कैसे किया पापरहित मीन लग्नसे कहा था तो यहां भी धन लग्न निष्पापही है इसमेंभी उस श्लोककी असंबद्धता प्रगट होती है कोई ऐसाभी कहते हैं कि, जो" अष्टावरिष्टं हित्वा नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात्" अर्थात् अरिष्टाध्यायवाले ८ वर्ष छोडकर २० वर्ष भीतर भी मरे देखे जाते हैं वह विनारिष्ट वा विना दशायु कैसे मरे तो मृत्युयोग और प्रकारके भी जो ८ वर्षके ऊपर २० वर्षके भीतर आय पडते हैं वहभी जिन आचार्योंने अनेक प्रकार आयु विधान करे हैं उन्होंने मृत्युयोगभी कहे हैं। जैसे " षष्ठाष्टमस्थो रिपुदृष्टमूर्तिः पापग्रहः पापगृहे यदि स्यात्। स्वान्तर्दशायां मरणाय जन्तोर्ज्ञेयः स युद्धे विजितो ग्रहान्यैः। १। " पापग्रह छठा वा अठवां हो शत्रुकी दृष्टि हो और युद्धमें हारा हो पापराशिमें हो तो अपनी अन्तर्दशामें मृत्यु देता है। १। और "षष्ठाष्टमस्थो रिपुदृष्टरौद्रः पापैः सुहृत्स्थनगतश्च दृष्टः। स्वान्तर्दशायां प्रकरोति मृत्युं पाशाध्वबन्ध्यादिपारिक्षयाद्वा। २। " ६। ८ वा ४ भावमें पाप ग्रह पाप दृष्ट हो तो अपनी अंतर्दशामें फांसी वा बन्धन वा मार्गसे मृत्यु देता है। २। " क्रूरदशायां क्रूरः प्रविश्य चान्तर्दशां यदा कुरुते। पुंसां स्यात्संदेहस्तदारियोगो हि संदेह महान्। ३।"पाप ग्रहकी दशामें पाप ग्रहका अन्तर होनेमें मृत्यु फल है।३। "रवितनयस्य दशायां क्षितिजस्यान्तर्दशा यदा भवति। बहुकालजीविनामपि मरणं निःसंशयं वाच्यम्। ४। " शनिकी दशामें मङ्गलकी अन्तर्दशा मृत्यु देती है ॥ ४ ॥ " क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा। तत्स्थेन वाऽरिणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः। ५। " छठे आठवेंमें क्रूरराशिका क्रूरग्रह जो शत्रु युक्त वादृष्ट हो तो अपनी दशामें मृत्यु देता है। ५। " यो लग्नाधिपतेश्शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशां गतः। करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्यः प्रभाषते। ६। " लग्नेशका शत्रु लग्नदशाके अन्तर्दशामें अकस्मात् मृत्यु देता है। ६। इस प्रकार जिनके लग्नमें पाप नहीं हैं उनके ८ वर्ष उपरान्त ५० वर्ष भीतर दशान्तर विचारसे मृत्यु होती ही है। इससेभी वह सातवां श्लोक दूषणवाला असम्बद्ध है, आठवें श्लोकमें

जो लिखा है कि, जिस योगसे पूर्णायु होती है उसीसे चक्रवर्तीभी होना चाहिये तो यह इस प्रकार असम्बद्ध है, उदाहरण-किसीके जन्ममें सूर्य वृषके १० अंशपर, बुध मेषके १५ अंश, बृहस्पति सिंहके ५ अंश' शुक्र मेषके २७ । २० अंश, शनि कुंभके २० अंश और लग्न धनुके २९ अंश ५९ क० पर है इनका पूर्वोक्त प्रकारसे दशा वर्षादि सूर्य १७ । ५ चन्द्रमा २२ ११ मं० १३ । ९ । बु० ७ । ० बृ० १३ । ९ शुक्र १२ । ११ । २३ शनि १३ । ४ लग्न ९ । ० हुये इनमें बृहस्पति चक्रपात क्रमसे आठवां भाग घटायके ११ । १ । ५ सूर्य शत्रु राशिमें त्रिभाग घटाना था परंतु यहां तत्काल मित्र है अपने मूलत्रिकोणसे नवम होनेके कारण न घटा ऐसेही चन्द्रमा भी मित्र क्षेत्र होनेसे न घटा " इन्दोर्बुधे देवगुरुं च विन्द्यात् " इस वचनसे अब मङ्गलका शनि शत्रु है तत्कालमें एक घरमें रहनेसे अधिक शत्रु हुआ तीसरा भाग घटना था परन्तु " हित्वा वक्रं रिपुगृह" इत्यादि वचनसे मङ्गल नहीं घटा । बुध मित्रगृह होनेसे न घटा । बृहस्पतिका सूर्य मित्र है इससे यह भी न घटा । शनि स्वक्षेत्र होनेसे न घटा सब संस्कार करके ग्रहायु यह हुई । सू० १७।५ चं० ११।१।५ मं० १३।९ बु० ७।० बृ० १२ । ० । ११ । १५ शु० ११। २ । २३ श० १३ । ४ ल० ९ । ० सबका योग वर्ष ११० मा० १० दि० ९ घ० १५ हुये, जब चन्द्रमा २२ वर्ष ११ महीने भी हुवा तो योग वर्ष ११४ मा० ८ दि० ४ घ०१५ इतनी आयु होती है चक्रवर्ती योगभी हुआ तो अब देखो कि, यहां केमद्रुम योगभी है चन्द्रमासे बारहवां सूर्य नाभस योगोंमें " हित्वार्कं सुनफानफा" इत्यादि श्लोकसे नहीं गिना जाता दशासे ११५ वर्ष बचैगा परन्तु केमद्रुम योगके फलसे मलिन दुःखित नीच निर्द्धन प्रेष्य खल अवश्य होनाही है तो " यस्मिन्योगे पूर्णमायुः" इत्यादि श्लोकका दूषण कैसे ठीक रहा? यह श्लोक भी असम्बद्ध होनेसे वराहमिहिरकृत नहीं समझा जाता. जो कि, आचार्यकी प्रतिज्ञा है कि, केवल अपना नहीं सबके मतोंको लिखता हूं ।



अब कोई इसमें शंका करेकि, चन्द्रमाके केन्द्रमें होनेसे केमद्रुम नहीं होता तो यहां चन्द्रमा नहीं गिना जायगा। क्योंकि, चन्द्रमा लग्नकी गिनतीमें हैं। कहा भी है कि, 'मूर्तिं च होरां शशिनं च विन्द्यात्' चन्द्रमा लग्नही है। चन्द्रमाके साथ अन्य ग्रहका योग करना चाहिये यहां तो आपही तो योगकारक है आपही बाधक कैसे होगा और लग्नसे चन्द्रमा सप्तम होनेसे केमद्रुम योग नहीं घटता ॥

जीवशर्मा और सत्याचार्यके मत।

स्वमतेन किलाह जीवशर्मा ग्रहदायं परमायुषः स्वरांशम् ।
ग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यं बहुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम् ॥९॥

अन्य आचार्योंने ग्रहोंके दशा वर्ष १९ चन्द्रमाके २५ इत्यादि उच्चमें और नीचमें इनके आधे कहे है, जीवशर्मा नाम आचार्यने परमायुके सात विभाग करके सातही ग्रहोंके कह दिये हैं जैसे—परमायु १२० वर्ष ५ दिनका सप्तमांश वर्ष १७ मास १ दिन २२ घटी ८ पल ३४ प्रत्येक ग्रह उच्चमें पाता है और नीचमें इसका आधा ८। ६। २६। ४। १७ नीचमें अनुपात कहा है। और कर्म चक्रपातादि पूर्ववत् ही कहा है परन्तु यह मत जीवशर्माने केवल अपनी युक्तिसे कहा है और किसीका सम्मत नहीं है इस कारण यह ठीक नहीं, जो यवनेश्वर तथा सत्याचार्य मतके सम्मत वराहमिहिरने प्रमाण किया ठीक दही हैं कि " ग्रहभुक्तनवांश " इत्यादि पहिले पिण्डायु कही गई। अब अंशायु कहते हैं कि, जितने नवांश मेषादि गणनासे ग्रहने भुक्त हों उतने ही वर्ष हुये, जो वर्तमान नवांश है उसका त्रैराशिक करनेसे मासादि होते हैं ॥ ९ ॥ (औपच्छन्दसिक).

उदाहरण—जैसे किसी ग्रहका स्पष्ट ७।२५।१०।१७है।२३।२० अंशपर्यंत ७ नवांश भुक्त हुये हैं, यही ७।वर्ष पाये, अवशेष ३।५०।का त्रैराशिक जैसे ३।५० अंशकलाको १२ से गुण दिया ३।२० की

कला २०० से भाग लिया, लब्धि ५ महीने हुये, शेष १२० को ३० से गुणाकर २०० से भाग दिया, लब्धि १८ दिन हुये। शेष ० इससे घटी पलके जगे ० । ० मिले इसी रीतिसे सब ग्रहोंका करना। यहां उदाहरणमें ७ नवांशके ७ वर्ष केवल रीति समझनेको लिखा है, वर्षोकी गिनती मेषादि है. जैसे—मेष नवांश हो तो १ वर्ष, वृषमें २ वर्ष एवम् मीनमें १२ वर्ष पावैगा। परन्तु यह अर्थ कल्पित है चरितार्थ नहीं, क्योंकि, इसमें राशियां छूट गई हैं, आचार्य वचन "राश्यंशकचारयोगात्" ऐसा है। इसमें राशि अंश कलाका पिण्ड करके एक नवांशके कला २०० से पिण्डमें भाग लेनेसे वर्षादि मिलेंगे यह युक्ति अचार्यने सर्वसम्मत होनेसे प्रमाण की है. इसको विस्तारपूर्वक उदाहरण सहित अगले श्लोकमें लिखताहूं। वही अंशायु दशा ठीक है ॥

सत्याचार्यके मतसे आयु विधान ।

सत्योक्ते ग्रहमिष्टं लिप्तीकृत्वा शतद्वयेनाप्तम् ।
मण्डलभागविशुद्धेऽब्दाः स्युः शेषात्तु मासाद्याः ॥ १० ॥

तात्कालिक ग्रह लिप्ता पर्यन्त पिण्ड करना २०० से भाग लेकर जो मिले वह वर्षके जगे स्थापन करना १२ ऊपर हों तो १२ से तष्ट कर देना जो रहा उसको १२ से गुण कर २०० के भाग देनेसे महीनें मिलेंगे शेषको ३० से गुण कर २०० से भाग लेनेसे दिन मिलेंगे ऐसेही शेष अंकको ६० से गुण कर २०० से भाग देनेसे घटी शेषसे पल मिलते हैं॥ १० ॥ (आर्या) उदाहरण—स्पष्ट तात्कालिकराश्यादि १ । ८ । ४५ इसका लिप्ता पिण्ड २३२५ इसमें २०० का भाग देनेसे लब्धि ११ ये वर्ष हुये, १२से उपर होते तो १२ से तष्ट करना था, यहां पहले ही कम है, शेष अंक १२५ मास १२ से गुण दिया १५०० इसमें २०० से भाग लेकर लब्धि ७ मास हुये शेष १०० इसको ३० गुण ३००० का दो सौसे भाग

लिया १५ दिन मिले शेष कुछ न रहा. घटी पल० । ० हुये, वर्ष ११ मास ७ दिन १५ घटी० पल० समस्त फल हुये । अब "मण्डलभागविशुद्धे" यह संस्कार करना है कि, इन ११ । ७ । १५ । ० । ० को पहिले १२से गुण दिया १३२ । ८४ । १८० इनको फिर ९ से गुण दिया ११८८। ७५६ । १६२० अब लिखा १६२० हैं ६० से भाग दिया बाकी घटी रही, यहां विपलाके स्थानमें ० है, अङ्क होता तो उसे भी १२ और ९ से गुणकर ६० से ऊपर चढाना था, अब घटी स्थान० से लब्धि २७ ऊपरके अङ्क ७५६ में जोड दिया ७८३इसमें ३० से भाग लेकर शेष ३ दिन हुये लब्धि २६ को ऊपरका अङ्क ११८८ में जोड दिया १२१४ इसमें १२ से भाग लेकर शेष२महीने रहे, लब्धि ११ मेंसे भाग लेना था, भाग न जानेसे ११ही रहे यह वर्ष हुये एवम् दशा वर्ष ११ मास२दिन३घटी ० पल ० हुये इतना संस्कार करके तब 'स्वतुङ्गवक्र' इत्यादि श्लोकोक्तसंस्कार करना १२०वर्ष दिनसे पर होनेका आश्चर्य नहीं है, इसकी व्यवस्था छठे श्लोककी टीकामें लिखी है और अनुपात त्रैराशिकका उदाहरणभी लिखा गया है, शीघ्रबोधके लिये यहां प्रकारांतरसे लिखा, यह सत्याचार्यका मत यवनेश्वर आरफुजित बादरायण वराहमिहिरादि बहुतोंका सम्मत होनेसे यही ठीक है ॥

स्वतुङ्गवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणं द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः।
इयान् विशेषस्तु भदत्तभाषिते समानमन्यत्प्रथमेप्युदीरितम् ॥११॥

(भदत्त) सत्याचार्योक्त दशामें पूर्वसंस्कार लिखित ही हैं.इतना विशेष है कि, जो ग्रह अपने उच्चमें हैं या वक्र गति हैं उनके दशा वर्षादि जो मिले वह त्रिगुणी करनी चाहिये, जो ग्रह वर्गोत्तमांश वा अपने नवांश या अपनी राशि वा अपने द्रेष्काणमें हैं वह द्विगुण करना और सब कर्म पूर्वोक्त करना, जैसे जो ग्रह शत्रु राशिमें है वह तीसरा भाग घटता है, मङ्गल शत्रु क्षेत्रगत भी नहीं घटता और शुक्र शनि विना अस्तङ्गत ग्रह आधा घटता है "सर्वार्द्धे "इति चक्रपातभी करना ॥ ११ ॥ (वंशस्थवृत्त)

सत्यमतानुसारी लग्नायुर्दाय ।

किंत्वत्र भांशप्रतिमं ददाति वीर्यान्विता राशिसमं च होरा ।
क्रूरोदये योऽपचयः स नात्र कार्यं च नाब्दैः प्रथमोपदिष्टैः १२ ॥

" होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता" इत्यादिसे लग्नेश बलोत्कट हो तो लग्नने जितनी राशि मेषादि भुक्त की हैं उतने वर्ष मिले, शेष जो अंशादि हैं उनसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मासादि लेने, जो लग्नांशमें अधिक बली हो जितने नवांश भोग गये उतने वर्ष मिले, वर्तमान नवांशसे मासादि लेने, लग्नमें पाप ग्रह होनेमें पूर्व जो सार्द्धोदित उदित नवांशसे आयुपिंडपातन किया गया वह कर्म यहां न करना ॥ १२ ॥ (इन्द्रवज्रावृत्त)

सत्याचार्य मतका श्रेष्ठय ।

सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु कुर्वन्त्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः ।
आचार्यकत्वं च बहुघ्नतायामेकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम् ॥ १३ ॥

इसमें शंका यह है कि, कोई ग्रह स्वगृहमें है तो द्विगुणा हुवा, पुनः वही ग्रह स्वनवांशमें भी है तो फिर द्विगुणा हुवा, ऐसेही अपने द्रेष्काणमें भी हो तो पुनः द्विगुण और वर्गोत्तमांशमें भी हो तो भी द्विगुण, वही ग्रह वक्र भी हो तो त्रिगुण और जो उच्चराशिमें भी हो तो पुनः त्रिगुण, इस प्रकार इसकी अनवस्था होती है. इस शंका निवृत्तिके अर्थ श्लोकोत्तरार्द्ध है कि, बहुत वर्गणामें द्विगुणकी प्राप्ति ३ वा ४ पाई जाय तो उतने हीं बार द्विगुण नहीं होता जायगा. जो अवस्था मुख्य है उसके तुल्य एक बार द्विगुण होगा ऐसेही त्रिगुणकी प्राप्तिमें एक ही बार त्रिगुण होगा, घटानेके क्रम भी बहुतकी प्राप्तिमें एकही बार घटेगा चक्रपात जुदा है वह सबका होना ही है जहां द्विगुण और त्रिगुणकी भी प्राप्ति है वहां एक बार त्रिगुणही होगा द्विगुण न होगा, जहां घटानेकी अर्थात् आधा वा त्रिभाग ही करनेकी प्राप्ति है वहां एक बार जो विशेष है उसी कर्मसे घटेगा अर्थात् २ भाग ३ भाग घटानेमें २ भाग ही घटेगा जहां किसी प्रकार घटता है और किसी प्रकार बढता भी है तो पहिले घटनेका मुख्य भाग घटाके वृद्धिके

तुल्य भागसे वृद्धि करना । घटानेके क्रममें पहिले चक्रपातसे हानि कर लेनी पीछे और क्रमसे घटाना वृद्धि इससे भी पीछे करनी यह अंशायु दशा है, आचार्यने पिण्डायु, निसर्गायु छोडकर यही अंशायु प्रमाण करी है औरोंके मतमें लग्न अधिक बली होनेमें अंशायु, सूर्य अधिक बली होनेमें पिण्डायु, कोई चन्द्रमाके बली होनेमें निसर्गायु भी कहते हैं। उसका विधान अगले अध्यायमें कहा जावेगा । दशाका न्यास जो ग्रह पहिले जो पीछे दशामें लिखा जाता है वह भी आगे लिखा जायगा, अंशायु, पिण्डायु दोनों प्रमाण हैं अन्तर्दशा इन्हींकी कहनी चाहिये यहां अन्तर्दशाकी पांचके संज्ञा लिखी है ॥ १३ ॥

अज्ञातायुःप्रमाण भोग ज्ञान ।

गुरुशशिसहिते कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केन्द्रगे वा ।
भवरिपुसहजोपगैश्च शेषैरमितमिहायुरनुक्रमाद्विना स्यात् ॥१४॥

इति आयुर्दायाऽध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

जिस योगमें आयु प्रमाण नहीं समझा जाता उसे कहते हैं कि, कर्क लग्नमें बृहस्पति और चन्द्रमा हो और बुध शुक्र केन्द्रमें हों और सब ग्रह सूर्य मङ्गल शनि तीसरे छठे ग्यारहवेंमेंसे किसीमें हों तो ऐसे योगके होनेमें गणित विनाही पूर्णायु होगी, इस शास्त्रके क्रमसे आई हुई आयुके उपरान्त कोई नहीं बचता और आचार युक्त रहे तो उतनीसे कम भी आयु नहीं भोगता, अनाचारसे नियत आयु भी क्षीण होजातीहै "पारदार्यमनायुष्यम्" इत्यादि वेद भी कहता है और रसायन प्रयोगसे वा योगाभ्याससे गणितागत नियतायुको उल्लंघन करके दीर्घजीवी भी हो जाते हैं वह कर्म जुदे हैं॥ १४॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकाया-
मायुर्दायाऽध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

दशान्तर्दशाध्यायः ८.

सुख दुःख परिच्छेदक ग्रहदशा क्रम ।

उदयरविशशाङ्कप्राणिकेन्द्रादिसंस्थाः
प्रथमवयसि मध्येऽन्ते च दद्युः फलानि ।
नहि न फलविपाकः केन्द्रसंस्थाद्यभावे
भवति हि फलपक्तिः पूर्वमापोक्लिमेऽपि ॥ १ ॥

इस प्रकार दशा प्रत्येक ग्रहकी गणितसे नियत करके पहिले किसकी दशा चाहिये उसका वर्णन इस प्रकारसे है कि- सूर्य लग्न चन्द्रमा मेंसे जो अधिक बलवान् हो उसकी पहिले लिखना, उसके पीछे जो ग्रह केन्द्रमें हो उसको लिखना, तत्पश्चात् जो पणफरमें हो और उसके भी पीछे जो दशापतिसे आपोक्लिममें है उसकी दशा लिखनी चाहिये। जब एक स्थानमें बहुत ग्रह हों तो पहिले बलाधिक्य पीछे न्यूनबली लिखने, फल भी दशापतिसे केन्द्रवाला ग्रह प्रथम अवस्था अर्थात् दशाके पूर्व भागसे फल देता है, पणफरवाला आधी अवस्थामें, आपोक्लिमका अन्त्यावस्थामें, जब केन्द्रमें कोई नहीं है तो पणफरवाला प्रथम फल देगा, पणफरमें कोई न हो तो आपोक्लिमवाला प्रथमादि सभी अवस्थाओंमें फल देगा, आपोक्लिममें न हो तो केन्द्रस्थ प्रथम फल देगा, पणफर आपोक्लिममें न हो तो केन्द्रवाला सर्वदा फल देगा, जो केन्द्र और आपोक्लिममें हो पणफरमें न हो तो पहिले केन्द्रवाला पीछे आपोक्लिमवाला देगा, सभी केन्द्रमें हों तो सभी अवस्थामें वही फल देंगे ऐसाही सर्वत्र जानना ॥ १ ॥ (मालिनीवृत्त)

दशास्थापन तथा कोन्द्रग्रहोंके दशाक्रम ।

आयुष्कृतं येन हि यत्तदेव कल्प्या दशा सा प्रबलस्य पूर्वा ।
साम्ये बहूनां बहुवर्षदस्य तेषां च साम्ये प्रथमोदितस्य ॥ २ ॥

इस प्रकार लग्न चन्द्रमा सूर्यमेंसे बलवान्की दशा प्रथम, उपरान्त दशेशसे केन्द्रस्थकी, उससे उपरान्त पणफरवालेकी, उसके पीछे आपोक्लिमवालेकी स्थापन करके और भी विचार करना है कि, जब केन्द्रमें बहुत ग्रह हों तो प्रथम बलवान्को लिखकर पीछे उससे हीलबली, उपरान्त उससे भी हीनबली एवं प्रकार लिखना । बलाधिक्य षड्बलैक्यसे जाना जायगा । जब बलसे भी कोई ग्रह समान हों तो उनमेंसे जो प्रथम उदय हुआ है उसको प्रथम लिखना । उदय भी दो प्रकारके होते हैं एक तो तारा उदय नित्य प्रति जो प्रथम उदय होता है, दूसरा अस्तङ्गतसे जो प्रथम उदय हुआ है, यहां सूर्यके साथ अस्तङ्गत होनेसे उदय जो है वही उदय गिना जायगा ॥ २ ॥ (इन्द्रवज्रा)

अन्तर्दशा पानेवाला ग्रह ।

एकर्क्षगोऽर्द्धमपहृत्य ददाति तु स्वं
त्र्यंशं त्रिकोणगृहगः स्मरगः स्मरांशम् ।
पादं फलस्य चतुरस्रगतः सहोरा-
स्त्वेवं परस्परगताः परिपाचयन्ति ॥ ३ ॥

अन्तर्दशाके निमित्त दशापतिके साथ एक राशिमें जो ग्रह है वह दशापतिकी आयुका आधा लेकर अपने दशा गुणके अनुसार फल देता है । दशापतिसे त्रिकोण ९ । ५ में जो ग्रह है वह उसका तीसरा भाग लेके अपने दशा गुणोंसे फल देता है, इस प्रकार दशापतिसे सातवां ग्रह सप्तमांश लेकर अपना फल देता है, दशेशसे चतुरस्र ४ । ८ भावमें जो ग्रह है वह चतुर्थांश ले अपना फल देता है । इस प्रकार लग्न सहित सभी ग्रह अन्तर्दशा पाते हैं इस विधानमें जो एक स्थानमें बहुत ग्रह हों उनमेंसे जो अधिक बली है वही पाचक दशा अर्थात् अन्तर्दशा पावेगा । यहां वराहमिहिरादि अनेक आचार्योंका एकवचन निर्देश है इस कारण उतने ही ग्रह पाचक होंगे, सभी न होंगे उनके न्यास सभी पूर्वोक्त विधिसे

करना जैसे--पहिले साथवाला पीछे त्रिकोणवाला उसके उपरान्त सप्तमवाला तिस पीछे अष्टम-चतुर्थवाला अन्तर पावेगा। जो एक जगह बहुत ग्रह हों तो पहिले बलवान्, पश्चात् उससे हीनबल, तदुत्तर और हीनबल इस प्रकार सबकी अन्तर्दशा होगी, आदिमें दशेशका अन्तर उपरान्त पाचकवालोंके अन्तर पूर्वोक्त क्रमसे लिखे जाँयगे इसका विस्तार उदाहरण सहित अगले श्लोकमें लिखा है ॥ ३ ॥ (वसन्ततिलका)

अन्तर्दशापानेवाले ग्रह ।

स्थानान्यथैतानि सवर्णयित्वा सर्वाण्यधश्छेदविवर्जितानि ।
दशाब्दपिण्डे गुणका यथांशाश्छेदस्तदैक्येन दशाप्रभेदः ॥ ४ ॥

स्थान शब्दसे अर्द्धादिक भाग जाने जाते हैं, उनकी सवर्णना अर्थात् समच्छेद करना फिर समच्छेदको छोड देना और नये अंश जो उत्पन्न हुये उनकी गुणक संज्ञा और गुणकोंके योगको भागपर समझना, दशाके वर्षादि अलग गुणाकारोंसे गुणकर भागहारसे भाग लेकर जो वर्षादि मिलेंगे वह अन्तर्दशा होगी ॥ ४ ॥ (इन्द्रवज्रा)

उदाहरण—जब दशापतिके साथ कोई ग्रह है और पूर्वोक्त स्थानोमें कोई ग्रह नहीं है तो वही १ अंश हारक होता है तो दशापति १ हारक अंश हरण होना है वह $\frac{1}{2}$ ऐसा रूप है इनका न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{2}$ इनका छेद गुणा किया तो $\frac{2}{2}$ $\frac{1}{2}$ यह समच्छेद हुआ अब छेदको त्याग दिया २ । १ ये गुणक हुए, इनका योग ३ यह भागहार हुआ, दशापतिकी आयु वर्षादि ३ ।०।०।० यह २ से गुणा भागहारसे भाग लिया । फल २ यह तो मूल दशापतिकी अन्तर्दशा हुई । फिर मूल दशापति ३।०।०।० एक (१) से गुणा कर हार ३ से भाग लिया फल वर्षादि १।०।०।० यह दशापतिके साथ जो ग्रह है उसने अन्तर्दशा पाई । मूल दशापतिकी अन्तर्दशा है उसका आधा साथवाले ग्रहने पाचक पाया, दोनोंका जोड वही ३।०।०।० दशायु होती है ॥ १ ॥

जब दशापतिसे त्रिकोण ५ । ९ स्थानोमेंसे किसी एकस्थानमें कोई ग्रहहै और दूसरा तथा ४ । ८ । ७ इनमें वा उसके साथ कोई ग्रह नहीं है तो

न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{3}$ छेदसे परस्पर गुण दिये $\frac{3}{3}$ $\frac{1}{3}$ छेद हीन ३।१ ये गुणाकार हुये इनका योग ४ भागहार हुआ, मूल दशापति दशा वर्षादि ४।०।०।० को ३ से गुणा ४ से भाग दिया फल ३।०।०।० यह मूल दशापतिकी अन्तर्दशा हुई। फिर उसकी दशा ४।०।०।० को एकसे गुणाकर ४ से भागलिया लब्धि १।०।०।० यह त्रिकोणवालेकी अन्तर्दशा त्रिभाग छोडकर हुई॥ २॥

अब दशापतिसे चतुरस्र ४।८ स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें कोई ग्रह है और दुसरा तथा वा उसके साथ ९।५।७ में कोई नहीं है तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{4}$ गुणित $\frac{4}{4}$ $\frac{1}{4}$ छेदहीन ४।१ ये गुणाकार इनका योग ५ भाग हार मूलदशापति ५।०।०।० चारसे गुणा किया २०।०।०।० पांचसे भाग लिया फल ४।०।०।० यह मूलदशेशका अंतर्दशा काल हुआ फिर उसीकी दशा ५।०।०।० को एकसे गुण दिया ५ से भाग लिया १।०।०।० यह ४ वा ८ स्थानवालेकी अन्तर्दशा चौथाई घटाकर हुई। इनका योग ५।०।०।० यही मूल दशापतिकी दशा वर्षादि हुई॥ ३॥

अथवा दशापतिसे ७भावमें कोई ग्रह हो और उसके साथ वा ९।४।४।८में कोई न हो तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{7}$ छेद गुणित $\frac{7}{7}$ $\frac{1}{7}$ छेदहीन ७।१ ये गुणक इनका योग ८ भागहार दशापतिकी दशा वर्ष ८।०।०।० को गुणक ७ से गुणा तो ५६ हुआ हार ७ से भाग लिया फल ७।०।०।० यह दशापतिका अन्तर हुआ फिर उसकी दशा ८।०।०।० को पिछले गुणक एकसे गुणकर हार ८ से भाग लिया १।०।०।० यह सप्तम स्थानवालेने अन्तर पाया इनका योग वही दशापतिकी दशा ८।०।०।० इतने दोके विकल्प हुए॥ ४॥

पहिले दशापतिका अन्तर तब अंशहारकका होता है जो दशापतिके साथ कोई ग्रह हो और ९ वा ५ में भी कोई ग्रह हो और ४।८।७ में कोई न हो तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ अन्योन्यछेदहत $\frac{6}{6}$ $\frac{3}{6}$ $\frac{2}{6}$ छेदहीन ६।३।२ गुणाकार,इनका योग ११ भागहार, दशापतिकी दशा ११।०।०।०को ६ से गुणकर ११ से भाग लिया ६।०।०।० यह मूल दशापतिकी

अन्तर्दशा हुई फिर ११ । ० । ० । ० को ३ से गुणकर ११ से भाग लिया ३ । ० । ० । ० यह साथवाले अर्द्ध पाचकको हुई । पुनः ११ । ० । ० । ० को २ से गुणा, ११ से भाग लिया २ । ० । ० । ० यह त्रिकोणवालेने पाई । इन सबका जोड ११ । ० । ० । ० मूलदशा हुई ॥५॥

जो कोई ग्रह दशेशके साथ और कोई ४ वा ८ में भी है और ९ । ५ ७ में कोई नहीं है तो ३३३३ छेदहत ३३३३ छेदहीन ८ । ४ । २ ये गुणक इनका योग १४ भागहार, दशापतिकी दशा १४ । ० । ० । ० को आठसे गुण कर १४ से भाग लिया ८ । ० । ० । ० यह दशापतिका अन्तर फिर १४ । ० । ० । ० को ४ से गुणा १४ से भाग लिया ४ । ० । ० । ० यह अर्धपाचकने पाया । पुनः १४ । ० । ० । ० को २ से गुणा १४ से भाग २ । ० । ० । ० यह चतुर्थ भाग पाचकने पाया सबका जोड १४ । ० । ० । ० यही मूल दशा हुई ॥ ६ ॥

जो दशापतिके साथ कोई ग्रह है और सातवेंमें भी कोई है और पूर्वोक्त स्थानोंमें कोई न हो तो न्यास ३३३३ परस्पर छेदहत ३३३३ छेदहीन १४ । ७ । २ ये गुणक, योग २३ भागहार दशापति वर्ष २३ । ० । ० । ० कोई गुणक १४ से गुणकर २३ से भाग लिया १४ । ० । ० । ० यह दशापतिने अन्तर पाया, फिर दूसरे गुणक ७ से गुणा २३ से भाग लिया ७ । ० । ० । ० यह जो उसके साथमें हैं उसने पाया, फिर २ से गुणा कर २३ से भाग लिया २ । ० । ० । ० यह सप्तमस्थित ग्रहने पाया । सबका जोड यही मूल दशा २३ । ० । ० । ० हुई ॥ ७ ॥

जो दशापतिके कोई ९ और ५ में भी है और पूर्वोक्तमें नहीं है तो न्यास ३३३ परस्पर छेदहत ३३३ छेदहीन ९ । ३ । ३ गुणक इनका योग १५ भागहार दशापति दशा ५ । ० । ० । ० नौसे गुण कर १५ से भाग लिया ३ । ० । ० । ० यह मूल दशेशने पाया फिर ३ से गुणाकर १५ से भाग लिया १ । ० । ० । ० यह त्रिकोणवालेने पाया, ऐसाही दूसरेने पाया, तीनोंका जोड ५ । ० । ० । ० यही मूलदशा हुई ॥ ८ ॥

जो दशेशसे ९ वा ५ में और ४ । ८ में भी कोई ग्रह हों और कहीं न हो तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{4}$ छेदहत $\frac{12}{12}$ $\frac{4}{12}$ $\frac{3}{12}$ छेदहीन १२ । ४ । ३ ये गुणक इनका योग १९ भागहार, दशापतिकी दशा वर्ष १९ । ० । ० । ० को पहिले गुणक ७ । १२ से गुणा कर १९ से भाग दिया १२ । ० । ० । ० यह मूल दशेशका अन्तर हुआ, फिर ४ से गुणाकर १९ से भाग दिया ४ । ० । ० । ० त्रिकोणवालेने पाया, फिर ३ से गुणाकर १९ से भाग दिया ३ । ० । ० । ० यह चतुरस्रवाला चतुर्थांश हारकने पाया। सबका जोड १९ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ ९ ॥

जो दशापतिसे ५ वा ९ में कोई हो और सप्तममेंभी कोई ग्रह हो और शेष पूर्वोक्त नहीं हों तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{3}$ $\frac{1}{7}$ परस्पर छेदहत $\frac{21}{21}$ $\frac{7}{21}$ $\frac{3}{21}$ छेदहीन २१ । ७ । ३ गुणक गुणकोंका जोड ३१ भागहार हुआ, दशापति ३१ । ० । ० । ० गु० २१ से गुणकर ३१ से भाग लिया तो २१ । ० । ० । ० । यह दशापतिकी अन्तर्दशा हुई, फिर उसी दशाको ७ से गुणकर ३१ से भाग लिया तो ७ । ० । ० । ० त्रिभाग पाचकने पाया और ३ से गुणकर ३१ से भाग लिया ३ । ० । ० । ० सप्तम भाग पाचकने पाया सबका जोड ३१ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ १० ॥

जो दशापतिसे ४ । ८ दोनोंमें ग्रह हों और पूर्वोक्त स्थानोंमें नहीं हों तो न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{4}$ छेदसे गुणे $\frac{16}{16}$ $\frac{4}{16}$ $\frac{4}{16}$ छेदहीन १६ । ४ । ४ गुणक, इनका जोड २४ भागहार हुआ, मूलदशापति वर्ष ६ । ० । ० । ० को १६ से गुणे. २४ से भाग लिया ४ । ० । ० । ० चतुर्थांश दशेशका अन्तर हुआ, ४ से गुणाकर २४ से भाग लिया १ । ० । ० । ० एकका हुआ, दूसरेका भी इतनाही हुआ तीनोंका जोड ६ । ० । ० । मूलदशा हुई ॥ ११ ॥

गुणकोंका जोड ३९ भागहार हुआ दशापति वर्ष३६।०।०।० इन्हें२८ से गुणकर ३९ से भागलिया २५ । १० । ४ । ३६ मूलदशेशने पाया ऐसे ही ७ से गुण ३९से भाग दिया ६ । ५ । १६ । ९ चतुरस्रवालेने पाया, ४ से गुणा ३९ से भागलिया तो ३ । ८ । ९ । १५ सातवेंने पाया तीनोंका जोड ३६ । ० । ० । ० वही मूलदशा । इस प्रकार त्रिविकल्प हुये॥१२॥

जो दशापतिके साथ कोई ग्रह और त्रिकोण ९ । ५ । में भी हो और जगह ४ । ८ । ७ में न हों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ परस्पर छेदहत $\frac{१८}{१८}$ $\frac{९}{१८}$ $\frac{६}{१८}$ $\frac{६}{१८}$ छेदहीन १८। ९ । ६ । ६ ये गुणक, इनका जोड ३९ भागहार हुआ मूल-दशापति १३ । ० । ० । ० पूर्ववद्विधिसे ४ अन्तर्दशाओंका योग १३ । ० । ० । ० यही मूलदशा हुई ॥ १३ ॥

जो दशापतिके साथ कोई ग्रह और २ । ० मेंसे एकमें कोई हो और ४ । ८ में से भी एकमें ग्रह होतो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ छेदहत $\frac{२४}{२४}$ $\frac{१२}{२४}$ $\frac{८}{२४}$ $\frac{६}{२४}$ छेदहीन २४ । १२ । ८ । ६ गुणकोंका योग ५० भागहार मूलदशा ३६।०।० पूर्ववद्विधिसे चारोंकी दशाका योग ३६। ० । ० । ० यही मूलदशा ॥ १४॥

जो दशापतिके साथ कोई ग्रह और ९ । २ मेंसे एकमें और ७ में भी ग्रह हों और जगह न हों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{७}$ परस्पर छेद गुणे $\frac{४२}{४२}$ $\frac{२१}{४२}$ $\frac{१४}{४२}$ $\frac{६}{४२}$ छेदहीन ४२ । २१ । १४ । ६ यह गुणक, इन गुणकोंका जोड ८३ हार, मूल दशा १६ । ० । ० । ० पूर्ववत् चारोंकी अन्तर्दशाओंका योग मूलदशा तुल्य मिलेगा ॥ १५ ॥

जो एक ग्रह दशेशके साथ है और ४। ८ में भी ग्रह हों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{४}$ गुणित $\frac{३२}{३२}$ $\frac{१६}{३२}$ $\frac{८}{३२}$ छेदहीन ३२ । १६ । ८ । ८ गुणक और इन गुणकोंका योग ६४ भागहार, मूल दशा ३६ । ० । ० । ० से पूर्ववत् रीतिसे चारोंकी अन्तर्दशा पहिलेकी १८ । ० । ० । ० दूसरेकी ९ । ० । ० । ० तीसरेकी ४ । ६ । ० । ० चौथेकी ४ । ६ । ० । ० सबका योग ३६ । ० । ० । ० यही मूलदशा ॥ १६ ॥

जो दशेशके साथ कोई ग्रह ४ वा ८ में और कोई ७ में भी ग्रह हो तो न्यास [illegible] छेदहत [illegible] छेदहीन ७६ । २८ । १४ । ८ हुण-कर जोडदिये १०६ यह भागहार हुआ दशेश वर्ष ३६ । ० । ० । ० प्राग्वत् क्रमसे पहिले दशा १९ । ० । ६ । ४८ द्वि० ९ । ६ । ३ । २४ ती० ४ । ९ । १ । ४२ । चौ० २ । ८ । १८ । ६ सबका जोड ३६ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ १७ ॥

जो दशेशसे ५ । ९ में कोई ग्रह और ४ वा ८ में कोई हो तो न्यास [illegible] गुणित [illegible] छेदहीन ३६ । १२ । १२ । ९ । हुणकोंका जोड ६९ भागहार लदशा २३ । ० । ० । ० पूर्ववत् चारों प्र० । १२।०।०।० द्वि० ४।० । ० । ० तृ० ।०।०।० च० ३ । ० । ० । ० जोड वही २३ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ १८ ॥

जो दशेशसे ९ वा ५ में कोई हो और ४ । ८ दोनोंमें कोई हो तो न्यास [illegible] गु० [illegible] छेदहीन ४८ । १६ । १२ । १२ । गु०जोड ८८ भागहार मूलदशा २२ । ० । ० । ० पूर्ववत् अन्तर्दशा पहिलेवालेकी १२ ० । ० । ० द्वि० ४ । ० । ० । ० ती० ३ । ० । ० । ० चौ० ३।०।० जोड मूलदशा २२ । ० । ० । ० ॥ १९ ॥

जो दशेशसे ९ । ५ मेंसे एकमें कोई ग्रह हो और ४ । ८ मेंसे एकमें भी और सातमें भी ग्रह हो तो [illegible] छेद गु० [illegible] छेद हीन ८४ । २८ । २१ । १२ गु० योग १४५ भागहार, मूलदशा ३६ । ० । ० ।० पूर्ववत् क्रमसे पहिलेवालेकी २० । १० । ९ । ७,१ द्वि० ६ । ११ । १२ । २८ ती० ५ । ० । १६ । ५८ चौ० । २ । ११ । २२ । ३३ इनका योग ३६ । ० । ० । ० । मूलदशा ॥ २० ॥

जो दशेशसे ४ । ८ । ७ तीनोंमें ग्रह हों तो न्यास [illegible] छेदहत [illegible] छेदहीन ११२ । २८ । २८ । १६ ये गुणक, जोड दिये १८४ भागहार मूल दशा ३६ । ० । ० । ० पूर्ववत क्रमसे पहिलेकी

दशा २१ । १० । २८ । ४२ दू० ५ । ५ । २२ । १० ती० ५ । ५ । २२ । १० चौ० ३ । १ ।१६ । ५८ इन चारोंका योग ३६ । ० । ० । ० वहीं मूलदशा ये चार विकल्प हुये ॥ २१ ॥

अब पांच विकल्प कहते हैं–इसमें न्यासहीसे ग्रह स्थान समझने चाहिये । न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}$ छेद २४ गुणक २४ । १२ । ८ । ८ । ६ भागहार ५८ ॥ २२ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}$ इस छेद ३६ से गुणाकार ३६ । १८ । १२ । १२ । ९ भागहार ८७ ॥ २३ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}$ इस छेद २४ से गुणाकार । २४ । १२ । ८ । ६ । ६ भागहार ५६ ॥ २४ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{4}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद ५६ से गुणाकार ५६ । २८ । १४ । १४ । ८ भागहार १२० ॥ २५ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद ८४ से गुणाकार ८४ । ४२ । २८ । २१ । १२ भागहार १८७ ॥ २६ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}$ छेद १४४ से गुणाकार १४४ । ४८ । ४८ । ३६ । ३६, भागहार ३१२ ॥ २७ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद ८४ से गुणाकार ८४ । २८ । २८ २१ । १२ भागहार १७३ ॥ ये पांच विकल्प हैं ॥ २८ ॥

अब छः विकल्प–न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद२५२गुणाकार २५२।१२६। ८४ । ८४ । ६३ । ३६ भागहार ६४५ ॥ २९ ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद १६८ से गुणक १६८ । ८४ । ५६ । ४२ ४२ । २४ भागहार ४१६ ॥ ३० ॥

न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}$ छेद ९६ से गुणक ९६४८ । २३ । ३२ । २४।२४ भागहार २५६ ॥ ३१ ॥

न्यास. $\frac{1}{1}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद ८४ से गुणक ८४ । २८ । २१ । २१ । १२ भागहार १६४ ॥ ये छः विकल्प हुये ॥ ३२ ॥

अब सातवां विकल्प एकही है। न्यास $\frac{1}{1}\frac{1}{2}\frac{1}{3}\frac{1}{3}\frac{1}{4}\frac{1}{4}\frac{1}{7}$ छेद १६८ गुणाकार १६८ । ८४ । ५६ । ५६ । ४२ । ४२ । २४ भागहार ४७२ ॥ ३३ ॥ इति।

जहांतक कर्म होता है वहीं पर्यन्त उदाहरण भी है, इनसे उपरान्त स्थानोंवाला ग्रह अन्तर्दशा नहीं पाता इस उदाहरणमें एक विकल्प नहीं है दूसरेके ४ भेद, तीसरेके ८ भेद, चौथेके ९ भेद, पांचवेंके ७ भेद, छठेके ४ भेद, सातवेंका एकही एवम् सर्व विकल्प ३३ होते हैं । जहां बहुत ग्रह पाचक हैं तहां पहिले दशापति अन्तर्दशा पाचक उपरान्त जो क्रम दशा न्यासमें लिखा है वैसीही रीतिसे यहां अन्तर्दशामें भी ग्रह क्रम लिखना। एक स्थानमें बहुत ग्रह हों तो पूर्व बलवान् पश्चात् हीनवीर्य लिखना ॥

दशादिमें शुभाशुभ फल ज्ञान।

सम्यग्बलिनः स्वतुङ्गभागे सम्पूर्णा बलवर्जितस्य रिक्ता ।
नीचांशगतस्य शत्रु भागे ज्ञेयानिष्फला दशा प्रसूतौ ॥ ५ ॥

जन्मकालमें जो ग्रह षड्बलमें पूर्णबली है इसकी दशा संपूर्ण नामकी होती है, जो ग्रह उच्च वा उच्चांशकमें है और बली ग्रहके साथ है तो उसकी दशाभी संपूर्ण नामकी, यह दशा वा अन्तर्दशा शरीरारोग्य, धनवृद्धि करती है। पूर्ण बलसे थोडा हीनमें भी वही संपूर्ण होती है । केवल जो उच्चमें है और बल नहीं पावे तो पूर्ण नाम धन लाभवाली होती है। जो ग्रह बलरहित है और जो नीच राशिमें है उसकी दशा रिक्ता नामकी धन हानि करती है । ऐसेही नीच राशि वा नीच नवांशकवालेकी और शत्रु राशि नवांशवालेकी दशा बुरा फल देती है ॥ ५ ॥ (वैतालीयवृत्त)

भ्रष्टस्य तुङ्गादवरोहिसंज्ञा मध्या भवेत्सा सुहृदुच्चभांशे ।
आरोहिणी निम्नपरिच्युतस्य नीचारिभांशेष्वधमा भवेत्सा ॥६॥

जो ग्रह परमोच्चांशसे उतर गया उसकी दशा परम नीचांश पर्यन्त अवरोही संज्ञक होती है तथा अनिष्ट फल देती है, इसमें भी उच्चांश वा मित्रांश वा स्वांशमें हो तो मध्यम फल देगी। जो ग्रह परम नीचसे उतर गया है उसकी दशा परमोच्चांश पर्यन्त आरोही होती है उसकी दशा भी शुभ फल देती है। इसमें भी नीचांश शत्रु राशि नवांशमें हो तो वह दशा अधम फल देती है ॥ ६ ॥ (इन्द्रवज्रा)

नीचारिभांशे समवस्थितस्य शस्ते गृहे मिश्रफला प्रदिष्टा ।
संज्ञानुरूपाणि फलान्यथैषां दशासु वक्ष्यामि यथोपयोगम् ॥७॥

उच्च मूलत्रिकोण स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्रमें जो ग्रह बैठा है वही नीचांशक वा शत्रु नवांशकमे हो तो उसकी दशा मिश्रफल अर्थात् शुभ और अशुभ भी देती है. जैसे-रोग भी धन लाभ भी और जो शत्रु नीच राशियोंमें है वही उच्च मूल त्रिकोण मित्रांशकमें हो तो वह भी वैसाही मिश्रफल देता है। शुभ, रिक्त संपूर्ण, मध्यम मिश्र, अधमादि जैसे नाम वैसेही इनके फल भी हैं पृथक् फल आगे कहेंगे ॥ ७ ॥ (उपजाति)

लग्नदशामें शुभाशुभज्ञान।

उभयेऽधममध्यपूजिता द्रेष्काणैश्चरभेषु चोत्क्रमात् ।
अशुभेऽष्टसमाःस्थिरे क्रमाद्धोरायाः परिकल्पिता दशाः ॥ ८ ॥

लग्न दशाके हेतु जो द्विस्वभाव लग्न हो तो प्रथम द्रेष्काणवालेकी दशा अधम, दूसरेवालेकी मध्यम, तीसरेवालेकी उत्तम, चर राशि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो उत्तम, दूसरा हो तो मध्यम, तीसरा हो तो अधम। स्थिर राशि लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्नदशा अशुभ, दूसरा हो तो मध्यम, तीसरा हो तो उत्तम इस प्रकार द्रेष्काणसे लग्न दशाके फल यथाक्रम हैं ॥ ८ ॥ (वैतालीय)

नैसर्गिक ग्रहोंके दशाक्रम।

एकं द्वौ नव विंशतिर्धृतिकृती पञ्चाशदेषां क्रमा-
च्चन्द्रारेन्दुजशुक्रजीवदिनकृद्दैवाकरीणां समाः ।

स्वैः स्वैः पुष्टफला निसर्गजनितैः पक्तिर्दशायाः क्रमा-
दन्ते लग्नदशा शुभेति यवना नेच्छन्ति केचित्तथा ॥ ९ ॥

अब नैसर्गिक दशा कहते हैं—यहां ग्रहोंके वर्ष निसर्ग अर्थात् स्वभाव-हीसे नियत हैं कि, जन्म समयसे १ वर्ष तक चन्द्रमाकी दशा रहती है, उपरान्त २ वर्ष मङ्गलकी, ततः ९ वर्ष बुधके, इसके उपरान्त २० वर्ष शुक्रके, इसके पीछे १८ बृहस्पतिके, तिसके परे २० सूर्यके, इनके आगे ५० वर्ष शनिके, सबका जोड १२० वर्ष निसर्गायु होती हैं। जो बली ग्रह है उसकी दशामें शुभ फल, हीन बली दशा अशुभ फल देती है यह सर्वत्र ही ज्ञापक है, पूर्वोक्त दशामें जो ग्रह वर्तमान है वही नैसर्गिकमें भी जब आय पडे तो उसका फल पुष्ट होजाताहै। १२० वर्षउपरान्त जो कोई बचे तो वह, जीवनकाल लग्नकी नैसर्गिकदशाका होता है। मृत्युसमय नियत १२० वर्ष सर्वसाधारणसे उपरान्त शुभ फल देती है। जिसकी आयु १२वर्षसे ऊपर नही हैं उसकी लग्न दशाभी नहीं है जिसकी ७० वर्षसे ऊपर आयु नहीं है उसकी नैसर्गिक दशा शनिकी भी नहीं है। जिनकी ५० वर्षसे ऊपर आयु नहीं है उसकी सूर्यकी दशा कुछ नहीं है। इसी प्रकार सब जानना चाहिये। १२० परमायु केवल त्रैराशिकके निमित्त है इसका विस्तार पहिले लिखा है। पुष्टताके लिये और भी लिखता हूं कि, जो कोई मीन लग्न अन्त्य नवमांशकमें जन्मेगा और सब ग्रह उच्च और वक्री होंगे तो मीन लग्नने १२ वर्ष पाये वही बलवान् हो तो द्विगुणा होगा२४हुए, ग्रह भी मीनांश होनेमें १२ वर्ष पाता है वक्र और उच्चगत होनेसे त्रिगुण हुआ ३६, सूर्य मेष मध्यांशमें होनेसे २७ वर्ष चन्द्रादि ६ ग्रहोंके इसी प्रकार ११६ होते हैं। इनका जोड २६७ आयु होती है; परन्तु इतना कोई बचता नहीं देखा गया क्योंकि ऐसा योगही दुर्लभ है अतएव "नेच्छन्ति केचित्तथा" कोई लग्नदशाको निर्बल होनेसे अन्तमें मृत्यु-रूप अनिष्ट फलवाली कहते हैं॥९॥ (यहांसे१८श्लोकतक शार्दूलविक्रीडित)

दशान्तर्दशाका शुभाशुभफल ।

पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गस्य सौम्येऽपि वा
प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे ।
मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रः सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥ १० ॥

सौर, सावन, नाक्षत्र और चान्द्र ये ४ प्रकारके मान होते हैं, इसमें दशाविचार सावन मानसे होता है वह रविके उदयसे उदयपर्यन्त एकदिन होता है और ३० दिनका महिना गिना जाता है। ३६० दिनका जन्म दिनसे एक वर्ष होता है । जन्मकालिक खण्ड खाद्यमें समस्त दशाके दिन बनाके जोड दिये वह दशा प्रवेशके समयका खण्ड खाद्य होगा । इसी प्रकार अन्तर्दशावालीका भी करना । जिस ग्रहकी अन्तर्दशा प्रवेश है वह पाकस्वामी कहाता है, वह लग्नमें हो वा अपने पूर्वोक्त वर्गमें हो वा तात्कालिक मित्र राशिमें हो तो उसकी दशा शुभ फल देती है, जो शुभग्रह लग्नगत है उसकी दशा भी शुभ फल देती है और दशेश तात्कालिक लग्नसे ३। १० । ११ स्थानमें हो तो दशा शुभ देती है, शत्रु अधिशत्रुके राश्यादिमें अशुभ फल देती है, अधिमित्र राशिमें अति शुभ अन्यत्र सम । जब किसी ग्रहका अन्तर ४ वर्ष पर्यन्त रहता है तो तब तक क्या एकही फल होगा? अतएव यह कहते हैं " मित्रोच्चोपचय " दशेशके मित्र और उच्च तथा उपचय और त्रिकोण और सप्तम स्थानमें जब गोचरका चन्द्रमा हो तो शुभ फल और नीच और शत्रुराशिमें उससे अन्यत्र २ । ६ । ४ । ८ । १२ में अशुभ फल होगा ॥ १० ॥

चन्द्राक्रांत राशि वशसे शुभाशुभ ज्ञान ।

प्रारब्धा हिमगौ दशा स्वगृहगे मानार्थसौख्यवहा
भौमे दूषयति स्त्रियं बुधगृहे विद्यासुहृद्वित्तदा ।
दुर्गारण्यपथालये कृषिकरी सिंहे सितर्क्षेऽन्नदा
कुस्त्रादी मृगकुम्भयोर्गुरुगृहे मानार्थसौख्यावहा ॥ ११ ॥

अन्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा कर्कका हो तो वह अन्तर्दशा सौख्य और धन देगी, जो चन्द्रमा मङ्गलकी राशिमें हो तो स्त्रीको व्यभिचारादि दूषण देती है, बुधकी राशिमें विद्या मित्र धन देती है, जो चन्द्रमा सिंहका हो तो जङ्गल मार्ग और घरके समीप कृषिकर्म देती है, शुक्रकी राशिमें अन्न मिष्टादि पदार्थ भोजन देती है, शनिके घरमें बुरी स्त्री देती है और ऐसेही दशान्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा बृहस्पतिकी राशिमें हो तो सौख्य मान पूजा धन देती है। शुभदशा शुभकालमें प्रवेश हो तो अति शुभ फल और अशुभ दशा अशुभ कालमें प्रवेश हो तो अति नेष्ट फल, मिश्रमें मिश्र फल युक्तिसे कहना ॥ ११ ॥

सूर्य दशामें शुभाशुभ फल।

शौर्यां स्वं नखदन्तचर्मकनकक्रौर्याध्वभूपाहवे-
स्तैक्ष्ण्यं धैर्यमजस्रमुद्यमरतिः ख्यातिः प्रतापोन्नतिः।
भार्यापुत्रधनारिशस्त्रहुतभुग्भूपोद्भवा व्यापद-
स्त्यागी पापरतिः स्वभृत्यकलहो हृत्क्रोडपीडामयाः ॥ १२ ॥

सूर्यकी दशा या अन्तर्दशामें भी सुगन्धिद्रव्य, हस्तिदन्तादि, व्याघ्रादि चर्म, सुवर्ण, क्रूरता, मार्ग, राजा, संग्राम इनसे धनलाभ होता है और उग्र स्वभाव, धैर्यता, वारंवार उद्यमतामें रति, कीर्ति, प्रतापकी वृद्धि, इन्द्रि-निग्रह, भांति इतने फल सूर्यके पूर्वोक्त शुभ दायक दशामें होते हैं। अशुभ दशामें स्त्री पुत्र धन शत्रु शस्त्र अग्नि राजा इन्होंसे आपत्ति प्राप्त होती है और त्यागी शुभ दशामें शुभ स्थान कार्यमें व्यय करे। अशुभ दशा हो तो अशुभ कार्यमें व्यय होवे और पापासक्त रहे, अपने चाकरोंके साथ कलह होवे और हृदय पेटमें पीड़ा होवे, रोगोत्पत्ति होवे। मिश्र दशामें मिश्र फल होते हैं॥ १२॥

चन्द्रकी दशामें फल।

इन्दोः प्राप्य दशां फलानि लभते मन्त्रद्विजात्युद्भवा-
नीक्षुक्षीरविकारवस्त्रकुसुमक्रीडातिलान्नश्रमैः।

दशान्तर्दशाका शुभाशुभफल ।

पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गस्य सौम्येऽपि वा
प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे ।
मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रः सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥ १० ॥

सौर, सावन, नाक्षत्र और चान्द्र ये ४ प्रकारके मान होते हैं, इसमें दशाविचार सावन मानसे होता है वह रविके उदयसे उदयपर्यन्त एकदिन होता है और ३० दिनका महिना गिना जाता है। ३६० दिनका जन्म दिनसे एक वर्ष होता है। जन्मकालिक खण्ड खाद्यमें समस्त दशाके दिन बनाके जोड दिये वह दशा प्रवेशके समयका खण्ड खाद्य होगा। इसी प्रकार अन्तर्दशावालीका भी करना। जिस ग्रहकी अन्तर्दशा प्रवेश है वह पाकस्वामी कहाता है, वह लग्नमें हो वा अपने पूर्वोक्त वर्गमें हो वा तात्कालिक मित्र राशिमें हो तो उसकी दशा शुभ फल देती है, जो शुभग्रह लग्नगत है उसकी दशा भी शुभ फल देती है और दशेश तात्कालिक लग्नसे ३। १०। ११ स्थानमें हो तो दशा शुभ देती है, शत्रु अधिशत्रुके राश्यादिमें अशुभ फल देती है, अधिमित्र राशिमें अति शुभ अन्यत्र सम। जब किसी ग्रहका अन्तर ४ वर्ष पर्यन्त रहता है तो तब तक क्या एकही फल होगा? अतएव यह कहते हैं " मित्रोच्चोपचय " दशेशके मित्र और उच्च तथा उपचय और त्रिकोण और सप्तम स्थानमें जब गोचरका चन्द्रमा हो तो शुभ फल और नीच और शत्रुराशिमें उससे अन्यत्र २। ११ । ४। ८। १२ में अशुभ फल होगा ॥ १० ॥

चन्द्राक्रांत राशि वशसे शुभाशुभ ज्ञान ।

प्रारब्धा हिमगौ दशा स्वगृहगे मानार्थसौख्यवहा
कौजे दूषयति स्त्रियं बुधगृहे विद्यासुहृद्वित्तदा ।
दुर्गारण्यपथालये कृषिकरी सिंहे सितर्क्षेऽन्नदा
कुस्त्रादी मृगकुम्भयोर्गुरुगृहे मानार्थसौख्यावहा ॥ ११ ॥

अन्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा कर्कका हो तो वह अन्तर्दशा सौख्य और धन देगी, जो चन्द्रमा मङ्गलकी राशिमें हो तो स्त्रीको व्यभिचारादि दूषण देती है, बुधकी राशिमें विद्या मित्र धन देती है, जो चन्द्रमा सिंहका हो तो जङ्गल मार्ग और घरके समीप कृषिकर्म देती है, शुक्रकी राशिमें अन्न मिष्टादि पदार्थ भोजन देती है, शनिके घरमें बुरी स्त्री देती है और ऐसेही दशान्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा बृहस्पतिकी राशिमें हो तो सौख्य मान पूजा धन देती है। शुभदशा शुभकालमें प्रवेश हो तो अति शुभ फल और अशुभ दशा अशुभ कालमें प्रवेश हो तो अति नेष्ट फल, मिश्रमें मिश्र फल युक्तिसे कहना ॥ ११ ॥

सूर्य दशामें शुभाशुभ फल।

सौर्यां स्वं नखदन्तचर्मकनकक्रौर्याध्वभूपाहवै-
स्तैक्ष्ण्यं धैर्यमजस्रमुद्यमरतिः ख्यातिः प्रतापोन्नतिः।
भार्यापुत्रधनारिशस्त्रहुतभुग्भूपोद्भवा व्यापद-
स्त्यागी पापरतिः स्वभृत्यकलहो हृत्क्रोडपीडामयाः ॥ १२ ॥

सूर्यकी दशा या अन्तर्दशामें भी सुगन्धिद्रव्य, हस्तिदन्तादि, व्याघ्रादि चर्म, सुवर्ण, क्रूरता, मार्ग, राजा, संग्राम इन्से धनलाभ होता है और उग्र स्वभाव, धैर्यता, वारंवार उद्यमतामें रति, कीर्ति, प्रतापकी वृद्धि, इतनी निग्रह, भांति इतने फल सूर्यके पूर्वोक्त शुभ दायक दशामें होते हैं। अशुभ दशामें स्त्री पुत्र धन शत्रु शस्त्र अग्नि राजा इन्होंसे आपत्ति प्राप्त होती है और त्यागी शुभ दशामें शुभ स्थान कार्यमें व्यय करे। अशुभ दशा हो तो अशुभ कार्यमें व्यय होवे और पापासक्त रहे, अपने चाकरोंके साथ कलह होवे और हृदय पेटमें पीडा होवे, रोगोत्पत्ति होवे। मिश्र दशामें मिश्र फल होते हैं॥ १२॥

चन्द्रकी दशामें फल।

इन्दोः प्राप्य दशां फलानि लभते मन्त्रद्विजात्युद्भवा-
नीक्षुक्षीरविकारवस्त्रकुसुमक्रीडातिलान्नश्रमैः।

निद्रालस्यमृदुद्विजामररतिः स्त्रीजन्ममेधाविता-
कीर्त्यर्थोपजयक्षयौ च बलिभिर्वैरं स्वपक्षेण च ॥ १३ ॥

चन्द्रमाकी शुभदशामें ब्राह्मणोंसे मन्त्र पावे और इक्षुविकार गुडादि और दुग्धविकार दधि आदि और वस्त्र, पुष्प, क्रीडा, तिल, अन्न, पराक्रम इनसे शुभ लाभादि होवें। अशुभ दशा हो तो निद्रा आलस्य होवे शरीरपीडा हो। ब्राह्मण, गुरु, देवता इनके आराधनमें मति होवे, कन्या उत्पन्न होवे, बुद्धि बढे, कीर्ति, धन वृद्धि और क्षयभी होवे, बन्धुवर्गमें वैर होवे। मिश्र बली हों तो फलभी मिश्र होंगे। बलका तारतम्य देखकर बुद्धिसे फल कहना ॥ १३ ॥

भौमकी दशामें शुभाशुभफल।

भौमस्यारिविमर्दभूपसहजक्षित्याविकाजैर्धनं
प्रद्वेषस्सुतदारमित्रसहजैर्विद्वद्गुरुद्वेष्टता।
तृष्णासृग्ज्वरपित्तभङ्गजनिता रोगाः परस्त्रीकृताः
प्रीतिः पापरतैरधर्मनिरतिः पारुष्यतैक्ष्ण्यानि च ॥ १४ ॥

भौमकी दशा शुभ हो तो शत्रुमर्दनसे और राजा, भाई, पृथ्वी, भेड, बकरी, ऊनवाले जीव इतनेसे धन प्राप्ति होवे। अशुभ हो तो पुत्र स्त्री, मित्र, भाई, पण्डित, गुरु इनसे वैर होवे। तृष्णा क्षुधासे पीडित रहे। रुधिरविकार, ज्वर, पित्त, विस्फोटक वा अङ्गभङ्ग इनसे कष्ट होवे, परस्त्री सङ्गम होवे, उसी सङ्गमसे रोग का उपद्रव होवे, पापिष्ठोंके साथ प्रीति अधर्ममें प्रीति होवे, क्रूर वचन, उग्र स्वभाव होवे ये फल मङ्गलकी पाप दशामें हैं। मिश्रमें मिश्र फल बुद्धिसे कहना ॥ १४ ॥

बुधदशामें शुभाशुभ फल।

बौध्यां दौत्यसुहृद्गुरुद्विजधनं विद्वत्प्रशंसायशो-
युक्तिद्रव्यसुवर्णवेसरमहीसौभाग्यसौख्यासयः।

हास्योपासनकौशलं मतिचयो धर्मक्रियासिद्धयः
पारुष्यं श्रमवन्धमानसशुचः पीडा च धातुत्रयात् ॥ १५ ॥

बुधशुभदशामें दूतकर्मसे, मित्र, गुरु, पूज्य ब्राह्मणोंसे लाभ, पण्डितोंसे प्रशंसा और यश, द्रव्य कांस्यादि सुवर्ण और वेसर अश्व विशेष, भूमि, सौभाग्य सुख मिलते हैं और परोपहास और कुशलता, बुद्धि वृद्धि, धर्मक्रियाकी सिद्धि होती है। बुध अशुभ हो तो कठोर वचनता, खेद, बन्धन, शोक, दुश्चिन्तता, त्रिदोषसे कष्ट ये फल होते हैं। मिश्रमें मिश्र ॥ १५ ॥

बृहस्पतिकी दशामें शुभाशुभ फल।

जैव्यां मानगुणोदयो मतिचयः कान्तिः प्रतापोन्नति-
र्माहात्म्योद्यममन्त्रनीतिनृपतिस्वाध्यायमन्त्रैर्धनम् ।
हेमाश्वात्मजकुञ्जराम्बरचयः प्रीतिश्च सद्भूमिपैः
सूक्ष्मोहागहनश्रमः श्रवणरुग्वैरं विधर्माश्रितैः ॥ १६ ॥

बृहस्पतिकी शुभदशामें पूजा, विद्या शौर्यादि उदय होते हैं। बुद्धि और कान्तिकी वृद्धि प्रताप और पुरुषार्थसे उन्नति, शत्रुको अपनी भीति, परोपकारशीलता गर्वजनन और मन्त्र, नीति, नृपति, स्वाध्यायसे धन और सुवर्ण, घोडा, पुत्र, हाथी, वस्त्र इनकी वृद्धि होती है। गुणवान् राजाओंसे प्रीति (स्नेह) बढ़ै। जो बृहस्पति अशुभ हो तो सूक्ष्म वस्तुकी प्राप्तिमें महान् श्रम हो, कर्णरोग, धर्मबाह्य नास्तिकादिकोंसे वैर होते हैं। मिश्रमें मिश्र ॥ १६ ॥

शुक्रकी दशामें शुभाशुभ फल।

शौक्र्यां गीतरतिः प्रमोदसुरभिर्द्रव्यान्नपानाम्बरः
स्त्रीरत्नद्युतिमन्मथोपकरणज्ञानेष्टमित्रागमाः ।
कौशल्यं क्रयविक्रये कृषिनिधिप्राप्तिर्धनस्यागमो
वृन्दोर्वीशनिपादधर्मरहितैर्वैरं शुचः स्नेहतः ॥ १७ ॥

बली शुक्रकी दशामें गीतादि गायनसे प्रसन्नता, धन, अन्न, पेय वस्तु और वस्त्र, स्त्री, रत्न (मणि), कान्ति और कामोपभोग्य शय्यादि, योगशास्त्रप्रिय, मित्र इतने वस्तुओंका लाभ, क्रयविक्रयमें कुशलता, कृषि और निधि (भूमिगत द्रव्य) प्राप्ति होती है। शुक्र अशुभ हो तो बहुत लोगोंसे और राजासे, व्याधोंसे, पापियोंसे वैर स्नेहवशसे शोक ये फल होते हैं। मिश्र दशा बल स्थानादिसे हो तो फलभी मिश्र ॥ १७ ॥

शनिकी शुभाशुभ दशाफल।

सौरीं प्राप्य खरोष्ट्रपक्षिमहिषीवृद्धाङ्गनावाप्तयः
श्रेणीग्रामपुराधिकारजनिता पूजा कुधान्यागमः।
श्लेष्मेर्ष्यानिलकोपमोहमलिनव्यापत्तितन्द्राश्रमान्
भृत्यापत्यकलत्रभर्त्सनमपि प्राप्नोति च व्यङ्गताम् ॥ १८ ॥

शनिकी शुभ दशामें गधे, ऊंट, पक्षी (बाजआदि), महिषी, वृद्धा स्त्री इतनी वस्तुओंकी प्राप्ति, समान जाति बहुतोंके अधिकारमें नियोग. गांव वा नगरके अधिकारसे पूजा, मँडुवा और बाजरा आदि अन्नकी प्राप्ति ये फल हैं। अशुभ दशामें श्लेष्मसे और ईर्षासे व वायुसे गुस्सासे चित्त मलिनतासे विपत्ति होवे, तन्द्रा आलस्य खेद थकावट पाता है और भृत्य (चाकर) पुत्र बेटी स्त्री इनसे तर्जन अर्थात् उलाहना वा झिड़की पाता है, अङ्ग हीनता वा रोगसे अङ्गशिथिलता होती है। शनि बल और स्थानसे मिश्र हो तो फलभी बुद्धिकी युक्तिसे मिश्र कहना ॥ १८ ॥

दशाफलोंका विषय विभाग तथा लग्नदशाफल।

दशासु शस्तासु शुभानि कुर्वन्त्यनिष्टसंज्ञास्वशुभानि चैवम्।
मिश्रासु मिश्राणि दशाफलानि होराफलं लग्नपतेस्समानम् ॥ १९ ॥

जो ग्रह उपचय राशिमें हैं और अस्त नहीं हैं और उच्चादि शुभ वर्गमें है उनकी दशा शुभ होती है फलभी शुभ ही देती है। जो ग्रह अस्तङ्गत वा रूक्ष, युद्धमें जीते हुये, नीचादि अनिष्ट वर्गमें हैं उनकी दशा (अनिष्ट)

अशुभ फल देती है। लग्न दशाका फल लग्नेशके तुल्य होता है। पूर्व द्रेष्काणसे भी कहा है यहां बलाधिक्यतामे फल होगा ॥ १९ ॥ (उपजाति)

अन्य फलोंका कथन ।

संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं कर्माजीवो यश्च यस्योपदिष्टः ।
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम् ॥ २० ॥

जिस ग्रहका संज्ञाध्यायमें जो द्रव्य ताम्रादि कहा है उस ग्रहकी शुभदशामें उसी द्रव्यका लाभ, अशुभ दशामें उसीकी हानि होगी। वैसाही जिस ग्रहका कर्माजीव आगे जिस वस्तुमें लिखी है उसीका लाभ वा हानि दशा शुभाशुभसे कहना और भावफल, दृष्टिफल और योग यह सर्वदा फल देते हैं ॥ २० ॥ (शालिनीवृत्त)

शरीरच्छायासे ग्रहदशाज्ञान ।

छायां महाभूतकृतांश्च सर्वेऽभिव्यञ्जयन्ति स्वदशामवाप्य ।
कम्ब्वग्निवाय्वम्बरजान्गुणांश्च नासास्यदृक्त्वक्श्रवणानुमेयान् ॥ २१ ॥

जिसकी जन्म दशा ज्ञात नहीं है उसकी पञ्च महाभूत–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाशकी छायासे दशापति ग्रह प्रकारान्तरसे जानी जाती है कि, पृथ्वी तत्त्वका गुण गन्ध है वह नाकसे प्रकट होता है, जल तत्त्वका गुण रस है जिह्वासे प्रकट होता है, अग्नि तत्त्वका गुण रूप दृष्टिसे अनुमेय है। वायु तत्त्वका गुण स्पर्श है वह त्वचासे अनुमेय है, आकाशतत्त्वका गुण शब्द कर्णसे अनुमेय है. जिसकी प्राप्ति है, वह जिस ग्रहका धातु है उसकी दशा जाननी। जैसे अकस्मात् सुगन्ध प्राप्त हो उसको बुधको पार्थिव छाया जाननी, जो मीठा भोजन प्रिय हो तो चन्द्रमा या शुक्रकी छाया जलकृत, जो कान्ति वर्द्धन हो तो सूर्य मङ्गलकी छाया अग्नि कृत होवे. जो स्पर्शमें मृदु कोमल होवे तो शनिकृत वायु छाया, जो शब्द कर्ण रसायन हो तो बृहस्पतिकी नाभस छाया। जिसकी छाया उसीकी दशा जाननी; शुभ छायासे शुभ दशा अशुभ छायासे अशुभ दशा जाननी ॥ २१ ॥ (इन्द्रवज्रा)

अन्तरात्मके स्वरूपका कथन ।

शुभफलददशायां तादृगेवान्तरात्मा
बहु जनयति पुंसां सौख्यमर्थागमं च ।
कथितफलविपाकैस्तर्कयेद्वर्त्तमानां
परिणमति फलाप्तिस्स्वप्नचिन्तास्ववीर्यैः ॥ २२ ॥

अन्य प्रकार दशा लक्षण जानना कहते हैं कि, जैसी शुभ वा अशुभ दशा हो वैसाही अन्तरात्मा चित्तभी प्रसन्न वा खिन्न रहता है और बहुत प्रकार सुख धन लाभ होते हैं वा अशुभ हैं तो इनकी हानि होती है। मिश्रमें मिश्र फल ऐसे फलोंमें जैसे फल पुरुषको वर्तमान है वैसी ही ग्रहकी दशा होगी ये फल अन्तर्दशाके फलोंमें मिलाने चाहिये जहां मिलें उसकी दशा होगी, इसमें भी स्मरण चाहिये कि जो ग्रह अल्पवीर्य है उसका शुभ फल स्वप्नमें वा चिन्ता मनकी गिनतीमें मिल जाता है प्रत्यक्ष नहीं हो सकता शुभ दशामें अन्तरभी शुभ हो तो सौख्य व धनागम बहुत होते हैं अशुभमें उलटा फल होगा। मिश्रमें मिश्र फल और जहां दशेशवालेके फलोंमें विरुद्धता है वहां अन्तरवालेका फल प्रबल होगा ॥ २२ ॥ (मालिनीवृत्त)

एक ग्रहके फलविरोधमें दूसरोंकाभी फलनाश।

एकग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधे
नाशं वदेद्यदधिकं परिपच्यते तत् ।
नान्यो ग्रहः सदृशमन्यफलं हिनस्ति
स्वां स्वां दशामुपगताः स्वफलप्रदाः स्युः ॥ २३ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके दशान्तर्दशाध्यायोऽष्टमः ॥ ८ ॥

जब दशामें एक ग्रहके फलमें विरोध है तो दोनों फल नाश हो जाते हैं जैसे कोई ग्रह किसी योगसे सुवर्ण देनेवाला है वही ग्रह और प्रकार

अष्टकवर्ग दृष्टिप्रभृतिमें सुवर्णनाशकभी हतो दोनों फलोंका नाश कहना, नतो सुवर्ण मिले न तो नष्ट हो. जो दो फल देनेकी युक्ति है उनमेंसे जो युक्ति बलवान् हो वह नष्ट नहीं होगी, फल नाश तुल्यबल विरोधमें है जैसे कोई ग्रह दो प्रकारसे सुवर्ण देनेवाला है, एक प्रकारसे सुवर्ण नाश करनेवाला है तो प्राप्तिही होगी । जब एक ग्रह देनेवाला और अन्य हरण करनेवाला है तो अपनी २ दशाओंमें अपने ही फल देंगे ॥ २३ ॥ (वसन्ततिलका)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां दशान्तर्दशा निरूपणदशाफलकथनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अष्टकवर्गाऽध्यायः ९.

सूर्याष्टक वर्ग।

स्वादर्कः प्रथमायबन्धुनिधनद्व्याज्ञातपोद्युनगो
वक्रात्स्वादिव तद्वदेव रविजाच्छुक्रात्स्मरान्त्यारिगः ।
जीवाद्धर्मसुतायशङ्कपु दशत्र्यायारिगः शीतगो-
रेष्वेवान्त्यतपः सुतेषु च बुधाल्लग्नात्सबन्ध्वन्त्यगः॥ १ ॥

अब गोचरफलके निमित्त अष्टवर्ग (७ ग्रह आठवां लग्न) सहित कहते हैं-कि, जो ग्रह जन्ममें जिस राशिमें है वह उसका स्थान हुआ सूर्य अपने स्थानसे १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७।इतने स्थानोंमें गोचरका शुभ फल देताहै और जगह अशुभ फल, मङ्गलसे सूर्य १ । ११। ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ इन स्थानोंमें शुभ, अन्यत्र अशुभ ऐसाही सवत्र जानना । शनिसे सूर्य १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ शुभ, शुक्रसे सूर्य ७। १२ । ६ स्थानोंमें शुभ, बृहस्पतिसे सूर्य ९ । ५ । ११ । ६ में शुभ, चन्द्रमासे सूर्य १० । ३ । ११ । ६ में शुभ, बुधसे सूर्य १० । ३ । ११ । ६ । १२ । ९ । ५ शुभ, लग्नसे सूर्य १० । ३ । ११ । ६ । ४ । १२ में शुभ ॥ १ ॥ (७ वें श्लोकतक शार्दूलविक्रीडित)

चन्द्रमाका अष्टक वर्ग ।

लग्नात् षट्त्रिदशायगः सधनधीधर्मेषु चाराच्छशी
स्वात्सास्तादिषु साष्टसप्तसु रवेःषट्त्र्यायधीस्थो यमात् ।
धीत्र्यायाष्टमकण्टकेषु शशिजाज्जीवाद्व्ययायाष्टगः
केन्द्रस्थश्च सिताच्च धर्मसुखधीत्र्यायास्पदानङ्गगः ॥ २ ॥

चन्द्रमा लग्नसे ६ । ३ । १० । ११ में शुभ, मङ्गलसे चन्द्रमा ६ । ३ १० । ११ । २ । ५ । ९ में, चन्द्रमा अपने स्थानसे ६ । ३। १० । ११ ७ । १ में, और सूर्यसे ६ । ३ । १० । ११ । ८ । ७ में, शनिसे ६ । ३ । ११ । ५ में, बुधसे ५ । ३ । ११ । ८ । १ । ४। ७। १० में बृहस्पतिसे १२ । ११ । ८ । १ । ४ । ७। १० में, शुक्रसे ९ । ४ ५। ३। ११ । १० । ७ में शुभ ॥ २ ॥

मंगलके अष्टवर्ग ।

वक्रस्तूपचयेष्विनात् सतनयेष्वाद्याधिकेषूदया-
च्चन्द्राद्दिग्विफलेषु केन्द्रनिधनप्राप्त्यर्थगः स्वाच्छुभः ।
धर्मायाष्टमकेन्द्रगोऽर्कतनयाज्ज्ञात् षट्त्रिधीलाभगः
शुक्रात् षड्व्ययलाभमृत्युषु गुरोःकर्मान्त्यलाभारिषु॥३॥

सूर्यसे मंगल ३ । ६ । १० । ११ । ५ । में शुभ, लग्नसे मंगल ३ । ६ । १० । ११ । १ में, चन्द्रमासे ३ । ६ । ११ में, अपने स्थानसे मंगल १ । ४ । ७ । १० । ८ । ११।२ में, शनिसे ९ । ११ । ८। १ । ४ । ७ । १० । में, बुधसें ६ । ३ । ५ । ११ । में, शुक्रसे ६ । १२ ११ । ८ । में,बृहस्पतिसे १० ।१२ । ११।६। में शुभ,अन्यत्र अशुभ ॥३॥

बुधाष्टक वर्ग ।

द्व्याद्यायाष्टतपः सुखेषु भृगुजात्सत्र्यात्मजेष्विन्दुजः
साज्ञास्तेषु यमारयोर्व्ययरिपुप्राप्ताष्टगो वाक्पतेः ।
धर्मायारिसुतव्ययेषु सवितुः स्वात्साद्यकर्मत्रिगः
षट्स्वायाष्टसुखास्पदेषु हिमगोःसाद्येषु लग्नाच्छुभः॥४॥

शुक्रसे बुध २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ । ३ । ५ में, शनिसे २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ । १० । ७ में, २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ १० । ७ में, बृहस्पतिसे १२ । ६ । ११ । ८ में, सूर्यसे ९ । ११ । ६ । ५ । १२ में, अपने स्थानसे ९ । ११ । ६ । ५ । १२ । १ । १० । ३ में, चन्द्रमासे ६ । २ । ११ । ८ । ४ । १० में, लग्नसे ६ । २ । ११ । ८ । ४ । १० । १ में शुभ और अन्यत्र अशुभफल देता है ॥ ४ ॥

बृहस्पतिका अष्टकवर्ग ।

दिक्स्वाद्याष्टमदायबन्धुषु कुजात् स्वात्सत्रिकेष्वङ्गिराः
सूर्यात्सत्रिनवेषु धीस्वनवदिग्लाभारिगो भार्गवात् ।
जायायार्थनवात्मजेषु हिमगोर्मन्दात्रिषड्धीव्यये
दिग्धीषट्स्वसुखायपूर्वनवगो ज्ञात्सस्मरश्चोदयात् ॥ ५ ॥

मंगलसे बृहस्पति १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ में, अपने स्थानसे १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ । ३ में, सूर्यसे १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ । ३ । ९ में, शुक्रसे ५ । २ । ९ । १० । ११ । ६ में, चन्द्रमासे ७ । ११ । २ । ९ । ५ में, शनिसे ३ । ६ । ५ । १२ में, बुधसे १० । ५ । ६ । २ । ४ । ११ । १ । ९ में, लग्नसे १० । ५ । ६ । २ । ४ । ११ । १ । ९ । ७ में शुभ, अन्यत्र अशुभ ॥ ५ ॥

शुक्राष्टकवर्ग ।

लग्नादासुतलाभरन्ध्रनवगः सान्त्यः शशाङ्कात्सितः
स्वात्साज्ञेषु सुखत्रिधीनवदशाच्छिद्रातिगः सूर्यजात् ।
रन्ध्रायव्ययगो रवेर्नवदशप्राप्त्यष्टधीस्थो गुरो-
र्ज्ञाद्धीत्र्यायनवारिगस्त्रिनवषट्पुत्रायसान्त्यः कुजात् ॥ ६ ॥

लग्नसे शुक्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ में, चंद्रमासे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ । १२ में, अपने स्थानसे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ । १० में, शनिसे ४ । ३ । ५ । ९ । १० । ८ ।

११ में, सूर्यसे ८ । ११ । १२ में. बृहस्पतिसे ९ । १० । ११ । ८ । ५ में, बुधसे ५ । ३ । ११ । ९ । ६ में, मंगलसे ३ । ९ । ६ । ५ । ११ । १२ में शुभ, अन्यत्र अशुभ ॥ ६ ॥

शनिके अष्टकवर्ग ।

मन्दः स्वात्रिसुतायशत्रुषु शुभः साज्ञान्त्यगो भूमिजात्
केन्द्रायाष्टधनेष्विनादुपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात् ।
धर्मायारिदशान्त्यमृत्युषु बुधाच्चन्द्रात्रिषड्लाभगः
षष्ठायान्त्यगतः सितात्सुरगुरोः प्राप्त्यन्तधीशत्रुषु ॥ ७ ॥

शनि अपने स्थानसे ३ । ५ । ११ । ६, मंगलसे ३ । ५ । ११ । ६ । १० । १२; सूर्यसे १ । ४ । ७ । १० । ११ । ८ । २, लग्नसे ३ । ६ । १० । ११ । १ । ४, बुधसे ९ । ११ । ६ । १० । १२ । ८ । चन्द्रमासे ३ । ६ । ११, शुक्रसे ६ । ११ । १२ । बृहस्पतिसे ११ । १२ । ५ । ६ शुभ ॥ ७ ॥

सूर्याष्टकवर्गः ४८

र.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	१०	१	१०	९	७	१	१०
११	३	११	३	५	१२	११	३
४	११	४	११	११	६	४	११
८	६	८	६	६	०	८	६
२	०	२	१२	०	०	२	४
१०	०	१०	९	०	०	१०	१२
९	०	९	५	०	०	९	०
७	०	७	०	०	०	७	०

चन्द्राष्टकवर्गः ४९

र.	च.	मं.	बु	बृ.	शु.	श.	ल.
६	६	६	५	१२	९	६	६
३	३	३	३	११	४	३	३
१०	१०	१०	११	८	५	११	१०
११	११	११	८	१	३	५	११
८	७	२	१	४	११	०	०
७	१	५	४	७	१०	०	०
०	०	९	७	१०	७	०	०
०	०	०	१०	०	०	०	०

भौमाष्टकवर्गः ३९

र.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	६	१०	६	९	३
६	६	४	३	१२	१२	११	६
१०	११	७	५	११	११	८	१०
११	०	१०	११	६	८	१	११
५	०	८	०	०	०	४	१
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	२	०	०	०	१०	०

बुधाष्टकवर्गः ५४

र.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
९	६	२	९	१२	२	२	६
११	२	१	११	६	१	१	२
६	११	११	६	११	११	११	११
५	८	८	५	८	८	८	८
१२	४	९	१२	०	९	९	४
०	१०	४	१	०	४	४	१०
०	०	१०	१०	०	३	१०	१
०	०	७	३	०	५	७	०

गुरोरष्टकवर्गः ५६							
र.	चं.	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ल.
१०	७	१०	१०	१०	५	३	१०
२	११	२	५	२	२	६	५
१	२	१	६	१	९	५	६
८	९	८	२	८	१०	१२	२
[illegible]	५	७	४	७	११	०	४
११	०	११	११	११	६	०	११
४	०	४	९	४	०	०	९
३	०	०	१	३	०	०	७
९	०	०	०	०	०	०	०

शुक्राष्टकवर्गः ५२							
र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
८	१	३	५	९	१	४	१
११	२	९	३	१०	२	३	२
१२	३	६	११	११	३	५	३
०	४	५	९	८	४	९	४
०	५	११	६	९	५	१०	५
०	११	१२	०	०	११	८	११
०	८	०	०	०	८	११	८
०	९	०	०	०	९	०	९
०	१२	०	-	०	१०	०	०

शनेरष्टकवर्गः ३९							
र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	३	९	११	६	३	३
४	६	५	११	१२	११	५	६
७	११	११	६	५	१२	११	१०
१०	०	६	१०	६	०	६	११
११	०	१०	१२	०	०	०	१
८	०	१२	८	०	०	०	४
२	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

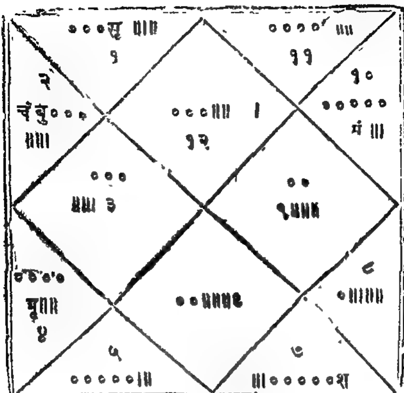
लग्नाष्टकवर्गः ४९							
र.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	२	१	१	३
४	६	३	२	४	२	३	६
६	१०	६	४	५	३	४	१०
१०	११	१०	६	६	४	६	११
११	०	११	८	७	५	१०	०
१२	०	०	१०	९	८	११	०
०	०	०	११	१०	९	०	०
०	०	०	०	११	११	०	०

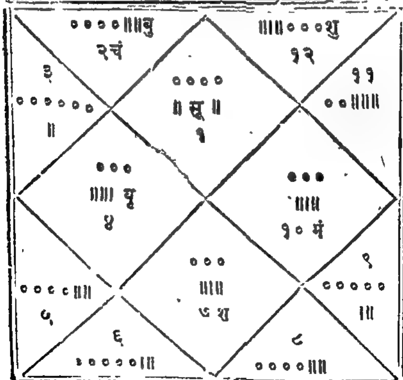
अष्टकवर्ग फलनिरूपण ।

इतिनिगदितमिष्टंनेष्टमन्यद्विशेषादधिककलविपाकंजन्मभात्तत्रदद्युः। उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैः पुष्टमिष्टंत्वपचयगृहनीचाराातिगैर्नेष्टसम्पत्॥

इतिश्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके अष्टक-
वर्गाऽध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

इतनेमें जो उक्त स्थान उनमें शुभ फल अनुक्तोंमें अशुभ फल सभी ग्रह जन्म राशिसे गोचरमें देते हैं, जो शुभ स्थान कहे हैं उनमें बिन्दु अनुक्तोंमें रेखा, लक्षण कुण्डलियोंमे किये जाते हैं । उदाहरणमें कुण्डली लिखी है शुभका जोड और अशुभका जोड करना, जो अधिक हो उसका फल अधिक होगा । जहां ८ बिन्दु हों वहां शुभ पूर्ण होगा. ६ बिन्दुमें फल चौथाई कम होगा, ४ बिन्दुमें आधा फल होगा, २ बिन्दुमें चौथाई फल होगा, ऐसा ही अशुभ फलोंका विचार रेखाओंसे करना, बिन्दु रेखाक्रम कुंडलियोंमें देखना चाहिये—







उदाहरणमें मेषकी ५ रेखा ३ बिन्दु रेखा ३ बिन्दु ३ बराबर गये शेष रेखा २ अशुभ भाग २ बचनेसे मंगल अशुभ होता है, वृषमें रेखा ५ बिन्दु तीन ३ । ५ में से घटाकर २ रेखा बचीं, यहां भी वृषका मंगल अशुभ हुआ। मिथुनमें रेखा ५ बिन्दु ३ घटाके शेष २ रेखा बचनेसे मिथुनका मंगल भी अशुभ, कर्कटमें बिन्दु रेखा तुल्य होनेसे मध्यम फल, सिंहमें बिन्दु ५ रेखा ३ घटाके २ बिन्दु बचे इससे सिंहका मंगल सर्वदा शुभ । कन्यामें रेखा ६ बिन्दु २ रेखा ४ बचीं इस कारण कन्याका मंगल सर्वदा अशुभ, तुलामें रेखा ३ बिन्दु ५ तुल्य घटाके शेष २ बिन्दु बचे इस लिये तुलाका मंगल चतुर्थांश शुभ होता है, वृश्चिकमें बिन्दु १ रेखा ७ बिन्दु १ रेखा ६ बचीं, वृश्चिकका मंगल सर्वदा अशुभ धनमें रेखा ६ बिन्दु २ रे० ४ बचीं अशुभ, मकरमें रेखा ३ बिंदु ५, बचे २ बिंदु मकरका मङ्गल सर्वदा शुभ, कुम्भमें तुल्यताके कारण सम फल हुआ । मीनमें

रेखा ५ विं० ३ घटाके बचीं रेखा २ मीनका मंगल अशुभ, जहां ८ बिंदु वहां अति शुभ, जहां रेखा बहुत वहां अशुभ, जहां बिंदु बहुत वहां शुभ फल सर्वत्र जानना । जो "एकग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधे" इत्यादिसे दशा फल और ग्रह गोचर फल मिलाकर युक्तिसे कहना चाहिये ॥ ८ ॥

यहां शुभमें बिन्दु अशुभमें रेखा लिखी हैं। ये बिन्दु रेखा शुभाशुभ गणनाके संकेत चिह्नमात्र हैं शुभमें बिन्दु अशुभमें रेखा अथवा अशुभमें बिन्दु शुभमें रेखा स्थापन करो. जैसे अपनेको सुगम जान पडे । प्रयोजन इनका यहां तो शुभाशुभ मात्र लिखा है, मुख्य प्रयोजन इनका सामुदायु और भिन्नायु हैं, जिनसे आयुनिर्णय दशा शुभाशुभ प्रत्यक्ष फल गोचरका ठीक२ मिलता है आयुर्निर्णय इस विधानसे प्रत्यक्ष मिलता है ॥

इति श्रीमहीधर०बृहज्जातकभाषाटीकायामष्टकवर्गाध्यायो नवमः ॥९॥

कर्माजीवाध्यायः १०.

आजीविका ।

अर्थाप्तिः पितृपितृपत्निशत्रुमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनाद्दिवाकराद्यैः ।
होरेन्द्वोर्दशमगतैर्विकल्पनीया भेन्द्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या॥ १॥

लग्नसे वा चन्द्रमासे दशम स्थानमें जो ग्रह हो उसके द्रव्य सदृश कर्मसे मनुष्यकी आजीविका होती है । जैसे लग्न वा चन्द्रमासे सूर्य दशम हो तो पितासे धनप्राप्ति, लग्नसे चन्दमा दशम हो तो पिताकी पत्नी (माता)से, मंगल हो तो शत्रुसे, बुध हो तो मित्रसे, बृहस्पति हो तो भाईसे, शुक्र हो तो स्रीसे शनि हो तो सेवकसे, जो लग्नसे कोई ग्रह और चन्द्रमासे भी कोई ग्रह दशम हो तो अपनी अपनी दशामें दोनों फल देते हैं जब दशममें बहुत ग्रह हों तो अपनी अपनी दशाओंमें सभी फल देते हैं, जो लग्नसे और चन्द्रमासे कोई ग्रह दशम न हो तो लग्न, चंद्र और सूर्य इनसे दशम भावका स्वामी जिस नवांशमें है उस नवांशका स्वामी जो ग्रह है उसके सदृश फल होगा ॥ १ ॥ (प्रहर्षिणी)

ग्रहोंके नवमांशसे वृत्ति।

अर्कांशे तृणकनकोर्णभेषजाद्यैश्चन्द्रांशे कृषिजलजाङ्गनाश्रयाच्च।
धात्वग्निप्रहरणसाहसैःकुजांशे सौम्यांशे लिपिगणितादिकाव्यशिल्पैः।

प्रत्येक ग्रहोंके नवमांशके वशसे वृत्ति कहते हैं-लग्न चन्द्र और सूर्य इनसे दशमस्थानको स्वामी सूर्यके अंशमें हो तो तृण, सुगन्धिद्रव्य, सुवर्ण ऊन पशमीनेका काम, औषधादिसे आजीविका होती है। चन्द्रमाके अंशमें हो तो कृषि कर्म, शंख, मोती आदि, स्त्री आश्रयादिसे, मङ्गलके अंशमें हो तो धातु (मृत्तिका, तांबा, सुवर्णादि, वा मनशिल, हरिताल आदि) और अग्नि कर्म, शस्त्र, बाण खड्गादि और साहसके कर्मसे, बुधके अंशमें हो तो लिखनेसे और गणितशास्त्र, काव्यशास्त्र और शिल्प (चित्र आदि कारीगरी) के कामसे धन पाता है ॥ २ ॥

जीवादि अंशमें धन प्राप्ति।

जीवांशे द्विजविबुधाकरादिधर्मैः काव्यांशे मणिरजतादिगोलुलायैः।
सौरांशे श्रमवधभारनीचशिल्पैःकर्मेशाध्युषितनवांशकर्मसिद्धिः३॥

बृहस्पतिके अंशमें हो तो ब्राह्मण, देवता या पण्डित, खान, वा हाथी घोडेके उत्पत्तिस्थान धर्म (यज्ञ दानादि) से धन पाताहै। शुक्रके अंशमें हो तो मणि (हीरा पद्मरागादि) रजत (चांदी) गौ भैंस वा "महिष्यैः" (ऐसा पाठ है) अर्थात् महिषी राजपत्नियोंसे, शनिके नवमांशमें हो तो परिश्रम (मार्ग गमनादि) वा व्याधवृत्तिसे, वा शरीरताडन भारवाहादि कर्मसे तथा नीच कर्मसे धन पाता है। दशमेश जिस ग्रहके नवांशकमें है उसके उक्त प्रकारसे कर्माजीविका मनुष्यकी होती है ॥ ३ ॥

मित्रारिस्वगृहगतैर्ग्रहैस्ततोर्थं
तुङ्गस्थे बलिनि च भास्करे स्ववीर्यात्।
आयस्थैरुदयधनाश्रितैश्च सौम्यैः
संचिन्त्यं बलसहितैरनेकधास्वम् ॥ ४ ॥

इति श्रीबृहज्जातके कर्माजीवाऽध्यायो दशमः ॥ १० ॥

जन्मकालमें दशमस्थ जो ग्रह हैं वा उसके अभावमें चन्द्रमा वा सूर्यसे दशम जो ग्रह हैं वे यदि मित्र राशिमें हो तो अपनी दशामें मित्रसे धन देते हैं, शत्रुगृहमें हो तो शत्रुसे, अपने घरमें हो तो उक्त प्रकारसे धन देते हैं। जिसके सूर्य मेषका और तीन चार ग्रह बलवान् हो तो अपने पराक्रमसे धन मिलता है। जिसके ग्यारहवें वा लग्न धन स्थानमें बलवान् शुभ ग्रह हो तो अनेक प्रकारसे धन पाता है ॥ ४ ॥ (महर्षिणी)

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातभाषाटीकायां
दशमोऽध्यायः ।

राजयोगाऽध्यायः ११.

यवन और जीवशर्माका मत।

प्राहुर्यवनाः स्वतुङ्गगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः ।
क्रूरैस्तु न जीवशर्मणः पक्षे क्षित्यधिपः प्रजायते ॥ १ ॥

अब राजयोग कहते हैं–तीन ग्रह उच्च होनेसे मनुष्य स्वकुलानुसार राजा होता है यह सब जातकोंमें प्रसिद्ध है। इसमें यवन मत है कि उच्च वर्ती ३ ग्रह पाप हो तो राजा क्रूर बुद्धि होवे, शुभ ग्रह हों तो सद्बुद्धि होवे, मिश्रमें मिश्र स्वभाव कहना। जीवशर्माका पक्ष है कि पाप ग्रहोंके उच्चवर्ती होनेमें राजा नहीं होता किन्तु राजाके तुल्य और धनवान् होता है आचार्यने पूर्वमत विहित कहा है ॥ १ ॥ (वैतालीय)

३२ राजयोग।

वक्रार्किजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च
स्वोच्चेषु षोडशनृपाः कथितैकलग्ने ।
द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने
स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ २ ॥

मंगल, शनि, सूर्य, बृहस्पति चारों अपने अपने उच्च राशियोंमें हों और इनमें कोई ग्रह लग्नमें उच्चराशिका हो तो ४ प्रकारके राजयोग होते हैं,

जो तीन ग्रह उच्चके हों और उन्हींमेंसे एक ग्रह लग्नमें हो तो १२ प्रकारके राजयोग होते हैं, इस प्रकारसे १६ योग हुए। चंद्रमा कर्कमें हो और मंगल, सूर्य, शनि, बृहस्पतिमेंसे २ ग्रह उच्चके हों तो भी वही १२ प्रकारके राजयोग होते हैं और उन्हीं ग्रहोंमेंसे एक ग्रह उच्चराशिमें लग्नगत हो तो ४ प्रकारके राजयोग होते हैं, सब ३२ विकल्प हैं। उदाहरण—मेष लग्नमें सूर्य, कर्कका गुरु, तुलाका शनि, मकरका मंगल, एक योग हुआ १। कर्क लग्नसे दूसरा, तुलासे तीसरा, मकरसे चौथा ४। जो तीन ग्रह उच्चके हों जैसे—मेष लग्नमें सूर्य, कर्कमें गुरु, तुलामें शनि १, कर्क लग्नसे २, तुला लग्नसे ३, सब योग ७। जो मेष लग्नमें सूर्य कर्कमें गुरु मकरमें मङ्गल हो तो १, कर्कसे २, मकरसे ३, सब १०। जो मेषलग्नमें सूर्य, तुलामें शनि, मकरका मङ्गल १, तुलामें २, मकरमें ३, सब १३। कर्कमें गुरु, तुलामें शनि, मकरमें मङ्गल हो तो कर्क लग्नसे १, तुलासे २, मकरसे ३, सब १६ "द्व्येकाश्रितेषु" इत्यादिमें कर्कका चन्द्रमा हो तो योगही नहीं होता. जैसे—मेष लग्नमें सूर्य, कर्कके चन्द्रमा गुरु हों तो १ कर्क लग्न हो तो २, मेषका सूर्य कर्कका चन्द्रमा तुलाका शनि हो तो मेषमें ३, तुलामें ४, जो मेषका सूर्य कर्कका चन्द्रमा मकरका मङ्गल हो तो मेषसे ५, मकरसे ६, कर्कके चं० बृ० तुलाका शनि हो तो कर्कमें ७, तुलामें ८, कर्कमें चं० बृ० मकरका हो तो कर्कसे ९, मकरसे १०, तुलामें शनि मकरमें मङ्गल कर्कमें गुरु हो तो तुलासे ११, मकरसे १२। ये "द्व्येकाश्रितेषु" इत्यादिसे कर्कमें चन्द्रमा, मेषका सूर्य लग्नमें १, कर्क लग्नमें चं० बृ० २, तुला लग्नमें शनि कर्कका चन्द्रमा ३, मकरका मङ्गल लग्नमें कर्कमें चन्द्रमा ४, सब १६ हुये। श्लोकोक्त पूर्ववाले १६ मिलाके ३२ विकल्प हुये ॥ २ ॥ (वसन्ततिलका)

४४ राजयोग।

वर्गोत्तमगते लग्ने चन्द्रे वा चन्द्रवर्जिते।
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ ३ ॥

जन्म लग्न वर्गोत्तम अर्थात जो लग्न वही नवांशक हो और चन्द्रमाको छोडकर ४ वा ५ वा ६ ग्रह देखें तो २२ प्रकार राजयोग होते हैं और चन्द्रमा वर्गोत्तमांशमें हो और चार आदि ग्रहोंसे दृष्ट हो तो २२ प्रकार राजयोग होते हैं। समस्त योग ४४ हैं। यहां लग्न वा चन्द्रमा वर्गोत्तममें हो, उनपर ४ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो १५ विकल्प होते हैं। ५ ग्रह देखें तो ६ विकल्प, ६ ग्रहोंके देखनेमें १ विकल्प है। जैसे–लग्न वा चन्द्रमा वर्गोत्तमोपर सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो १ विकल्प। र० मं० बु० शु० से २, र० मं० बु० श० से० ३, र० मं० बृ०शु० से ४, र० मं० बृ० श० से५, र० मं० शु० श० से६, र० बु० बृ०शु० से ७, र० बु० बृ० श० से८, र० बु० शु० श० से९, र० बृ० शु० श० से १० मं० बु० बृ० शु० से११, मं० बु बृ० श० से १२, मं० बु० शु० श० से १३, मं० बृ० शु० श० से१४, बु० बृ० शु० श० से १५, ये तो ४ ग्रहोंके १५ विकल्प हुए। अब५ के विकल्प जैसे–र० मं० बु० बृ० शु० से१, र० मं० बु० बृ० श० से२, र० मं० बु० शु० श० से० ३, र० मं० बृ० शु० श० से० ४, र० बु० बृ० शु० श० से५, मं० बु० बृ०शु० श० से ६, षट्विकल्प एकही है। जैसे र० मं बु० बृ० शु श० से १, ये सब २२ विकल्प हुऐ। लग्नसे २२ चन्द्रमासे सब ४४ होते हैं, ये ४४ भेद सख्या एवं गणित दिखानेके लिये लिखे हैं, जब चन्द्रमाकी राशि वर्गोत्तम स्थितिनिरूपण करके गणित किया तो २६४ भेद और इतनेही लग्नसे ५२८ विकल्प सब होते हैं ॥ ३ ॥ (अनुष्टुप्)

ंच योग।

यमे कुम्भेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव तनुगै-
र्नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुकैर्नृपतयः।
यमेन्दू तुङ्गेऽङ्गे सवितृशशिजौ षष्ठभवने
तुलाजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ ॥ ४ ॥

शनि कुम्भमें सूर्य मेषमें, चन्द्रमा वृषमें बुध मिथुनका, सिंहका बृहस्पति, वृश्चिकाका मङ्गल हो और शनि सूर्य चन्द्रमासे एक ग्रह लग्नमें हो तो ५ प्रकार राजयोग होते हैं। जैसे कुम्भ लग्नसे १, मेषसे २, वृषसे ३ और शनि चन्द्रमा अपने अपने उच्चोंमें हों, सूर्य बुध कन्यामें हो, जैसे तुलाका शनि, वृषका चन्द्रमा, कन्यामें सूर्य बुध और तुलामें शुक्र, मेषमें मङ्गल कर्कमें बृहस्पति इस प्रकार ग्रह होनेमें तुला लग्नसे १, वृषलग्नसे २ ये सब ५ राजयोग हुये ॥ ४ ॥ (शिखरिणी)

अन्य तीन राजयोग।

कुजे तुङ्गेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च कुपतिः
पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि।
सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे
स्वतुङ्गस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ५ ॥

मंगल उच्चका सूर्य चन्द्रमा धनमें और मकर या कुम्भलग्नमें हो तो वह मनुष्य राजा होता है। और मकर लग्नमें चन्द्रमा मङ्गल हों और सूर्य धनका हो तो राजा होता है। शनि चन्द्रमाके साथ सप्तममें हो बृहस्पति धनका और सूर्य मेषका लग्नमें हो तो राजा होवै। इस श्लोकमें ३ राजयोग पृथक् कहते हैं विकल्प नहीं है ॥ ५ ॥

दो राजयोग।

वृषे सेन्दौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः
सुहृज्जायास्वस्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः।
मृगे मन्दे लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगतैः
शशाङ्काद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः पुङ्गलपतिः ॥६॥

वृषका चन्द्रमा लग्नमें हो, सिंहका सूर्य, वृश्चिकका बृहस्पति, कुम्भका शनि हो तो अवश्य राजा होवै १। और मकरका शनि, तीसरा चन्द्रमा छठा मंगल, नवम बुध, बारहवां बृहस्पति हो तो विख्यात और बडे गुण यशवाला राजा होवे ये दो योग हैं ॥ ६ ॥ (शिखरिणी)

अन्य तीन राजयोग ।

हये सेन्दौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये
स्वतुङ्गस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती ।
सुतस्थौ वक्रार्कौ गुरुशशिसिताश्चापि हिबुके
बुधे कन्यालग्ने भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान् ॥ ७ ॥

धनका बृहस्पति चन्द्रमा सहित और मङ्गल मकरका और बुध शुक्र अपने अपने उच्चमें लग्नगत हो तो गुणवान् राजा होवै, इस योगमें मीन लग्नसे १, कन्या लग्नसे १, येदो विकल्प हैं। मङ्गल शनि पञ्चम स्थानमें, बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र चतुर्थ स्थानमें और कन्या लग्नमें बुध हों तो गुणवान् राजा होवे ये ३ योग हैं ॥ ७ ॥ (शिखरिणी)

झषे सेन्दौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितै-
र्यमारार्कैर्योऽभूत्स खलु मनुजः शास्ति वसुधाम् ।
अजे सारे मूर्तौ शशिगृहगते चामरगुरौ
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योपि गुणवान् ॥ ८ ॥

मीनका चन्द्रमा लग्नमें और कुम्भका शनि, मकरका मङ्गल, सिंहका सूर्य जिसके जन्ममें हो वह भूमि पालन करनेवाला राजा होता है १ । मेषका मङ्गल लग्नमें, कर्कका बृहस्पति हो तो बलवान् राजा होता है २। कर्कका गुरु लग्नमें और मेषका मङ्गल हो तो अन्य कुलोत्पन्नभी गुणवान् राजा होता है ३ । ये ३ योग हैं॥ ८ ॥ (शिखरिणी)

कर्किणि लग्ने तत्स्थे जीवे चन्द्रसितज्ञैरायप्राप्तैः ।
मेषगतेऽर्के जातं विन्द्याद्विक्रमयुक्तं पृथ्वीनाथम् ॥९॥

कर्क लग्नमें बृहस्पति और ग्यारहवें स्थानमें वृषका चन्द्रमा; शुक्र बुध और मेषका सूर्य दशम स्थानमें हो तो पराक्रमी राजा होवे ॥९ ॥ (विद्युन्माला)

मृगमुखेऽर्कतनयस्तनुसंस्थः क्रियकुलीरहरयोऽधिपयुक्ताः ।
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ यदि तदा पृथुयशाः पृथिवीशः ॥१०॥

मकर लग्नमें शनि, मेषका मङ्गल, कर्कका चन्द्रमा, सिंहका सूर्य, मिथुनका बुध, तुलाका शुक्र हो तो महान् यशस्वी राजा होता है ॥ १० ॥ (द्रुतविलंबित)

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ।
सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोः सुते ॥ ११ ॥

कन्याका बुध लग्नमें और दशम शुक्र, सप्तम बृहस्पति चन्द्रमा हों और शनि, मङ्गल पञ्चम हों तो राजा होवें ॥ ११ ॥ (अनुष्टुप्)

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यभाजः
किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तभूपालयोगैः ।
नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा वक्ष्यमाणै-
र्भवति नृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ १२ ॥

जितने राजयोग कहे गये हैं इनमें जन्मनेवाले मनुष्य नीच वंशवाले भी राजा होते है फिर राजवंशवालोंको तो क्या कहना है ? अब जो योग कहे जावेंगे उनमें राजपुत्रहे राजा होते हैं और इतर राजा नहीं किन्तु राजाके तुल्य होते हैं ॥ १२ ॥ (मालिनी)

उच्चस्वत्रिकोणगैर्बलस्थैस्त्रयाद्यैर्भूपतिवंशजाः नरेन्द्राः ।
पञ्चादिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुता न भूमिपालाः ॥ १३ ॥

उच्चके वा मूलत्रिकोणके ३ । ४ । ग्रह बलवान् हों तो राजवंशीय राजा होते है और जातिवाले धनवान् होते हैं । जो यही ३ । ४ ग्रह उच्च वा मूल त्रिकोणमें बलरहित हों तो राज वंशीभी राजा नहीं होते हैं किन्तु धनवान् होते हैं, जब ५ । ६ । ७ ग्रह उच्च वा मूल त्रिकोणमें हों तो अन्यवंशी भी राजा होते हैं ॥ १३ ॥ (औपच्छन्दसिकम्)

लेखास्थेऽर्केजेन्दौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुम्भे मन्दे ।
चापप्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विन्द्यात्पृथ्वीनाथम् ॥ १४ ॥

मेषके सूर्य चन्द्रमा लग्नमें हों और मङ्गल मकरका और शनि कुम्भका, बृहस्पति धनका हो तो राजवंशीय राजा होवे अन्य जातीय धनी होवे । कोई यहां "लेखास्थे" के जगह "लेयस्थे" पाठ कहते है कि सिंहका सूर्य और मेषका चन्द्रमा लग्नमें और यथोक्त हों । ऐसा भी पाठ योग्य ही है ॥ १४ ॥ (विद्युन्माला)

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्द्रे ।
दुश्चिक्याङ्गप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः ॥ १५ ॥

शुक्र अपनी राशि २ । ७ का चतुर्थ भावमें और नवम स्थानमें चन्द्रमा हो और ग्रह सभी ३ । १ । ११ में यथासम्भव होवें तो कुम्भसे १, कर्क लग्नसे २, ये दो विकल्प होते हैं । ऐसे योगमें राजपुत्र राजा, अन्य धनी होवे ॥ १५ ॥ (विद्युन्माला)

सौम्ये वीर्य्ययुते तनुयुक्ते वीर्याढ्ये च शुभे शुभयाते ।
धर्मार्थोपचयेष्ववशेषैर्धर्मात्मा नृपजः पृथिवीशः ॥ १६ ॥

बलवान् बुध लग्नमें और बलवान् शुक्र वा बृहस्पति नवम स्थानमें (कोई "सुखयाते" पाठ भेद कहते हैं कि शुभ ग्रह चतुर्थमें हों) और शेष ग्रह यथासम्भव ९ । २ । ३ । ६ । १० । ११ में से किसीमें हो तो राजपुत्र धर्मात्मा राजा होवे. अन्य वर्णको यह योग पडे तो धनवान् और मानी होवे ॥ १६ ॥ (नवमालिका)

अन्य दो राजयोग ।

वृषोदये मूर्त्ति धनारिलाभगैः शशाङ्कजीवार्कसुतापरैर्नृपः ।
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतैर्नृपोऽपरैः ॥ १७ ॥

वृषका चन्द्रमा लग्नमें और मिथुनका बृहस्पति, तुलाका शनि और मीन राशिमें अन्य–रवि मङ्गल, बुध, शुक्र हो तो राजपुत्र राजा, और वर्ण धनी होवे १ । और शनि लग्नमें, बृहस्पति चौथा, सूर्य चन्द्रमा दशम, मङ्गल, बुध, शुक्र ग्यारहवें हों तो भी वही फल होगा । ये २ राजयोग हैं ॥ १७ ॥ (वंशस्थ)

अन्य दो राज योग।

मेपूरणाथतनुगाः शशिमन्दजीवाः
ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्रम् ।
वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्याः
होरासुखास्तशुभखातिगताः प्रजेशम् ॥ १८ ॥

दशम चन्द्रमा, ग्यारहवां शनि, लग्नके स्पति, दूसरा बुध मङ्गल, चतुर्थ सूर्य शुक्र हों तो राजपुत्र राजा, अन्य धर्मी होवे; यद्वा मङ्गल शनि लग्नमें, चतुर्थ चन्द्रमा, सप्तम बृहस्पति, नवम शुक्र, दशम सूर्य, दशम, ग्यारहवें बुध हो तो वही फल होगा ॥ १८ ॥ (वसन्ततिलका)

राजयोग प्राप्ति काल।

कर्मलग्नयुतपाकदशायां राज्यलब्धिरथ वा प्रबलस्य ।
शत्रुनीचगृहयातदशायां छिद्रसंश्रयदशा परिकल्प्या ॥१९॥

राजयोग करनेवाले ग्रहोंमेंसे जो ग्रह दशम वा लग्नमें हो उसकी दशान्तर्दशामें राज्यलाभ होगा, जब दोनों स्थानमें ग्रह हों तो उनमेंसे जो अधिक बलवान् है उसकी दशान्तर्दशामें, जो लग्न दशममें बहुत ग्रह हों तो उसमेंसे जो सर्वोत्तम बली हो उसकी दशान्तर्दशामें राज्यलाभ होगा; अथवा उनमेंसे प्रबल ग्रह जब गोचरमें अधिक बली होगा तब राज्यलाभ होगा, बलवान् ग्रहके दिये राज्यमें भी छिद्रदशा भी राज्य नाश करती है। वह जन्मकालिक शत्रु वा नीच गृहगत ग्रहकी अन्तर्दशा छिद्रदशा कहाती है। इसमें भी राज्ययोगकारक ग्रहोंमेंसे कोई नीच वा शत्रु राशिका हो तो वह राज्यभंग करेगा अन्य कुछ हानि नहीं करते हैं ॥ १९ ॥ (स्वागता)

शवर और चोरोका राजा होना।

गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे
वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात् ।
शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरसंस्थैश्च पापै-
र्व्रजति शवरदस्युस्वामितामर्थभाक् च ॥ २० ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके राजयोगाऽध्यायः ॥ ११॥

बृहस्पति शुक्र बुधकी राशियां ९ । १२ । ७ । २ । ३ । ६ लग्नमें हों और सातवां शनि, दशम सूर्य हो तो मनुष्य धनरहित भी भोगवान् होता है। पराये पीछे अच्छे भोग भोगता है और केन्द्रगत ग्रह पाप राशियोंमें होवें अथवा सौम्य राशियोंमें पाप ग्रह हों ऐसी विधिसे योगकारक हों तो मनुष्य शबर (झीवर) और चोरोंका राजा होगा ॥ २० ॥ (मालिनी)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां राजयोगाध्यायः ॥ ११ ॥

नाभसयोगाऽध्यायः १२.

नाभस योग ।

नवदिग्वसवस्त्रिकाग्निवेदैर्गुणिता द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः ।
यवनैस्त्रिगुणा हि पट्शती सा कथिता विस्तरतोऽत्र तत्समासः॥१॥

अब नाभस योग कहते । इनके चार विकल्प हैं—आकृति योग १, आकृति योग संख्या योग २, आकृति संख्या आश्रय योग ३, आकृति संख्या आश्रय दल योग ४। आकृति योग २० हैं, संख्या योग ७, आश्रय योग ३, दल योग २, सब ३२ भेद हैं। इस प्रकारसे ९ । १० । ८ को ३ । ३ । ४ से क्रम करके गुण दिया तो २७ । ३० । ३२ होते हैं अर्थात् द्विविकल्पके २७ योग, त्रिविकल्पके ३०, चतुर्विकल्पके ३२। यवनाचार्यने १८०० भेद इनके कहे हैं और कोई आचार्य असंख्य भेद कहते हैं, इस ग्रन्थमें विस्तार नहीं । समाससे ३२ योगोंके फल कहे हैं क्योंकि मुख्य यही है और भेद जो १८०० हैं उनका फल इनही ३२ में अन्तर्भाव होगया है ॥ १ ॥ (औपच्छन्दसिक)

तीन आश्रय योग और दलयोग।

रज्जुर्मुशलं नलश्चराद्यैः सत्यश्चाश्रयजान् जगाद योगान् ।
केन्द्रैः सदसद्युतैर्दलाख्यौ स्रक्सर्पौ कथितौ पराशरेण ॥ २ ॥

सभी ग्रह चर राशियोंमें हों तो रज्जु योग होता है १, और यदि सब ग्रह स्थिर राशिमें हों तो मुशल योग २, और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियोंमें हों तो नलयोग ३ होता है। दल योग दो ऐसे हैं-कि सभी शुभ ग्रह केन्द्रोंमें हों और पापग्रह केन्द्रोंमें न हों तो माला योग और जो केन्द्रोंमें सभी पाप ग्रह हों शुभग्रह न हों तो सर्प योग होता है ॥ २ ॥

योगा व्रजन्त्याश्रयजाः समत्वं यवाब्जवज्राण्डजगोलकाद्यैः।
केन्द्रोपगैः प्रोक्तफलौ दलाख्यावित्याहुरन्ये न पृथक्फलौ तौ ॥ ३ ॥

यव, अब्ज, अण्डज, गोलक और गदा, शकट योग ये आश्रय और संख्या योगोंके सम हैं, फल बराबर होता है इस कारण किसीने अलग नहीं कहे। वराहमिहिरने तो कहे हैं; इसका कारण अगले अध्यायके अन्तमें कहेंगे, दल योग किसीने नहीं कहे परन्तु इनका फल केन्द्रके शुभ-ग्रहोंमें शुभ फल, पापोंमें पाप फल, पृथक् उन उनने भी कहा ही है। केवल स्रक् सर्प नाममात्र नहीं कहे ॥ ३ ॥ (उपजाति)

गदादि पांच आकृति योग।

आसन्नकेन्द्रभवनद्वयगैर्गदाख्या-
स्तन्वस्तगेषु शकटं विहगः खबन्ध्वोः।
शृङ्गाटकं नवमपञ्चमलग्नसंस्थै-
र्लग्नान्यगैर्हलमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ४ ॥

समीपके केन्द्र दोनोंमें सभी ग्रह हों तो गदा योग होता है, इसके ४ विकल्प हैं, जैसे-लग्न और चतुर्थमें १, चतुर्थ सप्तममें २, सप्तम दशममें ३, दशम और लग्नमें ४; लग्न और सप्तममें सभी ग्रह हों तो शकट योग होता है और दशम चतुर्थमें सभी ग्रह हों तो विहग योग होता है, नवम पञ्चम और लग्नमें सभी ग्रह हों तो शृंगाटक होता है, जो परस्पर त्रिकोणमें लग्न छोडके सभी ग्रह हों तो हल योग होता है, इसके ३ भेद हैं कि-२। ६।

१० स्थानोंमें सभी ग्रह हों तो १, ३ । ७ । ११ में २ और ४ । ८ । १२ में ३, ये भेद हैं ॥ ४ ॥ (वसन्ततिलका)

वज्रादि चार योग ।

शकटाण्डजवच्छुभाशुभैर्वज्रं तद्विपरीतगैर्यवः ।
कमलं तु विमिश्रसंस्थितैर्वापी तद्यदि केन्द्रबाह्यतः ॥ ५ ॥

शकटवत् शुभ ग्रह और अण्डजवत् पाप ग्रह होनेसे वज्र योग होता है, जैसे लग्न सप्तममें शुभग्रह, चतुर्थ दशममें पाप ग्रह और स्थानोंमें कोई ग्रह न हो तो वज्र योग और वही उलटे होनेसे यव योग, जैसे—लग्न सप्तममें पाप, चतुर्थ दशममें शुभ, और स्थानोंमें कोई न हों तो यव योग होता है। जो शुभ पाप सभी ग्रह केन्द्रोंमें हों और पणफर आपोक्लिममें न हों तो कमल योग और जो केन्द्रोंमें कोईभी ग्रह न हों सभी ग्रह केन्द्रबाह्य हों तो वापी योग होता है ॥ ५ ॥ (वैतालीय)

आचार्योक्ति ।

पूर्वशास्त्रानुसारेण मया वज्रादयः कृताः ।
चतुर्थे भवने सूर्याज्ज्ञसितौ भवतः कथम् ॥ ६ ॥

ये वज्रादि योग मय, यवनादिकोंके कहनेसे मैंने भी कहे हैं और इनके होनेमें प्रत्यक्ष दोष यह है कि, इन योगोंमेंसे पहिले वज्र योग लग्न सप्तममें शुभ ग्रह, चतुर्थ दशममें पाप होनेसे होता है, पापोंके साथ ४ । १० में सूर्य हो तो १ । ७ में शुभ ग्रहोंके साथ बुध, शुक्र होने चाहिये तो सूर्यसे चौथे स्थानमें बुध शुक्रका होना असम्भव है। ऐसेही सब कमल, वापी योगोंमें भी है। इसका कारण यह है कि, ध्रुवसे जितने समीपवर्ती देश हैं उनमें बुध, शुक्र दूर और जितने दूर दूर देश हैं उनमें बुध, शुक्र समीप ही देखे जाते हैं ॥ ६ ॥ (अनुष्टुप्)

यूपादि चार योग ।

कण्टकादिप्रवृत्तैस्तु चतुर्गृहगतैर्ग्रहैः ।
शक्तिदण्डाख्या होराद्यैः कण्टकैः क्रमात् ॥ ७ ॥

लग्नसे लेकर चार चार स्थानोंमें सभी ग्रह हों तो यूप, इषु, शक्ति, दण्ड ये ४ योग क्रमसे होते हैं जैसे १ । २ । ३ । ४ भावमें सभी ग्रह हों तो यूप योग, ४ । ५ । ६ । ७ में सभीग्रह हों तो इषु योग और ७ । ८ । ९ । १० में शक्ति योग १० । ११ । १२ । १ में दण्ड योग होता है ॥ ७ ॥

नौ कूट आदि पांच योग।

नौकूटच्छत्रचापानि तद्वत्सप्तर्क्षसंस्थितैः ।
अर्द्धचन्द्रस्तु नावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यर्क्षसंस्थितैः ॥ ८ ॥

लग्नसे सप्तमपर्यन्त प्रत्येक भावमें एक एक ग्रह करके सातों स्थानोंमें सातों ग्रह हों तो नौयोग और इसी प्रकार चतुर्थसे दशम पर्यन्त हों तो कूट योग, एवम् सप्तमसे लग्नपर्यन्त छत्र योग, दशमसे चतुर्थपर्यन्त चाप योग होता है, इनसे विरुद्ध स्थानोंमें इसी प्रकार ग्रह हों तो अर्द्धचन्द्र योग होता है । उसके ८ भेद यह हैं कि–द्वितीय भावसे अष्टमभावपर्यन्त निरंतर एक एक ग्रह एक एक भावमें होनेसे १ भेद, ३ से ९ पर्यन्त २, ५ से ११ पर्यन्त ३, ६ से १२ । पर्यन्त ४, एवम् ८ से २ पर्यन्त ५, एवम् ९ से ३ पर्यन्त ६, एवम् ११ से ५ पर्यन्त ७, एवं १२ से ६ पर्यन्त ८, ये ८ भेद हैं ॥ ८ ॥

समुद्र और चक्र योग ।

एकान्तरगतैरर्थात्समुद्रःषड्गृहाश्रितैः ।
विलग्नादिस्थितैश्चक्रमित्याकृतिजसंग्रहः ॥ ९ ॥

द्वितीयसे द्वादश पर्यन्त बीचमें एक एक भाव छोडकर सभी ग्रह हों तो समुद्र योग होता है अर्थात् २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ इनमें सातों ग्रह हों और लग्नसे एकादशपर्यन्त इसी प्रकार एकान्तर अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में सातों ग्रह हों तो चक्रयोग होता है इस प्रकार आकृति योगोंका संग्रह आचार्योंने किया है ॥ (अनुष्टुप्)

सात संख्यायोगोंके भेद् ।

संख्यायोगाः स्युः सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेकापायाद्वल्लकीदामिनी च ।
पाशः केदारश्शूलयोगो युगश्च गोलश्चान्यान्पूर्वमुक्तान् विहाय ॥१०

सातों ग्रह सातही स्थानोंमें जहां तहां हों तो वल्लकी योग, जो सातों ग्रह ६ स्थानोंमें हों तो दामिनी योग, एवम् ५ स्थानोंमें हों तो पाश योग, ४ स्थानोंमें हों तो केदार योग, ३ स्थानोंमें हों तो शूल योग, २ स्थानोंमें हों तो युग योग, एकही स्थानमें सभी ग्रह हों तो गोल योग इस प्रकार संख्यायोग हैं, जहां संख्या योगकी प्राप्तिमें पूर्वोक्त आश्रय योगकी प्राप्ति है वहां आश्रय योग फल देगा संख्या योग नहीं देगा. जहां संख्या योग होनेमें आश्रयोक्तकी प्राप्ति नहीं है तहां संख्यायोग फल देगा ॥ १० ॥ (शालिनी)

आश्रयादि योगोंके फल ।

ईर्ष्युर्विदेशनिरतोऽध्वरुचिश्च रज्ज्वां
मानी धनी च मुसले बहुकृत्यशक्तः ।
व्यङ्गस्थिराढ्यनिपुणो नलजः स्रगुत्थो
भोगान्वितो भुजगजो बहुदुःखभाक् स्यात् ॥ ११ ॥

रज्जु योग जिसका हो वह ईर्ष्यावान् (मत्सरी–अर्थात् पराई भलाईसे जलनेवाला) और निरन्तर परदेशमें रहनेवाला, मार्ग चलनेमें रुचि बहुधा होवै । मुशल योग जिसका हो वह मानी, गर्वित, धनवान् और बहुत कार्य करनेवाला होता है । नल योगवाला मनुष्य व्यङ्ग अर्थात् कोई कोई अंगहीन और दृढ निश्चयवा, धनवान् और सभी कार्यमें सूक्ष्मदृष्टि-वाला होवे । ये आश्रयके ३ योगोंके फल हुये । अब दल योगोंके फल कहते हैं कि, स्रग् अर्थात् माला योगवाला भोगी (अनेक अच्छे अच्छे भोग भोगनेवाला) होता है । सर्पयोगवाला नाना प्रकार दुःख भोगता है॥११॥ (वसन्ततिलका)

आश्रयोक्तास्तु विफला भवन्त्यन्यैर्विमिश्रिताः ।
मिश्रा येस्ते फलं दद्युरमिश्राः स्वफलप्रदाः ॥ १२ ॥

आश्रय योगकी प्राप्तिमें यवादि योगकी भी प्राप्ति हो तो मिश्र होनेसे आश्रय योग विफल होता है, ऐसेही औरोंसेभी मिश्र होनेसे निष्फल होता है, जिससे मिश्र हुवा उसीका फल मिलता है, ये योग दशाहीमें फल देनेवाले नहीं, सर्वदा फल देते हैं. आश्रययोगमें जब किसी यवादिकी प्राप्ति न हो तो अपना फल देता है॥ (अनुष्टुप्)

गदादि योगोंके फल।

यज्वार्थभाक्सततमर्थरुचिर्गदायां
तद्वृत्तिभुक्छकटजः सरुजः कुदारः।
दूतोऽटनः कलहकृद्विहगे प्रदिष्टः
शृङ्गाटके चिरसुखी कृषिकृद्धलाख्ये॥ १३॥

प्रथम गदायोगवाला मनुष्य यज्ञ करनेवाला और धन भोगनेवाला धनसंग्रहमें उद्यमी होता है। शकट योगवाला गाडी रथ छकडे आदिके कामसे आजीवन करता है और नित्यरोगी, उसकी स्त्री निंदाके योग्य होती हैं। विहग योगवाला पराये भेजनेसे परकार्यको जानेआनेवाला और भ्रमण करनेवाला और कलह करनेवाला होता है। शृङ्गाटक योगवाला बहुत काल पर्यन्त अर्थात् बुढापे पर्यन्तभी सुखी रहता है। हल योगवाला कृषि कर्म अर्थात् पशु पालना, खेती करना इत्यादि कार्य करता है॥ १३॥

वज्रादि योगोंका फल।

वज्रेऽन्त्यपूर्वसुखितः सुभगोऽतिशूरो
वीर्यान्वितोऽप्यथ यवे सुखितो वयोन्तः।
विख्यातकीर्त्यमितसौख्यगुणश्च पद्मे
वाप्यां तनुस्थिरसुखो निधिकृन्न दाता॥ १४॥

वज्रयोगवाले बालक वृद्ध और प्रथम अवस्थामें सुखी, युवावस्थामें दुःखी और सब मनुष्योंके प्यारे, अति शूर होते हैं। यव योगमें पराक्रमी और बाल वृद्ध अवस्थामें दुःखी, तरुणावस्थामें सुखी होता है।

पद्म योगमें सर्वत्र विदितकीर्ति और अगणित सुख, गुण और विद्या एव पराक्रमवाला होता है। वापी योगवाला बहुत काल पर्यन्त थोडे सुखवाला भूमिमें धन गाडनेवाला और कृपण होता है॥ १४॥

यूपादि योगोंका फल।

त्यागात्मवान् क्रतुवरैर्यजते च यूपे
हिंस्रोऽथ गुप्त्यधिकृतः शरकृच्छराख्ये।
नीचोऽलसः सुखधनैर्वियुतश्च शक्तौ
दण्डे प्रियैर्विरहितः पुरुषोऽन्त्यवृत्तिः॥ १५॥

यूप योगवाला मनुष्य दानी और प्रमाद न करनेवाला, उत्तम यज्ञ करनेवाला होवे। शर योगवाला जीवघाती, कैद खानेका मालिक और बाण, बन्दूक, गोली आदि बनानेवाला होवे। शक्तियोगवाला नीच कर्म करनेवाला, आलसी और भोग और धनसे वर्जित होवे। दण्ड योगवाला पुत्रादिसे रहित, दास कर्म करनेवाला होता है॥ १५॥

नौ आदि योगोंका फल।

कीर्त्यायुतश्चलसुखः कृपणश्च नौजः
कूटेऽनृतप्लवनबन्धनपश्च जातः।
छत्रोद्भवः स्वजनसौख्यकरोऽन्त्यसौख्यः
शूरश्च कार्मुकभव प्रथमान्त्यसौख्यः॥ १६॥

नौयोगवाला मनुष्य यशस्वी, कभी सुखी कभी दुःखी और कृपण होवे। कूट योगवाला झूठ बोलनेवाला व बन्धन स्थानका रक्षा करनेवाला होवे। छत्र योगवाला अपने जनोंको सुख करनेवाला और बुढापेमें सुखी होवे चाप योगवाला संग्राममें शूर, बाल्य व वृद्धावस्थामें सुखी होवे॥ १६

अर्धचन्द्रादि योगोंका फल।

अर्द्धेन्दुजः सुभगकान्तवपुः प्रधान-
स्तोयाळ्ये नरपतिप्रतिमस्तु भोगी।
चक्रे नरेन्द्रमुकुटद्युतिरञ्जिताङ्घ्रि-
र्वीणोद्भवश्च निपुणप्रियगीतनृत्यः॥ १७॥

अर्द्धचन्द्र योगवाला सुभग,सर्वजन प्रिय, दर्शनीय, बहुतोंमें श्रेष्ठ होता है। समुद्र योगवाला राजतुल्य,ऐश्वर्यवान् और भोगवान् मनुष्य होता है। चक्र योगवाला तपोज्ञानादिसे राजाओं करके प्रणाम करने योग्य होता है। वीणा योगवाला सूक्ष्मदृष्टि–बारीकी विचार करनेवाला, गीत नाचको प्यारा मानता है (१७)

दामिना आदि योगोंका फल।

दातान्यकार्यनियतः पशुपश्च दाम्नि
पाशे धनार्जनविशीलसभृत्यबन्धुः।
केदारजः कृपिकरः सुबहूपयोज्यः
शूरः क्षतो धनरुचिर्विधनश्च शूले ॥ १८ ॥

दाम अर्थात् रज्जुयोगवाला उदार, परोपकारमें तत्पर, पशु पालनेवाला होता है। ‘बहुप’ ऐसा पाठ होनेसे ग्रामाधिपति होता है। पाशयोगवाला असन्मार्गसे धन संग्रह करनेवाला और बंधु भृत्यभी इसके ऐसेही कर्त्ता होते हैं। केदारयोगवाला कृषि खेती करनेवाला और बहुतोंका उपकार करनेवाला होता है। शूल योगवाला शूर,रणमें अंगमें चोट लगी हुई होवे, अत्यन्त धनकी इच्छा करनेवाला दरिद्री होता है ॥ १८ ॥ (वसंततिलका)

युग गोल आदि योगोंका फल।

धनविरहितः पाखण्डी वा युगे त्वथ गोलके
विधनमलिनोऽज्ञानोपेतः कुशिल्प्यलसोऽटनः।
इति निगदिता योगाः सार्द्धं फलैरिह नाभसा
नियतफलदाश्चिन्त्या ह्येते समस्तदशास्वपि ॥ १९ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृत बृहज्जातके नाभ-
सयोगाऽध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

युग योगवाला धनरहित और पाखंडी (तीनों मार्गोंसे बहिष्कृत) होता है, गोलक योगवाला निर्द्धन, मलिन, अज्ञानी, निन्द्यशिल्प करनेवाला

आलसी, भ्रमण करनेवाला होता है इस प्रकार नाभस योग फलोंसहित कहे हैं । ये योग केवल दशाहीमें नहीं किन्तु फल सर्व काल देनेवाले हैं, तथापि गोचर फल प्रबल ही रहता है, उस समयमें और प्रबलकारक दशामें ये योग भी मिश्रफल देते हैं ॥ इस अध्यायमें प्रतिज्ञा है कि, इन योगोंका विस्तार अध्यायके अन्तमें लिखेंगे । वह यह है कि, दल और आकृति योगोंकी समकाल स्थिति नहीं है, जैसे दलयोगमें संख्यायोगकी प्राप्ति जहां होगी तहां दल ही फल देगा, आश्रय आकृतिकी समकाल प्राप्ति होनेमें आकृति फल देगा, ऐसेही आकृतिसंख्याकी तुल्य प्राप्तिमें आकृति फल देगा, संख्या और आश्रय योग आकृति योगमें अन्तर्भाव हो जाते हैं और जो यवन मतसे १५० भेद नाभस योगोंके कहे हैं उनका विस्तार कहते हैं, वराहमिहिरने आकृति योग २० ही कहे हैं, परन्तु उनमेंसे गदा योगके भेद ४- लग्न चतुर्थमें सर्व ग्रह होनेसे गदा, और ४ । ७ में सर्व ग्रह होनेसे शंख,ऐसे ही ७ । १० में बभ्रुक, १० । १में ध्वज । अब शंख बभ्रुक, ध्वज ये ३भेद मिलाकर आश्रयके भेद २३ होते हैं, संख्यायोगके भेद १२७ होते हैं। ये सब १५० हुये, बारह राशिके प्रत्येक भेद होनेसे सब १८०० भेद होते हैं । संख्यायोगके १२७भेद ये हैं कि, पहिले " द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः"ऐसा लिखा है तो द्विविकल्प २१ हैं, त्रिविकल्प ३४, चतुर्विकल्प ३५, पंचविकल्प २१, षष्ठविकल्प ७, सप्तविकल्प १, प्रथम विकल्प ७ ये सब १२७ हुये, इन विकल्पोंका गणितप्रस्तार क्रमसे वराहसंहितामें उत्तम प्रकार सबके समझनेके योग्य लिखा है । ग्रन्थ बढनेके कारण मैंने यहां छोड दिया, तथापि वही मत लेकर ग्रहगणना लिखता हूं कि, प्रथम विकल्प रवि । चन्द्र । मङ्गल । बुध । बृहस्पति । शुक्र । शनि । यथाक्रमसे एक विकल्प । र० चं० । र० भौ० र० बु० । र० बृ० । र० शु० । र० श० । सूर्यसहित ६, चं० मं० । चं० बु० । चं० बृ० । चं० शु० । चं० श० । चन्द्रसहित ५, मं० बु० । मं० बृ० । मं० शु० । मं० श० । मङ्गल सहित ४, बु० बृ० । बु० शु० । बु० श० । बुधसहित ३,

वृ० शु० । वृ० श० । गुरु सहित २, शु० श० । शुक्र सहित १ । ये२१ भेद दूसरे विकल्पके हुये २ । र० चं० मं० । र० चं० बु० । र० चं० वृ० र० चं० शु० । र० चं० श० । ५ । र० मं० बु० । र० मं० वृ० । र० मं० शु० । र० मं० श० । ४ । र० बु० वृ० । र० बु० शु० । र० बु० श० । ३ । र० वृ० शु० । र० वृ० श० । २ । र० शु० श० । १ । ये तीसरे विकल्पमें सब १५ भेद हुये । चं० मं० बु० । चं० मं० वृ० । चं० मं शु० । चं० मं० श० । ४ । चं० बु० वृ० । चं० बु० शु० । चं० बु० श० । ३ । चं० वृ० शु० । चं० वृ० श० ।२। चं० शु० श० । १ । ये उसीमेंसे १० भेद हुये मं० बु० वृ० । मं० बु० शु० । मं० बु० श० । ३ । मं० वृ० शु० । मं०वृ० श० । २ ।चं० शु० । १ । ये उसीमेंसे ६ हुये । बु० वृ० शु० । बु० वृ० श० ।२। बु० शु० श० । १ । वृ० शु० श० । १ । ये सब मिलाके तीसरेके भेदके ३५ विकल्प हुये । ३ । र० चं० मं० बु० । र० चं० मं० वृ० । र० चं० मं० शु० । र० चं० मं० श० । ४ । र० चं० बु० वृ० । र० चं० बु० शु० । र० चं०बु०श० । ३ ।र० चं० वृ०शु० र० चं० वृ० श० । २ । र० चं० शु० श० । १ । र० मं० बु वृ० । र० मं० बु० शु० । र० मं० बु० श० । ३ । र० मं० वृ० शु । र० मं० वृ० श० । २ । र० मं० शु० श० । १ । र० बु० वृ० शु० र० बु० वृ० श० । २ । र० बु० शु० श० । र० वृ० । शु० श० । २ । एवम् सूर्यसहित २० हुये । चं० मं० बु० वृ० । चं० मं० बु० शु० । चं० मं० बु० श । ३ । चं० मं० वृ० शु० । चं० मं० वृ० श० । २ । चं० मं० शु० श० । १ । चं० बु० वृ० शु० । चं० बु० वृ१ श० चं० बु० शु० श० । १ । चं० वृ० शु० श० १ । एवम् चन्द्रमा सहित१० मं० बु० वृ० शु० । मं० वृ० श० । मं० वृ० शु० श० । एवम् मङ्गलसहित ४ । बु० वृ० शु० श० । बुधसहित १ । एवम् ३५ भेद चौथे विकल्पके हुये । ४ । र० चं मं० बु० वृ० । र० चं० मं० बु०

शु० । र० चं मं० बु० श० । र० चं० भौ० बु० शु० । र० चं० मं० बृ० श० । र० चं० मं० शु० श० । र० चं० बु० बृ० शु० । र० चं० बु० बृ० श० । र० चं० बु० शु० श० । र० चं० बृ० शु० श० । र० मं० बु० बृ० शु० । र० मं० बु० बृ० श० । र० मं० बु० शु० श० । र० मं० बृ० शु० श० । र० बु० बृ० शु० श० । एवम् सूर्यसहित १५ । चं० मं० बु० बृ० शु० । चं० मं० बु० बृ० श० । चं० मं० बु० शु० श० । चं० मं० बृ० शु० श० । चं० बु० बृ० शु० श० । एवम् चन्द्रसहित ६ । मं० बु० बृ० शु० श० । एवम् सब योग २१ । ये पांच विकल्प हुये । र० चं० मं० बु० बृ० शु० । र० चं० मं० बु० बृ० श० । र० मं० बु० बृ० शु० श० । चं० मं० बु० बृ० शु० श० । येछः विकल्प हुये । र० चं० मं० बु० बृ० शु० श० । १ । सातवां विकल्प एकही है । इन सबका जोड १२० संख्या योगके भेद हुये । आश्रयके ३२ जोडनेसे १५० होते हैं ॥ १९ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां नाभसयोगाऽध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

चन्द्रयोगाऽध्यायः १३

सूर्यसे केन्द्रादिस्थ चन्द्रफल ।

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेन्द्रादिसंस्थे
शशिनि विनयवित्तज्ञानधीनैपुणानि ।
अहनि निशि च चन्द्रे स्वेऽधिमित्रांशके वा
सुरगुरुसितदृष्टे वित्तवान्स्यात्सुखी च ॥ १ ॥

अथ चन्द्रयोगाध्याय कहते हैं—जिसके जन्ममें चन्द्रमा सूर्यसे केन्द्र १।४।७।१० में हों तो विनय (सुशीलता) धन, ज्ञान और शास्त्रका बोध, बुद्धिनैपुण्य (कार्यमें सूक्ष्म विचार) इतने अधम अर्थात् उसको इतनी वस्तु न होंगी । जिसके जन्ममें चन्द्रमा सूर्यसे पणफर २ । ५ । ८ । ११ में हो तो पूर्वोक्त विनयादि मध्यम अर्थात् थोडे थोडे होंगे । जिसके जन्ममें चन्द्रमा सूर्यसे आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में हो तो वही पूर्वोक्त विनयादि उत्तम

अर्थात् अच्छे होंगे, जिसका जन्म दिनका हो और चन्द्रमा अपने वा अधिमित्रके अंशकमें हो बृहस्पति देखे तो वह धनवान् और सुखी होगा, जिसका जन्म रात्रिका हो और चन्द्रमा अपने वा अधिमित्रांशकमें हो और शुक्रकी दृष्टि हो तो भी धनवान् और सुखी होगा ॥ १ ॥ (मालिनी)

अधियोग ।

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वधियोग इन्दो-
स्तस्मिश्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म ।
सम्पन्नसौख्यविभवा हतशत्रवश्च
दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः ॥ २ ॥

चन्द्रमासे बुध, बृहस्पति, शुक्र ६ । ७ । ८ भावमें हों इन भावोंमेंसे ये शुभ ग्रह तीनोंमें वा दोनों स्थानोंमें वा एकहीमें हों तो अधियोग होता है, इसके ७ विकल्प होतेहैं जैसे सब शुभ ग्रह ६ में हों तो १, सप्तममें २, अष्टममें ३, छठे सातवेंमें सभी हों तो ४, जो ६ । ८ में हों तो ५, जो ७ । ८ में हों तो ६, ७ । ८ में हों तो ७, ये सात विकल्प हैं । इस अधियोगका फल यह हैं कि, सेनापति व मन्त्री व राजा हो इनमें भी विचार चाहिये कि, वे योगकर्ता शुभ ग्रह उत्तम बली हों तो राजा, मध्यम बली हो तो मन्त्री, हीन बली हों तो सेनापति होगा. और अति सौख्य ऐश्वर्यसे युक्त होंगे, शत्रु नष्ट रहेंगे, दीर्घायु और रोगरहित और निर्भय अधियोगवाले मनुष्य रहते हैं ॥ २ ॥ *(वसन्ततिलका)*

सुनफा आदि ४ योग ।

हित्वार्कं सुनफानफादुरुधुराः स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ ।
केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते
केचित्केन्द्रनवांशकेषु च वदन्त्युक्तिप्रसिद्धा न ते ॥ ३ ॥

सूर्यको छोडके चन्द्रमासे दूसरा कोई ग्रह हो तो सुनफा योग, ऐसेही चन्द्रमासे १२ में सूर्य छोडके भौमादियोंमेंसे कोई ग्रह हों तो . ये

और २ । १२ दोनों स्थानोंमें ग्रह हों तो दुरुधुरा योग होता है । इन ३ योगकारक ग्रहोंके साथ सूर्यभी हो तो योग भंग नहीं होता किन्तु सूर्य आप योग नहीं करसकता है और चन्द्रमासे २। १२ इन दोनोंमें कोई भी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है परन्तु लग्नसे केन्द्रमें सूर्य चंद्र विना अन्य कोई ग्रह हों और चन्द्रमाके साथभी कोई ग्रह हो तो केमद्रुम योग भंग हो जाता है । कोई कहते हैं कि, चन्द्रमाके केंद्र व नवांशकमेंभी ये योग होते हैं जैसे—चन्द्रमासे चौथे भौमादियोंमेंसे कोई एक वा बहुत ग्रह हों तो सुनफा योग, ऐसेही चन्द्रमासे दशममें हो तो अनफा, दोनों जगह हो तो दुरुधुरा, ४ । १० मेंसे कहींभी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है और चन्द्रमा जिस नवांश पर बैठा है उससे दूसरी राशि पर कोई ग्रह भौमादि हो तो सुनफा, ऐसे ही बारहवेंमें अनफा, दोनोंमें दुरुधुरा, दोनों स्थानोंमें न हो तो केमद्रुम होता है ऐसा किसी २ आचार्योंका मत है परन्तु उनका कहना प्रसिद्ध नहीं है ॥ ३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

त्रिंशत्सरूपाः सुनफानफाख्याः षष्टित्रयं दौरुधुरे प्रभेदाः ।
इच्छाविकल्पैः क्रमशोऽभिनीय नीते निवृत्तिः पुनरन्यनीतिः ॥४॥

सुनफा, अनफा योगोंके ३१ । ३१ भेद हैं । दुरुधुराके १८० भेद हैं । इनका प्रस्तार क्रमपूर्व नाभसयोगाध्यायमें कहा है । इच्छा विकल्प करके क्रमसे उन विकल्पोंको बनायके निवृत्ति होती है फिर और रीति स्थानान्तर चालनकी होती है । जैसे सुनफा अनफा योगमें बु० बृ० शु० श० इन पांचोंसे होते हैंतो इच्छा विकल्प पांचही हुये पूर्ववत्प्रस्तार क्रमसे निवृत्ति। ५ । ४ । ३ । २ ।१ अथवान्यानीति प्रथम विकल्प५द्वितीय१० तृतीय १० चतु० ५ पञ्चम १,जैसे चन्द्रमासे दूसरे मं० बु० बृ० शु०श० प्रथम विकल्प ५, मं०बु० । मं० बृ० । मं० शु० । मं० श० । बुध बृहस्पति, बुध शुक्र । बुध शनैश्चर । बृहस्पति शुक्र । बृहस्पति शनैश्चर । शुक्र शनैश्चर २ विकल्प १० मंगल, बुध, बृहस्पति । मंगल,बुध, शुक्र। मंगल, बुध

शनैश्चर। मं० वृ० शु०। मं० वृ० शु० श०। मं० शु० श०। बु० वृ० शु०। बु० वृ० श०। बु० शु० श०। वृ० शु० श०। ३ विक० १०। मंगल बुध बृहस्पति शुक्र। मंगल बुध बृहस्पति शनैश्चर। मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्चर। मंगल बुध शुक्र शनैश्चर। बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर। ४ विक० ५ मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर ५ विक० १ ये सब ३१ सुनफाके भेद हैं। ऐसेही ३१ अनफाके भेद होते हैं। अब दुरुधुराके भेद कहते हैं—पूर्ववत्प्रस्तार क्रमसे एक दूसरेमें, दूसरा बारहवेमें, पहिला बारहवेमें, दूसरा दूसरेमें, जैसे मंगल बुध १, बुध मंगल २, मंगल बृहस्पति ३. बृहस्पति मंगल ४, मंगल शुक्र ५, शुक्र मंगल ६, मंगल शनैश्चर ७, शनैश्चर मंगल ८ बुध, बृहस्पति ९, बृहस्पति बुध १०, बुध शुक्र ११, शुक्र बुध १२, बुध शनैश्चर १३, शनैश्चर बुध १४, बृहस्पति शुक्र १५, शुक्र बृहस्पति १६, बृहस्पति शनैश्चर १७, शनैश्चर बृहस्पति १८, शुक्र शनैश्चर १९, शनैश्चर शुक्र २०। अब दूसरेमें एक, बारहवेमें दो, दूसरेमें दो, बारहवेमें एक। जैसे—मंगल। बुध बृहस्पति १। बुध। बृहस्पति मंगल २। बृहस्पति। शुक्र बुध ३। बुध शुक्र मंगल ४। मंगल बुध शनैश्चर ५। बुध शनैश्चर मंगल ६। मंगल बृहस्पति शुक्र ७। बृहस्पति शुक्र मंगल ८। मंगल बृहस्पति शनैश्चर ९। बृहस्पति शनैश्चर मंगल १०। मंगल शुक्र शनैश्चर ११। शुक्र शनैश्चर मंगल १२। बुध मंगल बृहस्पति १३। बृहस्पति मंगल बुध १४। बुध मङ्गल शुक्र १५। मंगल शुक्र बुध १६। बुध मं० श० १७। मंगल शनैश्चर बुध १८। बुध बृहस्पति शुक्र १९। बृहस्पति शुक्र बुध २०। बुध बृहस्पति शनैश्चर २१। बृहस्पति शनैश्चर बुध २२। बुध शुक्र शनैश्चर २३। शुक्र शनैश्चर बुध २४। बृहस्पति मंगल बुध २५। मंगल बुध बृहस्पति २६। बृहस्पति मंगल शुक्र २७। मंगल शुक्र बृहस्पति २८। बृहस्पति मंगल शनैश्चर २९। मंगल शनैश्चर बृहस्पति ३०। बृहस्पति बुध शुक्र ३१। बुध शुक्र बृहस्पति ३२। बृहस्पति बुध शनैश्चर ३३। बुध शनैश्चर बृहस्पति ३४।

५	४	३	२	१
१	२	३	४	५

बृहस्पति शुक्र शनैश्चर ३५। शुक्र शनैश्चर बृहस्पति ३६। शुक्र मंगल बुध ३७ । मंगल बुध शुक्र ३८ । शुक्र मंगल बृहस्पति ३९ । मंगल बृहस्पति शुक्र ४० । शुक्र मंगल शनैश्चर ४१ । मंगल शनैश्चर शुक्र ४२। शुक्र बुध बृहस्पति ४३ । बुध बृहस्पति शुक्र ४४ । शुक्र बुध शनैश्चर ४५। बुध शनैश्चर शुक्र ४६ । शुक्र बृहस्पति शनैश्चर ४७ । बृहस्पति शनैश्चर शुक्र ४८। शनैश्चर मंगल बुध ४९। मंगल बुध शनैश्चर ५०। शनैश्चर मंगल बृहस्पति ५१ । मंगल बृहस्पति शनैश्चर ५२ । शनैश्चर मंगल शुक्र ५३ । मंगल शुक्र शनैश्चर ५४ । शनैश्चर बुध बृहस्पति ५५ । बुध बृहस्पति शनैश्चर ५६ । शनैश्चर बुध शुक्र ५७। बुध शुक्र शनैश्चर ५८। शनैश्चर बृहस्पति शुक्र ५९ । बृहस्पति शुक्र शनैश्चर ६०।ये सब ८०।एक दूसरेमें, २ बारहवेंमें ।.२ दूसरेमें एक बारहवेंमें । जैसे—मंगल बुध बृहस्पति शुक्र १ । बुध बृहस्पति शुक्र मंगल २। मंगल बुध बृहस्पति शनैश्चर ३ । बुध बृहस्पति शनैश्चर मंगल ४ । मंगल बुध शुक्र शनैश्चर ५। बुध शुक्र शनैश्चर मंगल ६ । मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्चर ७। बृहस्पति शुक्र शनैश्चर मंगल ८ । बुध मंगल बृहस्पति शुक्र ९। मंगल बृहस्पति शुक्र बुध १० । बुध मंगल बृहस्पति शनैश्चर ११। मंगल बृहस्पति शनैश्चर बुध १२ । बुध मंगल शुक्र शनैश्चर १३ । मंगल शुक्र शनैश्चर बुध १४। बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर १५। बृहस्पति शुक्र शनैश्चर बुध १६ । बृहस्पति मंगल बुध शुक्र १७। मंगल बुध शुक्र बृहस्पति १८। बृहस्पति मंगल बुध शनैश्चर १९ । मंगल बुध शनैश्चर बृहस्पति २० । एवमेकत्र १०० । बृहस्पति मंगल शुक्र शनैश्चर १। मंगल शुक्र शनैश्चर बृहस्पति २ । बृहस्पति बुध शुक्र शनैश्चर ३ । बुध शुक्र शनैश्चर बृहस्पति ४ । शुक्र मंगल बुध बृहस्पति ५ । मंगल बुध बृहस्पति शुक्र ६ । शुक्र मंगल बुध शनैश्चर ७ । मंगल बुध शनैश्चर शुक्र ८ । शुक्र मं० बृ० शनैश्चर ९ । मं० बृ० श० शु० १० । शु० बु० बृ० श० ११ । बु० बृ० शु० श० १२ ।

श० मं० बु० बृ० १३ । मं० बु० बृ० श० १४ । श० मं० बु० शु० १५ । मं० बु० शु० श० १६ । श० मं० बृहस्पति शुक्र १७। मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्वर १८ । शनैश्वर बुध बृहस्पति शुक्र १९ । बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्वर २० । एवमेकत्र १२० ॥ अब दूसरेमें । एक बारहवें चार. दूसरेमें ४, बारहवें एक जैसे–मंगल बध बृ० शुक्र श० १। बुध बृ० शुक्र श० मं० २ । बु० मं० बृ० शुक्र श० ३ । मं० बृ० शुक्र श० बुध ४ । बृ० मंगल बुध शुक्र श० ५ । मं० बुध शुक्र श० बृ० ६। शुक्र मं० बुध बृ० श० ७ । मं० बुध बृ० श० शुक्र ८ । श० मं० बु० बृ० शुक्र ९ । मं० बुध बृ० शु० श० १० । एवमेकत्र ॥ १३० । अब २ बारहवें दो दूसरे । जैसे–मं० बुध बृ० शुक्र १ । बृ० शु० मं० बुध २ । मं० बुध बृ० श० ३ । बृ० श० मं० बुध ४। मं० बुध शुक्र श० ५ । शुक्र श० मं० बुध ६ । मं बृ० शुक्र बुध ७ । शुक्र बुध मं० बृ० ८ । मं० बृ० बुध श० ९ । बुध श० मं० बु० १० । मं० बु० शुक्र० श० ११ । शुक्र श० मं० बु० १२ । मं० शुक्र बुध बृ० १३ । बुध बृ० । मंगल शु० १४ । मं० शु० । बु० श० १५ । बुध श० । मं० शु० १६ । मं० शु० । बु० श० १७ । बु० श० मंगल शु० १८ । बुध बृ० । मंगल श० १९ । मं श० । बुध बृ० २० । एवमेकत्र १५० ॥ मं० श० । बृ० शु० १ । बृ० शु० । मं० श० २ । मंगल श० । बु० शु० ३ । बु० शु० । मंगल श० ४ । बुध बृ० । शु० श० ५ । शु० श० । बुध बृ० ६ । बु० शु० । बृ० श० ७ । बृ० श० । बु० शु० ८ । बृ० शु० । बु० श० ९ । बु० श० । बृ शु० १० । एवमेकत्र १६० ॥ अब २ दूसरे, ३ बारहवें । ३ दूसरे २ बारहवें, । जैसे मं० बुध । बृह० शु० श० १ । बृ० शुक्र श० । मंगल बुध २ । मंगल बृहस्पति । बुध शुक्र शनैश्वर ३ । बुध शुक्र शनैश्वर। मंगल बृहस्पति ४ । मंगल शुक्र । बुध बृहस्पति शनैश्वर ५ । बुध बृहस्पति शनैश्वर । मंगल शुक्र ६ । मंगल शनैश्वर । बुध बृहस्पति शुक्र ७।

बुध बृहस्पति शुक्र । मंगल शनैश्चर ८ । बुध बृहस्पति । मंगल शुक्र शनैश्चर ९ । मंगल शुक्र शनैश्चर । बुध बृहस्पति १० । एवमेकत्र १७०॥ बुध शुक्र । मंगल बृहस्पति शनैश्चर १ । मंगल । बृहस्पति शनैश्चर । बुध शुक्र २ । बुध शनैश्चर । मंगल बृहस्पति शुक्र ३ । मंगल । बृहस्पति शुक्र बुध शनैश्चर ४ । बृहस्पति शुक्र । मंगल बृ० श० ५ । मं० बुध श० बृ० शु० ६ । बृ० श० । मं० बु० शुक्र ७ । मंगल बुध शुक्र । ब० श० ८ । शुक्र श० । मंगल बुध बृ० ९ । मं० बुध बृ० । शु० श० १० । एवमेकत्र १८०। इस प्रकार दुरुधुराके १८० भेद हैं ॥ ४ ॥ (इन्द्रवज्रा)

सुनफाअनफा इन दोनोंके फल ।

स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा
भवति हि सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च ।
प्रभुरगदशरीरः शीलवान्ख्यातकीर्ति-
र्विषयसुखसुवेषो निर्वृतश्चानफायाम् ॥ ५ ॥

सुनफायोगवाला मनुष्य अपने बाहुबलसे कमाये हुये धन सहित राजा अथवा राजाके तुल्य और बुद्धिमान् विख्यात कीर्तिवाला होता हैं । अनफायोगवाला जिसकी आज्ञाको कोई भंग न करे और निरोगी, विनयवान, गुणवान, ख्यात कीर्ति सबमें प्रमाण, शब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि सुख भोगनेवाला, सुन्दर शरीरवाला मानसी दुःखोंसे रहित होता है ॥५॥ (मालिनी)

दुरुधरा व केमद्रुम योगमें जन्मेंहुवेका स्वरूप ।

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढ्य-
स्त्यागान्वितो दुरुधुराप्रभवः सुभृत्यः ।
केमद्रुमे मलिनदुःखितनीचनिःस्वः ।
प्रेष्यःखलश्च नृपतेरपि वंशजातः ॥ ६ ॥

दुरुधुरा योगवाला मनुष्य यथासम्भव उत्पन्न भोग भोगनेसे सुखी और धन तथा घोडा आदि वाहनोंसे युक्त, दाता, अच्छे चाकरोंवाला होता है ।

केमद्रुम योगवाला मलिन (स्नानादिकमें आलसी), अनेक दुःखोंसे युक्त, नीच (अधम कर्म करनेवाला), दरिद्री, प्रेष्य (दासकर्म करनेवाला), दुष्टस्वभाव ऐसे फलोंमेंसे किसी किसी वा सभी फलवाला मनुष्य राजवंशमें उत्पन्न हुवा हो तो भी होताही हैं ॥ ६ ॥ (वसन्ततिलका)

इन्हीं योगोंके प्रत्येक ग्रहवशसे विशेष फल ।

उत्साहशौर्य्यधनसाहसवान् महीजः
सौम्यः पटुः सुवचनो निपुणः कलासु ।
जीवोऽर्थधर्मसुखभुङ् नृपपूजितश्च
कामी भृगुर्बहुधनो विषयोपभोक्ता ॥ ७ ॥

इन योगोंमें योगकर्त्ता मंगल हो तो उत्साही (नित्य उद्यमी) शौर्यवान् रणप्रिय, धनवान्, साहसी (साहस कार्य करनेवाला) होवे। बुध योगकर्ता हो तो चतुर, सुन्दर वाणीवाला, सब कलाओंमें निपुण, गीत, बाजे, नाच, चित्रकार, पुस्तक इतने कामोंमें सूक्ष्म दृष्टिवाला होता है। बृहस्पति हो तो धनका पात्र धर्ममें तत्पर, सुखी राजमान्य होता है । शुक्र हो तो अतिकामी (स्त्रियोंमें चञ्चल), बहुत धनवान्, विषय भोगनेवाला होता है ॥ ७ ॥ (वसन्ततिलका)

परविभवपरिच्छदोपभोक्ता रवितनयो बहुकार्यकृद्गणेशः ।
अशुभकृदुडुपोऽह्नि दृश्यमूर्तिर्गलिततनुश्च शुभोऽन्यथान्यदूह्यम् ॥

शनि योगकारक हो तो पराये ऐश्वर्य, घर, वस्त्र, वाहन, परिवारका भोगनेवाला, अनेक कार्य करनेवाला, बहुत समुदायोंका स्वामी होता है । यहां अनफा सुनफा दुरुधुरा योगोंमें एक एक ग्रहका फल कहा, जहां २। ३। ४ योगकारक हों तहां फलभी उतनाही अधिक कहना। और फल केहते हैं कि, चन्द्रमा दिनके जन्ममें दृश्य चकार्धमें हो तो अशुभ फल देता है अर्थात् वह पुरुष दुःख दरिद्रसे युक्त रहेगा। अदृश्य चक्रार्द्धमें हो तो शुभ फल अर्थात् ऐश्वर्यादि युक्त होगा और प्रकार हो तो और फल कहना ॥ ८

लग्न या चंद्रसे सौम्यग्रहका फल ।

लग्नादतीव वसुमान्वसुमाञ्छशाङ्कात्
सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः समस्तैः ।
द्वाभ्यां समोऽल्पवसुमांश्च तदूनताया-
मन्येष्वसत्स्वपि फलेष्विदमुत्कटेन ॥ ९ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके चन्द्र-
योगाध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

जिसके जन्ममें लग्नसे शुभग्रह उपचय स्थानोंमें हो तो अति धनवान् होता है। जिसके चन्द्रमासे उपचयमें शुभग्रह (बुध, (बृहस्पति, शुक्र)हो तो वहभी धनवान् होता है । तीनों शुभग्र उपचयों होनेसे यह फल पूरा होगा। २ में मध्यम, १ में और कम । जिसके लग्न वा चन्द्रसे उपचय ३।६।१० ११ में कोईभी शुभग्रह न हो तो दरिद्री होगा, जिसके लग्न चन्द्र दोनोंसे सभी शुभग्रह उपचयमें हों वह अति धनी होगा । यह योग फलमें उत्कट अर्थात् बडा तेज है कि, केमद्रुमादि योगोंको काटकर धनवान् कर देता है ॥ ९ ॥ (वसन्ततिलका)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां चन्द्र-
योगाऽध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

द्विग्रहयोगाऽध्यायः १४.

सूर्यसहित चंद्रादिकोंके फल ।

तिग्मांशुर्जनयत्युपेशसहितो यन्त्राश्मकारं नरं
भौमेनाघरतं बुधेन निपुणं धीकीर्तिसौख्यान्वितम् ।
क्रूरं वाक्पतिनाऽन्यकार्यनिरतं शुक्रेण रङ्गायुधे-
र्लब्धस्वं रविजेन धातुकुशलं भाण्डप्रकारेषु वा ॥ १ ॥

अब द्विग्रहयोगाध्यायमें प्रथम सूर्यसहित चन्द्रादिकोंके पृथक् पृथक् फल कहते हैं— सूर्य चन्द्रमाके साथ हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकारके यन्त्र

बनानेवाला और पत्थरका काम करनेवाला होवै। भौम युक्त सूर्य हो तो पापी होगा। बुध युक्त हो तो सब कार्योंमें निपुण और बुद्धि यश सौख्यसे युक्त हो बृहस्पति युक्त हो तो क्रूरस्वभाव और निरन्तर पराये कार्यमें तत्पर होवे। शुक्र युक्त हो तो रंग मल्लादि और आयुध खड्गादिसे धन पावें। शनि युक्त हो तो धातु (ताँबा, गेरू, मनशिलादि) के काममें निपुण और अनेक भाण्ड वर्त्तन आदि बनाने वा इनके कर्मसे द्रव्य पावै॥ १॥

मंगल आदियुक्त चन्द्रका फल।

कूटस्त्र्यासवकुम्भपण्यमशिवं मातुः सवक्रः शशी
सज्ञः प्रसृतवाक्यमर्थनिपुणं सौभाग्यकीर्त्यान्वितम्।
विक्रान्तं कुलमुख्यमस्थिरमतिं वित्तेश्वरं साङ्गिरा-
'वस्त्राणां ससितः क्रियादिकुशलं सार्किः पुनर्भूसुतम्॥ २॥

चन्द्रमा मंगल युक्त हो तो कूटकार्य करनेवाला, स्त्री और मद्यके घडे बेचनेवाला और अपने माताको क्रूर (बुरा) होवे। बुध युक्त हो तो प्यारी वाणी बोलनेवाला, अर्थ जाननेवाला, सौभाग्य युक्त, सब मनुष्योंका प्यारा, कीर्ति (यश) वाला होवे। बृहस्पति युक्त, हो तो शत्रु जीतनेवाला अपने कुलमें श्रेष्ठ, चपल, धनवान् होवे। शुक्रसहित हो तो वस्त्रकर्म, तन्तु वाय, सूत्र बुनना, रफूगिरी वा वस्त्र रँगना, सीना और क्रय विक्रयादि वस्त्र व्यापारमें चतुर होवे। शनि युक्त हो तो उसकी माता पुनर्भू अर्थात् एक जगह व्याही गई दूसरे जगह पुत्र पैदा करनेवाली होवे॥ २॥ (शार्दूलविक्रीडित)

मंगल बुध आदिसे युक्तका फल।

मूलादिस्नेहकूटैर्व्यवहरति वणिग्बाहुयोद्धा ससौम्ये
पुर्य्यध्यक्षःसजीवे भवति नरपतिः प्राप्तवित्तो द्विजो वा।
गोपो मल्लोऽथ दक्षः परयुवतिरतो द्यूतकृत्सासुरज्ये
दुःखार्तोऽसत्यसन्ध ससवितृतनये भूमिजे निन्दितश्च॥ ३॥

मंगल बुधयुक्त हो तो आचार, जडी, बलकल, फूल, पत्ते, गोंद, तेल और बनावटी वस्तुका व्यापार करता है और मल्ल अर्थात् कुस्ती लड नेवाला होता है बृहस्पति युक्त हो तो नगरका स्वामी अथवा राजा यद्वा ब्राह्मण धनवान् होता है। शुक्र युक्त हो तो मल्ल, गोपालक चतुर, परस्त्रियोंमें आसक्त, जुवारी ठग होता है। शनियुक्त हो तो दुःखार्त झुठा बोलनेवाला, निंदित (निन्दाके कर्म करनेवाला) होता है ॥ ३ ॥ (स्रग्धरा)

बुध-गुरु आदिसे युक्तका फल।

सौम्ये रङ्गचरो बृहस्पतियुते गीतप्रियो नृत्यवित्-
वाग्मी भूगणपः सितेन मृदुना मायापटुर्लङ्घकः ।
सद्विद्यो धनदारवान् बहुगुणः शुक्रेण युक्ते गुरौ
ज्ञेयः श्मश्रुकरोऽसितेन घटकृज्जातोऽन्नकारोऽपि वा ॥ ४ ॥

बुध बृहस्पतियुक्त हो तो मल्ल, गीतप्रिय और नृत्य जाननेवाला होता है। शुक्र युक्त हो तो बोलनेमें चतुर, भूमि और गणोंका स्वामी होवे। शनियुक्त हो तो दूसरेके ठगनेमें चतुर, और गुर्वादिवचन लंघन करनेवाला होवे। बृहस्पति शुक्रयुक्त हो तो अच्छी विद्या जाननेवाला धन और स्त्रीसंयुक्त बहुत गुणोंसे युक्त होवे। शनियुक्त हो तो श्मश्रुकर्मा (हजाम) अथवा घटकृत् (कुम्हार) अन्नकार (रसोईदार) होवे॥ ४॥ (शार्दूलविक्रीडित)

शुक्र शनियुक्त तथा त्रिग्रहयोगफल।

असितसितसमागमेऽल्पचक्षुर्युवतिसमाश्रयसम्प्रवृद्धवित्तः ।
भवति च लिपिपुस्तचित्रवेत्ता कथितफलैः परतो विकल्पनीयाः ॥ ५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके द्विग्रहयोगाऽध्यायश्चतुर्दश ॥ १४ ॥

शुक्र शनियुक्त हो तो अल्पदृष्टि और स्त्रीके आश्रयसे धन बढे। पुस्तकादि लिखनेमें और चित्र बनानेमें चतुर होवे, जहां त्रिग्रह योग दो स्थानोंमें हो वहां दोनों फल होंगे। ऐसेही तीन भावोंमें तीनोंमें फल कहने।

जहां तीन ग्रह इकट्ठे हों तहां तीनों फल कहना। जैसे सू० च० मं० ये तीन इकट्ठे हों तो सूर्य चन्द्रमाका फल १, चन्द्रमा मंगलका २ सूर्य मंगलका ये तीनों फल होंगे। ऐसेही सर्वत्र जानना ॥ ५ ॥ (पुष्पिताग्रा)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां द्विग्रहयोगाऽध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

प्रव्रज्यायोगाऽध्यायः १५.

४ या ५ ग्रहोंके युतिसे संन्यासयोग।

एकस्थैश्चतुरादिभिर्बलयुतैर्जाताः पृथग्वीर्यगैः
शाक्याजीविकभिक्षुवृद्धचरका निर्ग्रन्थवन्याशनाः।
माहेयज्ञगुरुक्षपाकरसितप्राभाकरीनैः क्रमात्
प्रव्रज्या बलिभिः समाः पराजितैस्तत्स्वामिभिः प्रच्युतिः॥१॥

एक स्थानमें चार आदि अर्थात् ४। ५। ६। ७ ग्रह इकट्ठे हों तो प्रव्रज्या योग होता है, इनमें भी बलके वशसे है कि, जो उन प्रव्रज्या-कारक ग्रहोंमें बलवान् कोई न हो तो यह योग फलभी नहीं देगा, जो एक ग्रह बलवान् हो तो उसीकी प्रव्रज्या होगी, दो बली हों तो दोनोंकी, एवं जितने बलवान् हों उतनेहीकी प्रव्रज्या होगी। प्रव्रज्या फल प्रत्येक ग्रहका कहते हैं कि, मंगलकी प्रव्रज्या हो तो भगवा वस्त्र पहरने-वाला, बुधकी हो तो एक दण्डी और भिक्षु (यति), बृहस्पतिसे आजीवक वैष्णव, चन्द्रमासे कापालिक वा शैव कनफटा, शुक्रसे चक्राङ्कित, शनिसे नंगा (वस्त्ररहित), सूर्यसे फल मूल खानेवाला तपस्वी होगा। बलवान् ग्रहके अनुसार प्रव्रज्याफल मिलता है। जो वह ग्रह पराजित अर्थात् ग्रह युद्धमें हारा हो तो प्रव्रज्या भङ्ग होजाती है अर्थात् फकीरी लेकर छोड देता है। जो दो वा तीन ग्रह बली हों तो पहिले एक प्रकार फकीरी लेकर फिर दूसरे प्रकार फिर तीसरे प्रकार लेगा।

जो ग्रह पराजित हो तो उसकी प्रव्रज्याको छोडेगा । सभी पराजित हों तो सभी प्रकार लेकर छोडेगा । जो पराजित नहीं, उसकी प्रव्रज्या आजन्म रहेगी । जो बहुत ग्रह प्रव्रज्यादायक हों तो प्रथम प्रव्रज्यादायकान्तर्दशामें उसके अनुसार फकीरी लेगा, जब दूसरेकी दशान्तर्दशा आवे तब पूर्वगृहीतको छोडकर दूसरेके अनुसार ग्रहण करेगा इत्यादि ४ । ५ में भी जानना ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

प्रव्रज्या भङ्ग ।

रविलुप्तकरैरदीक्षिता बलिभिस्तद्गतभक्तयो नराः ।
अभियाचितमात्रदीक्षिता निहतैरन्यनिरीक्षितैरपि ॥ २ ॥

जो प्रव्रज्याकारक बली ग्रह अस्तङ्गत हो तो अदीक्षित अर्थात् विना गुरुमंत्रोपदेश फकीर होगा, परन्तु तद्ग्रहसम्बन्धी प्रव्रज्यामें भक्त होगा। जो वह ग्रह औरोंसे विजित अर्थात् ग्रह युद्धमें जीता हो वा और ग्रह देखें तो दीक्षा लेनेकी इच्छा वा प्रार्थना करता रहै परन्तु दीक्षा न पावे। बली ग्रहके दशान्तरमें दीक्षा पावेगा, यदि पराजित न हो तो॥२॥(वैतालीय)

अन्य प्रकारसे प्रव्रज्यायोग ।

जन्मेशोऽन्यैर्यद्यदृष्टोऽर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपं वा बलोनम् ।
दीक्षां प्राप्नोत्यार्किद्रेष्काणसंस्थे भौमार्क्यंशे सौरदृष्टे च चन्द्रे ॥३॥

जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा जिस राशिमें हो उस राशिका स्वामी जन्मेश कहलाता है। उसके ऊपर किसीकी दृष्टि न हो और चन्द्रमा शनिको देखे तो प्रव्रज्या होती है। इसमें भी शनि चन्द्रमामें जो बली हो उसकी दशान्तर्दशामें प्रव्रज्या होगी अथवा बलवान् शनि बलरहित जन्मराशिपतिको देखे तोभी शनिकी उक्त प्रव्रज्या होगी और चन्द्रमा शनिके द्रेष्काणमें हो अथवा शनि वा मङ्गलके नवमांशमें हो कोई ग्रह न देखे, केवल शनि देखें तो प्रव्रज्या दीक्षा पाता है अर्थात् शन्युक्त प्रव्रज्या पावेगा। अथवा चन्द्रमा निर्बल हो पापी ग्रह देखे, विशेषतः शनि पूर्ण देखे तो वह मनुष्य भाग्य हीन होगा ॥ ३ ॥ (शालिनी)

शास्त्रकारयोग तथा राजाकामी संन्यासयोग ।

सुरगुरुशशिहोरास्वार्किदृष्टासु धर्मे
गुरुरथ नृपतीनां योगजस्तीर्थकृत्स्यात् ।
नवमभवनसंस्थे मन्दगेऽन्यैरदृष्टे
भवति नरपयोगे दीक्षितः पार्थिवेन्द्रः ॥ ४ ॥

इति श्रीबृहज्जातके प्रव्रज्यायोगाध्यायःपञ्चदशः ॥ १५ ॥

बृहस्पति चन्द्रमा और लग्न इनपर शनिकी दृष्टि हो और बृहस्पति नवम हो और कोई राज योग भी पड़ा हो तो वह राजा नहीं होगा । किन्तु तीर्थाटन करनेवाला होगा और शास्त्र रचनेवाला होगा । शनि नवम हो औ कोई ग्रह उसे न देखे और कोई राजयोग भी उस मनुष्यको हो तो वह राजाही होगा किन्तु दीक्षित अर्थात् फकीरी होगा । शनि नवम हो और कोई ग्रह उस न देखे और कोई राजयोग भी उस मनुष्यको हो तो वह राजाही होगा किन्तु दीक्षित अर्थात् फकीरी दीक्षा भी पावेगा, महन्त आदि । ऐसे योगोंमें यदि राजयोग कोई न हो तो केवल प्रव्रज्यायोग फल करेगा ॥ ४ ॥ (मालिनी)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
प्रव्रज्यायोगाऽध्यायः पञ्चदशः ॥ १५ ॥

ऋक्षशीलाध्यायः १६.

जन्म नक्षत्रका फल ।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोऽश्विनीषु मतिमांश्च ।
कृतनिश्चयसत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु ॥ १ ॥

अश्विनीमें जिसका जन्म हो वह मनुष्य भूषण शृङ्गारमें रुचिवाला, रूपवान्, सबका प्यारा, सब कार्य करनेमें चतुर, बुद्धिमान् होता है । भरणीमें जिस कामका आरंभ करे उसका पूरा करनेवाला, सत्य बोलनेवाला, निरोग, चतुर, सुखी होगा ॥ १ ॥ (आर्या)

बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वी कृत्तिकासु विख्यातः ।
रोहिण्यां सत्यशुचिः प्रियम्वंदः स्थिरमतिः सुरूपश्च ॥ २॥

कृत्तिकामें बहुत भोजन करनेवाला, पराई स्त्रियोंमें आसक्त, तेजस्वी (किसीकी नहीं सहनेवाला) सर्वत्र प्रसिद्ध होवे । रोहिणीमें सत्य बोलनेवाला, पवित्र रहनेवाला, प्यारी वाणीवाला, स्थिरबुद्धि, रूपवान् होवे॥२॥

चपलश्चतुरो भीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी ।
शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे ॥ ३ ॥

मृगशिरामें चञ्चल, चतुर, भय माननेवाला, चतुर वाणीवाला, उद्यमी, धनवान्, भोगवान् होवे । आर्द्रामें परकार्य बिगाडनेवाला, मानी, कृतघ्न (पराई भलाईके बदले बुराई देनेवाला), जीवघाती, पापी होवे॥३॥

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च ।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः ॥ ४ ॥

पुनर्वसुमें इन्द्रियोंको रोकनेवाला, सुखी, अच्छे स्वभाववाला, नम्र जडके बराबर, रोगपीडित देह, तृषायुक्त, थोडेही लाभमें सन्तुष्ट होता है४॥

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये ।
शठसर्वभक्षपापः कृतघ्नधूर्त्तश्च भौजङ्गे ॥ ५ ॥

पुष्यमें शमदमादि युक्त, शान्त इन्द्रियवाला, सर्वप्रिय, शास्त्रार्थ जाननेवाला, धनवान् धर्ममें तत्पर होवे । आश्लेषामें परकार्यविमुख, सर्वभक्षी (सञ्चयी), पापी कृतघ्न (पराये उपकारको नाश करनेवाला), ठग होता है ॥ ५ ॥

बहुभृत्यधनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्र्ये ।
प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये ॥ ६ ॥

मघामें चाकर, कुटुंब, धन बहुत होवे, भोगयुक्त- देवता पितरोंका भक्त, उद्यमी होवे । पूर्वाफाल्गुनीमें प्यारी वाणी, उदार, कान्तिमान्, फिरनेवाला, राजसेवामें तत्पर होवे ॥ ६ ॥

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभाग्द्वितीयफाल्गुन्याम् ।
उत्साही धृष्टः पानपो घृणी तस्करो हस्ते ॥ ७ ॥

उत्तराफाल्गुनीमें सर्वजनप्रिय, विद्याके प्रभावसे धनवान् और भोगवान्, सुखी होवे। हस्तमें उद्यमी, निर्लज्ज, मद्यपान करनेवाला, दयावान्, चोरीके कार्यमें चतुर होवे ॥ ७ ॥

चित्राम्बरमाल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम् ।
दान्तो वणिक् कृपालुः प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ ॥ ८ ॥

चित्रामें अनेक प्रकार रङ्गके वस्त्र और पुष्पमालादि धारनेवाला और सुहावने नेत्र सुन्दर अङ्ग होवे। स्वातीमें उदार, व्यापारी, दयावान्, प्यारी वाणी बोलनेवाला, धर्ममें आश्रय रखनेवाला होवे ॥ ८ ॥

ईर्ष्युर्लुब्धः कृतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु ।
आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु ॥ ९ ॥

विशाखामें दूसरेकी ईर्ष्या माननेवाला, अतिलोभ, कृतिमान् बोलनेमें चतुर, कलह करनेवाला होवे। अनुराधामें धनसम्पन्न, नित्य परदेशवासी, अतिक्षुधातुर, जगे जगे फिरनेवाला होवे ॥ ९ ॥

ज्येष्ठासु न बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मवित्प्रचुरकोपः ।
मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी ॥ १० ॥

ज्येष्ठामें जिसका जन्म हो उसके बहुत मित्र न होवें, थोडे लाभमें सन्तोष करनेवाला और धर्मज्ञ, बडा क्रोधी होवे। मूलमें मानयुक्त, धनवान्, सुखी, जीवहिंसा न करनेवाला अर्थात् दयावान्, स्थिरकार्यी, भोगवान् होवे ॥ १० ॥

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढसौहृदश्च जलदैवे ।
वैश्वे विनीतधार्मिकबहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च ॥ ११ ॥

पूर्वाषाढामें स्त्री मनोवांछित प्रसन्नता देनेवाली और मानी, अच्छे मित्र होवें । उत्तराषाढामें नम्र, धर्मात्मा, बहुत मित्रवाला थोडेमें भी उपकार माननेवाला, गुणज्ञ सुरूप होवे ॥ ११ ॥

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतिमानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः ।
दाताढ्यश्शूरगीतप्रियो धनिष्ठासु धनलुब्धः ॥ १२ ॥

श्रवणमें शोभायुक्त, कान्तिमान्, स्त्री उदार और धनवान् सर्वत्र (ख्यात) विदित होवे धनिष्ठामें देनेवाला, शूर, धनयुक्त, गीत रागादिमें प्रेम लानेवाला और धनमें लोभी होवे ॥ १२ ॥

स्फुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिकः शतभिषासु दुर्ग्राह्यः ।
भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनपटुरदाता च ॥ १३ ॥

शतभिषामें स्पष्ट वाणी बोलनेवाला, अनेक व्यसन करनेवाला, शत्रुको मारनेवाला, साहस करनेवाला, किसीके वशमें न आवे । पूर्वाभाद्रपदामें नित्य उद्विग्न मन रहे, स्त्रीके वश रहै, धन कमानेमें चतुर और कृपण होवे ॥ १३ ॥

वक्ता सुखी प्रजावान् जितशत्रुर्धार्मिको द्वितीयासु ।
सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे ॥ १४ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके ऋक्ष-
शीलाध्यायः षोडशः ॥ १६ ॥

उत्तराभाद्रपदामें शास्त्रार्थादि बोलनेवाला, सुखी सन्ततिवाला, शत्रुको जीतनेवाला, धर्मात्मा होवे। रेवतीमें सब अङ्ग परिपूर्ण अर्थात् कोई अङ्ग हीन न हो, सुरूप, शूर, पवित्र, धनवान् होवे ॥ १४ ॥ (आर्या वृत्त)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां-
ऋक्षशीलाध्यायः ॥ १६ ॥

राशिशीलाऽध्यायः १७.

मेषचन्द्रमाका फल ।

वृत्तातात्रदृग्गुष्णशाकलघुभुक्क्षिप्रप्रसादोऽटनः
कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽङ्गनावल्लभः ।
सेवाज्ञः कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः
शक्त्या पाणितलेऽङ्कितोऽतिचपलस्तोयेऽतिभीरुः क्रिये॥१॥

अब चन्द्र राशिका फल कहते हैं—जिसके जन्ममें चन्द्रमा मेषका हो तो उस मनुष्यके ताँबेकासा रङ्ग नेत्रोंका हो और गोल हो, गर्मभोजी, शाकभोजी और थोडा खानेवाला, शीघ्र खुश हो जानेवाला, जगह जगह फिरनेवाला, अतिकामी और जंघा पतले हों, धन स्थिर न रहे, शूर होवे, स्त्रियोंका प्यारा, सेवा जाननेवाला, नख कुरूप हों शिरपट खोट हो, मानी हो, अपने भाइयोंमें श्रेष्ठ हो, हाथमें शक्तिका चिह्न हो, अति चपल हो और जलमें डरनेवाला होवे ॥ १ ॥ (१ से ७ तक शार्दूलविक्रीडित)

वृषचंद्रमाका फल ।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वेऽङ्कित-
स्त्यागी क्लेशसहः प्रभुः ककुदवान्कन्याप्रजः श्लेष्मलः ।
पूर्वैर्बन्धुधनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी
दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसुहृन्मध्यांत्यसौख्यो गवि ॥ २ ॥

जिसका चन्द्रमा जन्ममें वृषका हो तो देखनेमें सुरूप, सजीली चाल चलनेवाला और चूतड और मुख मोटे और पीठ या मुख वा कुक्षिमें चिह्न हो, देनेमें उदार, क्लेश सहनेवाला और उसकी आज्ञाको कोई भङ्ग न करे गर्दन बडी हो, कन्या पैदा करनेवाला, कफ प्रकृति, प्रथम कुटुम्ब व धन, व पुत्रसे रहित, सौभाग्ययुक्त, सबका प्यारा, बहुत भोजन करनेवाला, स्त्रियोंका प्यारा, गाढे मित्रोंवाला, जवानी व बुढापेमें सुखी हो ॥ २ ॥

मिथुनराशिचन्द्रफल ।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलस्ताम्रेक्षणः शास्त्रविद्-
दूतः कुञ्चितमूर्द्धजः पटुमतिर्हास्येङ्गितद्यूतवित् ।
चार्वङ्गः प्रियवाक्प्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतनसश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे ॥ ३ ॥

मिथुन राशिवाला स्त्रियोंमें बहुत अभिलाषा करनेवाला, काम शास्त्रमें चतुर, ताँबेके रङ्गसम नेत्र, शास्त्र जाननेवाला, दूत (पराया सन्देश लेजानेवाला, कुटिल केश, चतुरबुद्धि, सबको हँसानेवाला, पराये मनकी बात चिह्नोंसे जाननेवाला, जुवारी, सुन्दरशरीरवाला, प्यारी वाणी बोलनेवाला बहुत भोजनवाला, गीत प्यारा माननेवाला, नाच जाननेवाला, हिजडोंके साथ प्रीति करनेवाला हो और नाक उसकी ऊंची होवे ॥ ३ ॥

कर्कट चंद्रका फल ।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्-
दैवज्ञः प्रचुरालयः क्षयधनैः संयुज्यते चन्द्रवत् ।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृद्वत्सल-
स्तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहिते जातः शशाङ्के नरः ॥ ४ ॥

कर्कट राशिवाला कुटिल व शीघ्र चलनेवाला, जघनस्थान ऊंचा, स्त्रीके वश रहनेवाला, अच्छे मित्रोंवाला, ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला हो, बहुत घर बनावे, कभी धनवान्, कभी निर्द्धन, छोटा शरीर, मोटी गर्दन, प्रीतिसे वशमें आनेवाला, मित्रोंका प्यारा, जलाशय बगीचाओंमें प्रेम रखनेवाला होवे ॥ ४ ॥

सिंह चंद्रका फल ।

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः
स्त्रीद्वेषी प्रियमांसकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम् ।
क्षुत्तृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान्
विक्रान्तस्थिरधीः सुगर्वितमना मातुर्विधेयोऽर्कभे ॥ ५ ॥

सिंह राशिवाला क्रोधी, ठोडी मोटी, बडा मुख, पीले नेत्र, थोडे सन्तान, स्त्रियोंके साथ द्वेषी, मांस, वन, पर्वतको प्यारा माननेवाला, निकम्मे क्रोध करनेवाला, क्षुधा तृषा और दंत रोग, मानसी पीडासे पीडित, दाता, पराक्रमी, धीर बुद्धि, अभिमानयुक्त, मातृवश्य अर्थात् मातृभक्त होवे॥५॥

कन्यागत चंद्रका फल।

व्रीडामन्थरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसबाहुः सुखी
श्लक्ष्णः सत्यरथः कलासु निपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहैर्वित्तैश्च संयुज्यते
कन्यायां परदेशगः प्रियवचाः कन्याप्रजोऽल्पात्मजः॥ ६॥

कन्या राशिवाला लज्जासे आलससहित दृष्टिपात और गमन करनेवाला और शिथिलस्कन्ध तथा बाहु और सुखी, मधुरवाणी, सच्चा बोलनेवाला, नृत्य, गीत, वादित्र, पुस्तक चित्र कर्ममें निपुण, शास्त्रार्थ जाननेवाला, धर्मात्मा, बुद्धिमान्, सम्भोगमें चञ्चल, पराये घर व धनसे युक्त, परदेशवासी, प्यारी बोली बोलनेवाला, थोडे पुत्र बहुत कन्या उत्पन्न करनेवाला होवे॥ ६॥

तुलाचन्द्रका फल।

देवब्राह्मणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः
प्रांशुश्चोन्नतनासिकः कृशचलद्गात्रोऽटनोऽर्थान्वितः।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुग्-
बन्धूनामुपकारकृद्विरूपितस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे॥ ७॥

तुलाराशिवाला देवता, ब्राह्मण और साधुकी पूजामें तत्पर, बुद्धिमान्, पर धनादिमें निर्लोभी, स्त्रीका वशीभूत, उच्च शरीर और नाक पतला, सब गात्र शिथिल, फिरनेवाला, धनवान्, अङ्गहीन क्रय विक्रय व्यापार जाननेवाला, जन्ममें एक नाम पीछे देवसंज्ञक दूसरा नाम विख्यात हो, रोगी, बन्धु कुटुम्बका हितकारी और बन्धुजनोंसे त्यक्त होता है॥ ७॥

वृश्चिक चन्द्रमाका फल ।

पृथुलनयनवक्षा वृत्तजङ्घोरुजानु-
र्जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च ।
नरपतिकुलपूज्यः पिङ्गलः क्रूरचेष्टो
झषकुलिशखगाङ्कश्छन्नपापोऽलिजातः ॥ ८ ॥

वृश्चिक राशिवालेके नेत्र और छाती बडे, जंघा व जानु गोल, माता पिता गुरुसे रहित, बाल अवस्थामें रोगी, राजवंशसे पूज्य, पीतशरीर, विषमस्वभाव, मच्छी, वज्र, पक्षीका चिह्न हाथ पैरमें हो और गुप्त पापी ॥ ८ ॥ (मालिनी)

धनुराशिस्थ चंद्रफल ।

व्यादीर्घास्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्
वक्ता स्थूलरदश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित् ।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान् धर्मविद्-
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः ॥९॥

धनराशिवालेका मुख और गला भारी, पितृधनयुक्त, दानी, कविता जाननेवाला, बलवान्, बोलनेमें चतुर, ओष्ठ, दन्त कान, नाक मोटे, सब कार्योंमें उद्यमी, लिपि चित्रादि शिल्पकर्म जाननेवाला, गर्दन थोडी, कुबडा, कुरूप नख, हाथ बाहु मोटे, अति प्रगल्भ, धर्मज्ञ बन्धुवैरी और बलात्कारसे वश न होवे, केवल प्रीतिसे वश होजावे ॥ ९ ॥ (शार्दूलवि०)

मकरचंद्रका फल ।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान् धर्मध्वजोऽधः कृशः
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः ।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्त्वाधिकः काव्यकृ-
ल्लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः॥१०॥

मकर राशिवाला नित्य प्रीतिपूर्वक अपने स्री और पुत्रोंको प्यार करनेमें तत्पर, दम्भी, मिथ्या धर्म करनेवाला, कमरसे नीचे पतला, सुहावने

नेत्र, कृश कमर, कहा माननेवाला, सर्वजनप्रिय, आलसी, शीत न सह नेवाला, फिरनेवाला तत्पर, उदार चेष्टावाला या बलवान्, काव्य करनेवाला विद्वान्, लोभी, अगम्य और बूढी स्त्रीसे गमन करनेवाला, निर्लज्ज, निर्दयी होता है॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

कुंभलग्नका फल।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः
पृथुचरणोरुपृष्ठजघनास्यकटिर्जठरः ।
परवनितार्थपापनिरतः क्षयवृद्धियुतः
प्रियकुसुमानुलेपनसुहृद्घटजोऽध्वसहः ॥ ११ ॥

कुम्भ राशिवाला ऊंटके समान गला, सर्वांगमें प्रकट नसी, रूखे और बहुत रोम, ऊंचा शरीर, पैर, चूतड, जंघा, पीठ, घुटने, मुख, कमर, पेट ये सब मोटे, परस्त्री, परधन और पापकर्ममें तत्पर, क्षय वृद्धिसे युक्त पुष्प, चन्दन और मित्रोमें प्रिय करनेवाला होता है ॥ ११ ॥ (त्रोटक)

मीनराशिस्थ चंद्र फल।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः ।
अभिभवति सपत्नान्स्त्रीजितश्चारुदृष्टि-
र्द्युतिनिधिधनभोगी पण्डितश्चान्त्यराशौ ॥ १२ ॥

मीन राशिवाला जल रत्न (मोती आदिके क्रय विक्रय) से उत्पन्न धन और पराये कमाये धनोंका भोगनेवाला, स्त्री, विषय, वस्त्रादिमें अनुरक्त, सब अवयवोंसे परिपूर्ण और सुन्दर शरीर, ऊंची नाक, बडा शिर, शत्रुको जीतनेवाला, स्त्रीके वशवर्ती, सुहावने नेत्र, कान्तिमान्, विधि अर्थात् अकस्मात् खानसे मिला हुवा द्रव्य आदि भोगनेवाला, शास्त्रज्ञ पण्डित होता है ॥ १२ ॥ (मालिनी)

उपरोक्त स्वरूपोंका अपवाद ।

बलवति राशौ तदधिपतौ च स्वबलयुतः स्याद्यदि तुहिनांशुः ।
कथितफलानामविकलदाता शशिवदतोन्येप्यनुपरिचिन्त्याः ॥१३॥
इति बृहज्जातके राशिशीलाऽध्यायः सप्तदशः ॥ १७॥

पुरुषके जिस राशिमें जन्ममें चन्द्रमा है वह राशि वा उसका अधिपति बलवान् हो और चन्द्रमा बलवान् हो तो राश्युक्त फल परिपूर्ण हो इनमें दो बलवान् हों तो मध्यम फलवाला और एकही बलवान् हो तो हीन फल होगा, ऐसेही सूर्य भौमादिके फलोंमेंभी विचारना ॥१३॥ (कुसुमविचित्रा)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां राशिशीलाऽध्यायः सप्तदशः ॥ १७॥

ग्रहराशिशीलयोगाऽध्यायः १८.

मेष और वृषभराशिस्थ सूर्य फल

प्रथितश्चतुरोऽटनोऽल्पवित्तः क्रियगे त्वायुधभृद्वितुङ्गभागे ।
गवि वस्त्रसुगन्धपण्यजीवी वनिताद्विट् कुशलश्च गेयवाद्ये ॥१॥

जिसके जन्ममें सूर्य मेष राशिका हो तो वह विख्यात, चतुर, सर्वत्र फिरनेवाला, थोडा धनवान्, शस्त्रधारणसे आजीवन करनेवाला होवे। यह फल उच्चांशसे अलग है। उच्चांशकमें हो तो जो जो हीन अटनाल्प धनादि फल कहे हैं वे नहीं होंगे। वृषका सूर्य हो तो वस्त्र, सुगन्धि द्रव्य और पुण्य कर्मसे आजीवन हो स्त्रियोंका वैरी और गीत गाने बाजे बजानेमें चतुर होवे ॥ १ ॥ (औपच्छन्दसिक)

मिथुन, कर्क, सिंह, कन्यास्थ सूर्य फल ।

विद्याज्योतिषवित्तवान्मिथुनगे भानौ कुलीरे स्थिते
तीक्ष्णोऽस्वः परकार्यकृच्छ्रमपथक्लेशैश्च संयुज्यते ।
सिंहस्थे वनशैलगोकुलरतिर्वीर्यान्वितोऽज्ञः पुमान्
कन्यास्थे लिपिलेख्यकाव्यगणितज्ञानान्वितः स्त्रीवपुः ॥ २ ॥

मिथुनका सूर्य हो तो व्याकरणादि विद्या वा ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला, धनवान् होगा । कर्कका हो तीक्ष्णस्वभाव, निर्द्धन, परायेका कार्य करनेवाला और श्रम मार्गादि क्लेशों करके समस्त काल उसका व्यतीत होवै । सिंहका सूर्य हो तो वन, पर्वत, गोट इन स्थानोंमें प्रसन्न रहै, बलवान् और मूर्ख होवै । कन्याका सूर्य हो तो पुस्तकादि लिखने और चित्र, काव्य गणित ज्ञानसे युक्त रहै, स्त्रीकासा शरीर होवै ॥ २ ॥

तुला, वृश्चिक, धन और मकर सूर्य फल ।

जातस्तौलिनि शौण्डिकोऽध्वनिरतो हैरण्यको नीचकृत्
क्रूरः साहसिको विषार्जितधनः शस्त्रान्तगोऽलिस्थिते ।
सत्पूज्यो धनवान् धनुर्द्धरगते तीक्ष्णो भिषक्कारुको
नीचोऽज्ञः कुवणिङ्मृगेल्पधनवाँल्लुब्धोऽन्यभाग्ये रतः॥३॥

सूर्य तुलाका हो तो शौण्डिक (मद्य बनानेवाला) अर्थात् कलाल, मार्ग चलनेमें तत्पर,सुवर्णकार, अनुचित काम करनेवाला होवै । वृश्चिकका हो तो उग्रस्वभाव, साहसी, विषके कर्मसे धन कमानेवाला, कोई " वृथार्जितधनः " ऐसा पाठ कहते हैं कि, उसका कमाया धन व्यर्थ जावैं और शस्त्र विद्यामें निपुण । धनका सूर्य हो तो सज्जनोंका पूजक, योग्य, धनवान्, निरपेक्ष, वैद्यविद्या जाननेवाला, शिल्प कर्म जाननेवाला होवै । मकरका हो तो नीच (अपने कुलसे अयोग्य) कर्म करनेवाला, मूर्ख, निन्द्य व्यापार करनेवाला, अल्पधनी, अतिलोभी, पराये धन और पराये उपकारको भोगनेवाला होवै ॥ ३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

कुंभ और मीनराशिस्थ सूर्यफल ।

नीचो घटे तनयभाग्यपरिच्युतोऽस्व-
स्तोयोत्थपण्यविभवो वनिताहृतोऽन्त्ये ।
नक्षत्रमानवतनुः प्रतिमे विभागे
लक्ष्मादिशेत्तुहिनरश्मिदिनेशयुक्ते

सूर्य कुम्भका हो तो नीच कर्म करनेवाला, पुत्रोंसे और ऐश्वर्यसे रहित निर्द्धन होवे । सूर्य मीनका हो तो जलसे उत्पन्न मोती आदि रत्नोंके व्यापारसे ऐश्वर्य पावे, स्त्रियोंका पूजनीय होवे । सूर्य चन्द्रमा इकट्ठे एक राशिमें हों तो वह राशि कालात्माके जिस अंगमें है उस अंगमें तिल मसकादि चिह्न होगा । कालात्मा प्रथमाध्यायमें कहा है ॥४॥ (वसंततिलका)

मेष वृश्चिक वृषभ तुलागत मंगलका फल ।

नरपतिसत्कृतोऽटनश्चमूपवणिक्सधनः
क्षततनुश्चौरभूरिविषयांश्च कुजः स्वगृहे ।
युवतिजितान् सुहृत्सु विषमान् परदाररतान्
कुहकसुवेषभीरुपरुषान् सितभे जनयेत् ॥ ५ ॥

मंगल अपने घर १ । ८ का जिसका हो वह राजपूजित और फिरनेवाला, सेनापति, व्यापारी, धनवान् होवै । शरीरमें खोट हो, चोर हो, इन्द्रिय चञ्चल होवें अर्थात् विषयी होवे । जो मंगल शुक्रके २ । ७ घरमें हो तो स्त्रीके वशमें रहे, मित्रोंमें उलटा रहे अर्थात् क्रूरस्वभाव रक्खे और परस्त्री संग करनेवाला, इन्द्रजाली, भानमतीका खेल जाननेवाला, सुन्दर श्रृङ्गार बना रक्खे, डरनेवाला भी होवे, रूखा हो (स्नेह किसीपर न रक्खे) ॥ ५ ॥ (त्रोटक)

मिथुन कन्या और कर्कस्थ मंगल फल ।

बौधेऽसहस्तनयवान् विसुहृत्कृतज्ञो
गान्धर्वयुद्धकुशलः कृपणोऽभयोऽर्थी ।
चान्द्रेऽर्थवान् सलिलयानसमर्जितस्वः
प्राज्ञश्च भूमितनये विकलः खलश्च ६ ॥

मङ्गल बुधकी राशि ३ । ६ में हो तेजस्वी, पुत्रवान्, मित्ररहित, परोपकारी गायन विद्या तथा युद्धविद्या जाननेवाला और कृपण (मूँजी) निर्भय, मांगनेवाला होवे । कर्कका हो तो नाव, जहाज

आदिके कामसे धनवान् होवे । बुद्धिमान् और अङ्गहीन तथा दुर्ज्जन होवे ॥ ६ ॥ (वसंततिलका)

सिंह धनु मीन कुंभ मकरस्थ मंगल फल ।

निःस्वः क्लेशसहो वनान्तरचरः सिंहेऽल्पदारात्मजो
जैवे नैकरिपुर्नरेन्द्रसचिवः ख्यातोऽभयोऽल्पात्मजः ।
दुःखार्तो विधनोऽटनोऽनृतरतस्तीक्ष्णश्च कुम्भस्थिते
भौमे भूरिधनात्मजो मृगगते भूपोऽथवा तत्समः ॥ ७ ॥

मङ्गल सिंहका हो तो निर्द्धन, क्लेश सहनेवाला, वनमें फिरनेवाला हो, स्त्री पुत्र थोडे हों । धन और मीनका हो तो शत्रु बहुत हों, राजमन्त्री होवे विख्यात होवे, निर्भय होवे, सन्तान थोडी होवे । कुम्भका हो तो अनेक दुःखोंसे पीडित, निर्द्धन (दरिद्री) फिरनेवाला, झूठ बोलनेवाला, क्रूर होवे । मकरका हो तो धन और सन्तति बहुत हों, राजा अथवा राजाके तुल्य होवे ॥ ७ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

मेष वृश्चिक तुला वृषगत बुधका फल ।

द्यूतर्णपानरतनास्तिकचोरनिस्वाः
कुस्त्रीककूटकृदसत्यरताः कुजर्क्षे ।
आचार्यभूरिसुतदारधनार्ज्जनेष्टाः
शौक्रे वदान्यगुरुभक्तिरताश्च सौम्ये ॥ ८ ॥

जिसके जन्ममें बुध भौमराशि १ । ८ में हो तो द्यूत (जुआ) ऋणादि परधन लेनेमें, मद्यपानमें, नास्तिकतामें, शास्त्रविरुद्धतामें, चोरीमें तत्पर और दरिद्री होवे स्त्री उसकी निन्द्य होवे, झूठा घमंडी और अधर्मी होवे। शुक्रकी राशि २ । ७ में हो तो उपदेश (शिक्षा) करनेवाला आचार्य हो, सन्तान बहुत हों, स्त्रियाँ बहुत हों, धन जमा करनेमें तत्पर और उदार हो, माता पिता और गुरुकी भक्तिमें तत्पर हो ॥ ८ ॥ (वसंततिलका)

मिथुन कर्कगत बुधका फल ।

विकत्थनः शास्त्रकलाविदग्धः प्रियम्वदः सौख्यरतस्तृतीये ।
जलार्जितस्वः स्वजनस्य शत्रुः शशाङ्कजे शीतकरर्क्षयुक्ते ॥ ९ ॥

बुध मिथुन राशिका हो तो वाचाल (झूठा बोलनेवाला,) शास्त्र (विद्या और कला (गीत, बाजे, नाच खेल इतने कामों)को जाननेवाला, प्यारी वाणी बोलनेवाला, सुखी होवे । कर्कका बुध हो तो जल कर्मसे उत्पन्न धनसे धनवान् होवै, मित्र बन्धु जनोंका शत्रु होवे ॥ ९ ॥ (इन्द्रवज्रा)

सिंह कन्यागत बुधका फल ।

स्त्रीद्वेष्यो विधनसुखात्मजोऽटनोऽज्ञः
स्त्रीलोलः स्वपरिभवोऽर्कराशिगे ज्ञे ।
त्यागी ज्ञः प्रचुरगुणः सुखी क्षमावान्
युक्तिज्ञो विगतभयश्च षष्ठराशौ ॥ १० ॥

बुध सिंहका हो तो स्त्रियोंका वैरी और धन, सुख, पुत्र इनसे रहित होवे, फिरनेवाला, मूर्ख, स्त्रियोंकी बहुत अभिलाषा रखनेवाला और अपने जनोंसे पराभव पावे । कन्याका हो तो दाता, पण्डित, गुणवान् सौख्यावन् क्षमावान् (सहारनेवाला), प्रयोग युक्ति जाननेवाला निर्भय होवे ॥ १० ॥ (प्रहर्षिणी)

मकर, कुंभ, धनु मीनराशिस्थ बुधफल ।

परकर्मकृदस्वशिल्पबुद्धिर्ऋणवान् विष्टिकरो बुधेऽर्कजर्क्षे ।
नृपसत्कृतपण्डिताप्तवाक्यो नवमेऽन्त्ये जितसेवकोऽन्त्यशिल्पः ११

बुध शनिकी राशि १० । ११ में हो तो पराया काम करनेवाला, दरिद्री शिल्प कर्म करनेवाला, ऋणी, परायी आज्ञा पर रहनेवाला होवे । धनका होवे तो राजपूजित वा राजवल्लभ और विद्वान्, व्यवहार जाननेवाला अनुकूल अर्थात् योग्य बात बोलनेवाला होवै । मीनका हो तो सेवक अर्थात् परायी सेवामें तत्पर वा उसके सेवक जीते हुये रहैं पराया अभिप्राय जाननेवाला नीच शिल्प करनेवाला होवे ॥ ११ ॥ (औपच्छन्दसिक)

मेष वृश्चिक वृष तुला मिथुन कन्यास्थ गुरुफल ।

सेनानीर्बहुवित्तदारतनयो दाता सुभृत्यः क्षमी
तेजोदारगुणान्वितः सुरगुरौ ख्यातः पुमान् कौजभे ।
कल्पाङ्गः ससुखार्थमित्रतनयस्त्यागी प्रियः शौक्रभे
बौधे भूरिपरिच्छदात्मजसुहृत्साचिव्ययुक्तः सुखी ॥ १२ ॥

बृहस्पति भौम राशि १ । ८ में हो तो सेनापति और धनाढ्य, बहु स्त्री, बहुत पुत्र होवे, दाता होवे, भृत्य अच्छे होवे, क्षमावान् होवे, तेजस्वी, स्त्रीसे सुखवान्, मख्यात कीर्तिवाला होवे । शुक्र राशि २ । ७ में हो तो स्वस्थ देह, सुखी, धन व मित्रोंसे युक्त, सत्पुत्रवाला, उदार होवे, सबका प्यारा होवे । बुधकी राशि ३ । ६ में हो तो घर परिवार बहुत होवे, पुत्र और मित्र बहुत होवें मन्त्री होवे और सुखी रहै ॥ १२ ॥

कर्क सिंह धनुर्मीनादिस्थ गुरुफल ।

चान्द्रे रत्नसुतस्वदारविभवप्रज्ञासुखैरन्वितः
सिंहे स्याद्बलनायकः सुरगुरौ प्रोक्तश्च यच्चन्द्रभे ।
स्वर्क्षे माण्डलिको नरेन्द्रसचिवः सेनापतिर्वा धनी
कुम्भे कर्कटवत्फलानि मकरे नीचोऽल्पवित्तोऽसुखी ॥ १३॥

चन्द्र राशि (४) का बृहस्पति हो तो मणि, पुत्र, धन, स्त्री, ऐश्वर्य, बुद्धि, सुख इनसे युक्त रहै । सिंहका हो तो सेना समूहोंमें श्रेष्ठ रहै और कर्कमें कहा हुआ फलभी कहना । स्वराशिका ९ । १२ में हो तो माण्डलिक (कुछ गांवका राजा) वा प्रधान अथवा सेनापति वा धनवान् होवे । कुम्भका हो तो कर्कके बराबर फल जानना । मकरका हो तो नीचकर्म करनेवाला, अल्पवित्तवान्, दुःखित होवे ॥ १३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

मेष वृश्चिक वृष तुलास्थ शुक्र फल ।

परयुवतिरतस्तदर्थवादैर्हृतविभवः कुलपांसनः कुजर्क्षे ।
स्वबलमतिधनो नरेन्द्रपूज्यः स्वजनविभुः प्रथितोऽभयः सिते स्वे १४

शुक्र मंगलकी राशि १ । ८ का हो तो परस्त्रियोंमें आसक्त रहे और परस्त्रियोंके अपराधानुवचनोंसे धनहरण करावे, कुल पर कलंक लगावे । अपनी राशि २ । ७ का हो तो अपने बल व बुद्धिसे धन कमावे, राजपूज्य होवे, अपने बन्धु जनोंमें प्रधान होवे, विख्यात व निर्भय होवे ॥ १४ ॥ (पुष्पिताग्रा)

मिथुन कन्या मकर कुंभस्थ शुक्र फल ।

नृपकृत्यकरोऽर्थवान्कलाविन्मिथुने षष्ठगतेऽतिनीचकर्मा ।
रविजर्क्षगतेऽमरारिपूज्ये सुभगः स्त्रीविजितो रतः कुनार्याम् १५॥

शुक्र मिथुनराशिमें हो तो राजकार्य करनेवाला, धनवान् कला व गीत बाजे यन्त्रादि जाननेवाला होवे । कन्याराशिमें हो तो अति नीचकर्म करनेवाला होवे । शनि राशि १० । ११ में हो तो सब लोगोंका प्यारा, स्त्रीके वश रहनेवाला वा विरूप स्त्रीमें आसक्त रहे ॥१५॥ (औपच्छन्दसिक)

कर्क सिंह धनमीनगत शुक्र फल ।

द्विभार्योऽर्थी भीरुः प्रबलमदशोकश्च शशिभे
हरौ योषाप्तार्थः प्रबलयुवतिर्मन्दतनयः ।
गुणैः पूज्यः सस्वस्तुरगसहिते दानवगुरौ
झषे विद्वानाढ्यो नृपजनितपूजोऽतिसुभगः ॥ १६ ॥

शुक्र कर्कका हो तो दो स्त्री होवें मांगनेवाला, भययुक्त, उन्मद, अति दुःखित होवे । सिंहका हो तो स्त्रीका कमाया धन पावे और स्त्री उसकी प्रधान रहे सन्तान थोडी होवे । धनका हो तो बहुतोंका पूज्य, धनवान् होवे । मीनका हो तो विद्वान् और संपन्न, राजपूज्य सबका प्यारा होवे ॥ १६ ॥ (शिखरिणी)

मेष वृश्चिक मिथुन कन्यगत शनिक फल ।

मूर्खोऽटनः कपटवान् विसुहृद्यमेऽजे
कीटे तु बन्धवधभाक् चपलोऽघृणश्च ।

निर्ह्रीसुखार्थतनयः स्खलितश्च लेख्ये
रक्षापतिर्भवति मुख्यपतिश्च बौधे ॥ १७ ॥

शनि मेषका हो तो मूर्ख और फिरनेवाला, कपटी, मित्ररहित होवे। वृश्चिकका हो तो मारने बांधनेवाला, हत्यारा, जल्लाद होवे, चपल होवे, निर्दयी होवे। मिथुन वा कन्याका हो तो निर्लज्ज और दुःखित, अपुत्र, लिखनेमें भूल जानेवाला, रक्षास्थान (कैद) आदिका पति या श्रेष्ठ (पति) होवे ॥ १७ (वसंततिलका)

वृष तुला कर्क सिंहस्थ शनिका फल।

वर्ज्यस्त्रीष्टो न बहुविभवो भूरिभार्यो वृषस्थे
ख्यातः स्वोच्चो गणपुरबलग्रामपूज्योऽर्थवांश्च।
कर्किण्यस्वो विकलदशनो मातृहीनोऽसुतोऽज्ञः
सिंहेऽनार्यो विसुखतनयो विष्टिकृत्सूर्यपुत्रे ॥ १८ ॥

शनि वृषका हो तो अगम्यास्त्रियोंका गमन करनेवाला, ऐश्वर्यरहित, बहुत स्त्रियोंवाला होवे। तुलाका हो तो प्रख्यातकीर्ति और समूह-ग्राम-सेना आदिमें पूज्य और धनवान् होवे। कर्कका हो तो दरिद्री, दन्तरोगवाला, मातृरहित, पुत्ररहित, मूर्ख होवे। सिंहका हो तो मूर्ख, दुःखित, पुत्ररहित, और भार ढोनेवाला ॥ १८ ॥ (मंदाक्रान्ता)

धन मीन कुंभस्थ शनिका फल।

स्वन्तः प्रत्ययितो नरेन्द्रभवने सत्पुत्रजायाधनो
जीवक्षेत्रगतेऽर्कजे पुरबलग्रामाग्रनेताऽथवा।
अन्यस्त्रीधनसंवृतः पुरबलग्रामाग्रणीर्मन्ददृक्
स्वक्षेत्रे मलिनः स्थिरार्थविभवो भोक्ता च जातः पुमान्॥१९॥

गुरु क्षेत्र ९। १२ का शनि हो तो (स्वन्तः) अन्त्य अवस्थामें सुख पावे। अथवा स्वन्तः—मृत्यु उसकी शुभ कर्मसे होवे। दुर्मरण अपघात अल्पमृत्यु, जलप्रवाह, तुंगपात, अग्नि, शस्त्रादिसे न होगी, राजद्वारमें उसकी प्रतीति होवे और उसके स्त्री सुखी, पुत्र सत्पुत्र, धन सद्धन होवे

और सेना वा ग्रामका अधिनेता (श्रेष्ठ) होवे। जो शनि स्वक्षेत्र १० । ११ का हो तो परायी स्त्री व पराये धनसे युक्त रहे । ग्राम व सेनामें अग्रणी (मुख्य) होवे, नेत्र मन्द होवें, सर्वदा मैला शरीर रक्खे, धन व ऐश्वर्य स्थिर रहे, भोगवान् होवे ॥ १९ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

ग्रहोंके बलाबलके अनुसार फल ।

शिशिरकरसमागमेक्षणानां सदृशफलं प्रवदन्ति लग्नजातम् ।
फलमधिकमिदं यदत्र भावाद्भवनभनाथगुणैर्विचिन्तनीयम् ॥ २० ॥

इति श्रीबृहज्जातके ग्रहराशिशीलयोगा-
ध्यायोऽष्टादशः ॥ १८ ॥

जो चन्द्र राशिके फल कहें वही लग्नराशिके भी कहते हैं और दृष्टि-फल भी चन्द्रमाके बराबर लग्नके कहते हैं । भावफल व भावेश फल बला-नुसार होता है । जैसे लग्न राशि बलवान् हो लग्नेश भी बलवान् हो तो शरीर पुष्टि अधिक होगी । एक बलवान् एक लघु बली होनेसे समान होगी, एक बली एक हीनबली होनेसे थोडी होगी । दोनोंके निर्बलतामें शरीर पुष्टि न होगी । इसी प्रकार सर्वत्र भावेशोंका फल विचारना ॥ २० ॥ (पुष्पिताग्रा)

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
ग्रहराशिशीलयोगाऽध्यायः

दृष्टिफलाऽध्यायः १९.

मेषसे कर्कतक चन्द्रमापर ग्रह दृष्टिके फल ।

चन्द्रे भूपबुधौ नृपोपमगुणी स्तेनोऽधनश्चाजगे
निस्वः स्तेननृमान्यभूपधनिनः प्रेष्यःकुजाद्यैर्गवि ।
नृस्येऽयोव्यवहारिपार्थिवबुधाभीरतन्तुवायोऽधनी
स्वर्क्षे योद्धकविज्ञभूमिपतयोऽयोजीविदृग्रोगिणौ ॥ १ ॥

मेषके चन्द्मा पर मङ्गलकी दृष्टि हो तो कुलानुमान राजा होवे, बुधकी दृष्टिसे पंडित, बृहस्पतिकी दृष्टिसे राजाके तुल्य शुक्रकी दृष्टिसे गुणवान्,

शनिकी दृष्टिसे चोर, सूर्यकी दृष्टिसे निर्द्धन (दरिद्री) होता है। ऐसेही मेष लग्नके दृष्टिसे जानना। वृषके चन्द्रमा पर मङ्गलकी दृष्टिसे दरिद्री, बुधकी दृष्टिसे चोर, बृहस्पतिकी दृष्टिसे राजमान्य, शुक्रकी दृष्टिसे राजा, शनि-की दृष्टिसे धनवान्, सूर्यदृष्टि दास (परकर्म करनेवाला) होता है। ऐसेही वृषलग्नमें भी दृष्टिफल जानना। मिथुनके चन्द्रमा पर वा मिथुन लग्न पर भौम दृष्टिसे लोहा शस्त्रादिक व्यवहार करनेवाला, बुधदृष्टिसे राजा, गुरुदृष्टिसे पण्डित, शुक्रदृष्टिसे निर्भय, शनिदृष्टिसे तन्तुवाय (सूत्रादि बीननेवाला), सूर्य दृष्टिसे दरिद्री। कर्कके चन्द्रमा पर और कर्क लग्नपर भौम दृष्टि हो तो युद्ध जाननेवाला, बुधदृष्टिसे कविता करनेवाला, गुरुदृष्टिसे पण्डित, शुक्र दृष्टिसे राजा, शनि दृष्टिसे शस्त्रव्यापारी, सूर्यसे नेत्ररोगी होवे ॥ १ ॥

सिंह कन्या तुला वृश्चिकस्थ चन्द्रका फल।

ज्योतिर्ज्ञाढ्यनरेन्द्रनापितनृपक्ष्मेशा बुधाद्यैर्हरौ
तद्वद्भूपचमूपनैपुणयुताः षष्ठेऽशुभे स्त्र्याश्रयः ।
जूके भूपसुवर्णकारवणिजः शेषेक्षिते नैकृती
कीटे युग्मपिता नतश्च रजको व्यङ्गोऽधनो भूपतिः ॥ २ ॥

सिंहके चन्द्रमापर और सिंहलग्नपर बुधदृष्टिसे ज्योतिषशास्त्रका जानने वाला बृहस्पतिसे धनवान्, शुक्रसे राजा, शनिसे नापित अर्थात् हजाम, सूर्यदृष्टिसे राजा, मङ्गलदृष्टिसे राजा, होवे। कन्याके चन्द्रमा पर और कन्यालग्न पर बुधदृष्टिसे राजा, बृहस्पतिसे सेनापति, शुक्रसे निपुण अर्थात् सर्वकार्यज्ञ, अशुभ शनि सूर्य मङ्गलकी दृष्टिसे स्त्रीके आश्रयसे जीवन करे। तुलाके चन्द्रमा और तुला पर बुध दृष्टिसे राजा बृहस्पतिसे सुवर्णकार, शुक्रसे बनियां व्यापारी, सूर्य शनि भौमदृष्टिसे जीवघाती होवे। वृश्चिकके चन्द्रमा और वृश्चिकलग्न पर बुधदृष्टिसे (युग्मपिता) दो बेटा और पिता और कोई ऐसा भी अर्थ करते हैं कि, उसके दो पिता अर्थात् एकसे जन्म

दूसरेका धर्मपुत्र इत्यादि, बृहस्पति दृष्टिसे नम्र, शुक्रदृष्टिसे रजक (धोबी शनि दृष्टिसे अङ्गहीन, सूर्यदृष्टिसे दरिद्री, भौमदृष्टिसे राजा होवे ॥ २ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

धन मकर कुंभ मीनस्थ चन्द्रमाका फल ।

ज्ञात्युर्वीशजनाश्रयश्च तुरगे पापैः सदम्भः शठ-
श्चात्युर्वीशनरेन्द्रपण्डितधनी द्रव्योनभूपो मृगे ।
भूपो भूपसमोऽन्यदारनिरतः शेषैश्च कुम्भस्थिते
हास्यज्ञो नृपतिर्बुधश्च झषगे पापश्च पापेक्षिते ॥ ३ ॥

धनके चन्द्र और धनलग्न पर बुधकी दृष्टि हो तो अपनी जातिमें श्रेष्ठ स्वामी रहै, गुरुदृष्टिसे राजा, शुक्रदृष्टिसे बहुत जनोंका आश्रय होवे, शनि सूर्य मङ्गलकी दृष्टिसे दम्भी, झूंठा पाखण्ड धर्मशाला और परायेके कार्यसे विमुख होवे । मकरके चन्द्रमा मकर लग्न पर बुध दृष्टिसे राजाओंका राजा, गुरुदृष्टिसे राजा, शुक्रदृष्टिसे पण्डित शनिदृष्टिसे धनवान्, सूर्यदृष्टिसे दरिद्री, भौमदृष्टिसे राजा होवे । कुम्भके चन्द्रमा व लग्न पर बुधदृष्टिसे राजा, गुरु दृष्टिसे राजतुल्य, शुक्रदृष्टिसे परायी स्त्रीमें तत्पर, श० सू० मं० की दृष्टिसे भी परस्त्रीगामी होवे । ऐसे कुम्भराशि कुम्भलग्नमें फल कहे हैं । मीनका चन्द्रमा वा मीनलग्न पर बुधदृष्टिसे मसखरा (ठट्ठाखोर), गुरुदृष्टिसे राजा, शुक्रदृष्टिसे पण्डित, श० सू० भौ० दृष्टिसे पापी होवे ॥ ३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

होरा द्रेष्काणव्यय चन्द्रका फल ।

होरेशर्क्षदलाश्रितः शुभकरो दृष्टः शशी तद्गत-
त्र्यंशे तत्पतिभिस्सुहृद्भवनगैर्वा वीक्षितः शस्यते ।
यत्प्रोक्तं प्रतिराशिवीक्षणफलं तद्द्वादशांशे स्मृत
सूर्याद्यैरवलोकितेऽपि शशिनि ज्ञेयं नवांशेष्वतः ॥ ४ ॥

चन्द्रमा जिस राशि जिस होरामें बैठा है उसको उसी होराचक्र स्थित ग्रह देखे तो जन्ममें शुभफल देनेवाला होगा । जैसे चन्द्रमा सूर्यहोरामें हो

और सूर्यहोरास्थित ग्रह देखे वा चन्द्रमा चन्द्रहोरामें हो और चन्द्रहोरा स्थित ग्रह उसे देखे तो शुभ होगा, इसी प्रकार लग्नमें भी होरेशफल जानना । ऐसे ही द्रेष्काणमें भी जानना. जिस द्रेष्काणमें चन्द्रमा हो उसी द्रेष्काणराशिके स्वामीसे चन्द्रमा देखा जाय तो शुभफल देगा । ऐसेही नवांश, द्वादशांश त्रिंशांशकोंके भी फल जानने और चन्द्रमाको स्वगृहगत वा मित्रराशिके ग्रह देखे तो शुभफल देगा । शत्रुक्षेत्रस्थ ग्रहदृष्टिसे अशुभ फल करेगा ऐसेही लग्नमें भी जानना । द्वादशांश फलके वास्ते जो मेषादि प्रतिराशिगत चन्द्रमा पर दृष्टिफल कहे गये हैं वही कहने चाहिये। इसमें भी कर्कद्वादशांश विना चन्द्रदृष्टि अशोभन कहते हैं । इससे चन्द्रमा-पर सूर्यादिकोंकी दृष्टिका फल नवांशोंमें जानना ॥ ४ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

मेष वृश्चिक वृष तुला नवांश चंद्रफल ।

आरक्षिको वधरुचिः कुशलो नियुद्धे
भूपोऽर्थवान् कलहकृत्क्षितिजांशसंस्थे ।
मूर्खोऽन्यदारनिरतः सुकविः सितांशे
सत्काव्यकृत्सुखपरोऽन्यकलत्रगश्च ॥ ५ ॥

चन्द्रमा मङ्गलके नवांश १ । ८ में हो और उस पर सूर्यदृष्टि हो तो नगरकी रक्षा करनेवाला अर्थात् कोतवाल होवे, मङ्गलकी दृष्टिसे प्राण-घाती, बुधकी दृष्टिसे मल्लयुद्ध जाननेवाला, गुरुदृष्टिसे राजा, शुक्रदृष्टिसे धनवान्; शनिदृष्टिसे कलह करनेवाला होवे । चन्द्रमा शुक्र नवांश २ । ७में सूर्यदृष्टिसे मूर्ख, भौमदृष्टिसे परस्त्रीगमन करनेवाला, बुधदृष्टिसे काव्य जानने-वाला, गुरुदृष्टिसे सुन्दर काव्य करनेवाला, शुक्रदृष्टिसे सुखमें आसक्त, शनि-दृष्टिसे परस्त्रीगमन करनेवाला होवै ॥ ५ ॥ (वसन्ततिलका)

मिथुन कन्या कर्क नवांशस्थ चंद्रफल ।

बौधे हि रङ्गचरचौरकवीन्द्रमन्त्री
गेयज्ञशिल्पनिपुणः शशिनि स्थितेंऽशे ।

स्वांशेऽल्पगात्रधनलुब्धतपस्विमुख्यः
स्त्रीपोष्यकृत्यनिरतश्च निरीक्ष्यमाणे ॥ ६ ॥

चन्द्रमा बुध नवांश ३ । ६ में सूर्यदृष्ट हो तो मल्ल, भौमसे चोर, बुधसे कविश्रेष्ठ, गुरुसे मन्त्री, शुक्रसे गान जाननेवाला, शनिसे शिल्पकर्म जाननेवाला होवै। चन्द्रमा अपने नवांश ४ में सूर्यदृष्ट हो तो शरीर कृश, मङ्गलदृष्टिसे धनलोभी अर्थात् कृपण, बुधसे तपस्वी, बृहस्पतिसे मुख्य प्रधान, शुक्र स्त्रियोंसे पालन पावै, शनिदृष्टिसे कार्यासक्त होवै ॥ ६ ॥ (वसन्त०)

सिंह धनु मीन नवांशस्थ चंद्रफल ।

सक्रोधो नरपतिसंमतो निधीशः
सिंहांशे प्रभुरसुतोऽतिहिंस्रकर्मा ।
जैवांशे प्रथितबलो रणोपदेष्टा
हास्यज्ञः सचिवविकामवृद्धशीलः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा सिंहांशकमें सूर्यदृष्ट हो तो क्रोधी भौमसे राजवल्लभ, बुधसे निधियोंका मालिक, गुरुसे प्रभु अर्थात् जिसकी आज्ञा सब मानें, शुक्रसे पुत्ररहित, शनिसे क्रूर कर्म करनेवाला होवे। चन्द्रमा बृहस्पतिके नवांश ९ । १२ में सूर्यदृष्ट हो तो प्रख्यात बलवाला; भौमसे संग्रामविधि जाननेवाला, बुधसे हास्यज्ञ (खुशमशखरा), गुरुदृष्टिसे मन्त्री, शुक्रदृष्टिसे नपुंसक, शनिदृष्टिसे धर्ममति होवै ॥ ७ ॥ (प्रहर्षिणी)

मकर कुंभ नवांशस्थ चंद्रफल ।

अल्पापत्यो दुःखितः सत्यपि स्वे
मानासक्तः कर्मणि स्वेऽनुरक्तः ।
दुष्टस्त्रीष्टः कृपणश्चार्किभागे
चन्द्रे भानौ तद्वदिन्द्वादिदृष्टे ॥ ८ ॥

चन्द्रमा शनिके नवांश १० । ११ में सूर्यदृष्ट हो तो सन्तान थोडी होवै। भौमसे धनद्रव्यकी प्राप्तिमें भी दुःख सही पावै। बुधसे गर्वित, गुरुसे

अपने कुलयोग्य कर्मोंमें आसक्त, शुक्रसे दुष्टस्त्रियोंका प्यारा, शनिसे कृपण (मूजी) हो। इसी प्रकार तत्काल नवांशक वशसे ग्रहदृष्टिका लग्नमें भी कहना। परन्तु कर्क नवांशक विना चन्द्रदृष्टि अशुभ होती है, यह सर्वत्र जानना। ऐसे ही सूर्यके फल चन्द्रमाके उक्त तुल्य कहना। यहां जो चन्द्रमा पर सूर्यदृष्टिका फल होगया है वह सूर्य पर चन्द्रदृष्टिका जानना वही कहना॥८॥ (शालिनी)

नवांश दृष्टिफलका विशेष।

वर्गोत्तमस्वपरगेषु शुभं यदुक्तं
तत्पुष्टमध्यलघुताशुभमुत्क्रमेण।
वीर्यान्वितांशकपतिर्निरुणद्धि पूर्वं
राशीक्षणस्य फलमंशफलं ददाति॥९॥

इति श्रीबृहज्जातके दृष्टिफलाऽध्यायः॥१९॥

नवांशक दृष्टिफल शुभाशुभ दो प्रकार कहा गया है-जैसे आरक्षिक और वधरुचि, इसमें विचारना चाहिये कि, वर्गोत्तमांशके चन्द्रमामें जो ग्रहदृष्टिफल शुभ कहा है वह अति शुभ होगा, अपने अंशकस्थ चन्द्रमाका जो शुभ फल है वह मध्यम होगा, परांशकके चन्द्रमामें जो शुभ फल कहा है वह थोडा होगा। अशुभ फलके लिये विपरीत जानना जैसे परनवांशकस्थ चन्द्रमामें दृष्टिफल जो अशुभ कहा है वह अत्यन्त बुरा होगा। स्वनवांशकमें मध्यम. वर्गोत्तमांशकमें थोडा होगा। इसी प्रकार लग्न और सूर्यका भी दृष्टिफल जानना। इसमेंभी व्यवस्था है कि, लग्न चन्द्र सूर्यमें जो अधिक बलवान् होगा वह औरके फलको दबायके अपने उक्त फलको अवश्य देगा। जैसे जिस नवांशकमें चन्द्रमा स्थित है उसका स्वामी बलवान् हो तो चन्द्रनवांशक दृष्टिफल प्रबल होगा और पूर्वोक्तराशि दृष्टिफल, होरा-द्रेष्काणफल, द्वादशांशफलको दबायके अंश दृष्टिही फल देगी, एवं सर्वत्र जानना॥९॥ (वन्ततिलका)

इति श्रीमहीधर०बृहज्जातकभाषाटीकायां दृष्टिफलाध्यायः॥१९॥

भावाऽध्यायः २०

लग्नस्थ तथा दूसरे स्थानस्थ सूर्य फल।

शूरः स्तब्धो विकलनयनो निर्घृणोऽर्के तनुस्थे
मेषे सस्वस्तिमिरनयनः सिंहसंस्थे निशान्धः।
जूकेऽन्धोऽस्वः शशिगृहगते बुद्बुदाक्षः पतङ्गे
भूरिद्रव्यो नृपहृतधनो वक्ररोगी द्वितीये ॥ १ ॥

अब भावध्यायमें प्रथम सूर्यका भाव फल कहते हैं—सूर्य लग्नमें हों तो शूर, विलम्बसे कार्य करनेवाला, दृष्टिहीन, निर्दयी होवै। इतना फल सब राशियोंमें सामान्य है, जो लग्नमें सूर्य मेषका हो तो धनवान् और नेत्ररोगी। सिंहका सूर्य लग्नमें हो तो रात्र्यन्धन होवै। तुलाका सूर्य लग्नमें हो तो अन्धा होवै और दारिद्रीभी हो, कर्कका सूर्य लग्नमें हो तो बुद्बुदाक्ष (टेढी) तिर्छी दृष्टिवाला अथवा नेत्रमें फुल्ली होवै। लग्नसे दूसरा सूर्य हो तो धनवान् होवै, परंतु राजा उसका धन हरै, मुखमें रोग रहै ॥ १ ॥ (मन्दाक्रन्ता)

३ से ६ स्थानतक सूर्यफल।

मतिविक्रमवांस्तृतीयगेऽर्के विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे।
असुतो धनवर्जितस्त्रिकोणे बलवाञ्छत्रुजितश्च शत्रुयाते॥२॥

सूर्य तीसरा हो तो बुद्धिमान्, पराक्रमी होवे। चौथा हो तो सुखरहित और मनमें पीडित रहै। पञ्चम हो तो धन और पुत्ररहित रहै। सूर्य छठा हो तो बलवान् और शत्रुओंसे जीता हुआ रहै ॥ २ ॥ (औपच्छन्दसिक)

७ से १२ तक सूर्य फल।

स्त्रीभिर्गतः परिभवं मदने पतङ्गे
स्वल्पात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च।
धर्मे सुतार्थसुतभाक्सुखशौर्यभाक्खे
लाभे प्रभूतधनवान्पतितस्तु रिःफे ॥ ३ ॥

सूर्य सातवां हो तो स्त्रियोंसे हारा हुआ रहै। आठवां हो तो सन्तान थोडी और नेत्र चञ्चल होवें। नवम हो तो पुत्र व धनका सुख भोगनेवाला होवे। दशम हो तो सुखी और धनवान् होवे। ग्यारहवे हो तो धनवान् होवें। बारहवां हो तो अपने कर्मसे भ्रष्ट होवे ॥ ३ ॥ (वसन्ततिलका)

१ से ६ स्थानतक चन्द्रका फल।

मूकोन्मत्तजडान्धहीनवधिरप्रेष्याः शशाङ्कोदये
स्वर्क्षाजोच्चगते धनी बहुसुतः स्वः कुटुम्बी धने।
हिंस्रो भ्रातृगते सुखे सतनये तत्प्रोक्तभावान्वितो
नैकारिर्मृदुकायवह्निमदनस्तीक्ष्णोऽलसश्चारिगे ॥ ४ ॥

चन्द्रमा लग्नका मेष वृष कर्क राशियोंसे अन्य राशियोंमें हो तो गूंगा अथवा (उन्मत्त) बावला वा मूर्ख, अन्धा, नीचकर्म करनेवाला, बधिर वा पराया दास होवे। जो चन्द्रमा लग्नमें कर्कका हो तो धनवान् हो, मेषका हो तो बहुत बेटे हों। वृषका हो तो धनवान् होवै। लग्नसे दूसरा चन्द्रमा हो तो बडा कुटुम्बवाला होवे, तीसरा हो तो प्राणघाती होवे चौथा हो तो सुखी, पांचवां हो तो पुत्रवान् हो, छठा हो तो बहुत शत्रु होवें और शरीर सुकुमार, मन्दाग्नि, मन्दकाम, उग्रस्वभाव, आलसी, कार्य करनेमें अवज्ञा करनेवाला और निरुद्यमी होवे ॥ ४ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

७ से १२ तक चंद्रका फल।

ईर्ष्युस्तीव्रमदो मदे बहुमतिर्व्याध्यर्दितश्चाष्टमे
सौभाग्यात्मजमित्रबन्धुधनभाग्धर्मस्थिते शीतगौ।
निष्पत्तिं समुपैति धर्मधनधीशौर्यैर्युतः कर्मगे
ख्यातो भावगुणान्वितो भवगते क्षुद्रोऽङ्गहीनो व्यये ॥ ५ ॥

चन्द्रमा सप्तम हो तो ईर्ष्यावान् (दूसरेकी भलाईको बुराई माननेवाला), अतिकामी होवे, अष्टम हो तो बुद्धिमान्, चपलबुद्धिवाला और रोगपीडित रहै। नवम हो तो सब जनोंका प्यारा और पुत्रवान्, मित्रवान्, वा बंधुयुक्त, धनयुक्त रहै। दशम हो तो समस्त कार्यकी निष्पत्ति (कृत-

कार्यता) पावै और धर्म, धन, बुद्धि, बल इनसे युक्त रहै । ग्यारहवां हो तो सर्वत्र विख्यात और नित्य लाभयुक्त रहै । बारहवेंमें क्षुद्र और अङ्गहीन होवे ॥ ५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

लग्नादिस्थ मंगल तथा बुधके फल ।

लग्ने कुजे क्षततनुर्धनगे कदन्नो
धर्मेऽघवान् दिनकरप्रतिमोऽन्यसंस्थः ।
विद्वान् धनी प्रखलपण्डितमन्त्र्यशत्रु-
धर्मज्ञविश्रुतगुणः परतोऽर्कवज्ज्ञे ॥ ६ ॥

मंगल लग्नमें हो तो शरीरमें प्रहारादिसे घाव लगा हो । दूसरा हो तो दुष्ट अन्न (बाजरा, बगड, मडुवा आदि) खानेवाला होवे, नवम हो तो पापकर्ममें तत्पर हो और शेष स्थानोंमें सूर्यका जैसा फल जानना । जैसे तीसरा हो तो बुद्धि व पराक्रमवाला हो । चौथेमें सुखरहित, पञ्चममें पुत्र-रहित धनरहित, छठेमें बलवान्, सप्तममें स्त्रीका जीता हुआ, आठवेंमें थोडी सन्तान, नववेंमें पुत्र व धनका सुख, दशममें सुख व बलसहित, ग्यारहवेंमें धनवान्, बारहवेंमें पतित होवे ॥ अब बुधके भावफल कहते हैं–बुध लग्नका हो तो विद्वान् (पण्डित) होवे । दूसरा हो तो धनवान्, तीसरा हो तो दुर्जन, चौथा हो तो पण्डित, पञ्चम हो तो मन्त्री, छठा हो तो शत्रुरहित, सातवां हो तो धर्मज्ञ, आठवां हो तो ख्यात, गुणवान्, अन्य भावोंमें सूर्यके तुल्य फल जानना । जैसे बुध नवम हो तो पुत्र, धन, सुख इससे युक्त रहै । दशममें सुख और बलयुक्त रहै । ग्यारहवेंमें धनवान्, बारहवेंमें पतित होवे ॥ ६ ॥ (वसन्ततिलका)

लग्नादिस्थ बृहस्पति फल ।

विद्वान् सुवाक्यः कृपणः सुखी च धीमानशत्रुः पितृतोऽधिकश्च ।
नीचस्तपस्वी सधनः सलाभः खलश्च जीवे क्रमशो विलग्नात्॥ ७ ॥

बृहस्पति लग्नका हो तो पण्डित होवे, दूसरेमें सुन्दरवाणी, तीसरेमें कृपण अर्थात् मूर्ख, चाथेमें सुखी, पाँचवेंमें बुद्धिमान्, छठेमें शत्रुरहित

सातवेंमें अपने पितासे अधिक, आठवेंमें नीचकर्म करनेवाला, नवममें तपस्वी, दशममें धनवान् ग्यारहवेंमें लाभवान्, बारहवेंमें खल दुर्ज्जन होवे ॥ ७ ॥ (इन्द्रवज्रा)

लग्नादिस्थ शुक्रका फल।

स्मरनिपुणः सुखितश्च विलग्ने प्रियकलहोऽस्तगते सुरतेप्सुः।
तनयगते सुखितो भृगुपुत्रे गुरुवदतोऽन्यगृहे सधनोन्त्ये ॥ ८ ॥

शुक्र लग्नका हो तो कामदेवकी कलामें निपुण और सुखी होवे, सप्तम स्थानमें हो तो कलहको प्यारा माननेवाला और स्त्रीसङ्गकी अभिलाषा रखनेवाला होवे, पञ्चमस्थानमें सुखी फल है,अन्यभावोंमें बृहस्पतिके तुल्य फल जानना। जैसे दूसरेमें सुन्दर वाणी, तीसरेमें कृपण, चौथेमें सुखी पंचममें बुद्धिमान्, छठेमें शत्रुरहित, सातवेंमें अपने पितासे अधिक, आठवेंमें नीच, नवममें तपस्वी, दशममें धनवान्, ग्यारहवेंमें लाभवान्, बारहवेंमें दुर्जन, इसमें भी यह विशेष है कि, अपने उच्च मीनका शुक्र जिस किसी भावमें हो तो धनवान् ही करेगा ॥ ८ ॥ (तामरस)

लग्नादिस्थ शनिका फल।

अदृष्टार्थो रोगी मदनवशगोऽत्यन्तमलिनः
शिशुत्वे पीडार्त्तः सवितृसुतलग्नेत्यलसवाक्।
गुरुस्वर्क्षोच्चस्थे नृपतिसदृशो ग्रामपुरपः
सुविद्वांश्चार्वङ्गो दिनकरसमोऽन्यत्र कथितः ॥ ९ ॥

शनि तुला, धन, मकर कुम्भ, मीनसे और राशियोंका लग्नमें हो तो नित्य दरिद्री, नित्य रोगी, अतिकामी, अतिमलिन, बाल्यावस्थामें पीडित, आलसी वाणी होय। जो लग्नमें ७।९।१०।११।१२।राशिका हो तो राजतुल्य होवे और ग्राम नगरका स्वामी होवे, पण्डित होवे, अंग सुरूप होवे। और भावोंका फल सूर्यके बराबर कहा है, जैसे दूसरा शनि धनवान् और मुखरोगी और राजा धन हरे ऐसे फल करता है। तीसरा हो तो बुद्धिमान्, पराक्रमी होवे। चौथा हो तो सुखरहित पीडित रहै.

पञ्चम हो तो विपुत्र; धनरहित । छठा हो तो बलवान् शत्रुसे हारा रहै । सातवां हो तों स्त्रीके वश रहै । आठवां हो तो सन्तान थोडी होवै और नेत्र कलारहित होवै । नवम हो तो पुत्र, धन, सुखवाला होवै । दशम हो तो सुखी व बलवान् होवे । ग्यारहवां हो तो धनवान्, बारहवां हो तो पतित होवे ॥ ९ ॥ (शिखरिणी)

लग्नादिस्थ सब ग्रहोंका विशेष फल ।

सुहृदरिपरकीयस्वर्क्षतुङ्गस्थितानां
फलमनुपरिचिन्त्यं लग्नदेहादिभावैः ।
समुपचयविपत्ती सौम्यपापेषु सत्यः
कथयति विपरीतं रिःफषष्ठाष्टमेषु ॥ १० ॥

इतने जो भावफल कहे गये हैं सब लग्नसे फल देते हैं। " मूर्तिश्च होरां शशिभश्च विन्द्यात् इस वचनसे लग्न और चन्द्रराशि तुल्य फलवाली कही हैं परन्तु यहां चन्द्रराशिसे नहीं है । लग्न, धन, सहजादि भावोंमें जैसी राशि सुहृदादिमें ग्रह होगा वैसाही शुभाशुभ फल उस भावका देगा । (सुहृत) मित्र, (अरि) शत्रु, (परकीय) उदासीन, (स्वर्क्ष) अपनी राशि, (तुंग) उच्च ये संज्ञा हैं, मित्रराशिवाला पूर्ण शुभ फल देगा, अशुभ फल कम देगा, शत्रुराशिवाला अशुभफल देगा, ऐसाही नीचका भी और परकीय जो उदासीन है वह शुभ और अशुभ भी देगा, स्वर्क्षवाला अशुभफल पूर्ण देगा, उच्चवाला शुभ फल अधिक देगा, शुभफल देनेवाला जिस भावमें होगा उसकी वृद्धि और अशुभफल देनेवाला उस भावकी हानि करेगा । सत्याचार्य कहते हैं कि, शुभ ग्रह जिस भावमें है उसकी वृद्धि, पाप जिस भावमें होगा उसकी हानि होती है परन्तु छठा आठवां बारहवां इनमें उलटे फल जानने जैसे पापग्रह बारहवें व्ययकी हानि, अष्टम मृत्युकी हानि, छठे रोग व शत्रुकी हानि करते हैं, इसमें एक आचार्यका भेद हुवा है परन्तु शास्त्र उत्तरोत्तर बलवान् होता है, पूर्वोक्तफल सामान्य और पीछेका कहा हुआ बलवान् होता है और बुद्धिमानोंको उनका बलाबल

देखके फल कहना उचित है, व्यवस्था इस विषयमें बहुत है परन्तु यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे थोडासा सारतर लिख दिया है ॥ १० ॥ (मालिनी)

कुण्डलीमें शुभाशुभ फल।

उच्चत्रिकोणस्वसुहृच्छत्रुनीचगृहार्कगैः।
शुभं सम्पूर्णपादोनदलपादाल्पनिष्फलम् ॥ ११ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके भावाऽध्यायः ॥ २० ॥

ग्रहकुण्डलीमें फल शुभाशुभ दो प्रकारके हैं, शुभ फल उच्चस्थ ग्रह पूर्ण देता है, मूल त्रिकोणवाला चौथाई कम देता है, स्वक्षेत्रवाला आधा देता है, मित्रराशिवाला चौथाई फल देता है, शत्रुराशिवाला पादसे भी कम और नीचराशिका और अस्तंगत ग्रह कुछ भी शुभफल नहीं देता, पाप ग्रह उलटे फल देते हैं। जैसे अस्तङ्गत व नीचका ग्रह अशुभफल पूरा देता है, शत्रुक्षेत्रवाला चौथाई कम, मित्रक्षेत्रवाला आधा, स्वक्षेत्रवाला चौथाई, त्रिकोणवाला पादसे भी कम, उच्चवाला कुछ भी नहीं देता, ये भावफल दशान्तर अष्टकवर्गगोचरमें कहना ॥ ११ ॥ (अनुष्टुप्)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
भावाध्यायो विंशः ॥ २० ॥

आश्रययोगाऽध्यायः २१.

स्वगृह वा मित्रस्थानस्था ग्रहोंका फल।

कुलसमकुलमुख्यबन्धुपूज्या
धनिसुखिभोगिनृपाः स्वभैकवृद्ध्या।
परविभवसुहृत्स्वबन्धुपोष्या
गणपबलेशनृपाश्च मित्रभेषु ॥ १ ॥

अब आश्रययोगाध्याय कहते हैं—जिसके जन्ममें एक ग्रह स्वराशिगत हो तो अपने कुलके अनुसार विभव पाता है अर्थात् अपने कुलवालोंके तुल्य होता है। दो ग्रह अपनी राशिके हों तो अपने कुलमें मुख्य (श्रेष्ठ)

होवे । तीन स्वगृहमें हों तो बन्धु लोगोंका पूज्य, स्वगृही हों तो धनवान्, पांच हों तो सुखी,छः हो तो अनेकभोग भोगनेवाला राजाके तुल्य होवे, सात हों तो राजा होवे । मित्र राशिमें एक ग्रह हो तो पराये विभवसे जीवे। दो हों तो मित्रोंसे, तीन हों तो अपनी जातवलोंसे, चारमें भाइयोंसे, पांचमें बहुतोंका स्वामी होवे, छःमें सेनापति, सातमें राजा होवे॥१॥ (पुष्पिताग्रा)

उच्च मित्रदृष्ट, नीच शत्रुस्थानस्थ ग्रहोंका फल ।

जनयति नृपमेकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टः
प्रचुरधनसमेतं मित्रयोगाच्च सिद्धम् ।
विधनविसुखमूढव्याधितो बन्धतप्तो
वधदुरितसमेतः शत्रुनीचर्क्षगेषु ॥ २ ॥

उच्चका ग्रह मित्रदृष्टिवाला एक भी हो तो राजा होवे । जो उच्चगत ग्रह मित्रग्रहसे युक्त भी हो तो बहुत धनसहित सिद्ध होता है । जिसके जन्ममें एक ग्रह शत्रुराशिका वा नीचका हो तो वह निर्द्धन होवे । जिसके दो हों तो दरिद्री और सुखरहित भी होवे । तीन हों तो दुःखी दरिद्री और मूर्ख भी होता है । चार हो तो पूर्वोक्त तीन फलसहित रोगी भी होवे । पांच हों तो बन्धनसे सन्तापयुक्त रहै । छः हों तो बहुत दुःखतप्त रहै । सात हों तो मृत्युतुल्य क्लेश सर्वदा रहे ॥ २ ॥ (मालिनी)

कुम्भ लग्नका फल ।

न कुम्भलग्नं शुभमाह सत्यो न भागभेदाद्यवना वदन्ति ।
कस्यांशभेदो न तथास्ति राशेरतिप्रसंगस्त्विति विष्णुगुप्तः ॥ ३ ॥

सत्याचार्य जन्ममें कुम्भलग्न अच्छा नहीं कहते और यवनाचार्य कुम्भलग्न समस्तको नहीं किन्तु लग्नमें कुम्भद्वादशांशको अशुभ कहते हैं। विष्णुगुप्त कहते हैं कि यवनमतसे कुम्भद्वादशांश बुरा है तो वह सभी लग्नोंमें आवेगा तो क्या सभी बुरे हो जायँगे । इसलिये यवनोक्ति अतिप्रसंग है । कुम्भलग्न ही जन्ममें अशुभ है। कुछ कुम्भांशक बुरा नहीं है ॥३॥ (उपजाति)

होरास्थ ग्रहोंका फल ।

यातेष्वसत्स्वसमभेषु दिनेशहोरां
ख्यातो महोद्यमबलार्थयुतोऽतितेजाः ।
चान्द्रीं शुभेषु युजि मार्दवकान्तिसौख्य-
सौभाग्यधीमधुरवाक्ययुतः प्रजातः ॥ ४ ॥

जिसके जन्ममें पापग्रह सूर्य होरामें हो अर्थात् विषम राशियोंके पूर्व दलमें हो तो वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात और बडा उद्यमी, बलवान्, धनवान्, अतितेजस्वी होवे और समराशिमें चन्द्रमाकी होरामें अशुभ ग्रह हो तो मृदु (कोमल) स्वभाव, कान्तिमान्, सुखी, सबका प्यारा, बुद्धिमान्, मधुर वाणीवाला होवे ॥ ४ ॥ (वसन्ततिलका)

तास्वेव होरास्वपरर्क्षगासु ज्ञेया नराः पूर्वगुणेषु मध्याः ।
व्यत्यस्तहोराभवनस्थितेषु मर्त्या भवन्त्युक्तगुणैर्विहीनाः॥५॥

अब विपरीतमें कहते हैं कि, जो समराशिमें सूर्यकी होरामें पाप ग्रह हो तो पूर्वोक्त शुभफल मध्यम जानने। ऐसेही विषम राशि चन्द्रहोरामें शुभ ग्रह हों तो फल मध्यम जानने और विपरीत हों तो उलटा जानना, जैसे समराशिके चन्द्रहोरामें पाप ग्रह हों तो पूर्वोक्त महोद्यम, बल, धन तेजसे हीन होवे । ऐसेही विषम राशिके सूर्य होरामें शुभ ग्रह हो तो मृदुशरीर कान्ति, सौख्य, सौभाग्य,बुद्धि मधुर वाणी ये फल उलटे होवें इनमें भी ग्रह बहुत होनेसे फल बहुत और ग्रह थोडे होनेसे फल थोडा कहना ॥ (इंद्रवज्रा)

द्रेष्काणसे चंद्रमाका फल ।

कल्याणरूपगुणमात्मसुहृद्दृकाणे
चन्द्रोऽन्यगस्तदधिनाथगुणं करोति ।
व्यालोद्यतायुधचतुश्चरणाण्डजेषु
तीक्ष्णोऽतिहिंस्रगुरुतल्परतोऽटनश्च ॥ ६ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमा अपने वा तत्कालमित्रके द्रेष्काणमें हो तो उसके रूप गुण अच्छे होवें । जिसके द्रेष्काणमें चन्द्रमा है वह तत्कालमें सम हो

तो रूप गुण मध्यम होंगे । ऐसेही शत्रु हो तो रूप गुणसे हीन होवे । सर्प्पद्रेष्काणका चन्द्रमा हो तो उग्रस्वभाव उद्यतायुध द्रेष्काणमें प्राणिघातके वास्ते हथियार उठाय रक्खे चौपाया राशिके द्रेष्काणमें चन्द्रमा हो तो गुरुस्त्रीका गमन करनेवाला होवै. अण्डज पक्षी राशिके द्रेष्काणमें हो तो फिरनेवाला होवै, जहां दोकी प्राप्ति अर्थात् अपने द्रेष्काणमें और सर्प्पद्रेष्काणमें भी हो तो दोनों फल होंगे। सर्प्पद्रेष्काण—कर्कका उत्तर, वृश्चिकका पूर्व, मीनका मध्य, द्रेष्काण और उद्यतायुध—मेषका प्रथम मिथुनका दूसरा, सिंहका प्रथम, तुलाका द्वितीय, कुम्भका प्रथम द्रेष्काण और पक्षी अण्डज राशि जानना ॥ ६ ॥ (वसन्ततिलका)

नवांशक फल ।

स्तेनो भोक्ता पण्डिताढ्यो नरेन्द्रः
क्लीबः शूरो विष्टिकृद्दासवृत्तिः ।
पापी हिंस्रोऽभीश्च वर्गोत्तमांशे-
ष्वेषामीशा राशिवद्द्वादशांशैः ॥ ७ ॥

जिसका जन्म मेष नवांशकमें हो तो चोर होवै,वृषमें भोगवान्, मिथुनमें पण्डित, कर्कमें धनवान्, सिंहमें राजा, कन्यामें नपुंसक, तुलामें शूरमा, वृश्चिकमें विना पैसा भार ढोनेवाला, धनमें (दास) गुलाम, मकरमें पापी, कुम्भमें क्रूरस्वभाव, मीनमें निर्भय होवै, परन्तु इतने फल वर्गोत्तम रहितके हैं। वर्गोत्तम नवांश जैसे मेष लग्नमें मेषांश, वृषलग्नमें वृषांश इत्यादिमें जन्म हो तो पूर्वोक्त फल होवै परन्तु राजा होवै । जैसे मेष वर्गोत्तमांश हो तो चोरोंका राजा होवै, वृषमें भोगियोंका राजा इत्यादि और द्वादशांशमें राशितुल्य फल जानना ॥ ७ ॥ (शालिनी)

स्वस्थान तथा त्रिंशांशस्थ मंगल और शनि ।

जायान्वितो बलविभूषणसत्त्वयुक्त-
स्तेजोतिसाहसयुतश्च कुजे स्वभागे ।

रोगी मृतस्वयुवतिर्विषमोऽन्यदारो
दुःखी परिच्छदयुतो मलिनोऽर्कपुत्रे ॥ ८ ॥

मंगल अपने त्रिंशांशमें हो तो स्त्रीसे सहित, बल, भूषण, उदारता, अति तेजसे युक्त रहै, साहसका काम करनेवाला होवै। शनि अपने त्रिंशांशमें हो तो रोगी रहै, स्त्री मरे, क्रोधस्वभाव होवै, परस्त्रीमें आसक्त रहै दुःखी रहै, घर व वस्त्र और परिवारसे युक्त हो, मलिन रहै ॥ ८ ॥

तादृश गुरु बुधका फल।

स्वांशे गुरौ धनयशः सुखबुद्धियुक्ताः
स्तेजस्विपूज्यनिरुगुद्यमभोगवन्तः।
मेधाकलाकपटकाव्यविवादशिल्प-
शास्त्रार्थसाहसयुताः शशिजेऽतिमान्याः ॥ ९ ॥

बृहस्पति अपने त्रिंशांशकमें हो तो धन, यश, सुख, बुद्धि और तेज इनसे युक्त रहै, सब लोकोंमें मान्य होवै, निरोगी और उद्यमी होवै भोगवान् होवै, बुध अपने त्रिंशांशकका हो तो बुद्धिमान्, गीत, नाच, पुस्तक, चित्रका जाननेवाला होवै, कपटी और दम्भी होवै, कविता और बोलनेमें चतुर होवै, शास्त्रार्थको जाननेवाला साहसी व अतिमान्य होवै ॥ ९ ॥ (वसन्ततिलका)

शुक्रका फल।

स्वे त्रिंशांशे बहुसुतसुखारोग्यभाग्यर्थरूपः
शुक्रे तीक्ष्णः सुललितवपुः सुप्रकीर्णेन्द्रियश्च।
शूरस्तब्धौ विषमवधकौ सद्गुणाढ्यौ सुखिज्ञौ
चार्वङ्गस्थौ रविशशियुतेष्वारपूर्वांशकेषु ॥ १० ॥
इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके आश्रय-
योगाध्याय एकविंशः ॥ २१ ॥

शुक्र अपने त्रिंशांशकमें हो तो बहुत पुत्र, बहुत सुख, निरोग, ऐश्वर्यवान्, धनवान्, रूपवान, कोई 'भार्यार्थरूपः' ऐसा कहते हैं। वहाँ स्त्री

सुखवती होवै, क्रूरस्वभाव, कोमल अङ्ग, इन्द्रियसे असावधान अर्थात् बहुस्त्रीगामी होवै । मंगलके त्रिंशांशमें सूर्य हो तो शूर, चन्द्रमा हो तो शिथिल, शनि त्रिंशांशमें सूर्य हो तो विषमस्वभाव, चन्द्रमा हो तो जीवघाती, बृहस्पतिके त्रिंशांशमें सूर्य हो तो गुणवान्, चन्द्रमा हो तो धनवान्, बुध त्रिंशांशमें सूर्य हो तो सुखी, चन्द्रमा हो तो पण्डित, शुक्र त्रिंशांशमें सूर्य हो तो शोभन शरी, चन्द्रमा हो तो सर्वजनप्रिय होवै ॥ १० ॥ (मन्दाकान्ता)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायामाश्रययोगाध्यायः ॥ २१ ॥

प्रकीर्णाध्यायः २२.

ग्रहोंकी परस्पर कारक संज्ञा ।

स्वर्क्षतुङ्गमूलत्रिकोणगा कण्टकेषु यावन्त आश्रिताः ।
सर्व एव तेऽन्योन्यकारकाः कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥

कोई ग्रह अपनी राशिका वा उच्चका वा मूलत्रिकोणका केन्द्रमें हो और दूसरा कोई ग्रह ऐसाही स्वोच्च मूलत्रिकोण वा स्वराशिका केन्द्रमें हो तो ये दोनों परस्पर कारक होते हैं। इसमें दशमगत ग्रह कारक विशेष होता है, उदाहरण आगे है ॥ १ ॥ (पणववृत्त)

कारक योगका उदाहरण ।

कर्कटोदयगते यथोडुपे स्वोच्चगाः कुजयमार्कसूरयः ।
कारका निगदिताः परस्परं लग्नमस्य सकलोम्बराम्बुगः ॥२॥

जैसे कर्क लग्नमें चन्द्र और गुरु, चतुर्थ शनि, सप्तम मङ्गल, दशम सूर्य, ये सब केन्द्रमें उच्चवर्ती हैं तो परस्पर कारक हुये; ऐसेही स्वगृह मूल त्रिकोणवाले भी कारक होते । लग्नगत ग्रहका दशम चतुर्थवाला ग्रह उच्चादि राशिगत हो तो कारक कहलाता है ॥ २ ॥ (रथोद्धता)



दूसरी कारक संज्ञा ।

स्वत्रिकोणोच्चगो हेतुरन्योन्यं यदि कर्मगः ।
सुहृत्तद्गुणसम्पन्नः कारकश्चापि स स्मृतः ॥ २ ॥

कारकका हेतु स्वराशि मूलत्रिकोणोच्चगत ग्रह है किन्तु जब वह केन्द्रमें हो और वैसाही स्वगृहादिस्थित ग्रह उससे दशमस्थानमें हो,दशमस्थानमें अधिक इस प्रयोजनसे कहा कि, तत्कालमें वह मित्र होगा तद्गुणसम्पन्नता पावेगा ॥ ३ ॥

कारक संज्ञा प्रयोजन ।

शुभं वर्गोत्तमे जन्म वेशिस्थाने च सद्ग्रहे ।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ४ ॥

जिसका वर्गोत्तम लग्न नवांशमें जन्म हो, अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशकमें हो, उसका सारा जन्म शुभ होगा और जिसके जन्ममें वेशिस्थानमें शुभग्रह हो उसका भी जन्म शुभ ही होगा। वेशिस्थान—सूर्य जिस भावमें बैठा है उससे दूसरे भावको कहते हैं और जिसके चारहों केन्द्रोंमें कोई भी केन्द्र ग्रहरहित नहीं उसका भी सारा जन्म शुभ होगा, इसमें शुभग्रह होनेसे विशेषही शुभ होता है और जिसके जन्ममें पूर्वोक्त कारक ग्रह पडे हैं उसका भी जन्म शुभतर हो जायगा, ये उत्तरोत्तर विशेष फलवाले कहे हैं ॥ ४ ॥ (अनुष्टुप्)

दशापति और फलपाक ।

मध्ये वयसः सुखप्रदाः केन्द्रस्था गुरुजन्मलग्नपाः ।
पृष्ठोभयकोदयर्क्षगास्त्वन्तेन्तः प्रथमेषु पाकदाः ॥ ५ ॥

जिसके जन्ममें: बृहस्पति वा चन्द्रराशीश वा लग्नेश केन्द्रमें हो उसकी मध्यावस्था (जवानी) सुखसे व्यतीत होवे। जिसका दशापति दशाप्रवेश समयमें पृष्ठोदय राशि १।२।९।४।१० में हो तो अन्तमें दशाफल देगा जो दशाप्रवेश समयमें दशापति मीन १२ का हो तो दशान्तर्दशाके मध्यमें फल

देवै, जो शीर्षोदय ३।५।६।७।८।११ वा हो तो दशाप्रवेश समयमें फल देवे ॥ ५ ॥ (वैतालीय)

अष्टवर्ग फलका काल ।

दिनकररुधिरौ प्रवेशकाले गुरुभृगुजौ भवनस्य मध्ययातौ ।
रविसुतशशिनौ विनिर्गमस्थौ शशितनयः फलदस्तु सर्वकालम्॥६॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके प्रकीर्णकाध्यायो
द्वाविंशतितमः ॥ २२ ॥

गोचराष्टकवर्गमें शुभाशुभफल देनेमें सूर्य और मङ्गल राशिके प्रथम तीसरे भागमें फल देता है । बृहस्पति, शुक्र राशिमध्यविभागमें फल देते हैं । चन्द्रमा, शनि राशिके अन्त्यविभागमें फल देते हैं । बुध सभी समयमें फल देता है ॥ ६ ॥ (पुष्पिताग्रा)

इति महीधर विरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
प्रकीर्णकाध्यायः ॥ २२ ॥

अनिष्टाध्यायः २३.

स्त्री--पुत्रसे हीनका ज्ञान ।

लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथवाऽऽलोकिते
चन्द्राद्वा यदि सम्पदस्ति हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथाऽसम्भवः ।
पाथोनोदयगे रवौ रविसुतो मीनस्थितो दारहा
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें लग्नसे वा चन्द्रमासे पञ्चमभाव अपने स्वामी वा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो उसको पुत्रसम्पति होगी । जिसका पञ्चमभाव लग्न चन्द्रमासे स्वनाथसौम्यग्रहयुक्त दृष्ट न हो तो उसको पुत्रसम्पत्ति न होगी । ऐसा ही लग्न चन्द्रमासे सप्तमभाव स्वनाथ वा सौम्यग्रह युक्त दृष्ट हो तो स्त्रीसम्पत्ति होगी । अन्यथा नहीं होगी । पुत्र और कलत्र ये दो भाव

उपलक्षणमात्र कहे हैं; ऐसा विचार लग्नादि सभी भावोंमें चाहिये । दूसरा योग–लग्नमें कन्याका सूर्य, सप्तममें मीनका शनि हो तो दारहा योग होता है–पुरुषके जीवितहीमें स्त्री मरण देता हैं । और कन्याका सूर्य लग्नमें और मकरका मङ्गल पंचममें हो तो पुत्रमरणयोग पुत्रशोक देता है ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

जीतेही स्त्रीमरणका तीन योग ।

उग्रग्रहैः सितचतुरस्रसंस्थितै-
र्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथवोग्रयोः ।
सौम्यग्रहैरसहितसंनिरीक्षिते
जायावधो दहननिपातपाशजः ॥ २ ॥

जिसके जन्ममें शुक्रसे चतुर्थ अष्टम क्रूरग्रह (सूर्य, भौम, शनि) हों उसकी स्त्री अग्निसे जल मरे । जो शुक्र पापग्रहोंके बीच हो तो उसकी स्त्री ऊंचेसे गिरके मरे और शुक्र पर शुभग्रहोंकी दृष्टि न होवे और शुभग्रहोंसे युक्त भी न हो तो उसकी स्त्री फांसी आदि बन्धनसे मरे । ये दहन निपात पाशसे मरणके ३ योग पुरुषके जीवितमें स्त्री मरणके हैं ॥ २ ॥ (प्रभावती)

दंपतीका एकाक्षयोग ।

लग्नाद्व्ययारिगतयोः शशितिग्मरश्म्योः
पत्न्या सहैकनयनस्य वदन्ति जन्म ।
द्यूनस्थयोर्नवमपञ्चमसंस्थयोर्वा
शुक्रार्कयोर्विकलदारमुशन्ति जातम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य चन्द्र छठे और बारहवें हों अर्थात् एक बारहवां एक छठा हो तो वह पुरुष एक नेत्र अर्थात् काणा होवे और उसकी स्त्री भी काणी होवे. जिसके जन्ममें सप्तम वा नवम वा पञ्चम सूर्य शुक्र इकट्ठे हों तो उसकी स्त्री अङ्गहीन होवे ॥ ३ ॥ (वसन्ततिलका)

स्त्रीका वन्ध्यादि योग ।

कोणोदये भृगुतनयेऽस्तचक्रसन्धौ
वन्ध्यापतिर्यदि न सुतर्क्षमिष्टयुक्तम् ।

पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः
क्षीणे शशिन्यसुतकलत्रजन्मधीस्थे ॥ ४ ॥

जिसका शनि लग्नमें हो और शुक्र चक्रसन्धि कर्क, वृश्चिक, मीन नवांशकमें होकर लग्नसे सप्तम भावमें हो तो उसकी स्त्री वांझ होवे, यह योग मकर वृष कन्या लग्नसे होगा, जिसके बारहवां और सप्तम और लग्नमें अथवा इनमेंसे दोनों स्थानोंमें वा एकही स्थानमें पापग्रह हो और क्षीण चन्द्रमा लग्न वा पञ्चममें हो तो उसको स्त्री पुत्र कुछभी न होवे ॥ ४ ॥

परस्त्री गमन योग ।

असितकुजयोर्वर्गेऽस्तस्थे सिते तदवेक्षिते
परयुवतिगस्तौ चेत्सेन्दू स्त्रिया सह पुंश्चलः ।
भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्यो नरो विसुतोऽपि वा
परिणततनू नृस्त्र्योर्दृष्टौ शुभैः प्रमदापती ॥ ५ ॥

शनि वा मंगलके वर्गका शुक्र सप्तमभावमें हो और शनि वा मङ्गल उसे देखे तो वह पुरुष परस्त्रीगमन करनेवाला होवे और शनि मङ्गल सप्तमभावमें चन्द्रमा सहित हों और शनि वा मङ्गलके वर्गमें स्थित जो शुक्र देखता हो तो वह पुरुष स्त्रीसहित व्यभिचारी हो अर्थात् पुरुष परस्त्रीमें आसक्त और उसकी स्त्री परपुरुषोंमें आसक्त रहै और शुक्र चन्द्रमा एक राशिमें- हो और उनसे सप्तमस्थानमें शनि मङ्गल हो तो (अभार्य) स्त्रीरहित अथवा पुत्ररहित होवें और पुरुषग्रह और स्त्रीग्रह दोनों शुकराशिमें हों और सप्तम भावमें शनि मङ्गल हों और उनपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो वह वृद्धावस्थामें बूढ़ी स्त्री पावे (हारिणी)

अन्य अनिष्ट योग ।

वंशच्छेत्ता खमदसुखगैश्चन्द्रदैत्येज्यपापैः
शिल्पी त्र्यंशे शशिसुतयुते केन्द्रसंस्थार्किदृष्टे ।
दास्यां जातो दितिसुतगुरौ रिःफगे सौरभागे
नीचोऽर्केन्द्वोर्मदनगतयोर्दृष्टयोः सूर्यजेन ॥ ६ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमा दशम और शुक्र सप्तम और पापग्रह चतुर्थ हों तो वह वंशच्छेत्ता अर्थात् कुलघाती गोत्रहत्या करनेवाला (दुर्योधन सरीखा) होवै और बुध जिस त्रिंशांशमें हों उस राशिको लग्न वा केन्द्रमें बैठा हुवा शनि देखे तो वह पुरुष शिल्पविद्या चित्रादि कारीगरी करनेवाला हो और जिसके शुक्र बारहवां शनिके नवांशकमें हो तो वह दासीपुत्र है कहना और जिसके सूर्य चन्द्रमा सप्तम स्थानमें हो शनिकी दृष्टि उन पर हो तो वह नीच कर्म करनेवाला होगा ॥ ६ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्वाह्यरुक्
चन्द्रे कर्कटवृश्चिकांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक् ।
श्वित्री रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चन्द्रोदयेऽस्ते रवौ
चन्द्रे खेवनिजेऽस्तगे च विकलो यद्यर्कजो वेशिगः ॥७॥

जिसके शुक्र मंगल सप्तम स्थानमें हो और उनपर पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो तो उसके शरीरमें बाहरसे रोग प्रगट रहेगा. जिसके चन्द्रमा कर्क वा वृश्चिक नवांशकमें पापयुक्त हो तो उसको गुप्त रोग होवै. जिसके दूसरे बारहवें शनि मङ्गल हों और चन्द्रमा लग्नमें सूर्य सप्तममें हो तो (श्वित्री) श्वेतकुष्ठी होवै । जिसको चन्द्रमा दशम मङ्गल सप्तम हो और शनि वेशिस्थान अर्थात् सूर्यसे दूसरे भावमें हो तो अङ्गहीन होगा ॥७॥(शार्दूलविक्रीडित)

अन्तः शशिन्यशुभयोर्मृगगे पतङ्गे
श्वासक्षयप्लिहकविद्रधिगुल्मभाजः ।
शोषी परस्परगृहांशगयो रवीन्द्वोः
क्षेत्रेऽथवा युगपदेकगयोः कृशो वा ॥ ८ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमा, शनि मङ्गलके बीच हो और सूर्य मकरका हो तो उसके श्वास वा प्लिहक (फीहा वा विद्रधि वा गुल्म ये रोग होवैं और सूर्य चन्द्रमाके नवांशकमें और चन्द्रमा सूर्य नवांशकमें हों तो वह पुरुष (शोषी) शोषण रोगवाला होवे, अथवा सूर्य चन्द्रमा दोनों सिंहांशकमें वा कर्कांशकमें हों तो शोषी वा कृश (माडा) शरीरवाल होवे ॥८॥

चन्द्रेऽश्विमध्यझषकर्किमृगाजभागे
कुष्ठी समन्दरुधिरे तदवेक्षिते वा ।
यातैस्त्रिकोणमलिकर्किवृषैर्मृगे च
कुष्ठी च पापसहितैरवलोकितैर्वा ॥ ९ ॥

चन्द्रमा धनराशिके मध्य अर्थात् पांचवें नवांशमें हो और मङ्गल वा शनि उसके साथ हो अथवा मङ्गल शनिकी दृष्टि होवे तो वह पुरुष कुष्ठी होवे, अथवा चन्द्रमा किसी राशिमें मीन वा कर्क वा मकर वा मेष नवांशकमें और उस पर शनि वा मङ्गलकी दृष्टि हो तो कुष्ठी होवे परन्तु यहभी विचार चाहिये कि ऐसे योगोंमें चन्द्रमा पर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो कुष्ठी न होवे परन्तु कण्डू विकार दाद, खुजली, वारण आदि होवें और जिसके वृश्चिक वा कर्क वा वृष वा मकर ये राशि त्रिकोणमें हों और लग्नमें भी इन्हींमेंसे कोई राशि हो अथवा पञ्चम नवममेंसे एक जगह और लग्नमें हो और वह राशि पापयुक्त वा दृष्ट हो तो वह कुष्ठी हो ॥९॥ (वसन्ततिलका)

निधनारिधनव्ययास्थिता रविचन्द्रारयमा यथा तथा ।
बलवद्ग्रहदोषकारणैर्मनुजानां जनयन्त्यनेत्रताम् ॥ १० ॥

जिसके सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, शनि यथासम्भव अष्टम और छठे और दूसरे और बारहवें होवें तो वह नेत्रहीन होवे इन भावों और ग्रहोंमें यथाक्रम नियम नहीं है, चाहे इनमेंसे कोई ग्रह उक्त भावोंमेंसे किसीमें हो किन्तु चार भावोंमेंसे यहां चारग्रह हों और इतना भी विचार चाहिये कि, इन ग्रहोंमें जो बलवान् हो उसका जो धातु उसके कोपसे नेत्रहीन होगा ऐसा कहना ॥ १० ॥

नवमायतृतीयधीयुता न च सौम्यैरशुभा निरीक्षिताः ।
नियमाच्छ्रवणोपघातदा रदवैकृत्यकराश्च सप्तमे ॥ ११ ॥

जिसके पापग्रह नवम ग्यारहवें तृतीय और पंचम हो उनको शुभ ग्रह न देखें तो उनमेंसे जो बलवान् है उसके धातुके विकारसे कान फूट जावें

बहिरा होवे । जो पाप ग्रह (सूर्य, मङ्गल, शनि) सप्तममें हों उनको शुभ ग्रहन देखें तो दांतोंका रोग होवे इसमें भी बलवान् ग्रहकी धातु दन्तहीन करती है ॥ ११ ॥

उदयत्युडुपेऽसुरास्यगे सपिशाचोऽशुभयोस्त्रिकोणयोः ।
सोपप्लवमण्डले रवावुदयस्थे नयनापवर्जितः ॥ १२ ॥

चन्द्रमा लग्नमें हो और राहुग्रस्त (ग्रहणसमयका) हो और त्रिकोण ९ । ५ में पापग्रह श० मं० हो तो उसपर पिशाच लगा रहै और ५ । ९ में यही पाप हो और लग्नका सूर्य राहुग्रस्त होवे तो वह अन्धा होवे ॥ १२ ॥ (वैतालीय ३)

संस्पृष्टः पवनेन मन्दगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ
सोन्मादोऽवनिजे स्थितेऽस्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते ।
तद्वत्सूर्यसुतोदयेऽवनिसुते धर्म्मात्मजद्यूनगे
जातो वा सप्तहस्तरश्मितनये क्षीणे व्यये शीतगौ ॥ १३ ॥

जिसके जन्ममें सप्तम शनि और लग्नमें बृहस्पति हो तो उसको वायुरोग होवे । और जिसका मङ्गल सप्तममें, बृहस्पति लग्नमें हो तो उन्मादी (दिवाना) अर्थात् बावला होवे । और शनि लग्नमें हो मङ्गल नवम वा पञ्चम वा सप्तममें हो तौ भी उन्मादी (बावला) होवे । अथवा क्षीणचन्द्रमा और शनि बारहवां हो तौ भी बावला होवे । यहां ग्रहणका चन्द्रमा क्षीणतुल्य जानना ॥ १३ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यै-
र्नीचाधिपांशकगतैररिभागगैर्वा ।
एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता
ज्ञेयाः स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः ॥ १४ ॥

चन्द्रमा जिस नवांशकमें बैठा है उसका पति और सू० चं० बृ० ये अपने नीचराशिके स्वामीके नवांशकमें वा शत्रुनवांशकमें हों तो वह दास

अर्थात् गुलाम होवे । इसमें और भी विचार है कि, इन ग्रहोंमें नीचाधिपांशमें शत्रुनवांशकमें एक ग्रह हो तो वह अपने आजीविकाके वास्ते दासकर्म करेगा । जिसके दो हों वह बिकजानेसे दास बनेगा । जिसके तीन चार ऐसे हों तो वह गर्भदास अर्थात् उसके माता वा पिताभी दासही होंगे ॥ १४ ॥ (वसंततिलका)

विकृतदशनः पापैर्दृष्टे वृषाजहयोदये
खलतिरशुभक्षेत्रे लग्ने हये वृषभेऽपि वा ।
नवमसुतगे पापैर्दृष्टे रवावदृढेक्षणो
दिनकरसुते नैकव्याधिः कुजे विकलः पुमान् ॥ १५ ॥

वृष वा मेष वा धन लग्न हो और उसको पापग्रह देखे तो (विकृतदशन) दांत उसके विरूप हों। जिस पापग्रहकी राशि १ । ८।५। १०। ११ वा २ । ९ लग्नमें हो उसपर पापग्रहकी दृष्टि हो तो खल्वाट अर्थात् गंजा होगा । सूर्य नवम वा पञ्चम हो और उसपर पापग्रहकी दृष्टि हो तो (अदृढेक्षण) इसके नेत्र पुष्ट न रहैं मन्द सर्वदा रहैं । जो शनि नवम वा पञ्चममें पापदृष्ट हो तो उसके शरीरमें अनेक रोग रहैं । जो मङ्गल पञ्चम वा नवममें पापदृष्ट हो तो वह अङ्गहीन होवे ॥ १५ ॥

व्ययसुतधनधर्मगैरसौम्यैर्भवनसमाननिबन्धनं विकल्प्यम् ।
भुजगनिगडपाशभृद्दृकाणैर्बलवदसौम्यनिरीक्षितैश्च तद्वत् ॥१६॥

जिसके बारहवें और पञ्चम और दूसरे और नवम पापग्रह हों तो उसको बलवान् ग्रहकी दशा अष्टकवर्गादिमें बन्धन मिलेगा । वह बन्धन भी राशिसमान जानना । जैसे चौपाया राशि हो तो रस्सीसे बँधेगा । मनुष्यराशि हो तो कैद, कुम्भ भी ऐसाही और कर्क मकर मीनमें बन्धनविना कैद अर्थात् पिंजरे वा कठहेमें, वृश्चिक राशिमें भूमि छोटासा घर वा बिल वा घर बनायके बँधेगा । और जिसके जन्म भुजग वा निगडद्रेष्काणमें हो और जिसका वह द्रेष्काण है वह राशि बलवान् और पापदृष्ट होवे

तौ भी बन्धन पावैगा। भुजग द्रेष्काण—कर्कटका प्रथम, वृश्चिकका दूसरा, मीनका तीसरा । निगड द्रेष्काण मकरका प्रथम जानना । पाशभृत् शब्द इनका सहचारी है, जैसे भुजगपाशभृन्निगडपाशभृत् ॥ १६ ॥ (पुष्पिताग्रा

परुषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे ।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभःस्थलमाश्रिते-
र्भृतकमनुजः पूर्वोद्दिष्टैर्वराधममध्यमाः ॥ १७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातकेऽनिष्टा-
ध्यायस्त्रयोविंशः ॥ २३ ॥

जिसके जन्ममें चन्द्रमा शनिके साथ हो और मङ्गल चन्द्रमाको देखे और जन्म समयमें परिवेष (सौंडल) भी हो तो कठोर बोली बोलनेवाला होवै । और अपस्मार (मृगी) रोग और क्षयरोग भी होवै, इसमें भी तीन भेद हैं कि, चन्द्रमा शनिसहित हो तो कठोर वचनवाला होवै, चन्द्रमा शनिसहित मंगल दृष्ट हो तो मृगी होवे और चन्द्रमा शनिसहित भौमदृष्ट हो और चन्द्रमा पर परिवेष (सौंडल भी हो तो क्षय रोगी होवै । और सूर्य, मंगल, शनि, दशम स्थानमें हों उन पर शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो वह मनुष्य (भृतक) पराई सेवा करनेवाला होवे । इसमे भी विचारना चाहिये कि, सू० मं० मेंसे शुभ ग्रह दृष्टिरहित एक ग्रह होवै तो चाकरीमें भी उत्तम कर्म करैगा, दो ग्रह हों तो मध्यम और तीनों हों तो अधम कर्म करैगा ॥ १७ ॥ (हरिणी)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकाया
मनिष्टाध्यायः ॥ २३ ॥

स्त्रीजातकाध्यायः २४.

चन्द्रराशिवशसे स्त्रीका स्वरूप।

यद्यत्फलं नरभवेऽक्षममङ्गनानां
तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम् ।
तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु
लग्नेन्दुगं सुभगतास्तमये पतिस्तु ॥ १ ॥

जन्ममें जो जो फल पुरुषोंके कहे हैं वह स्त्रियोंके असंभव हैं, इस लिये स्त्रीजातक जुदा कहते हैं कि, जो ' वृत्तातात्रादिक ' इत्यादि लक्षण हैं वे तो स्त्रियोंके जुदे कहने । जो राजयोगादि है वह उनके भर्ताके होंगे ऐसा कहना । जो नाभसयोगादि हैं वे दोनोंको फल देते हैं । अथवा समस्तफल पुरुषोंको कहना । और अष्टम स्थानसे स्त्रियोंके भर्ताकी मृत्युका विचार और स्त्रियोंके लग्न तथा चन्द्रराशिसे शरीरका आकार और सप्तमस्थानसे सौभाग्य और पतिके रूपादिकका विचार करना चाहिये, ये सब आगे कहे जायँगे ॥ १ ॥ (वसन्ततिलका)

समराशिस्थ चन्द्रसे स्त्रीका रूप ।

युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री
सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च ।
ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता
पापा च पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना ॥ २ ॥

जिस स्त्रीके लग्न और चन्द्रमा समराशिके हों वह स्त्रियोंमें मृदु स्वभाववाली होगी । और लग्न चन्द्रमा शुभग्रहोंसे दृष्टभी हों तो अच्छे चरित और भूषणोंसे भी युक्त रहेगी । जिसके लग्न चन्द्रमा विषमराशिमें हो तो पुरुषकासा आकार और स्वभाव होगा। उनपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो अथवा पापग्रह युक्त हो तो पापी स्वभाव और सर्वगुणरहित होगी । कोई शुभ देनेवाला कोई अशुभ देनेवाला जहां दोनों हों वहां मध्यम फल होगा ॥ २
(वसंततिलका)

कन्यामेंही दासी होना आदियोग।

कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वी समाया कुचरित्रयुक्ता।
भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंऽशकेषु वक्रार्किजीवेन्दुजभार्गवानाम् ॥ ३ ॥

जिसके लग्न वा चन्द्रमा मङ्गलकी राशि १ । ८ में हो और वह मङ्गलके त्रिंशांशकमें भी हो तो विना विवाह पुरुषसङ्गम करे । शनिके त्रिंशांशकमें हो तो विनाही विवाही दासी होवे, बृहस्पति त्रिंशांशकमें हो तो पतिव्रता होवे, बुधके त्रिंशांशमें हो तो मायावाली होवे, शुक्रके त्रिंशांशमें हो तो दुष्ट काम करे ॥ ३ ॥

कन्याका दुःख भावादि योग।

दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुरपूजितर्क्षे।
स्यात्कापटी क्लीवसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ॥४॥

जिसका लग्न वा चन्द्रमा शुक्र क्षेत्र २ । ७ का हो और भौम त्रिंशांशकमें हो तो वह स्त्री दुष्टस्वभावकी होगी, शनि त्रिंशांशमें होतो एक भर्ताके जीवित ही दूसरा भर्त्ता करे, बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो गीत वादित्र, नाच, चित्र, कारीगरीके काम जाने । शुक्र त्रिंशांशमें हो तो गुण शीलादिसे ख्यात होवै । जो लग्न वा चन्द्रमा बुध क्षेत्र ३ । ६ का हो और मङ्गलका त्रिंशांश हो तो कपटी होवै, शनिके त्रिंशांशकमें हो तो हिजडेकी ऐसी सूरत होवै, बृहस्पतिके त्रिंशांशमें हो तो पतिव्रता होवै, बुध त्रिंशांशमें हो तो गुणवती और शुक्र त्रिंशांशमें व्यभिचारिणी होवै ॥४॥ (इन्द्रवज्रा)

व्यभिचारिणी आदि योग।

स्वच्छन्दा पतिघातिनी बहुगुणा शिल्पिन्यसाध्वीन्दुभे
त्राचारा कुलटार्कभे नृपवधूः पुंश्चेष्टिताऽगम्यगा।
जैवे नैकगुणाल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्तासती
दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टाप्रजा स्वांशकैः ॥ ५ ॥

कर्कका चन्द्रमा वा कर्क लग्न मङ्गलके त्रिंशांशमें हो तो (स्वच्छन्दा) अपने मनका व्यवहार करे किसीकी न माने, शनिके त्रिंशांशमें पतिको

नेवाली बृहस्पतिके त्रिंशांशमें बहुगुणवती, बुधत्रिंशांशमें शिल्प कर्म जाननेवाली, शुक्रत्रिंशांशमें बुरे कर्म करनेवाली होवै। और सिंहका चन्द्रमा वा सिंहलग्न मङ्गलके त्रिंशांशमें हो तो पुरुषके समान आचरण करै, शनिके त्रिंशांशमें कुलटा (व्यभिचारिणी), बृहस्पतिके त्रिंशांशमें राजाकी स्त्री होवै, बुधके त्रिंशांशमें पुरुषोंके स्वभाववाली, शुक्रत्रिंशांशमें अगम्य पुरुषोंके गमन करनेवाली होवै। और लग्न वा चन्द्रमा बृहस्पतिके क्षेत्र ९। १२ में हो और मङ्गलके त्रिंशांशमें हो तो बहुत गुणवती, शनिके त्रिंशांशमें (अल्परति) थोडा संगममें मदजल छोडनेवाली बृहस्पतिमें बहुगुणा; बुधके त्रिंशांशमे विज्ञानयुक्त, शुक्रके त्रिंशांशमें पतिव्रता न होवै और शनी क्षेत्र १० । ११ का लग्न वा चन्द्रमा मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दासी होवै, शनिके त्रिंशांशमें नीचपुरुषसे गमन करनेवाली, बृहस्पतिके त्रिंशांशमें अपने भर्त्तामें आसक्त रहनेवाली, बुधकेमें दुष्टस्वभाव, शुक्रकेमें (बांझ) अपुत्रा होवै ॥ ५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

शशिलग्नसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ।
बलाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिन्तयेत् ॥ ६ ॥

प्रतिराशिमें लग्न चन्द्रमाके त्रिंशांशफल कहे गये हैं । अब लग्न और चन्द्रमा इन दोनोंमेंसे जो बलवान् हो उसके त्रिंशांशका फल ठीक होगा, हीन बलीका फल नहीं होगा ॥ ६ ॥ (अनुष्टुप्)

अतिकामातुरादि योग ।

दृक्संस्थावसितसितौ परस्परांशे
शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवोंशः ।
स्त्रीभिः स्त्री मदनविषानलं प्रदीप्तं
संशान्ति नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥ ७ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र शनिके अंशकका और शनि शुक्रके अंशकका हो और दोनोंकी परस्पर दृष्टि भी हो तो वह स्त्री अति कामातुर होवे यहांतक

कि, चमडे वा कुछ वस्तुका लिङ्ग बनाकर दूसरी स्त्रीके हाथसे कामदेव रूपी विषाग्निको शमित करावे। और वृष वा तुला लग्न हो और तत्काल कुम्भ नवांश हो तो भी उसी योगका फल होगा ॥ ७ ॥ (प्रहर्षिणी)

कापुरुषभर्ता आदि प्राप्तियोग ।

शून्ये कापुरुषोऽबलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते
क्लीबोऽस्ते बुधमन्दयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः ।
उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति ॥ ८ ॥

जिसके लग्न वा चन्द्रमासे सप्तमभावमें कोई भी ग्रह न हो सप्तम भाव निर्बल हो और शुभग्रहोंकी दृष्टि सप्तमभावपर न हो तो उसके भर्त्ता कापुरुष अर्थात् निन्द्य होवे। अथवा लग्न वा चन्द्रमासे सप्तम बुध वा शनि हो तो उसका भर्त्ता नपुंसक हो। जिसके लग्न वा चन्द्रमासे सप्तममें चरराशि हो तो उसका भर्त्ता नित्य परदेशमें रहेगा, ऐसेही स्थिर राशि हो तो नित्य घर रहे, द्विस्वभाव हो तो कुछ घर रहे कुछ प्रवासी रहे। जिसके लग्न वा चन्द्रसे सूर्य सप्तम हो तो उसको पति त्याग करे, जिसके मंगल हो और उसे पापग्रह भी देखें तो बाल्यावस्थामें विधवा होवे, जिसके शनि हो और पापदृष्ट हो तो कन्याही बूढी होवे विवाह न करावे। शुभदृष्ट होनेमें बडी उमरमें विवाह होवे, इतने सब फल लग्न वा चन्द्रमा जो बलवान् हो उससे कहना ॥ ८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

विधवा आदियोग ।

आग्नेयैर्विधवाऽस्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत्
क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता ।
अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताऽङ्गना
द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदाऽनुज्ञया ॥ ९॥

सप्तमस्थानके ग्रहोंके फल प्रत्येकके जुदे कहे हैं, पापग्रह जब सप्तममें बहुत हों तो केवल विधवा फल है, जब पाप और शुभग्रह भी सप्तममें

मिश्रित हों तो पुनर्भू अर्थात् विवाहित पतिको छोडकर औरकी भार्या बनै, जिसका सूर्य वा मंगल शनि सप्तममें हीनबली हो और शुभग्रहसे दृष्ट भी हो तो उसको पति छोड देवै, जिसके जन्ममें शुक्र मंगलके अंशकका और मंगल शुक्रके अंशकका हो तो वह स्त्री पराये पुरुषसे गमन करै । या शुक्र और मंगल चन्द्रमासे युक्त होकर सप्तमस्थानमें स्थित हों तो भर्त्ताकी आज्ञासे पराये पुरुषका गमन करै ॥ ९ ॥

मातके सहित व्यभिचारयोग ।

सौरारक्षे लग्नगे सेन्दुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बन्धकी पापदृष्टे ।
कौजेऽस्तांशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे ॥१०

शनिकी राशि १० । ११ वा मंगलकी राशि १ । ८ का शुक्र चन्द्रमा लग्नमें हो और उनपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो तो वह स्त्री उसकी माता भी दोनों (व्यभिचारिणी) परपुरुषगमन करनेवाली होवै । जिसके सप्तम स्थानमें तत्काल स्पष्टमें मंगलका नवांश हो और सप्तम भाव पर शनिकी दृष्टि हो तो उसके भगमें रोग रहै, ऐसेही शुभग्रहका अंशक सप्तममें हो तो सुन्दर भगवाली होवै ॥ १० ॥

बूढा पतिकी प्राप्ति योग ।

वृद्धो मूर्खः सूर्यजर्क्षांशके वा स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेये ।
शौक्रे कान्तोऽतीव सौभाग्ययुक्तो विद्वान्भर्त्ता नैपुणज्ञश्च बौधे॥११॥

जिसके जन्ममें सप्तमस्थानमें शनिका अंशक वा राशि हो तो उसका भर्त्ता बूढा और मूर्ख होगा । जिसके मङ्गलका अंश वा राशि सप्तममें हो उसका भर्ता स्त्रियोंकी अति इच्छा करनेवाला और क्रोधी भी होगा । ऐसेही शुक्रके राशि अंश होनेमें भर्त्ता सुरूप गुणवान् होवै । बुधकी राशि अंशमें भर्त्ता पण्डित और सब काम जाननेवाला होवै ॥११॥ (शालिनी)

कामातुर भर्ता आदियोग ।

मदनवशगतो मृदुश्च चान्द्रे त्रिदशगुरौ गुणवान् जितेन्द्रियश्च ।
अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सौर्ये भवति गृहेऽस्तभयस्थितेंऽशके वा ॥१२॥

जिसके सप्तमभावमें चन्द्रमाकी राशि वा अंशक हो तो उसका भर्ता कामातुर और कोमल होगा ऐसेही बृहस्पतिके राशि वा अंशक होनेमें गुणवान् और जितेन्द्रिय तेजस्वी होगा। सूर्यके राशि वा अंशक होनेमे अतिमृदु कोमल और अतिव्यवहार कर्म करनेवाला होगा। जहां राशि और अंशमें भेद हो वहां जो बली हो उसका फल कहना॥ १२ ॥ (पुष्पिताग्रा

ईर्षावत्यादि योग।

ईर्ष्यान्विता सुखपरा शशिशुक्रलग्ने
ज्ञेन्द्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या।
शुक्रज्ञयोस्तु रुचिरा सुभगा कलाज्ञा
त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ १३ ॥

जिसके जन्म लग्नमें चन्द्रमा शुक्र दोनों हों तो वह स्त्री ईर्ष्यावती (पराई रिस उँचाई न सहनेवाली) होगी, सुखमें भी आसक्त रहैगी। बुध चन्द्रमा ये दोनों लग्नमें हों तो अनेक कला जाननेवाली, सुखी और गुणवती भी होगी। शुक्र बुध लग्नमें हों तो सुरूप और सौभाग्ययुक्त (पति प्यारी) होगी और कलाओंको जाननेवाली होगी। जिसके चन्द्रमा बुध, शुक्र तीनों लग्नमें हों तो अनेक प्रकारके धन सुख और गुणोंसे युक्त होगी, ऐसाही बुध गुरु शुक्रका भी जानना ॥ १३ ॥ (वसंततिलका)

पूर्वोक्त योगोंकी प्राप्तिके समय।

क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरांशे
यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा।
सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः
कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दौ ॥ १४ ॥

जो पहिले अष्टमस्थानसे भर्तृ मरण कहा है वहऐसा है कि, जिसका पापग्रह अष्टमस्थानमें हों वह जिसके नवांशकमें है उसकी दशा वा अन्तर्दशामें विधवा होगी, अथवा (एक द्वौ नवविंशतिः) ग्रहोंकी अवस्थामें विवाहसे उपरान्त उतने वर्षमें भर्ता मरैगा। जिसके अष्टम पापग्रह हों और दूसरे भावमें शुभ ग्रह भी हों तो वह भर्तासे पहिले आप मरैगी।

जिसका चन्द्रमा जन्ममें वृश्चिक वा वृष वा सिंहका हो उसके पुत्र थोडे होंगे ॥ १४ ॥ (वसंततिलका)

बहु पुरुषवाली तथा ब्रह्मवादिनीका योग ।

सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमः ।
जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे
विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि १५॥

जिसका शनि मध्यम बली हो और चन्द्रमा, शुक्र, बुध निर्बल हों और सूर्य, मङ्गल बलवान् हों और विषमराशि लग्नमें हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषोंमें गमन करनेवाली होवे । जो बृहस्पति, मङ्गल, शुक्र, बुध बलवान् हों और समराशि लग्नमें हो तो सर्वत्र गुणोंसे विख्यात और शास्त्र जाननेवाली और मुक्तिमार्ग जाननेवाली होवे ॥१५॥ (शार्दूलविक्रीडित)

संन्यासिनीका योग ।

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन ।
उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिन्तायामपि सकलं विधेयमेतत् ॥१६

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके स्त्रीजातका-
ध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

पाहिले सप्तम स्थानके पापग्रहोंका पृथक् फल कहा गया है । जो सप्तममें पाप ग्रह हो और नवममें भी कोई ग्रह हो तो वह स्त्री पूर्वोक्त फलको छोडकर निस्सन्देह फकीरनी होवेगी । वह फकीरी भी नवम स्थानवाले ग्रहके अनुसार पूर्वोक्त प्रव्रज्याध्यायवाली कहना । इस स्त्रीजातकाध्यायमें जो कहा गया है वह विवाह समयमें (वरण) वाग्दान अर्थात् सगाईके समयमें और कन्यादानके समयमें और प्रश्नकालमें ऐसेही योग विचारने । और जगह स्त्रीजातकोंमें बहुत विचार कहे हैं । यहां ग्रन्थ बढनेके कारण सूक्ष्म कहा है ॥ १६ ॥ (प्रहर्षिणी)

इति श्रीमहीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां-
स्त्रीजातकाऽध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

नैर्याणिकाध्यायः २५.

मृत्युर्मृत्युगृहेक्षणेन बलिभिस्तद्धातुकोपोद्भव-
स्तत्संयुक्तभगात्रजो बहुभवो वीर्यान्वितैर्भूरिभिः ।
अग्न्यम्ब्वायुधजो ज्वरामयकृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमे
सूर्याद्यैर्निधने चरादिषु परस्वाऽध्वप्रदेशेष्विति ॥ १ ॥

जिसका अष्टमभाव शून्य हो जो बलवान् ग्रह अष्टमभावको देखे उस ग्रहके धातुकोपसे मृत्यु होवे, धातु सूर्यका पित्त, चन्द्रमाका वात कफ, मंगलका पित्त, बुधका वात पित्त श्लेष्म, बृहस्पतिका कफ, शुक्रका वात कफ, शनिका वात ये हैं और अष्टममें जो राशि है वह कालांगमें जहां कहीं हो उसी अंगमें पूर्वोक्त धातुका विकार होगा । जो बहुत ग्रह बलवान् हों और अष्टमको देखें तो सभी धातु अर्थात् बहुत रोग एक बार उत्पन्न होंगे । जो अष्टम स्थानमें सूर्यादि ग्रह हों तो क्रमसे सूर्यका अग्नि, चन्द्रमाका जल, मंगलका शस्त्र, बुधका ज्वर, बृहस्पतिका पेटका रोग, शुक्रका तृषा (तृशर्की), शनिका क्षुधा, इसमें जो ग्रह अष्टम है उसके हेतुसे मृत्यु होगी । इसमें भी विचार है कि वह ग्रह बलवान् हो तो शुभ कर्मसे वह हेतु होगा, बलहीन हो तो अशुभ कर्मसे और जिसके अष्टम स्थानमें चरराशि हो उसकी मृत्यु परदेशमें होगी, स्थिरराशि हो तो स्वदेशमें द्विस्वभावराशि हो तो मार्गमें मृत्यु होगी ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

पत्थर आदिसे मरण ।

शैलाग्राभिहतस्य सूर्यकुजयोर्मृत्युः खबन्धुस्थयोः ।
कूपे मन्दशशाङ्कभूमितनयैर्बन्ध्वस्तकर्मस्थितैः
कन्यायां स्वजनाद्धिमोष्णकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः
स्यातां यद्युभयोदयेऽर्कशशिनौ तोये तदा मज्जितः ॥ २ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य मंगल दशम और चतुर्थ स्थानमें हो अर्थात् एक दशम एक चतुर्थमें हो तो पत्थरकी चोट लगनेसे उसकी मृत्यु होवे और

शनि, चन्द्रमा, मंगल अलग अलग सप्तम चतुर्थ और दशममें हों जैसे शनि चौथा, चन्द्रमा सप्तम, मंगल दशम हों तो कुवेमें गिरके मरे और सूर्य चन्द्रमा, कन्या राशिके हों और पापग्रह उन्हें देखें तो अपने मनुष्यके हाथसे मृत्यु पावै । जो द्विस्वभाव राशि लग्नमें हो और सूर्य चन्द्रमा उसमें हो तो जलमें डूबकर मरे ॥ २ ॥

अन्यमरणयोगज्ञान ।

मन्दे कर्कटगे जलोदरकृतो मृत्युर्मृगाङ्के मृगे
शस्त्राग्निप्रभवः शशिन्यशुभयोर्मध्ये कुजर्क्षे स्थिते ।
कन्यायां रुधिरोत्थशोषजनितस्तद्वत्स्थिते शीतगौ
सौरर्क्षे यदि तद्वदेव हिमगौ रज्ज्वग्निपातैः कृतः ॥ ३ ॥

जिसके जन्ममें शनि कर्कका और चन्द्रमा मकरका हो तो जलोदर (पाण्डुरोग) से मृत्यु होवे और चन्द्रमा मङ्गलके घरका १ । ८ हो और पापग्रहोंके बीचका हो तो शस्त्रसे वा अग्निसे मृत्यु होवे । जिसका चन्द्रमा कन्याका पापग्रहोंके बीच हो तो रुधिरविकारसे मृत्यु होवे अथवा शोष-रोगसे । जिसका चन्द्रमा शनिकी राशि १० । ११ का पापोंके बीच हो तो (रस्सी) फांसी आदिसे वा आगमें गिरनेसे मृत्यु होवै ॥ ३ ॥

बन्धाद्धीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयो-
र्द्रेष्काणैश्च ससर्पपाशनिगडैश्छिद्रस्थितैर्बन्धतः ।
कन्यायामशुभान्विते ऽस्तमयगे चन्द्रे सिते मेषगे
सूर्ये लग्नगते च विद्धि मरणं स्त्रीहेतुकं मन्दिरे ॥ ४ ॥

जिसके पञ्चम नवम पापग्रह हों और उन्हें शुभग्रह न देखें तो बन्धनसे मृत्यु होवे और जन्म लग्नसे अष्टममें तत्काल जो सर्प पाश वा निगड द्रेष्काण हो तो भी बन्धनसे मरेगा । ये द्रेष्काण कर्कटका प्रथम, वृषका दूसरा, कन्याका तीसरा कहते हैं । जिसके कन्याका चन्द्रमा सप्तम पाप-युक्त है और शुक्र मेषका और सूर्य लग्नमें हो तो स्त्रीके निमित्त घरके भीतर मरे ॥ ४ ॥

शूलोद्भिन्नतनुः सुखेऽवनिसुते सूर्येऽपि वा खे यमे
सप्रक्षीणहिमांशुभिश्च युगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः ।
बन्धुस्थे च रवौ वियत्यवनिजे क्षीणेन्दुसंवीक्षिते
काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं सूर्यात्मजेनेक्षिते ॥ ५ ॥

जिसके चतुर्थ स्थानमें सूर्य वा मंगल और दशममें शनि हो तो शूलसे मरे। पापग्रह और क्षीणचन्द्रमा नवम पञ्चम और लग्नमें हो तो भी शूलसे मरे और जो सूर्य चतुर्थ, मंगल दशम हो उसे क्षीण चन्द्रमा देखै तो भी शूलसे मरे, जो सूर्य चौथा, मङ्गल दशम हो और शनिकी दृष्टि उसपर हो तो काष्ठके चोटसे मरे ॥ ५ ॥ (शार्दूलविक्रीडित १–५)

रन्ध्रास्पदाङ्गहिबुकैर्लगुडाहताङ्गः
प्रक्षीणचन्द्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तैः ।
तैरेव कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थै-
र्धूमाग्निबन्धनशरीरनिकुट्टनान्तः ॥ ६ ॥

जिसका क्षीणचन्द्रमा अष्टम और मंगल दशम और शनि लग्नका और सूर्य चौथा हो तो लाठीसे मरे और क्षीणचन्द्रमा दशम, मंगल नवम, शनि लग्नका, सूर्य पञ्चम हो तो अग्निके धुआँमें बन्द होनेसे, वा काष्ठसे शरीर कूटजानेसे मरे ॥ ६ ॥ (वसन्ततिलका)

बन्ध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमन्दै-
र्निर्याणमायुधशिखिक्षितिपालकोपात् ।
सौरेन्दुभूमितनयैः स्वसुखास्पदस्थै-
र्ज्ञेयः क्षतक्रिमिकृतश्च शरीरपातः ॥ ७ ॥

जिसके मंगल चतुर्थ, सूर्य सप्तम, शनि दशम हो तो (शस्त्र खङ्गादिसे वा अग्निसे वा राजाके कोपसे मृत्यु होवै । जो शनि दूसरा, चन्द्रमा चौथा, मंगल दशम हो तो शरीरमें कीड़े पड़नेसे मरे ॥ ७ ॥ (वसन्ततिलका)

स्वस्थेऽर्केऽवनिजे रसातलगते यानप्रपाताद्वधो
यन्त्रोत्पीडनजः कुजेऽस्तमयगे सौरेन्द्विनाभ्युद्गमे ।
विण्मध्ये रुधिरार्किशीतकिरणैर्जूकाजसौरक्षगै-
र्याते वा गलितेन्दुसूर्यरुधिरैर्व्योमास्तबंध्वाह्वयान् ॥ ८ ॥

जिसके सूर्य दशम, चौथा हो तो वह सवारीसे गिरके मरैगा। जिसके मंगल सप्तम और शनि, चन्द्रमा, सूर्य लग्नमें हों वह यन्त्रमें पीसे जानेसे मरे। यन्त्र—कोल्हू, चक्र, अंजन आदि जानना। कोई "क्षीणेन्द्विना०" यह पाठ मानकर इस योगमे शनिके जगह क्षीणचन्द्रमा कहते हैं। जो तुलाका मंगल, मेषका शनि और मकर वा कुम्भका चन्द्रमा हो तो विष्ठामें मृत्यु होवैं। जो क्षीण चन्द्रमा दशम, सूर्य सप्तम और मंगल चौथा हो तो भी विष्ठामें मृत्यु होवै ॥ ८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

वीर्यान्वितवक्रवीक्षिते क्षीणेन्दौ निधनस्थितेऽर्कजे ।
गुह्योद्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात्कृमिशस्त्रदाहजः ॥ ९ ॥

जो क्षीण चन्द्रमाको बलवान् मङ्गल देखे और शनि अष्टम हो तो गुह्य-स्थानके रोग बवासीर, फिरंग, भगन्दरादिसे मृत्यु होवै अथवा कीडे पडनेसे वा शस्त्रसे वा अग्निघात (दाह) आदिसे मृत्यु होवैं ॥ ९ ॥ (वैतालीय)

अस्ते रवौ सरुधिरे निधनेऽर्कपुत्रे
क्षीणे रसातलगते हिमगौ खगान्तः ।
लग्नात्मजाष्टमतपःस्विनभौममन्द-
चन्द्रैस्तु शैलशिखराशनिकुड्यपातैः ॥ १० ॥

जिसका सूर्य सप्तम मङ्गलसहित और अष्टम शनि, चौथा क्षीण चन्द्रमा हो उसकी मृत्यु पक्षीसे होवै और लग्नका सूर्य, पञ्चम मङ्गल, अष्टम शनि, नवम चन्द्रमा हो तो पर्वतके शिखरसे गिरके मरे अथवा वज्रसे अथवा दीवालके गिरनेमें दबके मरे ॥ १० ॥ (वसन्ततिलका)

अष्टम स्थानसे मृत्युज्ञान ।

द्वाविंशः कथितस्तु कारणं द्रेष्काणो निधनस्य सूरिभिः ।
तस्याधिपतिर्भपोपि वा निर्याणं स्वगुणैः प्रयच्छति ॥ ११ ॥

जिसके जन्ममें इतने योगोंमेंसे कोईभी न हो और अष्टम स्थानमें कोई ग्रह न हो और अष्टममें किसीकी दृष्टिभी न हो तो उसकी मृत्यु कहते हैं कि, जिस द्रेष्काणमें जन्म भया है उससे बाईसवां द्रेष्काण मृत्युका कारण है कि उसका स्वामी अपने उक्त दोषसे'अग्न्यम्म्बायुधज० ' इत्यादिसे मृत्यु देगा अथवा उस बाईसवें द्रेष्काणकी राशिका स्वामी उक्त दोषसे मारेगा। यह २२ वां द्रेष्काण लग्नसे अष्टम राशिमें होता है इस हेतु अष्टमेशही अपने उक्तदोषसे मृत्यु देता है इन दोनोंमें बली फल देगा ॥ ११ ॥ (वैतालीय

मृत्युस्थानका ज्ञान ।

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौ
योगेक्षणादिभिरतः परिकल्प्यमेतत् ।
मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः
स्वेशेक्षिते द्विगुणतस्त्रिगुणः शुभैश्च ॥ १२ ॥

जन्ममें तत्काल लग्नका जो नवांश है उसका स्वामी जिस राशिमें है उसके योग्य भूमिमें मृत्यु होगी । जैसे मेषमें भेड बकरीके स्थानमें, वृषमें गौ बैलके स्थानमें, मिथुनमें और कुम्भमें घरमें, कर्क और कन्यामें कुँवामें सिंहमें जंगलमें तुलामें दुकानमें, वृश्चिकमें छिद्रादिमें, धनमें घोडेके स्थानमें, मकर, कुम्भ, मीनमें अनूप भूमिमें. इसमेंभी नवांश राशीशका बल देखना चाहिये और नवांश राशीशके साथ कोई बली ग्रह हो तो उसीके सदृश भूमि मिलेगी । जहां बहुत भूमिकी प्राप्ति है वहां जिसका बल अधिक हो उसकी भूमि कहना । ग्रहभूमि मूल त्रिकोणराशिकी भूमि जाननी। कोई (देवाम्ब्वग्निविहारकोशशयनक्षिति) सूर्यका देवस्थान, चन्द्रमाका जल-स्थान, मंगलका अग्निस्थान, बुधका विहारस्थान, गुरुका भण्डार, शुक्रका शयनस्थान, शनिकी ऊपर भूमि स्थान कहे हैं । जितने नवांश जन्म लग्नमें

भोगनेको बाकी रहे हैं उनके भोगनेका जितना काल है उतना काल मरण समयमें मोह अर्थात् बेहोशी रहेगी । जो लग्नमें लग्नेशकी दृष्टि हो वह काल द्विगुण और शुभ ग्रह देखे तो त्रिगुण दोनों देखें तो छः गुण कहना ॥ १२ ॥ (वसन्ततिलका)

मृतकके शरीरका परिणाम ।

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशोषै-
र्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गैर्विडम्बः ।
इति शवपरिणामश्चिन्तनीयो यथोक्तः
पृथुविरचितशास्त्राद्गत्यनूकादि चिंत्यम् ॥ १३ ॥

मरेमें उस शरीरकी क्या दशा होगी ? इसवास्ते कहते हैं कि, अष्टम स्थानमें तत्काल द्रेष्काण जो है वही लग्नसे २२ वां हो वह अग्नि द्रेष्काण हो तो उस प्रेतका शरीर भस्म होगा । अग्निद्रेष्काण पापग्रह द्रेष्काणको कहते हैं । जो जल द्रेष्काण अर्थात् शुभग्रह द्रेष्काण हो तो जलमें बहाया जावे । जो मिश्र हो अर्थात् शुभद्रेष्काण पापयुक्त वा पापद्रेष्काण शुभ युक्त हो तो कहीं ऊपर भूमिमें सूखेगा । जो सर्प द्रेष्काण कर्क वृश्चिकका पहिला और दूसरा, मीनका अन्त्य होवे तो उस शरीरको कुत्ते कौवे स्यार चील आदि खावेंगे और उपरान्तको गति भी नहीं होगी । यह सब वराह-मिहिराचार्यके पुत्र पृथुयशा नामक ज्योतिर्विद्के बनाये हुये ज्योतिर्ग्रन्थसे विचार करना ॥ १३ ॥ (मालिनी)

पूर्वजन्म परिज्ञान ।

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ
विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः ।
दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितत्र्यंशनाथात्
प्रवरसमनिकृष्टास्तुङ्गह्रासादनूके ॥ १४ ॥

सूर्य चन्द्रमामेंसे जो बलवान् हैं वह बृहस्पतिके द्रेष्काणका हो तो वह देवलोकसे आया अर्थात् पहिले देवलोकमें था । जो वह चन्द्रमा वा

शुक्रके द्रेष्काणका हो तो पितृलोकसे और सूर्य वा मंगलके द्रेष्काणका हो तो तिर्यक् योनिसे आया । जो शनि वा बुधके द्रेष्काणका हो तो नरकसे आया । इसमें भी विचार है कि, वह ग्रह उच्चका हो तो पूर्व पठित योनियोंमें भी उत्तम होगा, उच्चसे उतरा हो तो मध्यम और नीचका हो तो अधम होगा ॥ १४ ॥

भविष्यजन्म ज्ञान ।

गतिरपि रिपुरन्ध्रद्व्यंशपोऽस्तस्थितो वा
गुरुरथ रिपुकेन्द्रच्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थः ।
उदयति भवनेऽन्त्ये सौम्यभागे च मोक्षो
भवति यदि बलेन प्रोज्झितास्तत्र शेषाः ॥ १५ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके नैर्याणिकाध्यायः पञ्चविंशः ॥ २५ ॥

जिसका छठा सातवां आठवां भाव ग्रहरहित हो तो तत्कालमें छठे और आठवें स्थानमें जिसका द्रेष्काण हो उसमें जो बली हो उसकी गति पूर्व कही है वही मरेमें भी होगी । जो छठे वा सातवें वा आठवें स्थानमें कोई ग्रह हो तो उसकी उक्त गति मिलेगी । जो सभी जगह ग्रह हो तो उनमें जो बलवान् है उसकी गति मिलेगी । बृहस्पति छठा, वा केन्द्र, वा अष्टम हो और कर्कका हो तो एक योग । अथवा मीनका बृहस्पति लग्नमें हो और शुभग्रहके अंशमें हो और शेष ग्रह बलरहित हों तो दूसरा योग है। जिसके ये योग हों तो उसका मरने उपरान्त मोक्ष होगा ऐसा कहना । जैसे जन्ममें पूर्व गति कही गई है वैसीही मरनेमें भी आगेकी गति जाननी ॥ १५॥ (मालिनी)

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां नैर्याणिकाऽध्यायः ॥ २५ ॥

नष्टजातकाध्यायः २६.

प्रसूतिकाल ज्ञान ।

आधानजन्मापरिबोधकाले सम्पृच्छतो जन्म वदेद्विलग्नात् ।
पूर्वापरार्द्धे भवनस्य विन्द्याद्भानावुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम् ॥ १ ॥

अब प्रश्नसे जन्मपत्री बनानेकी रीति कहते हैं कि, जिसका आधान समय और जन्म समय मालूम न हो तो प्रश्न लग्नसे जन्म समय कहना प्रश्न लग्न जो पूर्वार्द्ध (१५ अंश) के भीतर हो तो उत्तरायण और उत्तरार्द्ध (१५ अंशसे उपरान्त) हो तो दक्षिणायनमें जन्म हुवा कहना ॥ १ ॥

वर्ष और ऋतुका ज्ञान ।

लग्नत्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्य वर्षाणि वयोऽनुमानात् ।
ग्रीष्मोऽर्कलग्ने कथितास्तु शेषैरन्यायनर्तावृतुरर्कचारात् ॥ २ ॥

जो प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काण हो तो जो लग्न है उसी राशिके बृहस्पतिमें जन्म हुआ । जो दूसरा द्रेष्काण हो तो उस लग्नसे पाँचवाँ जो राशि है जन्ममें उसी राशिका बृहस्पति होगा । जो प्रश्नलग्नमें तीसरा द्रेष्काण हो तो जो उस लग्नसे नवम राशि है उसके बृहस्पतिमें जन्म कहना । इस प्रकार बृहस्पतिके निश्चय हुयेमें संवत्प्रमाण हो जाता है कि, बृहस्पति प्रति राशिमें एक वर्ष चलता है, प्रश्न कर्त्ताकी उमर देख कर १२ से वा २४ से, वा ३६ से, ४८ से वा ६० से, वा ७२ से, भीतरका संवत् जिसमें उस राशि पर बृहस्पति है वह साल जानना । दूसरा ये है कि, लग्नमें प्रथम द्वादशांश हो तो लग्न राशिके बृहस्पतिमें जन्म, दूसरा द्वादशांश हो तो द्वितीयस्थ राशिके बृहस्पतिमें इसी प्रकार जितने द्वादशांश तत्कालमें हों उतने भाव सम्बन्धी राशिके बृहस्पतिमें जन्म कहना, यहां १२ । १२ वर्ष विकल्प कहा है । जहां इसमें भी भ्रान्ति हों तो पुरुषलक्षणसे वर्ष विभाग जानना । वह यह है—

"पादौ सगुल्फौ प्रथमं प्रदिष्टं जङ्घे द्वितीये तु सजानुचक्रे।
मेढ्रोरुमुष्काश्च ततस्तृतीयं नाभिं कटिं चेति चतुर्थमाहुः ॥ ३ ॥
उदरं कथयन्ति पञ्चमं हृदयं षष्ठमथ स्तनान्वितः।
अथ सप्तममंसजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्ठकन्धरे ॥ ४ ॥
नवमं नयने च साश्रुणी सललाटं दशमं शिरस्तथा।
अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणाद्येषु शुभेषु शोभनम् ॥ ५ ॥"

प्रश्नसमयमें पूछनेवालेका हाथ जिस अङ्ग पर लगा हो उसके प्रमाण वर्ष बारहवर्षके भीतर कहना। जैसे—पैरोंमें १ वर्ष, जंघामें २ वर्ष इत्यादि जिसके परमायु १२० वर्षसे अधिक ऊमर हो उसका नष्ट जन्मपत्री कर्म भी नहीं है। प्रश्न लग्नमें सूर्य हो तो ग्रीष्म ऋतुमें और शनि हो तो शिशिर ऋतु, शुक्र हो तो वसन्त, मङ्गल हो तो ग्रीष्म, चन्द्रमा हो तो वर्षा, बृहस्पति हो तो हेमन्तमें जन्म और इन ग्रहोंके द्रेष्काण लग्नमें हो तौभी यथोक्त ऋतु जानना। जो लग्नमें बहुत ग्रह हों तो उनमेंसे जो बलवान् हो उसकी ऋतु कहना। जो लग्नमें कोई भी ग्रह न हो तो जिसका द्रेष्काण लग्नमें हो उसकी ऋतु कहना। अयन और ऋतुमें फर्क हो जैसा अयन तो उत्तरायण लग्न पूर्वार्द्ध होनेसे पाया और लग्नमें बृहस्पति हो तो हेमन्त ऋतु पाई तो उत्तरायणमें हेमन्त ऋतु असम्भव है। ऐसा विक्षेप जहां पडे वहाँ अगले श्लोकमें निश्चय कहा है। ऋतु सौरमानसे जानना ॥ २ ॥ (उपजाति)

अयनविपरीतमें ऋतु मासका परिज्ञान।

चन्द्रज्ञजीवाः परिवर्त्तनीयाः शुक्रारमन्दैरयने विलोमे।
द्रेष्काणभागे प्रथमे तु पूर्वो मासोऽनुपाताच तिथिर्विकल्प्यः ३ ॥

जहां ऋतु और अयनका व्यत्यास हो तो चन्द्रमाके ऋतुमें शुक्रकी, बुधमें मङ्गलकी, बृहस्पतिमें शनिकी ऋतु कहनी। जैसे उत्तरायण आया और ऋतु वर्षा आई तो वसन्त कहना। ऐसेही शरदके स्थानमे ग्रीष्म, हेमंतके स्थानमें शिशिर कहना। दक्षिणायन हो तो यही ऋतु पूर्वोक्त

क्रमसे परिवर्त्तन करना । महीनेके लिये प्रश्नमें तत्काल प्रथमद्रेष्काण हो तो ज्ञातऋतुका प्रथम मास दूसरा द्रेष्काण हो तो दूसरा मास, तीसरा द्रेष्काण हो तो उसके दो भाग करने, प्रथम भागमें एक दूसरमेंदूसरा महीना जानना जिस द्रेष्काणके पक्षमें वह भाग है उसके प्रकारोक्त महीना कहना । महीना भी सौर मानसे लेना । अब तिथिके लिये अनुपात त्रैराशिक है कि, १० अंशका एक द्रेष्काण हुआ । ६०० कला १० अंशकी हुई । इतनी कलामें ३० तिथि होती हैं तो तत्काल द्रेष्काणमें क्या ? तत्काल द्रेष्काण कलाको ३० से गुण कर ६०० कलाके भाग देनेसे जन्म तिथि मिलेगी। यहां भी सौरमान है । तिथिके जगह सूर्यके अंश जानना । चान्द्रमानतिथि अगले श्लोकमें हैं ॥ ३ ॥ (इन्द्रवज्रा ३–८)

चन्द्रमाकी तिथि जाननेका उपाय।

अत्रापि होरापटवो द्विजेन्द्राः
सूर्यांशतुल्यां तिथिमुद्दिशन्ति ।
रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्म-
भागैश्च वेलाः क्रमशो विकल्प्याः ॥ ४ ॥

यहां भी होराशास्त्रके जाननेवाले मुनिश्रेष्ठ सूर्यके अंश तुल्य शुक्लादि तिथि कहते है । दिन रात्रि जन्मके लिये तत्काल प्रश्न लग्न जो दिवा बली हो तो रात्रिका जन्म और वह रात्रिबली हो तो दिनका जन्म कहना । सूर्यके स्पष्ट होनेसे दिनमान रात्रिमान भी होजाता है । दिवा जन्ममें दिनमानसे, रात्रि जन्ममें रात्रिमानसे तत्काल लग्नके जितने पल भुक्त हुये उनको गुण दिया उपरान्त अपने देशके लग्न खण्डसे भाग लिया तो लब्धि जन्मसमयकी वेला मिलेगी ॥ ४ ॥

लग्नखण्डा काशीके और श्रीनगरके ।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	क०	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
काश्याम्	२००	२४०	२८०	३२०	३६०	४००	४००	३६०	३२०	२८०	२४०	२००
श्रीनगरे	२३२	२८३	३३२	३५२	३४०	३४८	३५३	३४५	३१४	१६०	२१८	२०८

अर्थान्तरसे महीनेका ज्ञान ।

केचिच्छशाङ्काध्युषितान्नवांशा-
च्छुक्लान्तसंज्ञं कथयन्ति मासम् ।
लग्नत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं
भं प्रोच्यतेऽङ्गालभनादिभिर्वा ॥ ५ ॥

किसीका मत कहते हैं कि, चन्द्रमाके नवांशसे महीना कहना. चन्द्रमा नवांशकमें जो नक्षत्र है उस नक्षत्रमें पूर्णचन्द्रमा जिस महीनेमें हो वह जन्म मास कहना। जैसे—मेषके ८ नवांशके ऊपर, वृषके ७ नवांश भीतर चन्द्रमा हो तो कार्तिक महीनेमें जन्म कहना। ऐसेही वृषके ७ नवांश ऊपर, मिथुनके ६ नवांश भीतर मार्गशीर्ष, मिथुनके ६ से, कर्कके ५ भीतर, पौष-कर्कमें५ नवांश ऊपर, सिंहके४ नवांश भीतर माघ,-सिंहके ४ ऊपर कन्याके ७ भीतर फाल्गुण, कन्याके ७ ऊपर, तुलाके ६ भीतर चैत्र, तुलाके ६ ऊपर, वृश्चिकके ५ भीतर वैशाख, वृश्चिकके ५ऊपर, धनके ४भीतर ज्येष्ठ, धनके ४ ऊपर, मकरके ३ भीतर आषाढ मकरके ३ ऊपर, कुम्भके २ भीतर श्रावण,कुम्भके २ ऊपर मीनके ५ भीतर भाद्रपद, मीनके ५ नवांश ऊपर मेषके ६ नवांश भीतर आश्विन महीनेमें जन्म कहना । यह युक्ति उस नक्षत्रमें पूर्णचन्द्रमाके होनेकी है । जैसे—कृत्तिका रोहिणीमें चन्द्रमा नवांशसे हो तो कार्त्तिक, मृगशिर आर्द्रा मार्गशीर्ष, पुनर्वसु पुष्य पौष, आश्लेषा मघा माघ, पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफल्गुनी हस्त फाल्गुन, चित्रा स्वाती चैत्र, विशाखा अनुराधा वैशाख, ज्येष्ठा मूल ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ आषाढ, उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा श्रावण, शतभिषा पूर्वभाद्रपदा उत्तरभाद्रपदा भाद्रपद, रेवती अश्विनी भरणी आश्विन जानना. इसको शुक्लान्त मास कहते हैं कि, कृत्तिकामें पूर्णमासी होनेसे कार्तिक. मृगशिरामें होनेसे मार्गशीर्ष इत्यादि । और प्रश्न समयमें त्रिकोण ९ । ५ भावमेंसे जो राशि बलवान् हो उस राशिके चन्द्रमामें जन्म कहना अथवा प्रश्न पूछनेके समय जिस अङ्गमें उसका हाथ लगा है, उस अङ्गमें कालांगकी जो राशि, शीर्ष मुख बाहु,

वा कंठ दृक् श्रोत्र' इत्यादिसे है उस राशिके चन्द्रमामें जन्म कहना। आदि शब्दसे तत्काल जीव दर्शनसे भी कहीजाँयगी जैसे भेंड बकरी अकस्मात् देखी जावें तो मेष, गौ बैल देखे जानेसे वृषराशि कहना इत्यादि सभीके चिन्ह लक्षण पहिले कहे गये हैं ॥ ५ ॥

प्रकारान्तरसे जन्मेशराशिज्ञान ।

याावान् गतः शीतकरो विलग्ना-
च्चन्द्राद्वदेत्तावति जन्मराशिः ।
मीनोदये मीनयुगं प्रदिष्टं
भक्ष्याह्वताकाररुतैश्च चिन्त्यम् ॥ ६ ॥

प्रश्न लग्नसे जितने स्थानमें चन्द्रमा है उससे उतने ही स्थानमें जो राशि है उसके चन्द्रमामें जन्म कहना, जैसे मेष लग्नसे पञ्चम चन्द्रमा सिंहका है तो उससे भी पञ्चम धनके चन्द्रमामें जन्म कहना। जो प्रश्न लग्नमें १२ मीन राशि हो तो मीनहीका चन्द्रमा जन्ममें कहना। इस प्रकरणमें नक्षत्रविधि २। ३ प्रकार हैं सभी प्रकार एक होनेमें निश्चय कहना। जहां उनका व्यत्यास पडता हो तो लक्षण अतीत भक्ष्य और आकार तथा शब्द इत्यादि शकुनसे निश्चय कहना। जैसे—उस समयमें बिल्ली आदि जीव देखे जावें वा उनका शब्द सुननेमें आवै अथवा तदाकार चिह्न कोई दृष्टिमें आवै तो सिंहका चन्द्रमा कहना। ऐसेही भेड बकरीसे मेष, घोडे ऊंटसे धन इत्यादि, अथवा राशि स्वरूप जो पहिले कहा गया है वह उस पुरुषपर जिस राशिका मिले वह राशि जानना ॥ ६ ॥

जन्म लग्न ज्ञान ।

होरानवांशप्रतिमं विलग्नं लग्नाद्रवियावति च दृकाणे ।
तस्माद्वदेत्तावति वा विलग्नं प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह ॥ ७ ॥

जन्मलग्न जाननेके लिये प्रश्नलग्नमें जिस राशिका नवांशक तत्काल वर्त्तमान है उससे उतनीही संख्याकी जो राशि है वह जन्म लग्न कहना।

जैसे सिंह लग्न ११ । २२ अंश प्रश्न लग्नमें हो तो चौथा नवांश कर्कराशि है । इससे चौथा अर्थात् तुला जन्म लग्न होगा । अथवा दूसरा प्रकार यह है कि, प्रश्नलग्नमें तत्काल वर्तमान द्रेष्काणसे सूर्यका द्रेष्काण वर्तमान जितनी संख्याकी गिनतीमें पडता हो उससे भी उतनेही राशि लग्न जन्म कहना । जैसे १० । २० अंश, लग्नमें दूसरा द्रेष्काण धनमें है । और सूर्य ८ । १८ । ५५ । ५ स्पष्ट है तो सूर्य इनके द्वितीय द्रेष्काण मेषमें हुआ । यह लग्नद्रेष्काणसे १३ वां है । बारहसे ऊपर होनेमें १२ से तष्ट किया शेष रहा सूर्य द्रेष्काणसे गिनकर १ होनेसे वही रहा अर्थात् धनका द्वितीय द्रेष्काण मेष । यह जन्मलग्न हुआ ॥ ७ ॥

प्रकारान्तरसे लग्न लानेका उपाय ।

जन्मादिशेल्लग्नगवीर्ययुगे वा छायाङ्गुलघ्नेऽर्कहृतेऽवशिष्टम् ।
आसीनसुप्तोत्थिततिष्ठताभं जायासुखाज्ञोदयसम्प्रदिष्टम् ॥ ८ ॥

अन्य प्रकारसे जन्मलग्न कहते हैं कि, प्रश्नलग्नमें जितने ग्रह हैं उनका तत्काल स्पष्ट लिप्तापर्यन्त पिण्ड करना । अथवा उनमेंसे जो बलवान् अधिक है उसीका लिप्तापिण्ड करना । और समभूमिमें द्वादशांगुल शंकुकी छाया देखना कितने अंगुल है उन अंगुलोंसे लिप्तापिण्ड गुण देना १२ से तष्ट करके जो शेष रहे वह जन्मलग्न जानना । और प्रकार यह है कि जो प्रश्न पूछनेमें बैठ कर पूछे तो तत्काल लग्नसे सप्तम स्थानमें जो राशि है वह जन्मलग्न कहना । जो पडे २ पूछे तो उस लग्नसे चतुर्थ स्थानकी राशि, जो बिस्तरसे वा भूमिसे उठता हुआ पूछे तो दशम राशि, खडे खडे पूछे तो जो वर्तमान लग्न है वही जन्मलग्न होगा । ऐसें प्रकारसे निश्चय करके १ लग्न कहना ॥ ८ ॥

अन्य प्रकारसे नष्ट जातक ।

गोसिंहौ जितुमाष्टमौ क्रियतुले कन्यामृगौ च क्रमात्
संवर्ग्या दशकाष्टसप्तविषयैः शेषाः स्वसंख्यागुणाः ।

जीवारास्फुजिदैन्दवाः प्रथमवच्छेषा ग्रहाः सौम्यव-
द्राशीनां नियतो विधिर्ग्रहयुतैः कार्या च तद्वर्गणा ॥ ९ ॥

पहिले प्रश्न कालिकलग्नका लिप्तिकापर्यन्त पिण्ड करना, उपरान्त जो लग्न है उसके गुणकसे गुण देना। वे गुणक ये हैं- वृष, सिंह लग्नके कलापिण्डको १० से गुणना। मिथुन वृश्चिकके ८ से, मेष तुला ७से, कन्या मकर५से और राशि अपनी अपनी संख्याओंसे, जैसे-कर्क४से, धन ९ से, कुम्भ ११ से, मीन १२ से इस प्रकार गुणा करके तब जो ग्रह कोई लग्नमें हो तो पूर्व अपने गुणाकारसे गुणे पिण्डको, फिर उस ग्रहके गुणाकारसे गुणना, जब लग्नमें बहुत ग्रह हो तो सभीके गुणाकारोंसे एक एक बार गुण देना। लग्नगत ग्रहोंके गुणाकार यह है–सूर्य चन्द्रमा बुध शनि ५, मङ्गलके ८, बृहस्पतिके १०, शुक्रके ७ पहिले तात्कालिक लग्न लिप्तापिण्डको अपने गुणाकारसे गुणके पीछे लग्नगतग्रहके गुणाकारसे गुणकर जो अंक हो उसे स्थापन करना अब आगे काम आवेगा ॥ ९ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह गुणक					
५	५	८	५	१०	७	५	राशियोंके गुणक					
राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
गुणक	७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	१०	११	१२

नक्षत्रानयन।

सप्ताहतं त्रिघनभाजितशेषमृक्षं
दत्त्वाथवा नव विशोध्य नवाथवा स्यात् ।
एवं कलत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्यः
प्रष्टुर्वदेदुदयराशिवशेन तेषाम् ॥ १० ॥

नक्षत्रके लिये कहते हैं कि, पहिले श्लोकोक्त प्रकारसे गुणकर जो पिण्ड स्थापन किया है उसको सातसे गुण देना, उपरान्त वह लग्नराशि चर हो तो सात गुणे अंकमें नौ जोड देने, जो द्विस्वभाव हो तो ९ घटा

देना, जो थिर राशि हो तो वैसाही रखना अर्थात् ९ जोडना भी नहीं घटाना भी नहीं, इस प्रकार कोई आचार्य कहते हैं। ग्रन्थकर्त्ताका अभिमत यह है कि, प्रश्नलग्न तात्कालिक जिसके पिण्डको स्वगुणाकारसे गुणा है इसमें तत्काल प्रथम द्रेष्काण हो तो ९ जोडा, दूसरा हो तो न जोडना न घटाना. तीसरा हो तो ९ घटाय देना, यही मत ठीक है, ऐसे कर्म करनेसे जो अंक मिला है उसमें २७ का भाग देकर जो बाकी रहे उस संख्याका अश्विन्यादि गणनासे जो नक्षत्र हो चन्द्रनक्षत्र प्रश्नवालेका जानना, इसी प्रकारसे जब कोई अपनी स्त्रीका नक्षत्र पूछे तो उस लग्नसे सप्तम राशिका । यह सर्व कार्य करना, जो भाईका पूछे तो तृतीयसे और पुत्रका पूछे तो पञ्चमसे, शत्रुका पूछे तो छठेसे विचार करना अर्थात् लग्न स्पष्टकी राशि बदलके अंशादि वही रखना। जैसे—पुत्रका पूछे तो लग्नस्पष्टकी राशिमें ५ जोडकर, स्त्रीका पूछे तो ७ जोडकर करना ॥१०॥

वर्षाद्यानयन ।

वर्षर्तुमासतिथयो द्युनिशं ह्युडूनि
बेलोदयर्क्षनवभागविकल्पनाः स्युः ।
भूयो दशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्ताः
वर्षादयो नवकदानविशोधनाभ्याम् ॥ ११ ॥

अब वर्षादि निकालनेकी विधि और दूसरे प्रकार समस्त नष्ट जातक कहते हैं कि, पूर्वविधि लग्नका पिण्डराशि व ग्रहगुणाकारसे गुणा करके जो मिला है उसको ४ जगे स्थापन करना। पहिले स्थानमें १० से गुनना, दूसरे स्थानमें ८ से, तीसरे स्थानमें ७ से, चौथे स्थानमें ५ से गुणकर उन सभोंमें नौ (९) जोडना वा घटाना वा न जोडना न घटाना पूर्वोक्त क्रमसे जैसा योग्य हो करके अपने अपने विकल्पोंसे भाग देकर वर्ष ऋतु महीना तिथि होती हैं। कौनसे अङ्कसे कौन मिलेगा इस लिये आगे ३ श्लोक लिखे हैं ॥ ११ ॥ (वसंततिलका २)

वर्षादि आनयन विधि।

विज्ञेया दशकेष्वब्दा ऋतुमासास्तथैव च ।
अष्टकेष्वपि मासार्द्धस्तिथयश्च तथा स्मृताः ॥ १२ ॥

पूर्व श्लोकोक्तविधिसे जो चार ४ अंक स्थापित हैं उनमें ९ नव जोड तोड ९ वा न जोड न तोड जैसी प्राप्ति हो करके प्रथम स्थानमें जो १० गुणित है उसमें १२० परमायुका भाग देकर जो बाकी रहे वह वर्ष संख्या जाननी और उसीमें ६ का भाग देनेसे जो बाकी रहै वह ऋतु जाननी, ऋतु शिशिरादि क्रमसे गिनी जाती है उसी अंकमें २ से भाग देनेसे १ बाकी रहे तो जो ऋतु पाई है उसका पहिला महीना, २ अर्थात् शून्य शेप रहै तो दूसरा महीना जानना, अब जो दूसरे स्थानमें ८ से गुणी राशि स्थापित है उसमें २ से भाग लेकर १ बचै तो शुक्लपक्ष, शून्य शेष रहै तो कृष्णपक्ष जानना, उसीमें तिथि १५ से भाग देकर जो बाकी रहै वह तिथि जाननी ॥ १२ ॥

दिन रात्रि ज्ञान।

दिवारात्रिप्रसूतिं च नक्षत्रानयनं तथा ।
सप्तकेष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ १३ ॥

जो तीसरे स्थानमें सातसेगुणी राशि स्थापित है उसमें २ से भाग लेकर एक बाकी रहै तो दिनका जन्म, शून्य शेप रहै तो रात्रिका जन्म जानना और उसी अंकमें २७ से भाग देकर जो बाकी रहै अश्विन्यादि क्रमसे उस नक्षत्रमें जन्म जानना ॥ १३ ॥

वेलामथ विलग्नं च होरामंशकमेव च ।
पञ्चकेषु विजानीयान्नष्टजातकसिद्धये ॥ १४ ॥

जो चौथे स्थानमे ५ गुणी राशि स्थापित है उसमें दिनका जन्म हो दिनमानसे रात्रिजन्म हो तो रात्रिमानसे भाग देकर जो बचे वह काल जन्मका जानना, जब इष्ट काल मिलगया तो उसीसे लग्न स्पष्ट, गृहस्पष्ट होरा नवांशादि साधन कर लेना, नष्टजातककी २।३ प्रकारसे रीति यहां

कहीं हैं और भी बहुत प्रकार हैं कई प्रकारसे एक निश्चय करके कहना, नक्षत्रके लिये और भी आगे कहते हैं ॥ १४ ॥ (अनुष्टुप् ३)

और प्रकार नक्षत्रानयन।

संस्कारनाममात्रा द्विगुणा छायाङ्गुलैस्समायुक्ता।
शेषं त्रिनवकभक्तं नक्षत्रं तद्धनिष्ठादि ॥ १५ ॥

प्रश्नकर्त्ताका जो संस्कार नाम अर्थात् नामकर्ममें रक्खा हुआ नाम है उसकी मात्रा जितनी हों उनमें उस द्वादशांगुल शंकुकी जितनी अंगुल छाया है उतने जोड देवे जो अंक हो उसे २७ से तष्ट करके जो बाकी रहे वह जन्मनक्षत्र धनिष्ठादि गणनासे जानना, नाम मात्राकी यह रीति है कि, जितने उस नाम मात्रामें व्यञ्जन हों उतनी पूरी मात्रा और जितने स्वर हों वह अर्द्धमात्रिक मानना ॥ १५ ॥

द्वित्रिचतुर्दशतिथिसप्तत्रिगुणनवाष्ट चैन्द्राद्याः।
पञ्चदशघ्नास्तद्दिङ्मुखान्विता भं धनिष्ठादि ॥ १६ ॥

और प्रकारसे नक्षत्र जाननेकी रीति यह है कि, प्रश्न पूछनेवालेका मुख जिस दिशामें हो उसके अंक लेने, १५ से गुण देने फिर उस जगहमें जितने मनुष्य बैठे हों उनके मुख जिन जिन दिशाओंके तरफ हों उन सबोंके अंक जोड देने, युक्तांकमें २७ का भाग देना जो बाकी रहै उतनाही धनिष्ठासे गिनकर जन्मनक्षत्र जानना, दिशाओंके अंक—पूर्वके २, आग्नेयके ३, दक्षिणके ४, नैर्ऋत्यके १०, पश्चिमके १५, वायव्यके २१, उत्तरके ९ ईशानके ८ ये हैं, जहां थोडे मनुष्य हों तहां मिलताहै ॥ १६ ॥

नष्टजातकोपसंहार।

इति नष्टजातकमिदं बहुप्रकारं मया विनिर्दिष्टम्।
ग्राह्यमतः सच्छिष्यैः परीक्ष्य यत्नाद्यथा भवति ॥ १७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके नष्टजातकाऽध्यायः षड्विंशतितमः ॥ २६ ॥

आचार्य कहते हैं कि, मैंने यहां नष्टजातक बहुत प्राचीन आचार्योंके मत लेकर बहुत प्रकारसे, कहा है इसमें बुद्धिमान् शिष्य विचारके और परीक्षा करके जैसा मिले वैसा ग्रहण करे कितने ही प्रकारसे एक उत्तर मिलने पर निश्चय करना चाहिये नष्टजातक और कुण्डली रचनामें दो इष्टसिद्धि अवश्य चाहिये, एक तो प्रश्नका इष्ट और दूसरे अपने इष्टदेवकी कृपा. विना इष्ट कृपा पहिले तो सारा फलाध्याय दूसरे ये स्थल तो नहीं मिलते ॥ १७ ॥ (आर्या ३)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
षड्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥

द्रेष्काणफलाऽध्यायः २७.

मेषद्रेष्काणका स्वरूप।

कट्यां सितवस्त्रवेष्टितः कृष्णः शक्त इवाभिरक्षितुम् ।
रौद्रः परशुं समुद्यतं धत्ते रक्तविलोचनः पुमान् ॥ १ ॥

द्रेष्काण फल कहते हैं। प्रथम मेषका त्रिभागका स्वरूप यह है कि, कमरमें श्वेत रङ्गका वस्त्र बाँधा हुवा, श्याम रङ्ग, रखवालीको समर्थ हो रहा, भयानक मूर्ति, फरसा उठायके कन्धेपर धरता, नेत्र लाल रङ्गके हो रहे इस प्रकारका मेष प्रथम द्रेष्काणमें पुरुषका स्वरूप होता है यह द्रेष्काण चौपाया है ॥ १ ॥ (वैतालीय)

रक्ताम्बरा भूषणभक्ष्यचिन्ता कुम्भाकृतिर्वाजिमुखी तृषार्ता ।
एकेन पादेन च मेषमध्ये द्रेष्काणरूपं यवनोपदिष्टम् ॥ २ ॥

मेषके दूसरे द्रेष्काणका रूप लालरङ्गके वस्त्र पहिरे, भूषण और भोजनकी चिन्ताकर्त्ता, घड़ेके समान पेट, घोडेकासा मुख, प्यासी एक पैरसे खडी रहती, ऐसी स्त्री रूप मेषके मध्य द्रेष्काणमें यवनाचार्यने कहा है। मिहद्रेष्काण चौपाया है ॥ २ ॥

क्रूरः कलाज्ञः कपिलः क्रियार्थो भग्नव्रतोऽभ्युद्यतदण्डहस्तः ।
रक्तानि वस्त्राणि बिभर्ति चण्डो मेषे तृतीयः कथितस्त्रिभागः॥३॥

विषम स्वभाव, अनेक प्रकारके काम जाननेवाला, भूरे केश, काम करनेको निरन्तर उद्यमी, नियम भग्न करनेवाला, सम्मुख हाथेसे लठी उठाय रखता, क्रोधी पुरुष यह मेष द्रेष्काण तृतीय द्विपद रूपका है ॥३॥ (इन्द्रवज्रा २)

वृष द्रेष्काणका स्वरूप ।

कुञ्चितलूनकचा घटदेहा दग्धपटा तृषिताशनचिन्ता ।
आभरणान्यभिवाञ्छति नारी रूपमिदं प्रथमे वृषभस्य॥४॥

टेढे और छोटे शिरके वाल घडेके समान पेट, अग्निदग्ध वस्त्र, धारती, नित्य प्यासी, भोजनको निरन्तर चाहती, भूषणोंकी इच्छा करती ऐसी वृष प्रथम द्रेष्काणका रूप स्त्रीलिंक है ॥ ४ ॥ (दोधक)

क्षेत्रधान्यगृहधेनुकलाज्ञो लाङ्गले सशकटे कुशलश्च ।
स्कन्धमुद्वहति गोपतितुल्यं क्षुत्परोऽजवदनो मलवासाः ॥ ५ ॥

खेतीका काम, अन्न सँभारनेका काम और घरका काम, गौकी रक्षा, गीत, वाद्य, नाच, लिखना आदि चित्र कर्म इतने कामोंका जाननेवाला और पण्डित, हल और गाडीका काम जाननेवाला, बैलके समान गर्दन-वाला, अति क्षुधावाला, बकरेकासा मुख मैले वस्त्र धारण कर्त्ता पुरुष यह वृषका दूसरा द्रेष्काण चौपाया है ॥ ५ ॥ (स्वागता)

द्विपसमकायः पाण्डुरदंष्ट्रः शरभसमाङ्घ्रिः पिङ्गलमूर्तिः ।
अविमृगलोभव्याकुलचित्तो वृषभवनस्य प्रान्तगतोऽयम् ॥ ६ ॥

हाथीके समान बडा शरीर, कुछ सुर्खी सहित श्वेतदाँत, ऊँटके समान बडे पैर, पीला रङ्ग शरीरका, बकरे व मृगोंके लोभमें व्याकुल चित्त ऐसा वृषका तृतीय द्रेष्काण चौपाया है ॥ ६ ॥ (श्रुतकीर्ति)

मिथुन द्रेष्काणका स्वरूप ।

सूच्याश्रयं समभिवाञ्छति कर्म नारी
रूपान्विताभरणकार्यकृतादरा च ।

हीनप्रजोच्छ्रितभुजर्त्तुमती त्रिभाग-
माद्यं तृतीयभवनस्य वदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ७ ॥

स्त्री शिलाईका काम कसीदा आदि जाननेवाली, रूपवती, भूषणोंमें अतिश्रद्धा धारण करती, सन्तान रहित, दोनों भुजा उठाय रखें, ऋतुमती या अतिकामार्त्त ऐसा मिथुन प्रथम द्रेष्काणका रूप पण्डित कहते हैं यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ ७ ॥ (वसन्ततिलका)

उद्यानसंस्थः कवची धनुष्मान् शूरोऽस्त्रधारी गरुडाननश्च ।
क्रीडात्मजालङ्करणार्थचिन्तां करोति मध्ये मिथुनस्य राशेः॥८॥

बख्तर पहिरके धनुष बाण लिये, वन बगीचाओंमें खडा शूरमा रणको प्यारा माननेवाला (अस्त्र) विद्या मन्त्रमय,शस्त्र अर्थात् जादूगरी जाननेवाला, गरुड समान मुख और खेल पुत्र तथा भूषण और धन इनकी नित्य चिन्ता करनेवाला पुरुष यह मिथुन मध्य द्रेष्काण पक्षी जाति है ॥ ८ ॥ (उपजाति)

भूषितो वरुणवद्बहुरत्नो बद्धतूणकवचः सधनुष्कः।
नृत्यवादितकलासु च विद्वान्काव्यकृन्मिथुनराश्यवसाने ॥ ९ ॥

बहुत भूषणोंसे भूषित और समुद्र समान अनेक रत्नोंसे युक्त, कवच और बाण धारण कर्त्ता, धनुष लिये रहता और नाचनेमें बाजे बजानेमें गीत गानेमें, अति सुघड कविता, काव्यादि रचनेवाला, पण्डित ऐसा पुरुष *मिथुन तीसरा नर द्रेष्काण है ॥ ९ ॥*

कर्कद्रेष्काणका स्वरूप ।

पत्रमूलफलभृद्द्विपकायः कानने मलयगः शरभाङ्घ्रिः ।
क्रोडतुल्यवदनो हयकण्ठः कर्किणः प्रथमरूपमुशन्ति ॥ १० ॥

पत्ते, जड, फल इनको धारण कर्त्ता, हाथीकासा बडा शरीर, वनविहारी, चन्दन वृक्ष समीप प्राप्त, ऊंटकेसे पैर, सूकरकासा मुख, घोडेकीसी गर्दन ऐसा पुरुष कर्कट प्रथम द्रेष्काणका स्वरूप है । यह द्रेष्काण चतुष्पद है ॥ १० ॥ (स्वागता)

पद्मार्चिता मूर्द्धनि भोगियुक्ता स्त्री कर्कशारण्यगता विरौति।
शाखां पलाशस्य समाश्रिता च मध्ये स्थिता कर्कटकस्य राशेः॥११॥

स्त्री शिरमें कमलके पुष्प धारण करती, सर्पयुक्त और बडी कर्कशा जवानीसे भरी, वनमें ढाककी टेनी पकडकर खडी हो रही ऐसा रूप कर्कटके दूसरे द्रेष्काणका है। यह सर्प द्रेष्काण है, स्त्री द्रेष्काणभी है॥११॥(इन्द्रवज्रा)

भार्याभरणार्थमर्णवं नौस्थो गच्छति सर्पवेष्टितः।
हैमैश्च युतो विभूषणैश्चिपिटास्योऽन्त्यगतश्च कर्कटे॥१२॥

स्त्रीके आभरण निमित्त समुद्रमें नावके ऊपर बैठा, सर्पसे अंग वेष्टित होकर चलता और सोनेके भूषण पहिरे हुये, चिपिट मुख, ऐसा रूप कर्कट तीसरे द्रेष्काणका है। यह पुरुष द्रेष्काण सर्प द्रेष्काण है॥१२॥ (वैतालीय)

सिंहद्रेष्काणस्वरूप।

शाल्मलेरुपरि गृध्रजम्बुको श्वा नरश्च मलिनाम्बरान्वितः।
रौति मातृपितृविप्रयोजितः सिंहरूपमिदमाद्यमुच्यते॥१३॥

सेमलके वृक्षके ऊपर एक गीध और एक शाल बैठा और एक कुत्ता, एक मनुष्य मैले वस्त्र पहिरके मा बापसे रहित होनेके वियोगसे रोय रहा यह रूप सिंह प्रथम द्रेष्काणका है। यह द्रेष्काण नर, चौपाया और पक्षीभी है॥१३॥ (रथोद्धता)

हयाकृतिः पाण्डुरमाल्यशेखरो बिभर्ति कृष्णाजिनकम्बलं नरः।
दुरासदः सिंह इवात्तकार्मुको नताग्रनासो मृगराजमध्यमः॥१४॥

घोडेकासा पुष्ट शरीर और शिरमें गुलाबी रङ्गके पुष्प धारण कर्त्ता, काले हरिणका चर्म्म ओढ रक्खा, कम्बलभी धरता और सिंहके सदश सहजमें साध्य नहीं होता धनुर्धारी और नाकका अग्रभाग ऊंचा ऐसा रूप पुरुषके सिंहमध्यम द्रेष्काणका है। यह पुरुष द्रेष्काण सायुध है॥१४॥ (वंशस्थवृत्त)

ऋक्षाननो वानरतुल्यचेष्टो बिभर्ति दण्डं फलमामिषं च ।
कूर्ची मनुष्यः कुटिलैश्च केशैर्मृगेश्वरस्यान्त्यगतस्त्रिभागः ॥१५॥

रीछके समान कुरूप मुख, वानरके समान चेष्टा करता, लठी, फल, मांस इनको निरन्तर धरता, दाढी बडी, शिरके केस मुँडे हुये ऐसा पुरुष सिंह तीसरे द्रेष्काणका रूप है । यह नर और चौपाया द्रेष्काण है ॥ १५ ॥

कन्या द्रेष्काणका स्वरूप ।

पुष्पप्रपूर्णेन घटेन कन्या मलप्रदिग्धाम्बरसंवृताङ्गी ।
वस्त्रार्थसंयोगमभीप्समाना गुरोः कुलं वाञ्छति कन्यकाद्यः ॥१६॥

कन्या फूलोंसे भरा घडा ले रही, मैले वस्त्र पहरती, वस्त्र और धनका संग्रह चाहती, गुरु कुलको गमन करती ऐसा रूप कन्याके प्रथम द्रेष्काणका है, यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ १६ ॥ (उपजाति)

पुरुषः प्रगृहीतलेखनिः श्यामो वस्त्रशिरा व्ययायकृत् ।
विपुलं च बिभर्ति कार्मुकं रोमव्याप्ततनुश्च मध्यमः ॥ १७ ॥

पुरुष हाथमें कलम ले रहा, श्यामरङ्ग, शिरमें पगडी वा साफा बांधे (आयव्यय) आमदनी खर्चको गिनती करनेवाला, बडा धनुष धारण कर्ता, सर्वांगमें रोम व्याप्त हो रहे ऐसा कन्या मध्य द्रेष्काणका रूप है और यह द्रेष्काण नर है ॥ १७ ॥ (वैतालीय)

गौरी सुधौताग्रदुकूलगुप्ता समुच्छ्रिता कुम्भकटच्छुहस्ता ।
देवालयं स्त्री प्रयता प्रवृत्ता वदन्ति कन्यान्त्यगतस्त्रिभागः॥१८॥

गोरे रंगकी स्त्री, सुन्दर दुपट्टा ओढती, अति लम्बा शरीर, घडा और करछी हाथमें लेरही, सावधानीसें देवालय जानेको तय्यार हो रही ऐसा रूप कन्याके तीसरे द्रेष्काणका है यह भी स्त्री द्रेष्काण ॥ १८ ॥ (उपजाति)

तुला द्रेष्काण स्वरूप ।

वीथ्यन्तरापणगतः पुरुषस्तुलावा-
न्नुन्मानमानकुशलः प्रतिमानहस्तः ।

भाण्डं विचिन्तयति तस्य च मूल्यमेत-
द्रूपं वदन्ति यवनाः प्रथमं तुलायाः ॥ १९ ॥

रास्ता बाजारमें दुकान खोलकर तराजु हाथमें लिये पुरुष बैठा तोलका प्रमाण जानता, सुवर्णादि द्रव्यके पात्रादिकोंका तोलकर मोल बतलाता ऐसा रूप तुला प्रथम द्रेष्काणका यवनोंका कहा है। यह नर द्रेष्काण है ॥ १९॥ (वसंततिलका)

कलशं परिगृह्य विनिःपतितुं समभीप्सति गृध्रमुखः पुरुषः।
क्षुधितस्तृषितश्च कलत्रसुतान्मनसैति तुलाधरमध्यगतः ॥२०॥

गीध पक्षीकासा मुख, पुरुष शरीर, घडा लेकर गिरनेको तय्यार हो रहा, भूंख और प्याससे पीडित और मनसे स्त्री पुत्रोंको याद कर रहा, ऐसा रूप तुलाके मध्य द्रेष्काणका है। यह द्रेष्काणका पक्षी व नरसंज्ञक है ॥ २० ॥ (त्रोटक)

विभीषयंस्तिष्ठति रत्नचित्रितो वने मृगान्काञ्चनतूणवर्मभृत्।
फलामिषं वानररूपभृन्नरस्तुलावसाने यवनैरुदाहृतः ॥ २१ ॥

पुरुष मणियोंसे भूषित हो रहा और वनमें हरिणादि मृगोंको डराता हुआ सुवर्ण धनुष और तूणीर कवच धारता, फल और मांस धारण कर्ता वानरका रूप करनेवाला यह रूप तुलाके अन्त्य द्रेष्काणका यवनाचार्योंने कहा है। यह चतुष्पद द्रेष्काण है ॥ २१ ॥ (वंशस्थ)

वृश्चिक द्रेष्काणका स्वरूप।

वस्त्रैर्विहीनाभरणैश्च नारी महासमुद्रात्समुपैति कूलम्।
स्थानच्युता सर्पनिबद्धपादा मनोरमा वृश्चिकराशिपूर्वः ॥ २२ ॥

स्त्री वस्त्र भूषणोंसे रहित (महासमुद्र) बडे दरयावसे तीरपर आयी हुई अपने स्थानसे भ्रष्ट हो रही, पैरोंमें सर्प लिपटा हुआ, मनोहर सूरत ऐसा रूप वृश्चिकके प्रथम द्रेष्काणका है। यह स्त्री व सर्प द्रेष्काण है ॥ २२ ॥ (उपजाति)

स्थानसुखान्यभिवाञ्छति नारी
भर्तृकृते भुजगावृतदेहा ।
कच्छपकुम्भसमानशरीरा
वृश्चिकमध्यमरूपमुशन्ति ॥ २३ ॥

स्त्री भर्ताके निमित्त स्थान सुख चाहती, शरीरमें सर्पाकार चिह्न, कछुवा वा कुम्भके समान शरीर रूप वृश्चिकके मध्यमें द्रेष्काका है। यह सर्प द्रेष्काण है ॥ २३ ॥ (दोधक)

पृथुलचिपिटकूर्मतुल्यवक्त्रः श्वमृगवराहशृगालभीषकारी ।
अवति च मलयाकरप्रदेशं मृगपतिरन्त्यगतस्य वृश्चिकस्य२४॥

बडा और चिपटा (पतला) सा मुख कछुवाके मुखके समान कुत्ता हरिण स्यार सूकर इनको डरानेवाला, मलयागिरि नाम चन्दनके उत्पत्तिस्थानकी रक्षा करनेवाला ऐसा सिंह वृश्चिकके अन्त्य द्रेस्काणका रूप है। यह सिंह द्रेष्काण चतुष्पद है ॥ २४ ॥ (पुष्पिताग्रा)

धनुर्द्रेष्काणका स्वरूप ।

मनुष्यवक्त्रोऽश्वसमानकायो धनुर्विगृह्यायतमाश्रमस्थः ।
क्रतूपयोज्यानि तपस्विनश्च ररक्ष पूर्वो धनुषस्त्रिभागः ॥ २५ ॥

मनुष्यकासा मुख, घोडेकासा शरीर, बडा धनुष बाण लेकर आश्रममें बैठा, यज्ञके उपयोगी स्रुवादि पात्र और यज्ञ करनेवाले तपस्वियोंकी रक्षा कर्त्ता ऐसा पुरुष धनके प्रथम द्रेष्काणका रूप है। यह द्रेष्काण मनुष्य और चौपाया है ॥ २५ ॥ (इन्द्रवज्रा)

मनोरमा चम्पकहेमवर्णा भद्रासने तिष्ठति मध्यरूपा ।
समुद्ररत्नानि विघट्टयन्ती मध्यत्रिभागो धनुषः प्रदिष्टः ॥ २६॥

मनको रमण करनेवाली, चम्पा पुष्प और सुवर्णके समान कान्तिवाली, भद्रासनमें बैठी हुई, अति सुन्दर भी नहीं समुद्रके रत्नोंको चनाय रही, ऐसी स्त्री धनके मध्य द्रेष्काणका रूप है। यह स्त्री द्रेष्काण है२६ (उपजाति).

कूर्ची नरो हाटकचम्पकाभो वरासने दण्डधरो निषण्णः ।
कौशेयका न्युद्वहतेऽजिनञ्च तृतीयरूपं नवमस्य राशेः ॥ २७ ॥

दाढीवाला पुरुष, सुवर्ण वा चम्पा पुष्पके समान कान्तिमान्, श्रेष्ठ आसन सिंहासन, कुर्सी आदिमें बैठा हुआ, लढी हाथमें, कुसुम्भी वस्त्र पहिरे और मृगचर्म भी धारता ऐसा रूप धनके तीसरे द्रेष्काणका नरसंज्ञक है ॥ २७ ॥ (उपजाति)

मकर द्रेष्काण स्वरूप ।

रोमचितो मकरोपमदंष्ट्रः सूकरकायसमानशरीरः ।
योक्त्रक जालकबन्धनधारी रौद्रमुखो मकरप्रथमस्तु ॥ २८ ॥

सर्वाङ्गमें रोम व्याप्त और नाकूकेसे दांत, सूकरकासा शरीर और योक्त्र अर्थात् जोत जिनसे बैल जोते जाते हैं और (जाल) बन्ध, फांसी, बेडी आदि इनको धारण कर्त्ता भयानक मुख ऐसा मकरके प्रथम द्रेष्काणका है । यह द्रेष्काण चौपाया है ॥ २८ ॥ (दोधक)

कलास्वभिज्ञाब्जदलायताक्षी श्यामा विचित्राणि च मार्गमाणा ।
विभूषणालंकृतलोहकर्णा योषा प्रदिष्टा मकरस्य मध्ये ॥ २९ ॥

सम्पूर्ण कला जाननेवाली, चतुर, कमलदलके समान नेत्र, श्यामवर्णकी, अनेक प्रकार वस्तुजातको ढूंढती, भूषणोंसे सज रही, कानोंमें लोहा लगाय रक्खा, ऐसी स्त्री मकरके दूसरे द्रेष्काणका रूप है । यही स्त्री द्रेष्काण है ॥ २९ ॥ (उपजाति)

किन्नरोपमतनुः सकम्बलस्तूणचापकवचैः समान्वितः ।
कुम्भमुद्वहति रत्नचित्रितं स्कन्धगं मकरराशिपश्चिमः ॥ ३० ॥

किन्नरों (जिनके मुख घोडेकेसे हैं) के समान शरीर; कम्मलधारी, तूणीर, धनुष, बख्तर धारण कर्त्ता, रत्नसहित कुम्भ कांधे पर ले रहा, ऐसा रूप मकरके तीसरे द्रेष्काणका है । यह सायुध पुरुष द्रेष्काण है ॥ ३० ॥ (रथोद्धता)

कुंभ द्रेष्काण स्वरूप ।

स्नेहमध्यजलभोजनागमव्याकुलीकृतमनाः सकम्बलः ।
सूक्ष्मकौशवसनाजिनान्वितो गृध्रतुल्यवदनो घटादिगः ॥ ३१॥

तेल, शराब और अन्न इनके आगमसे चित्त व्याकुल और कम्मल ओढे, रेशमी वस्त्र और मृगचर्म धारण कर्त्ता, गीधके समान मुख ऐसा रूप कुम्भ प्रथम द्रेष्काणका है । यह नर द्रेष्काण है ॥ ३१ ॥ (रथोद्धता)

दग्धे शकटे सशाल्मले लोहान्याहरतेऽङ्गना वने ।
मलिनेन पटेन संवृता भाण्डैर्मूर्ध्नि गतैश्च मध्यमः ॥ ३२ ॥

स्त्री आगसे फूँकी गई, शाल्मलीवृक्षसहित गाडीसे; लोहा चुन रही, वनमें मैले वस्त्र पहनके (भाण्डे) बरतन शिरमें धारती, ऐसा रूप कुम्भ मध्य द्रेष्काणका है । यह सामिक स्त्री द्रेष्काण है ॥ ३२ ॥ (वैतालीय)

श्यामः सरोमश्रवणः किरीटी त्वक्पत्रनिर्यासफलैर्बिभर्त्ति ।
भाण्डानि लोहव्यतिमिश्रितानि सञ्चारयन्त्यन्तगतो घटस्य ॥ ३३

श्यामवर्ण और कानोंमें बाल जमे हुए, शिरमें किरीट धारता, लोह युक्त पात्रमें वृक्षके त्वचा (बकली), पत्ते, गोंद और फल इनको धरके एक स्थानसे दूसरेमें ले जाता, ऐसा कुम्भके अन्त्य द्रेष्काणका रूप है । यह पुरुष द्रेष्काण है ॥ ३३ ॥ (इन्द्रवज्रा)

मीन द्रेष्काणका स्वरूप ।

स्रुग्भाण्डमुक्तामणिशङ्खमिश्रैर्व्याक्षिप्तहस्तः सविभूषणश्च ।
भार्याविभूषार्थमपां निधानं नावा प्लवत्यादिगतो झषस्य ॥ ३४ ॥

स्रुवादि यज्ञ पात्र, मोती मणि (रत्नजात), शंख ये सब इकट्ठे हाथमें ले रहा, भूषण पहिरे हुये और स्त्रीके भूषणके निमित्त समुद्रमें नाव जहाज आदिमें बैठा जाता ऐसा पुरुष मीनके प्रथम द्रेष्काणका रूप है । यह नर है ॥ ३४ ॥ (इन्द्रवज्रा)

अत्युच्छ्रितध्वजपताकमुपैति पोतं
कूलं प्रयाति जलधेः परिवारयुक्ता ।
वर्णेन चम्पकमुखी प्रमदा त्रिभा गो
मीनस्य चैष कथितो मुनिभिर्द्वितीयः ॥ ३५ ॥

बड़े ऊंचे पताकावाले जहाज वा किश्तीमें बैठकर समुद्रके तीर पर कुटुंब सखी जनोंको साथ लेकर स्त्री चलरही चम्पा पुष्पके समान मुख कान्ति, ऐसा रूप मीनके दूसरे द्रेष्काणका है। यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ ३५॥

(वसन्ततिलका)

श्वभ्रान्तिके सर्पनिवेष्टिताङ्गो वस्त्रैर्विहीनः पुरुषस्त्वटव्याम् ।
चौरानलव्याकुलितान्तरात्मा विक्रोशतेऽन्त्योपगतो झषस्य ॥ ३६ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके द्रेष्काणफला-
ध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

खाईके समीप सर्पवेष्टित हो रहा ऐसा नङ्गा पुरुष, वनमें चोर और अग्निके भयसे मनमें व्याकुल रो रहा, ऐसा रूप मीनके तीसरे द्रेष्काणका है । यह द्रेष्काण सर्प है । ये द्रेष्काणोंके रूप, चोरके रूप और चोरित द्रव्यके स्थान बतलाने आदिमें काम आते हैं ॥ ३६ ॥ (इन्द्रवज्रा)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां-
द्रेष्काणफलाध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

उपसंहाराध्यायः २८.

अध्यायोंका संग्रह ।

राशिप्रभेदो ग्रहयोनिभेदो वियोनिजन्माथ निषेककालः ।
जन्माथ सद्यो मरणं तथायुर्दशाविपाकोऽष्टकवर्गसंज्ञः ॥ १ ॥

(बृहज्जातकके २८ अध्यायमेंसे तीन अध्याय याज्ञिकके यहां ग्रन्थ कर्त्ताने छोड दिये । उपसंहार अर्थात् अनुक्रमसे बृहज्जातक इतनेही २५ अध्यायमें पूरा हो गया । अब उपसंहाराध्यायमें ग्रन्थकी अनुक्रमणिका और आचार्यके नामादि वर्णन ग्रन्थ समाप्तिके न्यायसे कहते हैं, इससे यह ग्रन्थ २६ अध्याय न समझना चाहिये ॥)

इस बृहज्जातकमें पहिला अध्याय राशिभेद १, ग्रहयोनिभेद २, वियोनिजन्म ३ निषेकाध्याय ४, सूतिकाध्याय ५, अरिष्ट (बालकोंका) ६ आयुर्दाध्याय ७, दशाविभाग ८, अष्टकवर्गाध्याय ९ ॥१ ॥

तेल, शराब और अन्न इनके आगमसे चित्त व्याकुल और कम्मल ओढे, रेशमी वस्त्र और मृगचर्म धारण कर्त्ता, गीधके समान मुख ऐसा रूप कुम्भ प्रथम द्रेष्काणका है। यह नर द्रेष्काण है ॥ ३१ ॥ (रथोद्धता)

दग्धे शकटे सशाल्मले लोहान्याहरतेऽङ्गना वने।
मलिनेन पटेन संवृता भाण्डैर्मूर्ध्नि गतैश्च मध्यमः ॥ ३२ ॥

स्त्री आगसे फूँकी गई, शाल्मलीवृक्षसहित गाडीसे; लोहा चुन रही, वनमें मैले वस्त्र पहनके (भाण्डे) बरतन शिरमें धारती, ऐसा रूप कुम्भ मध्य द्रेष्काणका है। यह साग्निक स्त्री द्रेष्काण है ॥ ३२ ॥ (वैतालीय)

श्यामः सरोमश्रवणः किरीटी त्वक्पत्रनिर्यासफलैर्बिभर्ति।
भाण्डानि लोहव्यतिमिश्रितानि सञ्चारयन्त्यन्त्यगतो घटस्य ॥३३

श्यामवर्ण और कानोंमें बाल जमे हुए, शिरमें किरीट धारता, लोह युक्त पात्रमें वृक्षके त्वचा (बकली), पत्ते, गोंद और फल इनको धरके एक स्थानसे दूसरेमें ले जाता, ऐसा कुम्भके अन्त्य द्रेष्काणका रूप है। यह पुरुष द्रेष्काण है ॥ ३३ ॥ (इन्द्रवज्रा)

मीन द्रेष्काणका स्वरूप।

स्रुग्भाण्डमुक्तामणिशङ्खमिश्रैर्व्याक्षिप्तहस्तः सविभूषणश्च।
भार्याविभूषार्थमपां निधानं नावा प्लवत्यादिगतो झषस्य॥ ३४॥

स्रुवादि यज्ञ पात्र, मोती मणि (रत्नजात), शंख ये सब इकट्ठे हाथमें ले रहा, भूषण पहिरे हुये और स्त्रीके भूषणके निमित्त समुद्रमें नाव जहाज आदिमें बैठा जाता ऐसा पुरुष मीनके प्रथम द्रेष्काणका रूप है। यह नर है ॥ ३४ ॥ (इन्द्रवज्रा)

अत्युच्छ्रितध्वजपताकमुपैति पोतं
कूलं प्रयाति जलधेः परिवारयुक्ता।
वर्णेन चम्पकमुखी प्रमदा त्रिभा गो
मीनस्य चैष कथितो मुनिभिर्द्वितीयः ॥ ३५ ॥

बडे ऊंचे पताकावाले जहाज वा किश्तीमें बैठकर समुद्रके तीर पर कुटुंब सखी जनोंको साथ लेकर स्त्री चलरही चम्पा पुष्पके समान सुख कान्ति, ऐसा रूप मीनके दूसरे द्रेष्काणका है। यह स्त्री द्रेष्काण है॥२५॥

(वसन्ततिलका)

श्वभ्रान्तिके सर्पनिवेष्टिताङ्गो वस्त्रैर्विहीनः पुरुषस्त्वटव्याम्।
चौरानलव्याकुलितान्तरात्मा विक्रोशतेऽन्त्योपगतो झषस्य ॥ २६ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके द्रेष्काणफलाध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

खाईके समीप सर्पवेष्टित हो रहा ऐसा नङ्गा पुरुष, वनमें चोर और अग्निके भयसे मनमें व्याकुल रो रहा, ऐसा रूप मीनके तीसरे द्रेष्काणका है। यह द्रेष्काण सर्प है। ये द्रेष्काणोंके रूप, चोरके रूप और चोरित द्रव्यके स्थान बतलाने आदिमें काम आते हैं ॥ २६ ॥ (इन्द्रवज्रा)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां द्रेष्काणफलाध्यायः सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

उपसंहाराध्यायः २८.

अध्यायोंका संग्रह।

राशिप्रभेदो ग्रहयोनिभेदो वियोनिजन्माथ निषेककालः।
जन्माथ सद्यो मरणं तथायुर्दशाविपाकोऽष्टकवर्गसंज्ञः ॥ १ ॥

(बृहज्जातकके २८ अध्यायमेंसे तीन अध्याय यात्रिकके यहां ग्रन्थ कर्त्ताने छोड दिये। उपसंहार अर्थात् अनुक्रमसे बृहज्जातक इतनेही २५ अध्यायमें पूरा हो गया। अब उपसंहाराध्यायमें ग्रन्थकी अनुक्रमणिका और आचार्यके नामादि वर्णन ग्रन्थ समाप्तिके न्यायसे कहते हैं, इससे यह ग्रन्थ २६ अध्याय न समझना चाहिये ॥)

इस बृहज्जातकमें पहिला अध्याय राशिभेद १, ग्रहयोनिभेद २, वियोनिजन्म ३ निषेकाध्याय ४, सूतिकाध्याय ५, अरिष्ट (बालकोंका) ६ आयुर्दाध्याय ७, दशाविभाग ८, अष्टकवर्गाध्याय ९ ॥१॥

कर्माजीवी राजयोगाः खयोगाश्चान्द्रायोगा द्विग्रहाद्याश्च योगाः ।
प्रव्रज्याथो राशिशीलानि दृष्टिर्भावस्तस्मादाश्रयोऽथ प्रकीर्णः ॥२॥

कर्माजीवी १० , राजयोगाध्याय ११, नाभसयोगाध्याय १२, चन्द्रयोगाध्याय १३, द्विग्रहत्रिग्रहयोगाध्याय १४, प्रव्रज्यायोगाध्याय १५, राशिशीलाध्याय १६, दृष्टिफलाध्याय १७,भावफलाध्याय १८, आश्रयाध्याय १९, प्रकीर्णाध्याय २० ॥ २ ॥

नेष्टा योगा जातकं कामिनीनां निर्याणं स्यान्नष्टजन्म दृकाणः ।
अध्यायानां विंशतिः पञ्चयुक्ता जन्मन्येतद्यात्रिकं चाभिधास्ये॥३॥

अनिष्टयोगाध्याय २१, स्त्रीजातकाध्याय २२, निर्याणाध्याय २३, नष्टजातकाध्याय २४, द्रेष्काणस्वरूपाध्याय २५, बृहज्जातककी मर्यादा आचार्यने २८ अध्यायकी करी है परन्तु जातकोपयोगी अर्थात् जन्मकाल प्रयोजनके २५ ही थे इस कारण यहजातक ग्रन्थ होनेसे २५ ही में ग्रन्थ समाप्त कर दिया । बाकी जो ३ अध्याय हैं वे यहां इस कारण छोड दिये कि उनका प्रयोजन जातक कर्म पर नहीं हैउसको यहां लिखनेसे यह ग्रन्थ जातक नहीं कहलाता, संहिता हो जाती । उन ३ अध्यायोंका प्रयोजन आगे है ॥ (शालिनी)

प्रश्नास्तिथिर्भं दिवसः क्षणश्च चन्द्रो विलग्नं त्वथ लग्नभेदः ।
शुद्धिर्ग्रहाणामथ चापवादो विमिश्रकाख्यं तनुवेपनं च ॥ ४ ॥

आचार्य कहता है कि, प्रश्न विचाराध्याय, तिथिबलाध्याय, नक्षत्रबलाध्याय, दिनप्रकरण अर्थात् वारफलाध्याय मुहूर्तनिर्देश, चन्द्रबलाध्याय, लग्ननिश्चय, होरा, द्रेष्काणादि, लग्नभेद लक्षणफलसहित और समस्त ग्रहोंके कुण्डलियोंके फल, अपवादाध्याय, मिश्रकाध्याय देहकम्पनाध्याय ॥ ४ ॥

अतः परं गुह्यकपूजनं स्यात्स्वप्नं ततः स्नानविधिः प्रदिष्टः ।
यज्ञो ग्रहाणामथ निर्गमश्च क्रमाच्च दिष्टः शकुनोपदेशः ॥ ५ ॥

गुह्यकपूजनविधि स्वप्नाध्याय, स्नाननविधि, गृहयज्ञविधि, यात्रा निर्णय, अरिष्टविचार, शकुनाध्याय इतने यात्रिकमें हैं ॥ ५ ॥

विवाहकालः करणं ग्रहाणां प्रोक्तं पृथक् तद्विपुला च शाखा।
स्कन्धैस्त्रिभिर्ज्योतिषसङ्ग्रहोऽयं मया कृतो दैवविदां हिताय ॥६॥

विवाहपटल और ग्रहोंका कारण पंचसिद्धान्तिका ग्रन्थमें लिखा, जिसकी शाखा शुभाशुभज्ञानार्थ बहुत हो गई है इस प्रकार तीन स्कन्ध अर्थात् गणितग्रन्थ, (होरा) जातकग्रन्थ, (संहिता) समस्त विचार निर्णय तीन स्कन्धसे समस्त ज्योतिष शास्त्रका विचार प्रयोजन मैंने ज्योतिर्विदोंके हितके लिये अनेक बडे प्राचीन ग्रन्थोंका विचार करके त्रिस्कन्ध ज्योतिष इस प्रकारका बनाया ॥ ६ ॥ (उपजाति ३)

पृथु विरचितमन्यैः शास्त्रमेतत्समस्तं
तदनु लघु मयेदं तत्प्रदेशार्थमेव।
कृतमिह हि समर्थं धीविषाणामलत्वे
मम यदिह यदुक्तं सज्जनैः क्षम्यतां तत् ॥ ७ ॥

और भी आचार्य प्रार्थना करता है—कि होराशास्त्र अन्य यवनादि आचार्योंने बडे विस्तारसे कहा है। वही अच्छा है, परन्तु बडे ग्रन्थोंके पढनेमें कलियुगकी थोडी आयु व्यतीत होजायगी। पढनेका फल कब मिलना है ? इसलिये उस बडे ग्रन्थके शीघ्र प्रवेशके प्रयोजनसे उसीका मत लेकर बुद्धिरूपी शृङ्गके निर्मल करनेको यह 'बृहज्जातक' नाम सूक्ष्म ग्रन्थ मैंने बनाया है। इसमें जो मैंने अयोग्य कहा हो उसको सज्जन पण्डित क्षमा करें ॥ ७ ॥ (मालिनी)

ग्रन्थस्य यत्प्रचरतोऽस्य विनाशमेति
लेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण।
यद्वा मया कुकृतमल्पमिहाकृतं वा
कार्यं तदत्र विदुषा परिहृत्य रागम् ॥ ८ ॥

और भी आचार्य प्रार्थना सज्जनोंके आगे करता है कि इस ग्रन्थके फैलनेमें जो कुछ टूट फूट जाय अथवा लिखनेवाला बिगाड देवे तो बहुश्रुत लोगोंके मुखसे सुनके आप पण्डित लोग (मत्सर) अन्य शुभद्वेष

और घमण्ड छोडकर पूरा करदें और मैंने जहां कहीं अनुचित कहा हो अथवा अधूरा कहा हो तो उसको भी विचार करके शुद्ध और पूरा करदें ॥ ८ ॥ (वसन्ततिलका)

ग्रन्थकारका स्वपितृनामादि कथन ।

आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः
कापित्थके सवितृलब्धवरप्रसादः ।
आवन्तिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्य-
ग्घोरां वराहमिहिरो रुचिरां चकार ॥ ९ ॥

आवन्तिक देशमें उज्जयिनी नाम नगरके कापित्थ नाम ग्रामका रहनेवाला आदित्यदास ब्राह्मणका पुत्र वराहमिहिरनामा ज्योतिर्विद्ने अपने पितासे बोध और सूर्यनारायणसे वरप्रसाद पाय कर पूर्व ऋषिप्रणीत ज्योतिष ग्रन्थका अवलोकन और विचार भली भांतिसे करके यह होराशास्त्र " बृहज्जातक " नाम जातक सुन्दर और सुगम, थोडेमें बहुत प्रयोजन देनेवाला बनाया ॥ ९ ॥ (वसन्ततिलका)

दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदम् ।
शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १० ॥
इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके उपसंहा-
राध्यायोऽष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

फिर सज्जानोंको प्रणाम आचार्य करता है कि, सूर्यादि ग्रह और वसिष्ठादि मुनि और गुरु आदित्यदास इनके नमस्कार करनेके प्रसादसे पाई है बुद्धि जिसने ऐसा वराहमिहिरनामक मैंने यह शास्त्र उपसंग्रहण किया । पूर्वाचार्य शास्त्रकर्ता जिनके मतके आश्रयसे मैंने यह कार्य किया उनको नमस्कार होवें ॥ १० ॥ (आर्या)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकाया-
मुपसंहाराध्यायोऽष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

विज्ञापनम् ।



बालानां सुखबोधसंततिकरी सच्छिक्षकाणां श्रम-
घ्नी पर्याप्तधियो ममागसमियं भाषेति विद्वज्जनाः ।
कष्टज्ञाः कवयः क्षमन्तु विशदं कुर्वन्तु माहीधरीं
वाणीं स्वल्पतरे पदार्थबहुले सज्जातके कल्पिताम् ॥ १ ॥

भाषाटीकाकार सज्जनोंसे विज्ञप्ति करता है कि, मैंने यह ज्योतिष शास्त्रका सुंदर बृहज्जातक नाम ग्रन्थ (जो पढनेमें थोडा और पदार्थोंका भरा हुवा) इसकी भाषाटीका खडीबोलीमें बालक अर्थात् बृहज्जातक न जाननेवालोंके सहजहीमें बोधरूपी संतति करनेवाली तथा पाठक महाशयोंके श्रम दूर करनेवाली अर्थात् गुरुजन इसे देखकर सुगमतासे शास्त्रको समझा सकते हैं । इसमें संस्कृतसे भाषा करनेके मेरे अपराधोंको ग्रन्थ रचनाके कष्ट जाननेवाला (ग्रंथकर्त्ता कवि विद्वान्) लोग क्षमा करें और इस माहीधरी भाषाको प्रकट करें ॥ १ ॥

छिद्रान्वेषणतत्पराः परकृते विध्वंसका दूषका
मात्सर्येण परार्थनाशनपरा दुर्बुद्धयो मानिनः ।
सत्कार्ये शिथिलाःकुकर्मसुखिनो निन्दन्तु नन्दन्तु वा
सत्कृत्यं सुकृतं परोपकृतये कुर्वन्तु निर्मत्सराः ॥ २ ॥

जो लोग पराये छिद्र ढूंढनेमें तत्पर, पराये किये कर्मको नाश करनेवाले, दूसरेको दूषण देनेवाले, मत्सरी अर्थात् पराई भलाईसे विना आग जल भुन जानेवाले, पराये प्रयोजनको भंग करनेमें तत्पर रहनेवाले, भले कृत्यमें शिथिल अर्थात् जिनसे भले काम अपने हाथसे कुछ नहीं हो सकते प्रत्युत बुरे कामोंसे सुख माननेवाले, (घमंडखोर) ऐसे बुद्धिवाले हैं वे मेरे इस परोपकारार्थ परिश्रमको देखकर निन्दा करें अथवा प्रसन्न होकर प्रशंसा करते रहें; किन्तु जो विज्ञ महाशय (निर्मत्सरी) पराये सुकृतसे आनन्द माननेवाले एवं दुष्कृत्यसे चिंता करने वाले हैं वे इस कृत्यको सुकृत करें ॥ २ ॥

विज्ञापनम् ।

यदयुक्तमयुक्तं मे युक्तं कुर्वन्तु युक्तितः ।
श्रमे मम न कुर्वन्तु कैतवं न च मत्सरम् ॥ ३ ॥

जो मैंने इस भाषा करनेमें अयोग्य लिखा हो उसे उक्त सज्जन (युक्ति) यत्नसे शुद्ध करें, एवं मेरे इस (परोपकारार्थ) परिश्रममें (कैतव) ठगपन वा खोरी न करें तथा मत्सर (अन्यशुभद्वेष अर्थात् दूसरेके भलाईमें दुष्ट भाव न करें ॥ ३ ॥

श्रीमत्प्रतापशाहानां वसत्यां कीर्तिशालिनाम् ।
आज्ञयैषा कृता भाषा रसाभ्रवसुभूशके ॥ ४ ॥

सत्कीर्तिमान् महाराज " श्री प्रतापशाह देव " की आज्ञासे उन्हींकी राजधानी टीहरी जिला गढवालमें १८०६ (अठारहसौ छः) शककालमें यह भाषाटीका रचा ॥ ४ ॥

भाषाटीकाकार-पं०महीधर शर्मा.



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.

और घमण्ड छोडकर पूरा करदें और मैंने जहां कहीं अनुचित कहा हो अथवा अधूरा कहा हो तो उसको भी विचार करके शुद्ध और पूरा करदें ॥ ८ ॥ (वसन्ततिलका)

ग्रन्थकारका स्वपितृनामादि कथन।

आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः
कापित्थके सवितृलब्धवरप्रसादः ।
आवन्तिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्य-
ग्घोरां वराहमिहिरो रुचिरां चकार ॥ ९ ॥

आवन्तिक देशमें उज्जयिनी नाम नगरके कापित्थ नाम ग्रामका रहनेवाला आदित्यदास ब्राह्मणका पुत्र वराहमिहिरनामा ज्योतिर्विद्ने अपने पितासे बोध और सूर्यनारायणसे वरप्रसाद पाय कर पूर्व ऋषिप्रणीत ज्योतिष ग्रन्थका अवलोकन और विचार भली भांतिसे करके यह होराशास्त्र " बृहज्जातक " नाम जातक सुन्दर और सुगम, थोडेमें बहुत प्रयोजन देनेवाला बनाया ॥ ९ ॥ (वसन्ततिलका)

दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदम् ।
शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १० ॥
इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके उपसंहा-
राध्यायोऽष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

फिर सज्जनोंको प्रणाम आचार्य करता है कि, सूर्यादि ग्रह और वसिष्ठादि मुनि और गुरु आदित्यदास इनके नमस्कार करनेके प्रसादसे पाई है बुद्धि जिसने ऐसा वराहमिहिरनामक मैंने यह शास्त्र उपसंग्रहण किया। पूर्वाचार्य शास्त्रकर्ता जिनके मतके आश्रयसे मैंने यह कार्य किया उनको नमस्कार होवें ॥ १० ॥ (आर्या)

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकाया-
मुपसंहाराध्यायोऽष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

विज्ञापनम् ।

—∞∘∞—

बालानां सुखबोधसंततिकरी सच्छिक्षकाणां श्रम-
घ्नी पर्यांतधियो ममागसमियं भाषेति विद्वज्जनाः ।
कष्टज्ञाः कवयः क्षमन्तु विशदं कुर्वन्तु माहीधरीं
वाणीं स्वल्पतरे पदार्थबहुले सज्जातके कल्पिताम् ॥ १ ॥

भाषाटीकाकार सज्जनोंसे विज्ञप्ति करता है कि, मैंने यह ज्योतिष शास्त्रका सुंदर बृहज्जातक नाम ग्रन्थ (जो पढनेमें थोडा और पदार्थोंका भरा हुवा) इसकी भाषाटीका खडीबोलीमें बालक अर्थात् बृहज्जातक न जाननेवालोंके सहजहीमें बोधरूपी संतति करनेवाली तथा पाठक महाशयोंके श्रम दूर करनेवाली अर्थात् गुरुजन इसे देखकर सुगमतासे छात्रको समझा सकते हैं । इसमें संस्कृतसे भाषा करनेके मेरे अपराधोंको ग्रन्थ रचनाके कष्ट जाननेवाला (ग्रंथकर्त्ता कवि विद्वान्) लोग क्षमा करें और इस माहीधरी भाषाको प्रकट करें ॥ १ ॥

छिद्रान्वेषणतत्पराः परकृते विध्वंसका दूषका
मात्सर्येण परार्थनाशनपरा दुर्बुद्धयो मानिनः ।
सत्कार्ये शिथिलाःकुकर्मसुखिनो निन्दन्तु नन्दन्तु वा
मत्कृत्यं सुकृतं परोपकृतये कुर्वन्तु निर्मत्सराः ॥ २ ॥

जो लोग पराये छिद्र ढूंढनेमें तत्पर, पराये किये कर्मको नाश करनेवाले, दूसरेको दूषण देनेवाले, मत्सरी अर्थात् पराई भलाईसे विना आग जल भुन जानेवाले, पराये प्रयोजनको भंग करनेमें तत्पर रहनेवाले, भले कृत्यमें शिथिल अर्थात् जिनसे भले काम अपने हाथसे कुछ नहीं हो सकते प्रत्युत बुरे कामोंसे सुख माननेवाले, (घमंडखोर) ऐसे बुद्धिवाले हैं वे मेरे इस परोपकारार्थ परिश्रमको देखकर निन्दा करें अथवा प्रसन्न होकर प्रशंसा करते रहैं; किन्तु जो विज्ञ महाशय (निर्मत्सरी) पराये सुकृतसे आनन्द माननेवाले एवं दुष्कृत्यसे चिंता करनेवाले हैं वे इस कृत्यको सुकृत करें ॥ २ ॥

विज्ञापनम् ।

यदयुक्तमयुक्तं मे युक्तं कुर्वन्तु युक्तितः ।
श्रमे मम न कुर्वन्तु कैतवं न च मत्सरम् ॥ ३ ॥

जो मैंने इस भाषा करनेमें अयोग्य लिखा हो उसे उक्त सज्जन (युक्ति) यत्नसे शुद्ध करें, एवं मेरे इस (परोपकारार्थ) परिश्रममें (कैतव) ठगपन वा खोरी न करें तथा मत्सर (अन्यशुभद्वेष अर्थात् दूसरेके भलाईमें दुष्ट भाव न करें ॥ ३ ॥

श्रीमत्प्रतापशाहानां वसत्यां कीर्तिशालिनाम् ।
आज्ञयैषा कृता भाषा रसाभ्रवसुभूशके ॥ ४ ॥

सत्कीर्तिमान् महाराज " श्री प्रतापशाह देव " की आज्ञासे उन्हींकी राजधानी टीहरी जिला गढवालमें १८०६ (अठारहसो छः) शककालमें यह भाषाटीका रचा ॥ ४ ॥

भाषाटीकाकार-पं०महीधर शर्मा.



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.